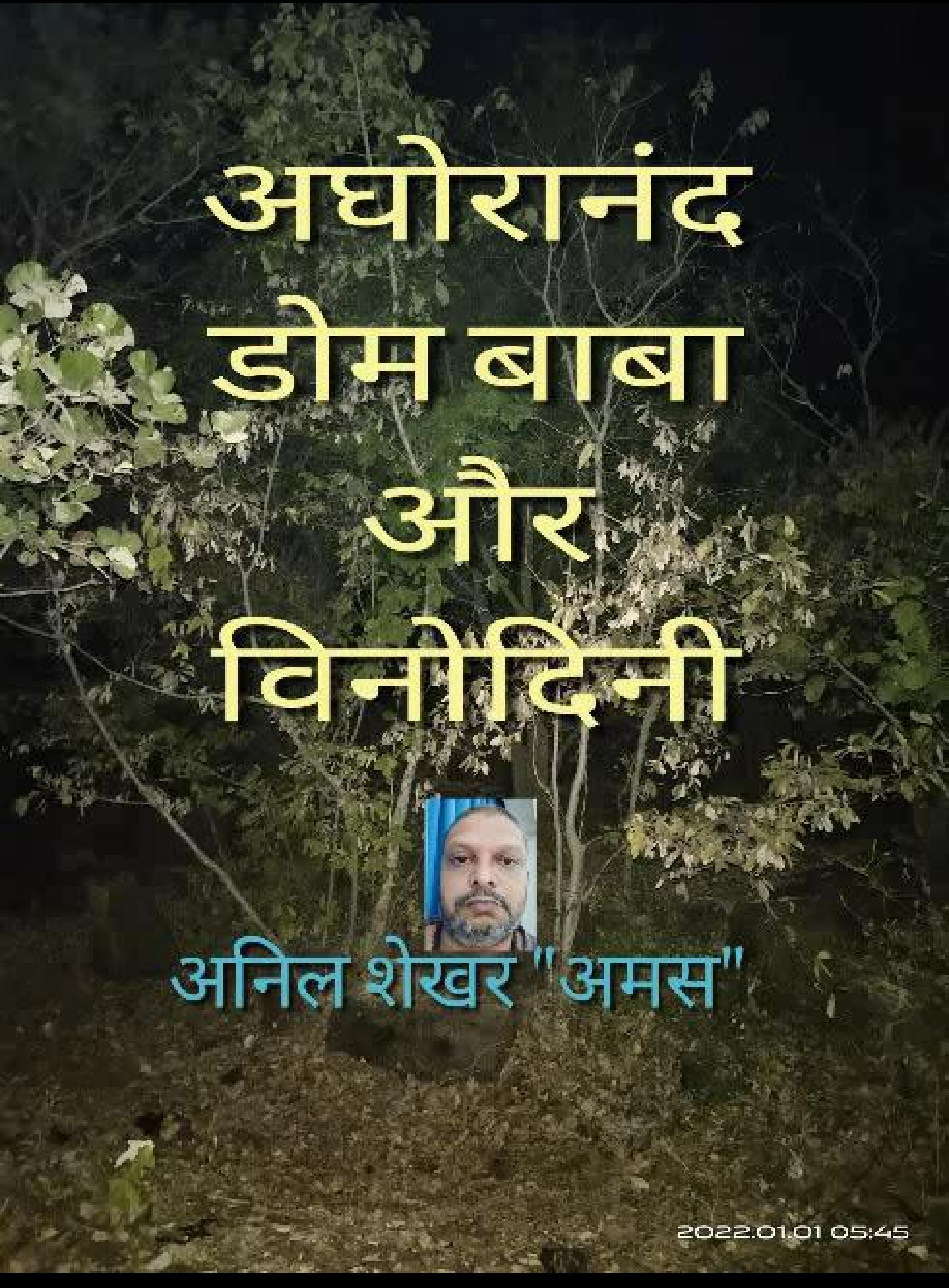
अघोरानंद
डोम बाबा
और
विनोदिनी
अनिल शेखर "अमस"
2022.01.01 05:45

अघोरानं

द

डोम

बाबा

और

विनोदिनी

-:डिस्क्लेमर (अस्वीकरण):-

किसी भी लेखक का अपना एक काल्पनिक संसार होता है और उस संसार की सृष्टि उसके अंदर की कल्पना शक्ति करती है। इस काल्पनिक संसार में कई ऐसी घटनाएं घटित हो सकती है जो वास्तविक जीवन में यथार्थ ना लगे।

इसीलिए कहा गया है कि....

जहां न पहुंचे रवि.... वहां पहुंचे कवि ....

तात्पर्य यह है कि किसी काल्पनिक कथा में कुछ भी घटित हो सकता है .....

मुझे लगता है कि आप मेरी बात समझ गए होंगे।

यह कथा अघोरानंद नामक एक काल्पनिक पात्र की काल्पनिक कथा है। किसी भी जीवित या मृत व्यक्ति या घटना से किसी भी प्रकार की प्रासंगिकता या समानता दिखती है तो वह महज एक संयोग है।

इस कथा में तंत्र साधना के विषय में कुछ घटनाओं को काल्पनिक रूप से प्रस्तुत किया गया है। कुछ मंत्रों का प्रयोग भी किया गया है या बताया गया है। उन मंत्रों का प्रयोग आप किसी योग्य गुरु या साधक के सानिध्य में ही करें। क्योंकि तंत्र साधनाएं केवल किसी योग्य

गुरु या साधक के सानिध्य में ही करनी चाहिए, अन्यथा आप को नुकसान हो सकता है ।

समाज और कानून के अनुसार आचरण करना प्रत्येक नागरिक का कर्तव्य है ।

अघोरी समाज से अलग रहते हैं इसलिए वे इन नियम बंधनों से मुक्त है, लेकिन हम और आप समाज में रहते हैं इसलिए सामाजिक बंधनों और कानूनी बंधनों के अधीन आते हैं ।

अतः इस कथानक में दिए गए किसी भी प्रकार की प्रक्रिया का, जो सामाजिक या कानूनी रुप से प्रतिबंधित हो, या गलत हो, उसका आप किसी भी परिस्थिति में उपयोग ना करें ।

कोई भी कथा लेखक की कल्पना के आधार पर किसी भी क्षेत्र में कोई भी चमत्कार या घटना का विवरण दे सकती है । इस प्रकार की घटना आपके जीवन में घटित हो यह आवश्यक नहीं है । इस बात का ध्यान रखेंगे ।

तंत्र साधना अनंत काल से चली आ रही है, और इसका प्रारंभ अथर्ववेद से माना जाता है । यह अपने अलग-अलग स्वरूपों में सभी सभ्यताओं में मौजूद है । भारत में

तंत्र साहित्य का इतिहास काफी पुराना है । इसमें अनेक प्रकार के देवी देवताओं की साधना का विधान है । तंत्र साधना के क्षेत्र में कई प्रकार के मार्ग भी मौजूद है । जो साधक की इच्छा और उसके मनस्थिति के अनुसार उसे साधना करने का अवसर प्रदान करते हैं ।

इसमें दक्षिण मार्ग जैसी पद्धति है । जिसमें आप नियमों का पालन करते हुए पूर्ण सात्विकता और ब्रह्मचर्य के साथ साधनाओं को सम्पन्न करते हैं और अनुकूलता प्राप्त करते हैं, जो गृहस्थ साधकों के अनुकूल है ।

वही अघोर पंथ जैसा मार्ग भी है, जहां आप सभी प्रकार के नियमों से मुक्त होते हुए साधना कर सकते हैं ।

उसके लिए आपको समाज से परे होना पड़ता है ।

अघोर साधना जटिल है !

कठिन है !

तलवार की धार पर चलने के समान है !

इन्हें हर परिस्थिति में किसी योग्य साधक या गुरु के सानिध्य में ही करना चाहिए ।

अंत मे अनुरोध है कि ....

इस कथानक को आप एक काल्पनिक कथा के रूप में मनोरंजन की दृष्टि से पढ़ें और इस का आनंद लें ।

सस्नेह

अनिल शेखर "अमस"

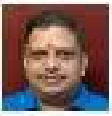

anilshekhar.amas@gmail.com

आभार और पूर्व पीठिका

आप सभी पाठक पाठिकाओं के स्नेह तथा आशीर्वाद के लिए हृदय से आभार ।

आप मेरी कथाओं पर अपनी बेबाक राय अपनी समीक्षा के रूप मे देते रहें, जिन चीजों में सुधार की आवश्यकता है उसके बारे में भी मुझे अवगत कराते रहें ।

इससे मुझे इन कथाओं को और बेहतर बनाने में मदद मिलेगी ।

इन कथाओं के माध्यम से मेरा प्रयास हमारे सनातन धर्म की पूजन पद्धतियों, शक्ति पीठों और देवी-देवताओं के विषय में मनोरंजन के साथ साथ जानकारी प्रदान करना है ।

आप सब के आशीर्वाद सहयोग और समर्थन से मैं इसे जारी रखने का प्रयास करूंगा !

डोम बाबा और विनोदिनी की कथा प्रारंभ करने से पहले मैं इसकी पूर्व कथा के विषय में थोड़ी जानकारी दे देता हूं ।

"अघोरानंद और कपालिनी का रहस्य" नामक कथानक में डोम बाबा और विनोदिनी का उल्लेख आया था ।

जिसमें डोम बाबा एक होम्योपैथिक डॉक्टर के रूप में मुंबई में काम कर रहे थे । इसी दौरान उनका भेल बेचने वाली लड़की विनोदिनी से संपर्क हुआ । यह संपर्क उस दिन हुआ था जिस दिन समुद्र तट पर उन्हें अचानक उनके गुरुदेव मिल गए थे । उन्होंने दीक्षा प्रदान की थी जिसके बाद वे अचेत हो गए थे ।

कालांतर में गुरुदेव से मिलने की इच्छा रखते हुए वे बार-बार समुद्र तट पर आते लेकिन गुरुदेव नहीं मिलते थे !

हां ! विनोदिनी से मुलाकात जरूर हो जाती थी और इस प्रकार से उनकी दोस्ती धीरे-धीरे बढ़ती चली गई जो धीरे-धीरे दोस्ती से भी थोड़ा आगे हो चुकी थी .....

गुरुदेव से दीक्षा मिलने के बाद उन्हें महाबलेश्वर यानि उनके गाँव मे गणेश पक्ष मे साधना करने का निर्देश प्राप्त हुआ । वहां खोजने पर उन्हें एक सन्यासी ने एक विशेष मंदिर में ले जाकर साधना की प्रक्रिया के विषय में जानकारी देते हुए एक कॉपी दी जिसमें साधना की विधि लिखी हुई थी । वहाँ उन्होंने भगवान गणेश के एक अति विशिष्ट स्वरुप उच्छिष्ट गणपति की साधना

संपन्न की । कालांतर में उनको बनारस जाने का निर्देश प्राप्त हुआ ....

वहां एक अघोरी बाबा भेरुंडनाथ के आश्रम में उन्हें रहने का सौभाग्य मिला । जहां उन्होंने कुछ विशेष अघोरी साधना सिखाई । वहां के चित्र विचित्र अनुभव से दो-चार होते हुए वे तंत्र क्षेत्र की प्रचंड महाविद्या मानी जाने वाली महाविद्या छिन्नमस्ता की साधना में प्रवृत्त हुए । इस साधना की विशेष प्रक्रिया को उन्होंने सफलतापूर्वक संपन्न कर लिया । जिसके बाद उन्हें भगवती के दिव्य स्वरुप के दर्शन भी प्राप्त हुए । उसके बाद का छह महीने का साधना क्रम उन्हें अपने घर में आकर संपन्न करना था । जिसके लिए वह मुंबई लौट गए ।

यहां आने के बाद उनका सामान्य जीवन फिर से प्रारंभ हो गया....

क्लीनिक वापस चालू हो गया और जीवन वापस पुराने ढर्रे पर चलने लगा ....

अब आगे ।

महाविद्या छिन्नमस्ता का तेज

एक दिन फिर विनोदिनी पर चर्चा निकली और डोम बाबा ने बताना प्रारम्भ किया - बाबा भेरुंड नाथ ने मुझे छिन्नमस्ता साधना को छह महीने तक करने के लिए कहा था । उनके निर्देशों का पालन करते हुए मैंने मुंबई पहुंचने के बाद साधना प्रारंभ कर दी ।

उन्होंने मुझे स्पष्ट रूप से कहा था कि किसी के ऊपर इस अवधि में क्रोध नहीं करना है । अगर क्रोध किया तो सामने वाले व्यक्ति का काफी गंभीर नुकसान हो सकता है ।

मैं वैसे भी काफी शांत स्वभाव का व्यक्ति था, "अहिंसा परमोधर्मम" टाइप का !

शायद ही मैंने अपने जीवन में किसी से झगड़ा किया हो, इसलिए मुझे उनकी इस बात से कोई विशेष चिंता नहीं हुई ।

मैं जानता था कि मुझे तो किसी से झगड़ा करना नहीं है तो फिर क्रोध भी नहीं आएगा ....

लेकिन ऐसा नहीं था !

छिन्नमस्ता एक अत्यंत उग्र शक्ति है और उनके साधक के अंदर भी उसकी उग्रता अपने समय में प्रकट हो जाती है ! और यह एक सहज स्वाभाविक प्रक्रिया है ....

छिन्नमस्ता महाविद्या के मंत्र का जाप करते रहने से मेरी आंखों में एक अजीब सा तेज उभर आया था !

कोई भी मेरी आंखों में आंखें डालता था तो कुछ सेकंड के बाद वह अपनी आंखों को झुका लेने के लिए मजबूर हो जाता था ।

मुझे अपने अंदर एक अजीब सी ऊष्मा का आभास निरंतर होता रहता ।

इसके अलावा मुझे अपने व्यवहार में कोई विशेष परिवर्तन दिखाई नहीं दिया.......

लेकिन इस साधना की शक्ति का एहसास मुझे एक दिन हो गया.....

पड़ोसियों के बीच में विवाद होते रहना एक सामान्य प्रक्रिया है...... यह तो आप लोग भी जानते होंगे ।

कभी कूड़ा डाल देने को लेकर तो कभी झाड़ू लगाने को लेकर इस प्रकार के विवाद चलते रहते हैं और उनका समाधान भी निकलता रहता है.....

मेरे क्लीनिक के ऊपर मेरा घर था और वह दोनों मैंने किराए पर लिया हुआ था। मकान मालिक के पास वैसे ही 10 और दुकानें थी जिसमें नीचे दुकान और ऊपर में रहने की व्यवस्था थी। वे आपस में लगी हुई थी। इसी प्रकार रोड के उस तरफ भी दुकानें बनी हुई थी। वहां क्लीनिक चलाते चलाते काफी समय हो गया था, इसलिए आसपास के लोग भी मुझे जानते थे। मैं भी उनको जानता था !

मेरी क्लीनिक के ठीक सामने अब्दुल की पाव भाजी और नाश्ते की दुकान थी। एक तरह से छोटा सा होटल समझ लीजिए। वह काफी सज्जन किस्म के प्राणी थे
।

उनकी बगल में अनवर खान की वेल्डिंग की दुकान थी
। अनवर खान अब्दुल के बिल्कुल उलट क्रोधी स्वभाव के आदमी थे। किसी न किसी को चमकाने धमकाने का अवसर ढूंढते रहते थे। कोई ना मिले तो अपनी दुकान पर काम करने वाले नौकर नासिर को बीच-बीच में थप्पड़ से नवाज दिया करते थे।

उस तरफ की दो दुकाने अनवर खान की थी । मुंबई के बारे में आप लोग भी जानते होंगे कि वहां पर छोटी सी प्रॉपर्टी होना भी अमीर होने की निशानी है । यहां तो उसके पास दो दो मकान सहित दुकानें थी.... तो अनवर खान का दिमाग सातवें आसमान पर रहता था ।

उस पर तुर्रा यह कि उसकी पत्नी सऊदी मे नर्स का काम करती थी । वहां से हर महीने एक अच्छी रकम उसे मिल जाया करती थी ।

उसका बड़ा लड़का बहरीन में था । वह बचपन से उसके साथ वेल्डिंग करता रहा था , इसलिए उस कला में वह निष्णात था और बहरीन में एक दुकान चलाता था । वहां से भी उसे अच्छी खासी आमदनी हो जाती थी और वह भी एक हिस्सा अनवर को भेजता रहता था ।

अनवर खान पैसे के मामले में चमड़ी जाए पर दमड़ी ना जाए वाले सिद्धांत पर चलने वाला आदमी था । जो पैसे उसकी पत्नी और बेटा भेजते थे उसे वह यहां पर ब्याज पर चलाता था ।

उसकी जरुरते काफी कम थी । वह जो लूँगी कुर्ता पहनता था .... उसे देखकर ऐसा प्रतीत होता था जैसे वह कई हफ्ते से उसी को पहन रहा हो ।

जब से मैंने वहां क्लीनिक चालू किया था तब से मैंने उसके पास मुश्किल से दो अलग-अलग रंग के कपड़े ही देखे थे । इसी से आप अंदाज लगा सकते हैं ।

अगर आप ब्याज पर पैसे चलाने वाले लोगों को जानते हो तो .... उनका काम ऐसा होता है कि पैसे की वसूली के लिए वह सभी प्रकार के हथकंडे अपनाते हैं । जिसमें मारपीट से लेकर धमकाना तक सब कुछ शामिल होता है । यह एक ऐसा तरीका है जो आधुनिक समय में भी उतना ही कारगर है जितना पहले हुआ करता था ।

बैंक भी इस प्रकार से लोगों को नियुक्त करते हैं । जिनको रिकवरी एजेंट कहा जाता है । यह आधुनिक नाम है, लेकिन उनका काम भी इसी प्रकार से चमका धमका कर लोन की राशि को वापस दिलवाना होता है । इसके बदले में उनको कमीशन मिलता है ।

अनवर खान के पास इस काम का अच्छा खासा अनुभव था । मार्केट में कम से कम उसके दस लाख रुपए ब्याज में चल रहे थे । जिसका दो टका ब्याज उसे मिलता था इस प्रकार से लगभग ₹ 20000 महीने का ब्याज उसे मिलता रहता था । उसका यह धंधा कई सालों से चल

रहा था और सफल भी था। पहले उसके पास खुद किराए की दुकान थी और पिछले 10 साल में उसने अपनी दुकान मिलाकर दो दुकान मकान सहित खरीद ली थी।

उसमें से एक दुकान अब्दुल को किराये पर दी हुयी थी .....

अनवर के दूसरी बगल वाली दुकान लाला गुलजारी लाल अग्रवाल की थी। जिसमें वह अपनी किराना की दुकान चलाते थे। उनकी दुकान भी लगभग 30-40 साल पुरानी थी। उनकी उम्र 50-55 वर्ष के आसपास हो चुकी थी। पत्नी का देहांत हो चुका था और वे अकेले ऊपर वाले मकान में रहते थे। उनकी कोई संतान भी नहीं थी। अनवर काफी दिनों से गुलजारीलाल की दुकान खरीदने के फेर मे था। लेकिन गुलजारीलाल अपनी दुकान किसी हालत में नहीं बेचना चाहता था। अनवर उसे विभिन्न प्रकार से परेशान करने की कोशिश करता रहता था। जिसमें ग्राहक ज्यादा हो जाने पर धुआं उड़ाने से लेकर गाली गलौज तक सब कुछ शामिल था।   गुलजारीलाल को भी इसकी आदत हो चुकी थी। इसलिए दोनों आपस में तनातनी

करते रहते थे। दोनों लगभग हम उम्र थे। संभवत: इसलिए भी और काफी सालों से झगड़ा करते आ रहे थे इसलिए भी ... हो सकता है कि उन पर इसका कोई खास प्रभाव नहीं पड़ता था .....

दोनों एक दूसरे की माँ बहन करते, कभी झूमा झटकी भी कर लेते थे और बाद में आपस में बातचीत भी कर लिया करते थे.....

इसी प्रकार से वहां का जीवन चल रहा था।

शुरु में मुझे यह सब कुछ अजीब लगता था, क्योंकि मेरे गांव का जीवन काफी शांत और सौम्य था। जैसा कि आमतौर पर गांव का होता है लोग एक दूसरे के साथ काफी अच्छे से पेश आते हैं। बहुत कम ऐसा होता है कि पड़ोसी आपस में लगातार झगड़ते रहते हो। कभी कभार झगड़ा हो जाए यह एक अलग बात है ......

यहां तो रोज का कम से कम एक राउंड झगड़ा होना बिल्कुल जरूरी सी घटना थी .....

यह हर दूसरे तीसरे दुकानदार के बीच चलता रहता था .....

तो धीरे धीरे मुझे भी समझ में आ गया कि यह एक सामान्य बात है और मैं भी उसका आदी हो गया.....

एक दिन सुबह सुबह जब मैं क्लीनिक पर अपने पेशेंट को देख रहा था तभी सामने से चिल्ला चोट की आवाजें आने लगी ।

अब्दुल का बेटा राशिद जो मुश्किल से तेरह चौदह साल का था.... वह दुकान के सामने झाड़ू लगाने के लिए पानी छिड़क रहा था ..... और उस पानी के छींटे अनवर के ऊपर गिर गए थे ।

इसी बात को लेकर उसने राशिद को दो थप्पड़ मार दिए । अब्दुल को यह बात सहन नहीं हुई और उसने इसका विरोध कर दिया । इसी बात पर वहां बवंडर मचा हुआ था । अनवर ने अब्दुल को भी खूब खरी-खोटी सुनाई.... बदले में अब्दुल ने भी कुछ कुछ बातें कह दी ।

तब तक आसपास के लोग इकट्ठा हो गए और सभी ने अनवर को दोषी ठहरा दिया । जिससे वह आगे लड़ाई नहीं कर सका और फिर मामला ठंडा हो गया।

मैं भी यह सोच कर रह गया कि यह तो रोज की बात है.....

सीधे सादे अब्दुल का इस प्रकार से विरोध करना अनवर को कहीं ना कहीं अंदर से झिंझोड़ गया । उसे ऐसा

लगा कि उसकी वजह से बाजार में उसका अपमान हो गया। उसकी धाक को एक मामूली आदमी ने चोट पहुंचा दी थी .... उसको इसका मलाल हुआ।

दिनभर सब ठीक-ठाक चलता रहा !

मुझे लगा कि सब कुछ सामान्य हो गया है। मैं भी निश्चिंत हो गया। रात को जब मैं अपना मंत्र जाप करके उठा तो जैसा कि आमतौर पर होता है मेरे अंदर की ऊष्मा पूरी तरह से चढ़ी हुई थी !

पूरा शरीर तप रहा था और आंखें लाल हो चुकी थी।

खिड़की से बाहर मेरी नजर पड़ी तो मैंने देखा की एक पुलिस की गाड़ी वहां खड़ी हुई है। पुलिस वाले कभी-कभी अनवर के पास आते थे, इसलिए मैंने एक उचटती नजर उस पर डाली और जाकर सो गया।

अगले दिन सुबह पता चला कि अनवर ने अपने पहचान के पुलिस वालों की मदद से रात में अब्दुल और राशिद को उठवा लिया था और थाने में उनकी काफी कुटाई हुई थी।

ब्याज के धंधे में कई प्रकार के चमकी धमकी के मामले चलते रहते हैं। इसलिए पुलिस वालों के साथ भी उनका काफी दोस्ताना रहता है। अनवर के पहचान के

पुलिस वाले भी थे जो उससे हफ्ता प्राप्त करते थे। उन्होंने उसके कहने पर दोनों बाप बेटों को थाने में ले जाकर बड़ी बेदर्दी से मारा गया था।

उसके बाद दो दिन तक अब्दुल की दुकान बंद रही। जब दुकान खुली तो मैंने देखा कि बाप बेटे दोनों के चेहरे सूजे हुए हैं। उन पर चोट के निशान भी दिखाई दे रहे थे। अब्दुल के सिर पर पट्टी बंधी हुई थी और राशिद के पैर में प्लास्टर चढ़ा हुआ था। यह देख कर मुझे अंदर ही अंदर बहुत तीव्र पीड़ा हुई। राशिद चाय देने के लिए मेरे क्लीनिक में भी आता था और बहुत ही प्यारा बच्चा था। उसकी ऐसी हालत देखकर मुझे बहुत दुख हुआ।

उस दिन दोपहर बारह बजे के आसपास वह मुझे चाय देने के लिए आया।

वह लंगड़ा रहा था ....

प्लास्टर के साथ डॉक्टर आराम करने की हिदायत भी देते हैं, लेकिन जैसा कि आप लोग जानते हैं, जिनकी आमदनी ज्यादा नहीं होती है वह प्लास्टर चढ़ा होने पर भी अपना काम करते रहने के लिए मजबूर होते हैं। इसलिए राशिद भी अपने काम में लगा हुआ था। वह

अनवर - क्यों बे लँगड़े ! बड़ा हीरो बनता था । अनवर खान से जबान लड़ाने का मतलब समझ मे आया कि नहीं ?

राशिद बच्चा था.....

लेकिन इस बात को शायद वह सहन नहीं कर पाया और बोला - अभी तुम्हारा टाइम है चाचा ! एक दिन मेरा भी आएगा उस दिन मैं जवाब दूंगा ।

इतना सुनते ही अनवर आपे से बाहर हो गया .....

उसने राशिद के गाल पर एक जोर का थप्पड़ मार दिया । प्लास्टर लगे हुए पैर के साथ राशिद जमीन पर गिर पड़ा ।

मैं क्लीनिक से यह सब देख रहा था !

मैं उठकर दरवाजे तक आया !

तब तक अनवर दो चार लात भी जमा चुका था !

अब्दुल निस्सहाय सा खड़ा हुआ देख रहा था !!

आसपास के लोग भी खामोश खड़े थे ।

अनवर लगातार गालियां बकता जा रहा था.....

तभी अचानक मेरे अंदर एक लहर सी उठी !

मेरी नसें तमतमा उठी..... और मेरी नजरें सीधे अनवर से टकराई ।

क्या हुआ इसका एहसास भी मुझे नहीं हुआ ....
इसमे मुश्किल से एक सेकंड का वक्त लगा होगा और उसके बाद मैं सामान्य हो गया और वापस अपनी सीट पर आकर बैठ गया ।

अंदर एक पेशेंट बैठा हुआ था । मैं उससे इस प्रकार से बातें करने लगा जैसे कुछ भी नहीं हुआ हो । उसकी दवाई वगैरह देकर अगले पेशेंट की ओर बढ़ गया । बाहर शोर गुल हो रहा था लेकिन मैं आराम से अपनी कुर्सी पर बैठा रहा ....

लेकिन मेरी उस एक नजर से उधर बहुत कुछ हो चुका था ।
थोड़ी देर मे अनवर अपना सीना पकड़कर धम्म से जमीन पर बैठ गया और फिर जमीन पर फैल कर फड़फड़ाने लगा ।
उसे जबरदस्त पैरालिटिक अटैक आया था ।
उसे अस्पताल ले जाया गया, लेकिन उसके शरीर का बायां हिस्सा लकवा ग्रस्त हो गया ।
उसके बाद परिस्थितियां पलट गई ।

पत्नी ने नौकरी का बहाना बनाकर आने से इंकार कर दिया, बेटा दो दिन के लिए आया और नासिर को जिम्मेदारी सौंप कर चला गया....

हां ! इतनी व्यवस्था जरूर की कि महीने के कुछ पैसे वह भेज देता था ।

अनवर जिस नासिर की पिटाई किया करता था, वही उसका इकलौता सहारा बन गया । दुकान भी वही चलाता और उसकी देखभाल भी वही करता । उसकी हालत देखकर अब्दुल और राशिद उसके कुकर्म को भुलाकर उसके भोजन की व्यवस्था भी कर देते । वह बिस्तर पर पड़ा पड़ा आँसू बहाता रहता ....

क्योंकि अब वह केवल इसके लायक ही रह गया था .....

मैंने जिज्ञासावश पूछा - बाबा ऐसा क्यों हुआ और आपके देखने मात्र से ऐसा क्या हो गया ?

डोम बाबा - बेटा हमारे शास्त्र कहते हैं कि

"पिंडे ब्रह्मांडम"

यानि हमारे शरीर के अंदर पूरा ब्रह्मांड समाहित है ....

उनकी बात मेरी समझ में नहीं आई !

मेरे चेहरे को देख कर उन्हें इस बात का पता चल गया ।

वे मुस्कुराए और बोले - बेटा। साइंस यह कहता है कि हर पदार्थ अणु से बना है। हर अणु के अंदर की संरचना लगभग एक प्रकार की होती है। बीच में एक न्यूक्लियस जिसमें प्रोटॉन और न्यूट्रॉन होते हैं और उसके चारों तरफ घूमते हुए इलेक्ट्रॉन। इसी प्रकार की संरचना हम सौरमंडल में भी देखते हैं। जहां एक सूर्य है जिसे आप न्यूक्लियस कह सकते हैं और उसके चारों तरफ घूमते हुए ग्रह ......

तंत्र भी इसी बात को पूर्णता के साथ स्वीकार करता है। शक्ति का प्रतीक कुंडलिनी को माना गया है। जैसे-जैसे साधना आगे बढ़ते जाती है कुंडलिनी शक्ति का जागरण धीरे-धीरे होता जाता है। यह शक्ति अचानक से नहीं जागती बल्कि निरंतर साधना से उसमें क्रमिक स्पंदन होता रहता है .... धीरे-धीरे एक-एक चक्र की शक्ति बढ़ती जाती है। जो साधक कई जन्मों से साधनाएं करते आ रहे हैं उनके कुंडलिनी के चक्र जागृत अवस्था में रहते हैं। इस जन्म में वे फिर उसके आगे की स्थिति को प्राप्त करते हैं।

हाँ ! इसका उल्टा भी संभव है अर्थात आगे बढ़े हुए चक्र से नीचे के चक्र की तरफ गिरना भी संभव है। यह उस

साधक के द्वारा किए जा रहे प्रयास के ऊपर निर्भर करता है ।

यह कुंडलिनी शक्ति किसी किसी के अंदर अचानक से भी जागृत हो सकती है । यह जागरण एक क्षण भर के लिए रहता है । यह तीव्र दुख की अवस्था में हो सकता है या फिर तीव्र क्रोध की अवस्था में भी हो सकता है ।
ऐसी स्थिति में वह ऊर्जा उस कारण को उत्पन्न करने वाले कारक के ऊपर विपरीत प्रभाव डालती है ।
इस घटना में राशिद की स्थिति को देखकर मेरे अंदर तीव्र दुख का भाव प्रकट हुआ !
उस तीव्र दुख की अवस्था में ....
संभवत: मेरी साधना के प्रभाव से कुंडलिनी शक्ति क्षण भर के लिए जागृत हुई और उस दुख को पैदा करने वाले कारण याने अनवर के ऊपर उसका प्रभाव पड़ गया ।
यह कुछ कुछ वैसा ही है....
जैसे हमारी पौराणिक कथाओं में हम ऋषि मुनियों के द्वारा दिए जाने वाले श्राप और उनके आशीर्वाद के विषय में सुनते हैं....

जो असंभव सी लगने वाली चीजों को भी संभव कर जाते थे ।

अब मेरी समझ में थोड़ी थोड़ी बात आ चुकी थी !

डोम बाबा ने कहानी को आगे बढ़ाया - ऐसी घटनाएं कई बार हुई । धीरे धीरे मैं इसका आदी होता गया और अपने ऊपर नियंत्रण भी बढ़ता गया ।

जो असंभव सी लगने वाली चीजों को भी संभव कर जाते थे ।

अब मेरी समझ में थोड़ी थोड़ी बात आ चुकी थी !

डोम बाबा ने कहानी को आगे बढ़ाया - ऐसी घटनाएं कई बार हुई । धीरे धीरे मैं इसका आदी होता गया और अपने ऊपर नियंत्रण भी बढ़ता गया ।

अशरीरी शक्तियों का आभास

लगभग एक महीने की साधना बीत चुकी थी ।

अब मुझे अशरीरी शक्तियां भी दिखाई देने लगी थी ।

ऐसा बड़े अजीब ढंग से होता था....

एक दिन जब मैं अपने क्लीनिक के दरवाजे पर खड़ा था और बाहर की ओर देखता हुआ चाय पी रहा था ......

तभी मैंने देखा ....

उस सड़क से एक युवती जा रही थी !

वह मुश्किल से 20 या 22 वर्ष की रही होगी उसके साथ में दो छाया शरीर चल रहे थे । जो हल्के काले रंग के थे । ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे उसके साथ चिपके हुए हैं ।

इस प्रकार के आभास मुझे कई प्रकार मिलते रहे और मुझे धीरे-धीरे समझ में आने लगा कि यह किसी प्रकार की तामसिक शक्तियां भूत प्रेत पिशाच आदि उनके साथ लगी हुई है ।

कहने को तो यह अंधविश्वास कहा जाता है कि ऐसा हो ही नहीं सकता कि कोई भूत किसी के ऊपर चढ़ जाए.....

लेकिन उस दौर में मैंने ऐसी ऐसी घटनाएं देखी, जिसे देखने के बाद मुझे ऐसा प्रतीत होने लगा कि ऐसा हो सकता है !!!
हिंदू धर्म को अवैज्ञानिक मानने वाले तथाकथित वैज्ञानिक धर्म ईसाई धर्म, जो पश्चिम में मान्यता प्राप्त है, उसमें एक्सोर्सिस्म (excorsism) नाम की एक प्रक्रिया होती है जो कि बकायदा धार्मिक मान्यता मिली हुई प्रक्रिया है। उसके लिए कुछ पादरी निश्चित होते हैं। जो इस प्रक्रिया को संपन्न करते हैं और उनको अति विशिष्ट माना जाता है। excorsism किसी व्यक्ति के शरीर में चढ़े हुए भूत को निकालने की प्रक्रिया को कहा जाता है ......
अब क्योंकि इसका नाम थोड़ा आकर्षक और अंग्रेजी में है.........
इसलिए लोग इसे सहजता से स्वीकार कर लेते हैं।
इस विषय पर कई फिल्में भी बनी हुई है जो आप गूगल में सर्च करके देख सकते हैं.....
अगर आप इन फिल्मों में अपनाई जाने वाली प्रक्रियाओं को देखें तो वह क्रियाएं हमारे तांत्रिकों के द्वारा अपनाए जाने वाली क्रियाओं से कुछ खास अलग नहीं है। यह

प्रक्रियायें हर संप्रदाय में कुछ-कुछ मिलती-जुलती हैं ....

चाहे वह आदिवासियों के द्वारा किए जाने वाले प्रक्रम को देखें, मुस्लिम, ईसाई या हिंदू तांत्रिकों के द्वारा किए जाने वाले प्रक्रम को देखें, सब मिलते जुलते ही होते हैं .....

इसमें सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि इस क्रिया को संपन्न करने वाले तांत्रिक की व्यक्तिगत साधना शक्ति के आधार पर ही वह इस प्रकार के भूत प्रेत आदि को अपने नियंत्रण में कर पाता है या उन्हें उस व्यक्ति से बाहर निकाल पाता है......

इसके लिए भारत में भूत को किसी बोतल या कलश में बंद करने से लेकर..... खीले में बांधकर किसी पेड़ में गाड़ने तक की अनेक प्रकार की क्रियाएं प्रचलित हैं और यह अलग अलग प्रकार से प्रयोग की जाती है ।

खैर.... उसपर चर्चा फिर कभी !

पुजारी बाबा का शिवलिंग

साधना करते हुए मुझे लगभग दो महीने हो चुके थे ....

एक दिन एक अजीब सा वाकया हुआ ...

मेरे क्लीनिक के पास में लगभग आधा किलोमीटर की दूरी पर एक काली मंदिर था । उस मंदिर में एक पुजारी बाबा थे । जो लगभग 60-70 वर्ष की आयु के थे । काली माई से मुझे विशेष लगाव था । महीने दो महीने में मेरा एक चक्कर उस मंदिर का लग जाता था । पुजारी बाबा को काफी सिद्ध पुरुष माना जाता था । वह संभवतः तंत्र साधनाएं किया करते थे । वे लोगों की समस्याओं का समाधान भी करते थे । मैं भी उनका आशीर्वाद लिया करता था ।

उस दिन जब मैं मंदिर में आया तो मुझे देखते ही उनके चेहरे पर आश्चर्य के भाव उभरे और उन्होंने झुक कर मेरे चरण स्पर्श कर लिए .....

यह सब कुछ इतनी जल्दी हुआ कि मैं आश्चर्यचकित रह गया......

कुछ नहीं कर पाया.....

उस समय मेरी आयु मुश्किल से 26-27 वर्ष की थी और बाबा वयोवृद्ध थे । उनके द्वारा इस प्रकार से मेरे चरण स्पर्श करने को देखकर लोग आश्चर्यचकित रह गए....

उनको लगा कि यह क्या हो रहा है ?

मुझे भी लगा कि यह क्या हो रहा है ?

एक तरफ लाल रंग का चोला और धोती धारण किए हुए साफा बांधे हुए पंडितजी थे......

और दूसरी तरफ मैं .... पेंट शर्ट पहने हुए एक सामान्य सा व्यक्ति ।

कुछ देर के लिए मैं भी अचकचा गया !

वहां सारे लोग मुझे अचरज भरी नजरों से देखने लगे ।

यह सब देख कर मैं जल्दी से वहां से वापस बाहर आने के विषय में सोचने लगा .....

लेकिन पंडित जी ने मुझे रोक लिया और बोले - आइए मेरे झोपड़ी को पवित्र कीजिए .....

उनकी बात को मैं टाल नहीं पाया और उनके साथ चल पड़ा । उनकी कुटिया मंदिर के बाजू में ही बनी हुई थी । बाकी लोग बाहर ही रुक गए क्योंकि उनकी कुटिया मे प्रवेश नहीं था । सामने के कमरे से होते हुए हम अंदर के कमरे मे पहुंचे जो उनका साधना कक्ष था । वहां पर जैसे

ही मैंने प्रवेश किया तो मैं आश्चर्यचकित रह गया .....
क्योंकि वहां दीवाल पर देवी काली के बड़े से फोटो के साथ साथ देवी छिन्नमस्ता की फोटो भी लगी हुई थी ....
मुझे ऐसा लगा कि पंडित जी संभवत देवी छिन्नमस्ता की साधना भी कर रहे थे । उन्होंने बिठाया और कहा - आप छिन्नमस्ता के साधक हैं ..... मुझे साधना की विधि बताइए ।
मैं धर्म संकट में फंस गया । मन ही मन विचार करने लगा की साधना की विधि तो मुझे बाबा ने बताई थी...... लेकिन उस मंत्र को किसी और को देने के विषय में कोई निर्देश नहीं मिला था ।
इसलिए मैं असमंजस की स्थिति में था ....
तभी.....
मेरे मानस पटल पर बाबा भैरुंडनाथ का बिम्ब स्पष्ट हुआ .....
उन्होंने कहा कि उसे बता दो कि - जिस मंत्र का वह जाप कर रहा है, उसमे तीन काम बीज लगाकर रात के 11:30 से 1:30 के बीच में साधना करें.... तो 15 दिन के अंदर में अनुकूलता प्राप्त हो जाएगी । उसके साथ साथ

महाकाली मंत्र के 11 माला दिन में 11:30 से 1:30 के बीच में करने के लिए बता दो । उसका काम हो जाएगा ।

जैसे ही मेरे मानस पटल पर यह स्पष्ट हुआ .... मैंने बाबा को सारी बात बता दी और उन्हें कहा कि आप इस निर्धारित समय में जाप करें आपको सफलता मिल जाएगी ।

मेरी बात सुनकर बाबा लगभग रोने की अवस्था में आ चुके थे और उन्होंने कहा - पिछले 10 साल से जाप तो कर ही रहा हूं..... माई से कल ही मुझे रात को स्वप्न में संकेत मिला था कि आज मुझे अपनी समस्या का समाधान मिल जाएगा । जैसे ही तुम मेरे सामने आए तभी मुझे मेरी आंतरिक प्रेरणा ने आभास दिया कि तुम ही वह व्यक्ति हो जो मुझे आगे का मार्ग बताओगे । इसीलिए मैंने तुम्हारे चरण स्पर्श कर लिए और मैं सही था ....
उन्होंने फिर से मेरे चरण स्पर्श कर लिए और कहा - आप आज से मेरे गुरु हैं ।

मैं हाथ जोड़ता रह गया लेकिन वह नहीं माने और बोले - अब जब भी मुझे कोई समस्या आएगी तब मैं आपसे ही उसका समाधान प्राप्त करने का प्रयास करूंगा ।

मेरे पास कोई दूसरा उपाय नहीं था, इसलिए मैंने सहमति में सिर हिला दिया । उन्होंने मुझे बिठाकर मेरी भरपूर खातिरदारी की ।

मुझे यह सब कुछ मुझे बेहद अजीब सा लग रहा था......

जब आप किसी पारस पत्थर के स्पर्श में आ जाते हैं तो लोहा भी स्वर्ण बन जाता है । गुरु एक ऐसा पारस पत्थर होता है जो अपने स्पर्श में आने वाले शिष्य को सोना नहीं बनाता बल्कि उसे खुद पारस पत्थर में परिवर्तित कर देता है, जिसमें इतनी क्षमता जाती है कि वह जिस लोहे को छू दे वह स्वर्ण बन जाए !

यही गुरु शिष्य परंपरा का रहस्य है !!

इतना कहकर बाबा मेरी ओर देख कर मुस्कुराए मैं भी उनकी बात को समझ कर मुस्कुरा दिया .....

मैं इस घटना को भूल गया और अपने सामान्य कार्यक्रमों में लग गया ......

क्लीनिक जाना और फिर रात को साधना यही नित्य का क्रम था.....

जो लगातार चल रहा था !

हां ! विनोदिनी से मुलाकात भी होती रहती थी । अब कभी कभी वह क्लिनिक मे भी मिलने आ जाती थी । बीच बीच मे मुझे ध्यान लग जाता था और इस बीच में एक बात यह हुई कि बाबा भेरुंडनाथ बीच-बीच में मानस पटल पर स्पष्ट हो जाते थे और कुछ-कुछ प्रक्रियाये बताते थे । जिसमें साधना के दौरान अपनाई जाने वाली कुछ विशेष मुद्राएं भी शामिल थी ।

पूजन के दौरान या साधना के दौरान कुछ मुद्राएं दिखाई जाती है तो उसका प्रभाव बढ़ जाता है । यह मुद्राएं हाथ की उंगलियों के माध्यम से दिखाई जाती हैं । उंगलियों के माध्यम से विशेष प्रकार की आकृतियां बनाई जाती है । जिसमें से एक सामान्य आकृति जो हम सभी यूज करते हैं वह है दोनों हाथ को जोड़कर नमस्कार, यह भी एक मुद्रा है जिसे प्रणाम मुद्रा कहा जाता है। इसके अलावा जब हम पानी हाथ में रखकर चढ़ाते हैं तो वह अंजलि मुद्रा है । इसी प्रकार से अनेक प्रकार की मुद्राएं

हैं और उनका प्रयोग साधना के दौरान अलग-अलग प्रकार के प्रक्रम में किया जाता है ।

मंदिर वाले प्रकरण को लगभग 20 दिन हो गए होंगे ...जब दोपहर के लगभग बारह बजे के आसपास बाबा जी एक शिष्य बदरी के साथ मेरे क्लीनिक में आए और सीधे उन्होंने आकर मेरे चरण स्पर्श किए ।
उस समय मेरे पास दो पेशंट बैठे हुए थे ।
वह भी आश्चर्यचकित हुए कि यह क्या हो रहा है ?
यह डॉक्टर है कि बाबा है ?
क्योंकि बाबा जी ने आते ही प्रणाम गुरुदेव का नारा लगाया और उसके बाद चरण स्पर्श किए ।
मैंने उन्हें थोड़ी देर रुकने के लिए कहा और पहले दोनों पेशेंट को दवाई देकर विदा किया ।
उसके बाद बाबा से उनका हालचाल पूछा तो बाबा बोले - गुरुदेव ! आपने जो विधि बताई थी मैंने बिल्कुल वैसा ही किया और माई ने कल रात को दर्शन दिए ....
मैं धन्य हो गया.....
मेरा जीवन सफल हो गया !

मेरी साधना सफल हो गई !

मैं आपका सदैव ऋणी रहूंगा ।

उनकी बात सुनकर मुझे भी बड़ी खुशी हुई क्योंकि यह पहला अवसर था जब मैंने किसी को साधना के विषय में कुछ बताया था और उसका बेहद सुखद परिणाम सामने आया था । महामाया ने स्वयं उन को दर्शन दिए यह सुनकर मैं रोमांचित हो गया ।

बाबा अत्यंत उत्साहित थे और बोले - गुरुदेव , गुरु दक्षिणा के रूप में मैं कुछ आपको भेंट करना चाहता हूं ।

मैंने उन्हें काफी देर तक मना करने की कोशिश की लेकिन वे नहीं माने ।

अंत मे बोले - मैं आपके पिता की आयु का हूं । एक बुजुर्ग आदमी की इच्छा का सम्मान रखना चाहिए ।

यानी कुल मिलाकर उन्होंने अपने सारे दांव आजमा लिए और आखिर में मुझे समर्पण करना ही पड़ा और मैं उनकी भेंट लेने के लिए राजी हो गया ।

उनके पास था एलुमिनियम का एक बक्सा ठीक वैसा जैसे स्कूल ले जाने के लिए बच्चे इस्तेमाल करते हैं

। लगभग डेढ़ फीट लंबा और 1 फीट चौड़ा 6 इंच ऊंचा ...
जिसके ऊपर रस्सी चारों तरफ से बंधी हुई थी ।

उसे मुझे सौंपने के बाद बाबा ने फिर से चरण स्पर्श किए और कहा - आप इसे मेरे जाने के बाद ही खोलना , मेरी प्रार्थना है कि आप इसे स्वीकार करना । अब मेरे पास कोई रास्ता नहीं था तो मैंने सहमति में सिर हिला दिया । उनके जाते ही फिर कुछ पेशेंट आ गए और वह डब्बा वही बगल में रखा रहा ।
सारे लोगों के जाने के बाद क्लीनिक बंद करके जब मैं अपने कमरे की ओर जा रहा था तब फिर से मेरा ध्यान उस बक्से पर गया । मैंने उसे भी अपने साथ ले लिया और सोचा कि इसे अपने कमरे में ले जाकर खोलूंगा ।

डब्बा काफी भारी था ऐसा लगता था जैसे कोई भारी चीज उसके अंदर रखी हुई हो । कमरे में पहुंचने के बाद मैंने उस डब्बे को खोल कर देखा तो मेरी आंखें भीग गई.....
क्योंकि उसके अंदर में मौजूद थे मेरे आराध्य महादेव का विग्रह......

साक्षात शिवलिंग जो सफेद रंग के किसी पदार्थ का बना हुआ दिखाई दे रहा था .....

उसे देख कर मैं मंत्रमुग्ध होता हुआ खड़ा था तभी मेरे मानस पटल पर बाबा भैरुंडनाथ की आकृति स्पष्ट हुई और उन्होंने कहा - डॉक्टर । यह पारद शिवलिंग है जो बाबा को उसके गुरुदेव ने प्रदान किया था । यह आगे तुम्हारे साधनाओं में काम आएगा । महाविद्या साधना करते समय पारद शिवलिंग की उपस्थिति उसकी स्थापना तथा पूजन करने से बेहतर परिणाम मिलते हैं । अभी एक महीने तक तुम मंदिर की तरफ मत जाना । आज 12 तारीख है, अगली 12 तारीख को तुम जा सकते हो । तब तक इस पारद शिवलिंग को अपने पूजा स्थान में स्थापित करके साधना संपन्न करते रहो । इतना कह कर वे विलुप्त हो गए ।

तांत्रिक पोटली

मेरी समझ में यह बात नहीं आई कि मंदिर क्यों नहीं जाना है .... लेकिन आदेश था तो उसका पालन तो करना ही था । अगले 1 महीने तक मैं मंदिर नहीं गया और उसके बाद जब मैं मंदिर पहुंचा तो मुझे पता चला कि एक हफ्ता पहले बाबाजी परलोक सिधार चुके हैं, और उनके स्थान पर दूसरा पुजारी वहां पर आ चुका है । मैं उससे मिलने गया । वह उसी बाबा की कुटिया मे बैठा था । उसने मुझसे मेरा नाम पूछा तो मैंने बताया । उसने मुझे रुकने के लिए कहा और कमरे के अंदर गया और वहां से एक पोटली लाकर मुझे दी जिसके ऊपर मेरा नाम लिखा हुआ था ।

मैंने उससे पूछा कि यह क्या है तो वह बोला - बाबा जी ने मरने से पहले मुझसे कहा था कि मेरे जाने के बाद मुझसे मिलने आने वालों का नाम पूछ लेना । मैंने कुछ लोगों के नाम से पोटली बनाई हुई है, अगर उसमें से कोई नाम होगा तो वह उसकी अमानत है उसे दे देना । इसमें रखा हुआ सामान उन्होंने आप के लिए दिया है ।

अब मुझे समझ में आया कि बाबा भैरवनाथ ने मुझे एक महीने तक वहां आने के लिए मना क्यों किया था ..... संभवत: बाबा के प्राण माई के दर्शन के लिए अटके हुए थे ।

इन सारी बातों के विषय में सोचते सोचते मैं उस पोटली को लेकर घर आ गया । घर आने के बाद मैंने उस पोटली को खोल कर देखा तो उसके अंदर बड़ी विचित्र विचित्र प्रकार की चीजें रखी हुई थी । जिसके विषय में मुझे बाद में बाबा भैरुंडनाथ ने बताया । उसमें करीब 5 हत्था जोड़ी , 3 - 4 सियार सिंगी, साही का कांटा,बघनखा और बिल्ली की जेर जैसी कुछ विचित्र चीजें भी शामिल थी ।

बाबा भैरुंडनाथ ने हत्था जोड़ी के विषय में बताया कि हत्था जोड़ी एक दुर्लभ पौधे की जड़ है जो व्यवसाय में अनुकूलता प्रदान करती है अर्थात धन आगमन का मार्ग खोलती है । इसके लिए इसे सिद्ध करने के बाद अपने गल्ले में या पूजा स्थान में रखना पड़ता है ।

उन्होंने एक और बात बताई कि अगर हत्था जोड़ी साधक को या उसे रखने वाले को सूट करता है तो

उसकी लंबाई अपने आप बढ़ने लगती है। अगर ऐसा होता है तो उसका प्रभाव 100 गुना बढ़ जाता है, ऐसा दुर्लभ स्थिति में होता है, लेकिन होता है।

सियार सिंगी के विषय में भी उन्होंने बताया कि सियार के झुंड मे से किसी किसी सियार के माथे पर इस प्रकार से गूमड जैसी आकृति निकलती है, जो सींग जैसी होती है और बाद में वह झड़ जाती है इसे ही सियार सिंगी कहा जाता है। इसके बीच में एक गोल आकृति सी होती है जिसमें से बाल निकले हुए होते हैं। यह कुछ-कुछ किसी कुत्ते की पूंछ के आखिरी हिस्से की तरह दिखाई देते हैं। इसके बाल अपने आप बढ़ते हैं। सियार सिंगी को सिंदूर की डिबिया में डाल कर रखते हैं। असली सियार सिंगी होने पर एक डेढ़ महीने के बाद उसे निकाल कर देखेंगे तो उसके बाल लंबे लगेंगे। अगर साल भर बाद निकाल कर देखेंगे तो स्पष्ट फर्क नजर आएगा कि वास्तव में सियार सिंगी के बाल लंबे हो गए हैं।

सियार सिंगी भी एक रहस्यमय तांत्रिक वस्तु है। जो व्यापार वृद्धि से लेकर वशीकरण तक..... बहुत सारे

काम में साबर मंत्रों के साथ प्रयोग किए जा सकते हैं और बेहद जल्दी प्रभाव डालती है ।

उनसे पूछा - बाबा इसका क्या करना है ?

वे बोले - तुझे बहुत सारे लोगों की सहायता करनी है , किसी समस्या से ग्रस्त व्यक्ति को अगर इसकी आवश्यकता लगेगी तो उसे दे देना ।

मैंने पूछा - मुझे कैसे पता लगेगा ।

बाबा ठठाकर हंसे और बोले - जैसे अभी पता चल रहा है, वैसे ही पता चल जाएगा या फिर तुझे अपने अंदर से आवाज आ जाएगी ।

विनोदिनी का आगमन

लगभग चार महीने की साधना पूर्ण हो चुकी थी ... एक दिन अचानक मेरे शरीर में भयानक कामोत्तेजना उठने लगी......

ऐसी इच्छा जो मेरे जीवन में कभी भी उत्पन्न नहीं हुई थी । ऐसा लग रहा था कि उस समय किसी स्त्री के साथ संसर्ग करना अनिवार्य है ....

रात का समय था, लगभग ग्यारह बजे के आसपास हो चुका था और उस समय किसी के आने के विषय में सोचना भी संभव नहीं था ....

मेरा मंत्र जाप जारी था, जो मुझे रात के एक बजे तक करना था ....

मैं मंत्र जाप करता हुआ बैठा था !

मेरा शरीर पूरा तनाव की अवस्था में था ।

उस समय में मन में केवल वही विचार ही घूम रहा था ।

मुझे अजीब लग रहा था !

काम को अध्यात्म की बाधा माने जाने वाला भाव मेरे अंदर भी था ....

इसलिए मुझे थोड़ी शर्मिंदगी भी महसूस हो रही थी कि मंत्र जाप के बीच यह कैसा विकार उत्पन्न हो रहा है .....

इसके बावजूद मैंने अपना मंत्र जाप पूरा किया । साधकों को खासतौर से गृहस्थ साधकों को यह ध्यान रखना चाहिए कि, अगर साधना के बीच में इस प्रकार की कोई स्थिति आ जाए, तब भी मंत्र जाप का जो संख्या उन्होंने निर्धारित किया हुआ है, वह उन्हें पूर्ण करना ही चाहिए ।

किसी प्रकार से उस दिन का मंत्र जाप मैंने एक बजे पूर्ण किया और अपने बिस्तर पर लेट गया । उत्तेजना नियंत्रित नहीं हो रही थी और मैं बिस्तर में करवटें बदलते हुए लेटा था ....

तभी...

मानस पटल पर बाबा भेरुंड नाथ की छवि उभरी वे बोले - विचलित मत हो ! तंत्र स्त्री और पुरुष के संबंधों को ऊर्जा के एकीकरण के एक माध्यम के रूप मे देखता है । अब तू साधना के पथ पर आगे बढ रहा है । तेरे

जीवन मे भी स्त्री शक्ति भैरवी के रूप मे आएगी और तेरी सहायक बनेगी ।

उनकी बातों को सुनकर मुझे थोड़ी तसल्ली हुई लेकिन यह विचार भी आया कि इस प्रकार की भैरवी कहां से आएगी ?
मन मे विचार आया , मेरे संपर्क मे तो एक ही स्त्री है और वह है विनोदिनी ! कहीं वही तो नहीं ?
तभी......
अचानक दरवाजे को खटखटाने की आवाज आई !
मैं आश्चर्यचकित हो गया ...
क्योंकि....
उससे पहले कभी ऐसा नहीं हुआ था कि कोई मेरे घर में रात के उस समय पर आया हो .....
मैंने हिचकिचाते हुए दरवाजा खोला तो सामने खड़ी हुई थी..... विनोदिनी !
बाहर बारिश हो रही थी और उसके कपड़े भीगे हुए थे .....
विनोदिनी के साथ मेरी मुलाकात होती रहती थी । वह कभी कमार मेरे क्लीनिक भी आ जाती ...

लेकिन यह पहली बार था !

जब आधी रात के बाद वह मेरे घर पर आई थी ...

इसलिए मैं थोड़ा सा आश्चर्यचकित था !

उसकी हालत देखकर ऐसा लग रहा था जैसे कि वह बड़े दूर से दौड़ती भागती आई हो !

उसके चेहरे पर थकान दिख रही थी .....

उसके कपड़े भीगे हुए थे जिसमें से उसके शरीर के सारे कटाव दिखाई दे रहे थे .....

उस समय जो मेरी अवस्था थी उस अवस्था में उसके उस मादक स्वरुप ने आग में घी डालने का काम किया ....

उसके भीगे कपड़ों के अंदर से लगभग सब कुछ दिख रहा था ....

मैं दरवाजा खोलकर उसे देखता हुआ अवाक खड़ा था ।

वह मुझे लगभग धकेलते हुए अंदर आ गयी ....

तब मुझे होश आया और फिर मैंने दरवाजा बंद किया ।

वह थर थर काँप रही थी....

दरवाजा बंद करते ही वह मुझसे लिपट कर फफक पड़ी..... मैंने भी उसे जकड़ लिया .....

मैंने उससे पूछा - क्या हुआ ?

उसने कोई जवाब नहीं दिया ! वह अब भी सिसक रही थी ...

उसके कपड़े फटे हुए थे !

कोहनी छिली हुई दिख रही थी और माथे पर भी चोट के निशान देख रहे थे ।

उसे देख कर मैं काम भाव से बाहर निकला और थोड़ा संतुलित हुआ । उसे अपने से परे किया उसकी आँखें पोंछी और उसे बैठने के लिए कहा !

उसके बाद मैंने उसे पानी पिलाया तब तक वह थोड़ा शांत हो गई ।

मैंने उससे पूछा - क्या हुआ ?

उसने बताना चालू किया - मैं , जब भेल बेचकर घर जा रही थी, तब कुछ लोगों ने मुझे एक वेन में खींच लिया । वे मुझे कहीं ले जाने की फिराक में थे । जब वे तुम्हारे क्लीनिक के बगल वाले रास्ते से जा रहे थे तभी उनके वैन का एक टायर पंचर हो गया ।

वह मुझे गाड़ी मे बैठकर उसे बदलने मे लगे हुए थे, तभी मैं किसी प्रकार उस गाड़ी से बच कर भाग निकलने में कामयाब हो गई ।

उसके बाद छुपते छुपाते किसी प्रकार मैं तुम्हारे मेरे क्लीनिक तक पहुंचने में सफल हो गई ।
मैंने उसे कपड़े बदल लेने के लिए कहा और उसे अपने कपड़े का एक सेट और तौलिया निकाल कर दिया ।
उसे लेकर वह बाथरूम मे चली गई !
थोड़ी देर में वह कपड़े बदल कर आ गई और जैसा कि मैंने कहा था कि मेरी हालत बहुत खराब थी और उत्तेजना चरम पर थी ..
लेकिन उसकी इस अवस्था को देखकर मैं शांत हो गया था !
कुछ खाना बचा हुआ था , वह निकाल कर मैंने उसे दिया । उसने जल्दी-जल्दी भोजन किया और उसके बाद मैं दो कप चाय बना कर ले आया और उसे कहा कि वह शांत हो जाए और चिंता ना करें । सुबह मैं उसे घर पहुंचा दूंगा ....
हम लोगों ने दोनों ने चाय पी और उसके बाद बिस्तर पर एक सिरे पर मैं और दूसरे सिरे पर वह सो गई .....
वह मेरे हाथ को पकड़ कर लेटी हुई थी ....

मैं एक हाथ से उसके सिर को सहला रहा था .... थोड़ी देर मे खर्राटों की आवाज आने लगी और वह नींद के आगोश में चली गई ।

मेरी हालत फिर से पहले जैसी हो गई थी और मैं अत्यंत काम उत्तेजित अवस्था में आ गया था ।

मैं उसके साथ कुछ भी नहीं करना चाहता था लेकिन मेरा शरीर मेरा साथ नहीं दे रहा था !

मैं अंदर ही अंदर सुलग रहा था !

काफी देर तक अपने आप को नियंत्रित करने का प्रयास करता रहा लेकिन अपने आप को नियंत्रित नहीं कर पाया !

जब मुझे कुछ नहीं सूझा तो मैं उठकर बाथरूम मे चला गया और ठंडे पानी को अपने ऊपर डाल कर वहीं थोड़ी देर बैठा रहा........

थोड़ी देर बैठने के बाद जब मुझे थोड़ी शांति का आभास हुआ तो मैं अपने शरीर को पोछने के बाद बाहर निकला ......

मुझे एहसास हुआ की अब स्थिति नियंत्रण में है । मैं भी अपने बिस्तर पर लेट गया !

विनोदिनी बड़े आराम से सो रही थी !

नींद में उसका मासूम चेहरा बहुत खूबसूरत दिखाई दे रहा था !
मैं कुछ देर तक उसको देखता रहा !
वह मेरे लिए काफी जटिल परीक्षण था । लेकिन क्योंकि इस प्रकार की स्थितियों से पहले भी गुजर चुका था इसलिए महामाया की कृपा से नियंत्रण बना रहा । हां यह जरूर था कि उस रात मुझे तीन बार नहाना पड़ा ....
जैसे तैसे सुबह हुई ।
घर वालों में उसके इस प्रकार से गायब हो जाने को लेकर चिंता अवश्य होगी यह सोचकर मैंने सबसे पहला काम यही किया कि नहाने धोने के बाद उसे उसके घर तक पहुंचा दिया और फिर वापस आकर अपना क्लीनिक खोला ।
पेशेंट का आना-जाना लगा रहा और उसके बीच में मैं विनोदिनी के बारे में सोचना भी भूल गया ।
जब क्लीनिक बंद करके अपने कमरे में जाकर बैठा तो मुझे फिर उसकी याद आई ।
उसके साथ हुए घटनाक्रम के बारे में सोच कर मेरे शरीर में सिहरन दौड़ गई ....

आप स्वयं कल्पना करें कि जब ऐसा होता होगा तो उन युवतियों के ऊपर क्या बीतती होगी ।
देश की राजधानी दिल्ली के साल 2017 के आंकड़ों पर गौर करें तो राजधानी से रोजाना करीब 11 लड़कियां गायब हो रही हैं. आंकड़े बताते हैं कि 2017 में 0-8 साल की 213 लड़कियां गायब हुईं. जबकि 8 से 12 साल की 166 लड़कियां लापता हुईं. वहीं 12-18 साल की लड़कियों के गायब होने की संख्या 3536 हो गई. इस उम्र की लड़कियों के गायब होने की संख्या गायब लड़कों के दोगुने से भी ज्यादा है.
कुल मिलाकर हमारे देश में किशोरियों और युवतियों के गायब होने की संख्या काफी ज्यादा है । उसमें से अधिकांश यह माना जाता है कि देह व्यापार में धकेल दी जाती है और उसके बाद उसी दलदल में फंसी रह जाती है । उनको इतना ज्यादा प्रताड़ित किया जाता है और डराया जाता है कि उसके भय से भी वे वहाँ से नहीं निकल पाती । कई बार वे अपने गलत कार्य करने के विषय में सोच कर स्वयं इतने ज्यादा आत्मग्लानि में आ जाती है कि वे अपने घर लौटना भी नहीं चाहती ....

हमारा समाज भी इस मामले में थोड़ा कट्टर है । अगर कोई युवती किसी प्रकार से उस दलदल में से बाहर भी निकल आए तो आस पड़ोस के लोग ताने मार मार कर उसका जीना हराम कर देंगे । इतना ही नहीं हर कोई उसे आसानी से उपलब्ध हो जाने वाली चीज के रुप में देखना प्रारंभ कर देगा और परिस्थितियां बिगड़ती चली जाएंगी .....

इन सब कारणों से पुनर्वास सामान्यतः नहीं हो पाता और वह जिंदगी भर उसी चक्रव्युह में फंसी रह जाती है । काफी देर तक मैं इसी बारे में सोचता रहा उसके बाद स्नान आदि करके अपने मंत्र जाप में लग गया । रात्रि लगभग एक बजे मेरा मंत्र जप पूर्ण हुआ और उसके बाद मैं अपने बिस्तर पर सोने के लिए लेट गया ।

रात के दो बजे फिर मेरे कमरे के दरवाजे पर खटखटाहट हुई !

पहले मुझे लगा मेरे मन का भ्रम है ....

जब दुबारा आवाज आई तो मैंने जाकर देखा तो सचमुच वहाँ विनोदिनी खड़ी हुई थी ।

उसकी आंखें लाल थी !

चेहरा उतरा हुआ था !

ऐसा लग रहा था जैसे बहुत देर से वह रो रही हो । चेहरे में पीड़ा के भाव स्पष्ट दिखाई दे रहे थे ।

मैंने उसे अंदर बुलाया और दरवाजा बंद कर दिया । वह एक कुर्सी पर बैठ गई । मैंने उसे पानी का ग्लास थमाया उसे पीने के बाद उसने बताया कि जब वह शाम को घर पहुंची तो उसके चाचा बहुत खुश हुए । सारी बात सुनकर उन्होने उसे ढाढ़स बँधाया और आराम करने को कहा ।

उस समय उसकी चाची कहीं गई हुई थी । रात को उसके वापस आने के बाद घर में भयंकर घमासान प्रारंभ हो गया । मोहल्ले वालों ने भी कई प्रकार की बातें की और चाची ने चाचा को धमकी दी कि या तो इस घर में यह रहेगी या मैं रहूंगी । चाची पहले भी उसे पसंद नहीं करती थी और उसे पता था कि आने वाले समय में उसकी शादी में काफी पैसा खर्चा होगा, ऐसी स्थिति में यह एक ऐसा मौका लगा था, जिसमें वह आसानी से उसे घर से बाहर कर सकती थी । इस मौके का उसने भरपूर फायदा उठाया और कहा कि जवान

लड़की अगर रात भर घर से बाहर रहे तो उसका मतलब यही होता है कि वह खराब हो चुकी है, और ऐसी लड़की को घर में रखने का मतलब अपनी इज्जत खराब करना है ।

चाची की कमाई से ही घर चलता था ,चाची ने त्रिया चरित्र वाले सारे हथकंडे अपना लिए और आखिरकार चाचा को झुकना ही पड़ा और वह शांत होकर बैठ गए । जिसके बाद चाची ने उसे घर से धक्के मार कर बाहर निकाल दिया । काफी देर तक वह ऊहापोह में फंसी रही । उसके बाद उसने मेरे पास आने का फैसला किया था ।

यह मेरे लिए एक अप्रत्याशित घटना थी !

ऐसी किसी स्थिति के बारे में मैंने सोचा भी नहीं था ।

विनोदिनी के साथ मेरी इतनी आत्मीयता थी कि उसे इस परिस्थिति में मैं अकेला भी नहीं छोड़ सकता था इसलिए मैंने उसे वहीं रहने के लिए कहा ।

किसी भी साधक के लिए जो उच्च्व कोटि की साधना में लीन हो भैरवी शक्ति कहीं ना कहीं से किसी ने किसी से रूप में प्रकट हो जाती है ......

वह उसे साधनात्मक सहयोग प्रदान करके एक निश्चित समय अवधि तक उसके साथ रहती है और उसके बाद चली जाती है.....
यह एक स्वाभाविक स्थिति है, जो लगभग हर उच्च कोटि के साधक के साथ विशेष रुप से तंत्र मार्ग के साधक के साथ अवश्य घटती है ।

यह भी एक वैसी ही स्थिति थी , जो बाद मे मुझे समझ मे आई ।
हम दोनों काफी देर बात करते रहे फिर सो गए ......

विनोदिनी : मेरी भैरवी

ब्रह्ममुहूर्त का समय था जब मेरा कक्ष अचानक चमेली की खुशबू से भर गया। इतनी तेज खुशबू थी । जैसे इत्र की पूरी बोतल खाली कर दी गई हो और उसके बाद बाबा का बिम्ब सामने आया और उन्होंने कहा - विनोदिनी तुम्हारी पूर्वजन्म की भैरवी है । वह अक्षत है । उसके साथ तुम्हें भैरवी साधना सम्पन्न करनी है । इसमे तुम्हें विनोदिनी का अंग पूजन करना है जिसमें इस बात का ध्यान रखना है कि तुम्हारे अंदर किसी प्रकार का विकार नहीं आना चाहिए और ना ही तुम्हें सहवास करना है ।

मैं सोच में पड़ गया क्योंकि जिस प्रकार की मेरी शारीरिक स्थिति हो रही थी ..... उसे देखते हुए मुझे अपने ऊपर नियंत्रण करने के बारे में सोच कर संकोच हो रहा था ......

बाबा ने मेरी समस्या का समाधान करते हुए कहा - बेटा ! तुम विचलित मत हो । जो तुम्हारे साथ घटित हो रहा है, वह स्वाभाविक है, और इस पर तुम नियंत्रण पा लोगे । जब ज्यादा विचलन की स्थिति लगे तो गुरु

को याद कर लेना वह तुम्हें नियंत्रित करने में सहायता प्रदान करेंगे ।

अभी तुम्हारी साढे चार महीने की साधना हो चुकी है पहले तुम्हें आत्म नियंत्रण के लिए प्रयास करना है और उसके लिए एक महीने तक तुम दोनों को एक साथ बैठकर छिन्नमस्ता साधना करनी है .... वह भी दिगंबर अवस्था में ......

जिससे तुम्हारे अंदर आने वाले विकार धीरे-धीरे नियंत्रित होने लगेंगे और जब तुम्हें लगे कि तुम अब स्वयं को नियंत्रित कर सकते हो और विनोदिनी को भी लगे कि वह स्वयं को नियंत्रित कर सकती है तब तुम्हें भैरवी साधना संपन्न करने के प्रथम चरण की ओर बढ़ना है और उसके बाद उन्होंने मुझे उसके बारे में विस्तार से बताया और लुप्त हो गए ।

चमेली की तेज खुशबू की वजह से विनोदिनी भी उठ चुकी थी ......

उसने मुझसे पूछा - इतनी तेज खुशबू कहां से आ रही है तो मैंने उसे विस्तार से सारी बातें बताई और अपनी छिन्नमस्ता साधना के विषय में भी बताया ।

यह सारी बातें सुनकर वह आश्चर्यचकित हो गई और मुझे अविश्वास भरी नजरों से देखने लगी ।

मैंने उसे बताया कि अभी जो तुमने खुशबू महसूस की थी वह बाबा भेरुंडनाथ की उपस्थिति की वजह से आ रही थी और उन्होंने ही यह सारी जानकारी दी है ।

वासना के आवेग में धीरे धीरे कपड़े उतर जाते हैं और स्त्री और पुरुष को उसकी जानकारी नहीं होती.....

इसलिए वह प्रक्रिया सहज होती है ।

लेकिन सामान्य परिस्थिति मे किसी के भी सामने निर्वस्त्र होकर बैठना पुरुष के लिए भी मुश्किल होता है और किसी स्त्री के लिए तो वह बेहद मुश्किल होता है......

यहाँ तक कि आपकी विवाहित पत्नी भी इसमें संकोच करती है ।

इस स्वाभाविक प्रवृत्ति की वजह से विनोदिनी को शर्म आ रही थी और वह बोल उठी - मैं ऐसा कैसे कर सकती हूं ?

मैं भी उसकी स्थिति को समझ रहा था तो मैंने कहा - अगर तुम्हें मेरे उस प्रकार से बैठने पर एतराज ना हो तो तुम कपड़े पहन कर बैठ सकती हो । धीरे-धीरे जब तुम्हें ठीक लगे तब हम दिगंबर होकर साधना कर लेंगे ......

क्योंकि मैं दिगंबर अवस्था में ही साधना कर रहा था ।
यह बात उसे थोड़ी अटपटी लगी......
मगर पहले से बेहतर और स्वीकार करने लायक लगी !
तो उसने थोड़े संकोच के साथ इसे स्वीकार कर लिया ।
मैंने एक कागज पर उसे मंत्र लिखकर दे दिया और फिर हमारा मंत्र जाप चालू हो गया ।
एक-दो दिन तक दोनों को झिझक रही .....
उसके बाद धीरे-धीरे झिझक हटती गई ।
जब साधक साधिका एक साथ बैठकर मंत्र जाप करते हैं तो उसका प्रभाव बढ़ जाता है । इसलिए सभी प्रकार के पूजन में पति पत्नी को एक साथ बैठाकर पूजन संपन्न करवाया जाता है ।
सामूहिक मंत्र जाप का भी प्रभाव सामान्य मंत्र जाप से ज्यादा होता है । इसलिए कई प्रकार के विशेष कार्यों में सामूहिक अनुष्ठान संपन्न किए जाते हैं ।
कई अवसरों पर आपने देखा होगा कि बहुत सारे लोग मिलकर किसी विशेष मंत्र का एक साथ जाप करते हैं या कोई विशेष स्तुति एक साथ एक ही स्वर में उच्चरित करते हैं !
इससे उसका प्रभाव कई गुना बढ़ जाता है ।

मैंने डोम बाबा से सवाल किया - तो क्या बाबा स्त्री और पुरुष अकेले साधना नहीं कर सकते हैं ? क्या इससे सिद्धि प्राप्त नहीं हो सकती है ?

डोम बाबा मुस्कुराये और बोले - ऐसा नहीं है । हर पुरुष के अंदर स्त्री होती है और हर स्त्री के अंदर एक पुरुष होता है । क्योंकि वे दोनों ही स्त्री और पुरुष के कोशिकाओं के मिश्रण से बने हुए हैं । जब आप अकेले साधना करते हैं तो शरीर के अंतर्निहित वह तत्व जागृत होने लगता है और उसके बाद साधनाओं में सिद्धियां भी प्राप्त होती है लेकिन यह थोड़ी सी लंबी प्रक्रिया है । हां ! इसमें यह बात अवश्य है कि विचलन की संभावनाएं भी कम होती है ....

गृहस्थ तथा समाज में रहने वाले लोगों के लिए एकल साधना ज्यादा उपयुक्त है ।

लेकिन वे लोग जो साधना के क्षेत्र में अपना जीवन समर्पित कर चुके हैं, वह युगल साधनाओं से जल्दी अपने लक्ष्य की ओर बढ़ने में सफल हो सकते हैं ।

मैंने कहा - थोड़ा और विस्तार से बताएं ।

डोम बाबा ने बात को आगे बढ़ाते हुए कहा - यह संपूर्ण विश्व शिव और शक्ति के मिलन से बना हुआ है । जो

काली की फोटो हम देखते हैं उसमें हमें महाकाली भगवान शिव की छाती पर पैर रखे हुए दिखाई देती है .....

कथानक की दृष्टि से देखें तो ऐसा बताया जाता है कि, जब महाकाली असुरों के संहार के लिए प्रत्यक्ष हुई थी तो वह असुरों का संहार करते करते क्रोधित होते हुए अत्यंत संहारक स्वरूप में आ गई थी । वे नियंत्रित नहीं हो रही थी और सम्पूर्ण सृष्टि के विध्वंस का भय होने लगा था ...
तब....
उनके सामने भगवान शिव लेट गए थे और उनके शरीर पर स्पर्श होते ही वह शांत हो गई थी ....
इतना कहकर बाबा रुके और बोले - इसका एक प्रतीकात्मक अर्थ भी है !

संभवतः आप सभी ने भी महाकाली के चित्र को देखा होगा जिसमें वह भगवान शिव के वक्षस्थल पर एक पांव रखकर खड़ी हुई है । इसके विषय में कथा मैंने भी सुन रखी थी । इसलिए मैं उसे ही सही मानता था । अब डोम बाबा किसी प्रतीकात्मक अर्थ की बात कर रहे

थे जो मेरी समझ में नहीं आई तो मैंने उन्हें प्रश्नवाचक निगाहों से देखा ?

वे बोले - बेटा ! हमारे प्राचीन मनीषियों ने बहुत सारी बातें प्रतीकात्मक रूप से कही है । जिन का अर्थ समझना भी कई बार जटिल हो जाता है । यह भी एक ऐसा ही विषय है । शिव इस संसार की क्रियात्मक शक्ति है अर्थात इस संसार में जो भी घटित हो रहा है उसके पीछे उनका ही हाथ है । शिव और शव के बीच में केवल एक अक्षर का फर्क है या एक मात्रा का फर्क है ।

शव = श + व

शिव = श + ई + व

यह ईकार वह शक्ति है जो एक शव को शिव बना सकती है ।

इतना कह कर उन्होंने मुझे प्रश्नवाचक दृष्टि से देखा, जैसे पूछ रहे हो कि बात समझ में आ गई क्या ?

जैसे आप लोगों को यह बात समझ में नहीं आई......
ठीक वैसे ही मुझे भी बात समझ नहीं आई ।

मेरी आदत है कि जब मुझे कुछ समझ में नहीं आती तो मैं निसंकोच उसको पूछ लिया करता हूं । कई बार हम संकोच में गुरु से या अपने वरिष्ठ से सवाल नहीं पूछते हैं । मेरा अनुभव है कि अगर आप सवाल पूछते रहे तो आपको चीजों के विषय में ज्यादा स्पष्ट जानकारी भी होगी । आपका मानस और विचार भी उसको ज्यादा बेहतर ढंग से समझने और समझाने में सक्षम हो पाएगा ।

मैंने पूछा - बाबा आपकी बात मैं समझ नहीं पाया कि इकार लगा देने से शव, शिव कैसे हो जाएगा ?

डोम बाबा मेरी बात सुन कर मुस्कुराए बोले - अघोरानंद ! बेटा शव एक स्थिर वस्तु है जो अपने आप नहीं हिल सकती, यानी उसके अंदर किसी प्रकार की गति नहीं है । यह संपूर्ण संसार गति के कारण चल रहा है । अगर तुम देखो तो जीवन का मूल तत्व पृथ्वी पर दिन रात का होना है । तुम ही बताओ दिन और रात कैसे होते हैं ?

मैंने कहा - पृथ्वी अपनी धुरी पर घूमती है, जिससे उसका एक हिस्सा सूर्य की तरफ जाता है और दूसरा हिस्सा उसके विपरीत जाता है । उसके घूमने से पीछे

का हिस्सा जब सामने आ जाता है तो दिन हो जाता है और सामने का हिस्सा जब पीछे जाता है तो रात हो जाती है ।

डोम बाबा बोले - तुम कल्पना करो कि पृथ्वी अपनी धुरी पर घूमना बंद कर दे तो क्या होगा ?

मैंने कहा - एक हिस्से में हमेशा दिन रहेगा दूसरे हिस्से में हमेशा रात रहेगी ।

डोम बाबा बोले - क्या ऐसी स्थिति में पृथ्वी पर जीवन संभव हो पाएगा ?

यह एक ऐसा सवाल था जिसका जवाब मैं तुरंत नहीं दे पाया । मुझे लगा कि एक तरफ दिन चलता रहेगा और दूसरी तरफ रात होगी अब इससे जीवन पर क्या फर्क पड़ेगा ? तो मैंने कहा - हां बाबा ऐसी स्थिति में भी जीवन तो संभव होगा ।

बाबा बोले - नहीं ! ऐसी स्थिति में संपूर्ण पृथ्वी से जीवन समाप्त हो जाएगा । सूरज की किरणें जब पृथ्वी पर आती हैं तो वे अपने साथ उष्मा भी लेकर आती हैं जिसकी वजह से पृथ्वी का तापमान बढ़ता रहता है ।

यह बढा हुआ तापमान रात में वापस वायुमंडल में से होता हुआ अंतरिक्ष में विलीन हो जाता है । यही क्रम लगातार चलता रहता है जिसकी वजह से पृथ्वी का तापमान हमारे जीवित रहने के लायक बना रहता है ।
यदि पृथ्वी स्थिर हो जाये तो जिस तरफ़ दिन रहेगा, उधर का तापमान लगातार बढ़ता रहेगा और वह तापमान इतना ज्यादा हो जाएगा कि वहां के सारे जीव समाप्त हो जाएंगे । यहां तक की वनस्पतियां भी समाप्त हो जाएंगी ।
इसके ठीक विपरीत जिस तरफ रात होगी...... वहां का तापमान धीरे-धीरे गिरता जाएगा और वहां बर्फ जमने लगेगी ।
ठीक वैसे ही जैसे हमारे दोनों ध्रुवों पर जमती है ....
वैसी स्थिति में वहां भी जीवन धीरे-धीरे समाप्त हो जाएगा ।

उनकी यह बात सुनकर मुझे थोड़ा अजीब तो लगा !
लेकिन उनकी बात में दम था ।

वे आगे बोले - इसका मतलब गति के बिना जीवन संभव नहीं है ।

मैंने कहा - हाँ !

वे आगे बोले - ठीक वैसे ही मानव है , अगर उसमें गति नहीं है तो वह शव है । जब उसके अंदर जीवन की गति आती है तो वह शिव बनता है और जीवन की यही गति महाकाली है ! यही शक्ति महाकाली है । इसलिए कहा गया है कि

शक्ति के बिना शिव भी शव है ।

शक्ति के साथ शिव सब कुछ करने में समर्थ हैं, लेकिन शक्ति के बिना शिव स्पन्दन भी नहीं कर सकते ।

मैंने कहा - लेकिन यह तो भगवान शिव के विषय मे कहा गया है ....

वे मुस्कुराए और बोले - बेटा । सनातन धर्म का यह मानना है कि इस सृष्टि में उपस्थित हर पुरुष शिव का और हर स्त्री शक्ति का स्वरूप है । इसके विषय में शिव पुराण में लिखा गया है कि :-

शंकर: पुरुषा: सर्वे ।
स्त्रिय: सर्वा महेश्वरी ॥

अर्थात्- समस्त पुरुष भगवान सदाशिव के अंश और समस्त स्त्रियां भगवती शिवा की अंशभूता हैं, उन्हीं भगवान अर्धनारीश्वर से यह सम्पूर्ण चराचर जगत् व्याप्त हैं ।

अर्थात तुम भी शिव हो मैं भी शिव हूं इसीलिए तो कहा जाता है ....

शिवोऽहम ...... शंकरोऽहम

मैं उनकी बातों को सुनकर अभिभूत हो रहा था ....

डोम बाबा से चर्चा के दौरान इस प्रकार से कई जानकारियां मिलती रहती थी जो कालांतर में साधना में भी सहायक हुई और तंत्र साधना के रहस्य और देवी-देवताओं के स्वरूप को समझने में भी सहायक हुई । डोम बाबा ने दो सिगरेट निकाली उन्हें जलाकर उसमें से एक मुझे दी और एक खुद लेकर कश लगाने लगे । उस समय उनकी आंखें शुन्य में स्थिर हो गई थी ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे वह अपने अतीत में चले गए हो और जब सिगरेट खत्म हुई तो उन्होंने अपनी बात आगे बढ़ाई और कहा - दिगंबर साधना मे साधक साधिका दोनों को आमने-सामने बैठकर मंत्र जाप करना होता

है..... लेकिन शुरु में हम अगल बगल में बैठकर मंत्र जाप करते रहे। बीच-बीच में पुरुष सुलभ जिज्ञासा वश मेरी नजर उस पर पड़ जाती थी !

वह अधिकांश समय आंख बंद करके मंत्र जाप करती रहती थी !

शुरुआत थी .....

इसलिए बीच-बीच में वह झपकी भी मार देती थी !

कई बार मेरे ऊपर गिर जाती थी !

फिर संभल कर मंत्र जाप करना प्रारंभ कर देती !

उसका इस प्रकार नींद मे गिरना मेरे अंदर और विकार पैदा कर देता था ....

लेकिन धीरे-धीरे मुझे अपने ऊपर नियंत्रण महसूस होने लगा ......

इस प्रकार से बैठते बैठते हम काफी कंफर्टेबल हो चुके थे।

लगभग 1 हफ्ते के बाद उसने मेरे सामने बैठना चालू कर दिया .....

इस प्रकार से बैठने से बीच-बीच में हमारी नजरें आपस में टकरा जाती थी और दोनों सकपका जाते और अपनी नजरें हटा लेते थे।

लेकिन मंत्र जाप उसी प्रकार से चलता रहा और दो-चार दिन में उस स्थिति में भी हम लोग कंफर्टेबल हो गए । हम एक दूसरे को देखते हुए भी मंत्र जाप कर लेते थे ......

निर्वस्त्र विनोदिनी

लगभग पंद्रह दिन के बाद एक रात विनोदिनी दिगंबर अवस्था में अपने आसन पर आकर बैठ गई ! उसे देखकर मेरी स्थिति बहुत ज्यादा खराब हो गई थी ! किसी स्त्री को इस प्रकार से देखने का और इतने करीब से देखने का यह मेरा पहला अवसर था !

यदि आप देखें तो मनुष्य के जीवन का विशेष रुप से पुरुष के जीवन का सबसे बड़ा आकर्षण स्त्री है और क्योंकि यह मैथुनी सृष्टि है !

इसलिए स्त्री और पुरुष के बीच का यही आकर्षण जीवन का मूल माना जाता है ।

प्राचीन कथाओं में ऋषि मुनि भी जब साधना करते थे, तो उनको विचलित करने के लिए देवराज इंद्र के द्वारा अप्सराएं भेजने की बात कई जगह पर आती है । यानी यह आकर्षण प्राचीन काल से मौजूद रहा है !

और आज भी मौजूद है !!

आने वाले समय में भी मौजूद रहेगा !!!

स्त्री और पुरुष के इस स्वाभाविक आकर्षण को जितना दबाने की कोशिश की जाती है, वह उतना ही ज्यादा विकृत रूप ग्रहण करता है । संभवतः इसीलिए स्त्री

और पुरुष को एक साथ रखकर इस विकार पर नियंत्रण पाने की तकनीक तंत्र साधना में विकसित की गई होगी । उसी प्रक्रम में खजुराहो जैसे मंदिरों में युगल मूर्तियां विभिन्न मुद्राओं में बनाई होगी ऐसा मुझे प्रतीत होता है ।

खैर.....

निर्वस्त्र अवस्था में उसे देखने के बाद मेरी उत्तेजना की कोई सीमा नहीं थी ! विवाहित पुरुष विवाह के प्रारंभिक दिनों में अपनी अवस्था की कल्पना करके इस विकार की तीव्रता को समझ सकते हैं......

विचलन स्वाभाविक था और वह हो रहा था ....

सामने में उपस्थित था किसी भी पुरुष के लिए सबसे ज्यादा विचलित करने वाला आकर्षण एक निर्वस्त्र स्त्री......

मेरे सामने आंखें बंद करके बैठी हुई थी......

निर्वस्त्र विनोदिनी......

जिसे मैंने बिना कपड़ों के कभी नहीं देखा था !

अगर सच कहूं तो किसी भी स्त्री को बिना कपड़ों के नहीं देखा था !

इसी बात से आप मेरी स्थिति का अंदाजा लगा सकते हैं ....

एक पूर्ण यौवन वाली युवती जिसके बाल बिखरे हुए थे और उसके कंधों तक आ रहे थे........

वह आंखें बंद करके मेरे सामने बैठी हुई थी !

उसके उन्नत वक्षस्थल मुझे आमंत्रित करते हुए प्रतीत हो रहे थे !

उसकी पतली कमर और विस्तृत जघन क्षेत्र ......

सब कुछ मुझे किसी विस्मयकारी संसार जैसा लग रहा था.....

जिसमें मैं डूब जाना चाहता था !

उस समय की मेरी आयु के हिसाब से ऐसा विचार आना स्वाभाविक भी था ......

जब बहुत ज्यादा मन विचलित होने लगा तो मैंने बाबा के निर्देश को याद करके गुरुदेव का ध्यान किया .....

गुरु मंत्र जाप किया ....

जिससे मुझे काफी सहायता मिलती....

मन शांत होने लगा .....

मैं थोड़ा नियंत्रित हुआ !

बार बार यही स्थिति बनती रही ...
पूरे साधना काल में मेरी शरीर की स्थिति उत्तेजित ही रही ।

विनोदिनी के लिए भी वह पहला अवसर था !
पुरुष की तुलना में किसी स्त्री के लिए इस प्रकार बैठना ज्यादा कठिन होता है, इसलिए उसके चेहरे पर लाली साफ दिखाई दे रही थी ।
वह पूरे समय अपनी आंखें कस कर बंद किए बैठी रही !
कभी कभार उसकी आंखें खुलती और संयोगवश उस समय मेरी आंखें भी खुली रहती तो हमारी आंखें टकरा जाती !
उसके चेहरे की लाली और बढ़ जाती ......
वह शरमाकर अपनी आंखें और कस कर बंद कर लेती .....
जिसके बाद मैं भी यथासंभव अपनी आंखें बंद करके बैठे रहने की कोशिश करता ....
लेकिन तीव्र इच्छा उठती थी और फिर मैं आंखें खोलकर उसे निहारने लग जाता था ।

इस सबके चलते मेरी उत्तेजना चरम पर पहुंच चुकी थी ....

मैंने स्वयं को किसी प्रकार जाप करते समय नियंत्रित रखा .....

जो चीजें हम दिन में महसूस करते हैं या जागते हुए महसूस करते हैं या जिसके विषय में सोचते हैं वह रात में स्वप्न में हम जी लेते हैं । स्वप्न अवचेतन मन की उपज है जिसकी जड़ें हमारी अपनी गतिविधियों में होती है । उस रात को संभवतः कोई उत्तेजक कल्पना मन में आई होगी और उस रात सोते सोते मुझे स्वप्नदोष हो गया ।

जैसे ही मुझे स्वप्नदोष हुआ !

मेरी आंखे खुल गई !!

मुझे अपने ऊपर शर्म आने लगी कि मैं इतनी उच्चस्तरीय साधना करते हुए भी इस प्रकार से विचलित हो रहा हूं ।

उसके बाद मैं सो नहीं पाया.....

मेरे मन में वही चिंतन चलता रहा .....

कि मुझसे गलती हो गई ......

पाप हो गया ......

मेरे इतने दिनों के प्रयास बेकार हो गए ......

मेरी साधना खंडित हो गई ।

अब कहीं देवी मुझे दंडित तो नहीं करेंगी ......

अब मैं क्या करुं ?

आदि आदि ...

इसी ऊहापोह मे जागता रहा ....

आत्मनियंत्रण का प्रयास

ब्रह्म मुहूर्त में बाबा भेरुंड नाथ की छवि मानस पटल पर फिर से स्पष्ट हुई और उन्होंने दिलासा देते हुए कहा - प्रारंभिक स्थिति में ऐसा हो जाता है ! लेकिन आत्म नियंत्रण का प्रयास करो ! धीरे-धीरे परिस्थितियां तुम्हारे नियंत्रण में आ जाएंगी और तुम्हें अपने शरीर पर नियंत्रण प्राप्त हो जाएगा। इस बात को लेकर विचलित होने की जरुरत नहीं है। यह एक स्वाभाविक प्रक्रिया है तुम्हारी युवावस्था है और ऐसा हो सकता है। अभी तुम साधना के प्रारंभिक चरण में हो !
इसलिए विकार तुम्हारे अंदर अब भी मौजूद है !!
धीरे-धीरे इस पर तुम्हें नियंत्रण आ जाएगा। लेकिन किसी भी स्थिति मे सहवास नहीं होना चाहिए क्योंकि उसके बाद तुम भैरवी साधना नहीं कर पाओगे ....
एक उच्च कोटी की भैरवी साधना से तुम वंचित हो जाओगे ......
अभी विनोदिनी स्वयं को नहीं जानती है ..... जैसे-जैसे साधना का क्रम आगे बढ़ेगा वह स्वयं अपनी शक्तियों को और सिद्धियों को पहचानने लगेगी।

वह कई जन्मों से भगवती छिन्नमस्ता की साधिका रही है.....

वह साक्षात सिद्धि का स्वरुप है .....

विरले साधकों को इतनी उच्च कोटि की भैरवी शक्ति और वह भी अक्षता प्राप्त होती है ......

अगर तुम शरीर के मोह मे पड़े, तो फिर उसी मे घूमते रह जाओगे.....

और यह जीवन व्यर्थ हो जाएगा .....

इस साधना को करने के लिए तुम्हें फिर से जन्म लेना पड़ेगा !

तुम्हारे इस जीवन के कई वर्ष भटकने मे ही निकल जाएंगे ......

ऐसी स्थिति मत आने देना !

इस दुर्लभ अवसर का लाभ लेते हुए इसी जन्म में इस अद्भुत साधना को संपन्न करने की कोशिश करना !

गुरुदेव को याद करना......

वह तुम्हें नियंत्रण की क्षमता प्रदान करेंगे !

उनके द्वारा इस प्रकार दिलासा दिए जाने से मुझे काफी आत्म संतुष्टि भी हुई और हौसला भी बढा !

उसके बाद मैंने फिर से अपना जाप का क्रम दुगुने जोर से करना प्रारंभ कर दिया !

यथासंभव प्रयास करता कि किसी प्रकार से उत्तेजना ना हो ....

लेकिन कभी-कभी आ ही जाती थी और किसी किसी दिन स्वप्नदोष भी हो ही जाता था ......

ऐसा कुछ दिनों तक चलता रहा और हमारा मंत्र जाप चलता रहा ।

दिगंबर अवस्था में मंत्र जाप करते हुए हमें लगभग बीस दिन हो चुके थे !

और अब मैं थोड़ा थोड़ा नियंत्रित होने लगा था......

साधना काल में उसे देखते ही मेरे शरीर में उत्तेजना आ जाती थी जो लगभग पूरे समय बनी रहती लेकिन धीरे-धीरे उस पर नियंत्रण होने लगा था !

अब पूरे मंत्र जाप के दौरान कभी-कभार ही वैसी स्थिति बनती थी ।

महीने भर होते होते मेरी अवस्था काफी सहज हो गई !

पूरे मंत्र जाप के दौरान उन्हें देखते हुए मंत्र जाप करने

पर भी शरीर नियंत्रण में रहता था और मन में भी काफी संतुलन आ गया था ।

विनोदिनी भी काफी सहज हो चुकी थी !

महिलाएं आमतौर पर पुरुषों से ज्यादा संयमित और नियंत्रित होती है । विनोदिनी भी वैसी ही थी और उसने मुझे संयमित रहने में काफी मदद की । मैंने उसे बताया था कि अभी दोनों को साधना के पहले चरण में पूरी तरह से संयमित रहना है । अगर कभी मैं असंतुलित होता तो वह मुझे रोक कर संतुलन बनाए रखती थी .....

हम कई बार साथ में निर्वस्त्र अवस्था में भी सो जाते थे । इसके बावजूद हम दोनों ने एक दूसरे को स्पर्श करने से बचने के लिए बीच में तकिया रखना प्रारंभ कर दिया था और कोई भी उस सीमा का उल्लंघन नहीं करता था ।

इस प्रकार से हम दोनों युगल साधना के प्रारंभिक चरण की ओर बढ़ते रहे....

बेहद कठिन था.....

लेकिन धीरे-धीरे संभव होने लगा था ।

यह अपने मस्तिष्क की शक्ति के द्वारा भावनाओं को नियंत्रित करने का प्रयास था ....

छिन्नमस्ता स्वरुप और गूढ संकेत

बाबा ने फिर से सिगरेट सुलगा ली और उसके कश मारने के बाद फिर आगे बोले - तुमने महाविद्या छिन्नमस्ता का स्वरुप तो देखा ही होगा। यह विपरीत रति मे संलग्न रति कामदेव के युगल स्वरुप की पीठ पर विराजमान हैं, और उनका खुद का कटा हुआ सिर उनके हाथों में है।

इस प्रतीकात्मक स्वरूप का भी एक अर्थ है।

युगल मुद्रा में स्थित रति और कामदेव की पीठ पर स्थापित होने का मतलब है कि इस संसार को चलाने वाले स्त्री-पुरुष संबंधों के आकर्षण को अपने पांव के नीचे दबाकर या उसे नियंत्रित करके आगे बढ़ना है..... दरअसल छिन्नमस्ता विशुद्ध चक्र की देवी है। विशुद्ध चक्र हमारी दोनों भौंह के बीच वाले स्थान पर रहता है ! इसे मस्तिष्क का नियंत्रक बिंदु ही मान सकते हैं। इस संसार का सबसे बड़ा आकर्षण है स्त्री और पुरुष के बीच का संबंध। इसमें दोनों को जिस सुख की प्राप्ति होती है उसके प्रपंच में यह संपूर्ण संसार चल रहा है।

पुरुष को ऐसा प्रतीत होता है कि वह स्त्री के शरीर से सुख प्राप्त कर रहा है और स्त्री को ऐसा प्रतीत होता है कि वह पुरुष के शरीर से सुख प्राप्त कर रही है ....

लेकिन.....

वास्तव में ऐसा नहीं है !

जो सुख की अनुभूति हम करते हैं वह हमारे अपने मस्तिष्क में होती है ....

अर्थात हमारा आज्ञा चक्र स्वयं उस सुख की अनुभूति करवाता है ...

अगर आप थोड़ी सूक्ष्मता से देखें तो हमारा खुद का मस्तिष्क या हमारा खुद का आज्ञा चक्र ही इस सारे भाव को और इन सारी अनुभूतियों को हमारे अंदर प्रस्तुत करता है ।

हमारे अंदर पैदा होने वाले भावों के अनुरूप हमारा आज्ञा चक्र या हमारा मस्तिष्क या हमारी खोपड़ी या हमारा नरमुंड सक्रिय होता है.....

इस मुंड के अंदर उठने वाले हमारे कुछ भाव ऐसे होते हैं जो हमारे ही रक्त को पीते हैं .....

जैसे चिन्ता...

दुख.....

निराशा......

हिंसा ......

आदि !

ऐसे मुंड को काटकर अपने हाथ में रखना अर्थात अपने नियंत्रण में रखना यह भगवती के इस स्वरुप का मतलब है ।

बाबा की इस व्याख्या को सुनकर भगवती छिन्नमस्ता के स्वरुप के प्रति मुझे एक अद्भुत ज्ञान प्राप्त हुआ ।

दरअसल उनका स्वरुप बाकी सभी देवियों से एकदम अलग है ।

महाकाली को भी नग्न रूप में दिखाया जाता है और इसके अलावा भी कई देवियां नग्न स्वरुप में मानी जाती है ....

देवी छिन्नमस्ता का स्वरुप नग्न होने के बावजूद बाकी देवियों से एकदम अलग है क्योंकि वह रति संलग्न स्त्री पुरुष के आसन पर या उनकी पीठ पर विराजमान है ....

जबकि अधिकांश नग्न शक्तियां शव के ऊपर विराजमान दिखाई जाती है .....

उनके इस स्वरूप की वजह से नीचे स्थित युगल जोड़ी को आमतौर पर कपड़ों में लपेटकर या गुलाब या कमल के फूल के अंदर दिखा दिया जाता है ....

लेकिन उनके स्वरूप के इस गूढ़ अर्थ को समझ कर मुझे उनके स्वरूप मे निहित जीवन के प्रति एक नए सोच का अनुभव हुआ ....

डोम बाबा ने अपनी कथा को आगे बढ़ाते हुए कहा -

भगवती छिन्नमस्ता के स्वरूप में स्थित इस प्रकार के गुण और प्रतीकात्मक अर्थ का मतलब उनकी साधना करते करते धीरे-धीरे समझ में आता है । प्रारंभिक चरण में तो उनकी जो छवि दिखाई देती है उसी के अनुसार चिंतन होता है । जैसे-जैसे साधना आगे बढ़ते जाती है, आपके अंदर नए-नए प्रकार के ज्ञान और अर्थ विकसित और सुलभ होते जाते हैं ।

साधना करते करते दूसरे लोगों का आभामंडल भी दिखाई देने लगता है ।

आभा मंडल का तात्पर्य होता है कि वह सफेद या पीले रंग का प्रकाश जो देवी देवताओं के चारों तरफ दिखाया जाता है । इसे औरा (AURA) भी कहते हैं.......

मुझे अपना आभामंडल भी आईने में दिखाई देता था। जो हल्के पीले रंग का मेरे लगभग 2 फुट दूर दूर तक फैला हुआ दिखाई देता था। जब विनोदिनी मेरे पास आई थी तो मुझे उसका आभामंडल भी दिखाई देता था। जो कि बहुत ज्यादा स्पष्ट नहीं था। जैसे जैसे हमारी साधना आगे बढ़ती जा रही थी ..... उसके आभामंडल में व्यापक विस्तार दिखाई देने लगा था। उसके इर्द-गिर्द हल्के नीले रंग का आभामंडल आने लगा था।

स्त्रियाँ शक्ति का प्रतीक होती है !

उनके अंदर अंतर्निहित शक्ति किसी भी साधना में उनको बहुत जल्दी लाभ दिला देती है।

यदि स्त्री संयमित हो !

अपने आप पर नियंत्रण कर सके !

अहंकार में ना आए !!

तो उन्हें सिद्धियां भी बहुत जल्दी मिल जाती हैं। लेकिन अधिकांश स्त्रियां इसे संभाल नहीं पाती .....

उनके अंदर अहंकार बड़ी जल्दी उछलता है।

वह अपने आप को देवी मानने लगती हैं और कई बार तो देवी को भी अपने से कम मानने लगती है .....

मैं ऐसी कुछ स्त्रियाँ को जानता हूं जिनके ऊपर देवी का आवेश आता है और उनकी कुछ बातें सही हो जाती हैं......

इससे उनके पास लोगों की भीड़ लगने लगती है ।

अधिकांश लोग अपने काम बनाने के लिए नियमित मंत्र जाप करने या पूजा पाठ करने से बचने की कोशिश करते हैं, लेकिन हाथ जोड़ने या कुछ चढ़ावा चढ़ा देने से अगर आपका काम बनने लगे तो आप ऐसी जगह जरूर जाएंगे ।

जब इस प्रकार से भक्तों की भीड़ लगने लगती है तो उसको ऐसा लगने लगता है कि मैं तो देवी हो गई और फिर अहंकार की वजह से बाद में अपने स्तर से नीचे गिर जाती हैं .....

खैर...

महामाया की लीला वही जानें !

विनोदिनी का आभामंडल काफी विकसित हो गया था । हल्के नीले रंग का उसका आभामंडल बेहद सुखद प्रतीत होता था । जब हम दोनों साथ में बैठते थे तो मैं

उस आभामंडल को एक वृत्त के रूप में गोल गोल घूमते हुए देखता था .....

यह सब देखकर मेरे हृदय में उसके प्रति सम्मान का भाव जागृत होता जा रहा था और मुझे भी समझ में आ गया था कि यह पिछले जन्म की सिद्ध साधिका है...... तभी इसे इतनी जल्दी अपनी शक्तियों को विकसित करने में सफलता मिल रही है .....
छह महीने की मेरी साधना पूर्ण हो चुकी थी अर्थात वह चरण जो बाबा ने बताया था वह पूरा हो चुका था और अब अगले चरण में युगल साधना संपन्न करनी थी ....

पद्मगंध

इसमे पाँव से प्रारंभ करके एक एक अंग का पूजन रोज करना था और उसके बाद उसी अंग पर दृष्टि रखते हुए 11 माला मंत्र जाप करना था ।

विनोदिनी के पांव से प्रारंभ होकर शरीर के 36 भागों का पूजन करते हुए अंत मे यह पूजन ब्रह्मरंध्र तक पहुंचता और इस प्रकार से 36 रात्रियों में यह संपूर्ण होना था ।

शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से प्रारंभ होकर के यह पूजन अगले मास की शुक्ल पक्ष की सप्तमी तक चला । यह संपूर्ण पूजन निर्वस्त्र अवस्था में ही करना था और दोनों में से किसी भी एक के अंदर विकार उत्पन्न हो जाने की स्थिति में पूजन को खंडित माना जाता है और उसे वहीं पर समाप्त कर दिया जाता । यानी कि पूरे 36 दिनों तक पूर्ण आत्म नियंत्रण के साथ इस पूजन को संपन्न करना था । काफी जटिल था लेकिन किसी प्रकार से यह संपन्न हो गया ।

ग्यारह माला जाप मे लगभग एक घंटे का समय लगता था ....

तीसवें दिन के पूजन के बाद विनोदिनी के शरीर से पद्मगंध आनी प्रारंभ हो गई !

अर्थात कमल के फूल के समान खुशबू !

हल्की-हल्की भीनी भीनी जो कि उसके इर्द-गिर्द पूरे समय मौजूद रहती .....

पद्मगंध उस स्त्री के शरीर से आती है जो अप्सरा तत्व से युक्त होती है ।

यह बेहद दुर्लभ है !

इसका विवरण महाभारत के प्रकरण में मिलता है ।

सत्यवती एक मछुआरे की कन्या थी और महर्षि पराशर के आशीर्वाद से उसके शरीर में पद्मगंध प्रवाहित होने लगी थी ।

यह गंध उसके आसपास के सभी लोगों को प्रभावित और आकर्षित करती थी !

इसी आकर्षण में आकर महाराजा शांतनु उसके मोहपाश मे आ गए थे ।

महाराज का आकर्षण इतना ज्यादा बढ़ गया था कि वह उससे विवाह करने को आतुर हो गए थे । उस समय देवव्रत (यानि भीष्म पितामह) युवराज थे और युवावस्था में थे अर्थात अगले संभावित राजा ।

यह बात सत्यवती के पिता को स्वीकार नहीं थी । वे यह चाहते थे कि उनकी बेटी के बच्चे को राज्य मिले । महाराजा शांतनु इस बात के लिए राजी नहीं हुए, क्योंकि गंगा पुत्र देवव्रत राज्य के लिहाज से सर्वश्रेष्ठ उत्तराधिकारी थे ।

इनकार करने के बावजूद शांतनु के मन में सत्यवती बसी रही और वह उसके आकर्षण में चिंता मग्न रहने लगे । पिता की इस स्थिति को देखकर युवराज देवव्रत ने मामले की तह तक जाने की कोशिश की और उन्हें इसका कारण पता चल गया ।

अपने पिता का मनोवांछित विवाह संपन्न कराने के लिए देवव्रत यानि भीष्म पितामह ने आजीवन अविवाहित रहने की प्रतिज्ञा तक कर डाली थी । जो सनातन धर्म के इतिहास में संभवत: इकलौता ऐसा प्रकरण था । इसीलिए उन्हें भीष्म पितामह और उनकी प्रतिज्ञा को भीष्म प्रतिज्ञा के रूप में युग बीत जाने के बाद भी याद किया जाता है । इसी प्रतिज्ञा के बाद सत्यवती का पिता विवाह के लिए राजी हो गया और शांतनु और सत्यवती का विवाह संपन्न हुआ था ....

इसी बात से आप इस पद्मगंध की क्षमता और महत्व को आसानी से समझ सकते हैं ।
सोना स्वयं में एक चमकदार आकर्षक धातु है, जो काफी महंगी और लोकप्रिय भी है । जिसे आभूषणों के रूप में प्राचीन काल से स्त्रियों द्वारा इस्तेमाल किया जाता रहा है और संभवत: आगे भी किया जाता रहेगा ।
कल्पना कीजिए कि अगर सोने में सुगंध भी होती.... तो उसकी मांग कितनी ज्यादा होती ....
उसी प्रकार योवन से युक्त स्त्री स्वयं में ही संपूर्ण प्रकार के आकर्षण से युक्त होती है ! उसमें अगर पद्मगंध प्रवहित हो जाए तो फिर उसके आकर्षण से कौन बच सकता है ।

डोम बाबा थोड़ा रुककर बोले - बेटा अघोरानंद !
इस स्थिति मे वह सम्पूर्ण पूजन सम्पन्न करना कितना मुश्किल रहा होगा यह तुम भी समझ सकते हो !
महामाया की इच्छा और गुरुकृपा के बिना इस स्थिति मे संतुलित रह पाना संभव नहीं होता ....
भैरवी साधना के विषय में जानकारी बाबा भेरुन्डनाथ ने प्रदान की थी । जिससे मुझे काफी कुछ इस विषय पर

पता चल गया था ... लेकिन इसके अलावा भी बहुत सारी चीजें ऐसी थी जो साधना के दौरान काम में आने वाली थी ....

तंत्र के विषय में इंटरनेट पर ढेर सारी सामग्री उपलब्ध है और इसमें से अधिकांश सामग्री विदेशी माध्यमों से डाली गई है । जिन्होंने अपने आधे अधूरे ज्ञान के आधार पर तांत्रिक मसाज से लेकर तांत्रिक सेक्स तक बहुत सारी चीजों पर वीडियो बना बना कर डाला हुआ है । वहां की संस्कृति सेक्स के उन्मुक्तता के विषय में काफी ज्यादा जागरूक है । इसलिए उनको तंत्र में स्त्री पुरुष के संबंध वाला विषय बहुत ज्यादा आकर्षित करता है । वे उस की अपने हिसाब से व्याख्या भी करते रहते हैं । अगर आप नेट पर सर्च करें तो इस संदर्भ में कोर्स से लेकर वर्कशॉप तक... सब कुछ आपको एक निर्धारित शुल्क देने पर उपलब्ध हो जाएगा.....
अब उसमें आप क्या जान पाएंगे ?
यह एक अलग विषय है..... लेकिन उसका तंत्र साधना से कोई खास संबंध नहीं है और उससे आप आध्यात्मिक उन्नति भी नहीं प्राप्त कर सकते ।

यहां पर यह जानना जरूरी है कि किसी स्त्री के साथ संबंध बना लेना भैरवी साधना नहीं है ।

इसके लिए भगवती की कृपा और उसका आशीर्वाद भी होना चाहिए ।

जब वह होता है तो स्वयं आपकी भैरवी यानि आपकी सहयोगी आपको साधना के विषय में मार्गदर्शन प्रदान करती है । जिसमे कई प्रकार के मंत्रों से लेकर क्रियात्मक विधियाँ भी शामिल हैं ...

अगर ऐसा हो रहा है....

तो आप मान कर चलिए कि आप भैरवी साधना कर रहे हैं

और अगर ऐसा नहीं हो रहा है....

तो आप यह मान कर चलिए कि आप कुछ और कर रहे हैं ....

भैरवी साधना : परीक्षण

डोम बाबा आगे बोले - जैसे जैसे साधना आगे बढ़ती रही, विनोदिनी के ऊपर आने वाले शक्ति के आवेश के माध्यम से आगे की भैरवी साधना की विधि तथा सामग्री की जानकारी भी मिलती रही ।

बिलकुल वैसे ही.....

जैसे नर्सरी की टीचर बच्चों को हाथ पकड़ कर सब कुछ सिखाती है ....

विनोदिनी अब बन चुकी थी ...

मेरी भैरवी......

वह अद्भुत स्त्री शक्ति जो साधक को साधना के मंत्रों से लेकर उसमें प्रयुक्त होने वाली क्रियाओं के संबंध में भी महामाया की प्रेरणा से जानकारी प्रदान करती है ।

जिसके माध्यम से वह अत्यंत गूढ़ और विशिष्ट साधनात्मक रहस्यों को भी प्राप्त कर लेता है ....

जिसके माध्यम से वह शक्ति सानिध्य प्राप्त कर शक्तिमान बन जाता है ...

सप्तमी तक 36 दिन वाला पूजन संपन्न हो चुका था और अगले दिन यानि अष्टमी की रात्री को भैरवी साधना होनी थी !

निर्देशानुसार सारी सामग्री की व्यवस्था मैंने की हुई थी !

हम दोनों पूरी तरह से निर्वस्त्र थे और आमने सामने बैठे हुए थे ।

उसका सर्वांग पूजन सम्पन्न करने के बाद मैंने भोग द्रव्य समर्पित किया ......

तीन पात्र के बाद चौथा पात्र उसने चखकर मेरी ओर बढ़ा दिया जिसे मैंने ग्रहण किया .....

साधना प्रारंभ हुई !

लगभग दस मिनट के बाद वह अपने स्थान पर बैठकर थरथराने लगी !

यह इस बात का संकेत था कि भैरवी शक्ति का आगमन हो रहा था !

लगभग आधे घंटे तक मेरा मंत्र जाप चलता रहा और विनोदिनी पर शक्ति का आगमन हो चुका था । वह अपने स्थान पर उठ कर खड़ी हो गई । जैसे ही वह अपने स्थान पर उठ कर खड़ी हो गई तो मैंने उसकी ओर देखा !

उसकी आंखें बिल्कुल सुर्ख लाल हो चुकी थीं.....

उसके पूरे शरीर में कंपन था.......

वह मुझे घूर रही थी !

जैसे मुझे जानती ही न हो ....

उसकी भाव भंगिमा देखकर मुझे भय लग रहा था ...

तभी ..... उसने आगे बढ़कर मेरी गर्दन दबोच ली !

मुझे ऐसा लग रहा था जैसे मेरी गर्दन किसी फंदे में फंस गई हो और उसके बाद उसने बड़ी जोर से मेरी गर्दन को दबाया !

मुझे ऐसा प्रतीत होने लगा जैसे मेरे प्राण बाहर निकल जाएंगे !

मेरी आंखें बाहर निकलने को आतुर होने लगी तो उसने मेरी गर्दन छोड दी ।

ऐसा चार पाँच बार हुआ ...

उसके बाद वह मेरे चारों तरफ घूमने लगी !

तीन या चार चक्कर लगाए होंगे उसके बाद उसने मेरे बाल पकड़ लिए.....

या यूं कहिए कि खींच लिए ।

वह उसी प्रकार से खींची हुई अवस्था में मेरे चारों तरफ घूमने लगी ।

अगर आपने डोसे का आटा पीसने वाली पत्थर की चक्की देखी हो तो उसमे चावल दाल को पीसने के लिए जिस प्रकार से उसके पत्थर को घुमाया जाता है.... कुछ कुछ वैसा ही वह मेरे बाल पकड़कर घूमा रही थी । मैं अपने ही स्थान पर बैठा हुआ था और मेरा शरीर का ऊपरी हिस्सा गोल गोल घूम रहा था।

बाल खींचने की वजह से दर्द हो रहा था !

लेकिन उस दर्द को सहन करना था ।

लगभग 5 मिनट तक यह क्रम चला होगा....

उसके बाद वह मेरे पीछे आकर खड़ी हो गई ।

मेरी प्रबल इच्छा हो रही थी कि मैं पीछे मुड़कर देखूँ ...

इसी इच्छा के वशीभूत होकर जैसे ही मैंने पीछे मुड़ कर देखा.....

एक जोर का तमाचा मेरी गाल पर पड़ा और मेरी गर्दन वापस सामने की तरफ घूम गई !

जब मार पड़ती है तो चीजें जल्दी समझ मे आ जाती हैं और मैं भी समझ गया कि पीछे मुड़कर नहीं देखना है !

उसके बाद मैं बिल्कुल सामने की तरफ देखता हुआ बैठा रहा .....

तभी....

मुझे अपनी पीठ पर मार का एहसास हुआ !

ऐसा लगा जैसे किसी ने डंडे से मुझ पर वार किया हो ।

मैं किसी प्रकार अपने दर्द को संभालता हुआ बैठा रहा । लगभग 30-40 डंडे मुझे लगातार पड़े होंगे और उसके बाद फिर शांति हो गई....

अचानक कमरे में घुंघरु की आवाज आने लगी ....

ऐसा लग रहा था जैसे कोई बड़े-बड़े घुंघरु पहन कर चल रहा हो ....

ठीक वैसे घुंघरु जैसे शास्त्रीय नृत्य के कलाकार पहनते हैं ।

वह आवाज मुझे अपने चारों तरफ से आती हुई सुनाई दे रही थी ।

थोड़ी देर में विनोदिनी भी मेरे चारों तरफ घूमने लगी ....

वह पायल नहीं पहनती थी । उस समय भी उसके पांव में पायल नहीं थी ....

लेकिन कमरे मे घुंघरु की आवाज मै स्पष्ट सुन सकता था ...

जो इधर उधर जाती प्रतीत हो रही थी !

ठीक वैसे ही जैसे कोई घुंघरु पहन कर चल रहा हो !

अब कौन चल रहा था यह तो महामाया ही जाने ...

लगभग पांच सात मिनट तक ऐसा ही चला होगा ।

उसके बाद वह मेरे सामने आई और उसने मेरी छाती पर एक जोर की लात मारी ।

मैं अपने आसन पर पीछे की तरफ लुढ़क गया ।

भैरवी के माध्यम से मिले हुए निर्देश के अनुसार कठोर परीक्षण होना था !

उसमें किसी प्रकार की प्रतिक्रिया ना करते हुए अपना मंत्र जाप जारी रखना था....

जो मैं कर रहा था ...

या यूं समझ लीजिये कि करने की कोशिश कर रहा था ....

पीछे लुढ़कने के बाद में वापस सीधा होकर अपने आसन पर बैठ गया !

वह नृत्य करती हुई मेरे चारों तरफ घूम रही थी । मैं अगली लात की प्रतीक्षा करता रहा ...

लेकिन कुछ नहीं हुआ !

वह उसी प्रकार घूमती रही ।

इसमें मैं निश्चिंत हो गया और थोड़ी देर के बाद में मंत्र जाप में लीन हो गया ....

तभी....

मेरी पीठ पर जोर की एक लात पड़ी और उसके बाद फिर यह क्रम लगातार चलता रहा ।

कुछ नहीं तो लगभग 50-60 लाते तो उसने मुझे अवश्य मारी होगी ।

हर लात के बाद वह बेहद गुस्से से बोलती - यह सब कुछ बंद कर..... वरना तुझे मार डालूँगी ।

उस समय उसकी आवाज चट्टानों के आपस में टकराने जैसी घरघराहट वाली आवाज होती थी ।

जिसे सुनकर मैं मन ही मन डर जाता था और आश्चर्यचकित भी होता था कि विनोदिनी के कोमल स्वर की जगह यह कैसी आवाज निकल रही है ...

साथ ही यह विश्वास भी पुख्ता हो जाता था कि वास्तव में उसके अंदर कोई शक्ति का प्रवेश हुआ है । जो अत्यंत उग्र और प्रचंड है । इसलिए उसकी आवाज इस प्रकार की हो गई है ।

अब तक मेरे शरीर के पोर पोर मे दर्द होने लगा था ....

उसके बाद उसने पास रखी मदिरा की बोतल उठाई और अपने मुंह से लगा ली .... गटकने की आवाजें आई और

एक ही बार मे आधी बोतल खाली हो चुकी थी । वह फिर मेरे चारों तरफ घूमने लगी ...

थोड़ी देर के बाद वह मेरे सामने आकर बैठ गयी .....
उसकी लाल लाल आँखें मुझे घूर रही थीं ....
उसके बाल चारों तरफ बिखरे हुए थे .....
बीच बीच मे वह अपने सर को विचित्र ढंग से घुमाती तो उसके बाल एक वृत्त में घूम कर वापस अपनी स्थिति में आ जाते....
उसने घरघराती आवाज मे पूछा - तो तू नहीं मानेगा ?
क्यों अपनी मौत बुला रहा है ?
मैं मौन रहा !

भैरवी साधना : क्रिया

विनोदिनी - तू भैरवी साधना करेगा ?

मैंने धीरे से सिर सहमति मे हिलाया ...

उसने एक भीषण अट्टहास किया और बोली - तेरी क्षमता है.... भैरवी साधना की ? तू मुझे संतुष्ट कर पाएगा ....

यह एक ऐसा प्रश्न था.... जिसका उत्तर मेरे पास भी नहीं था.... तो मैंने मौन रहना बेहतर समझा ....

लेकिन जवाब तो देना ही था !

भैरवी साधना मे शक्ति को पहले संतुष्ट करना होता है ....

उससे पहले साधक स्खलित हो जाये या स्तंभन हट जाये तो साधना अपूर्ण मानी जाती है ...

यह मैं जान चुका था...... लेकिन अपनी क्षमता के बारे मे मैं कुछ भी कहने की स्थिति मे नहीं था ...

इसी ऊहापोह मे मैं मौन था !

साधना में बैठ चुका था इसलिए जवाब तो देना ही था ....

उसने दुबारा प्रश्न किया - तू भैरवी को संतुष्ट कर पायेगा ?

पुरुष को ऐसा बनाया गया है कि वह सहज स्खलित हो जाता है ....

संतुष्ट हो जाता है !

लेकिन स्त्री को समय लगता है......

और यह तो साक्षात स्त्री का मूल स्वरुप.....

उसका आदि रूप..... भैरवी थी .....

इसलिए मैंने धीमे स्वर मे कहा - प्रयास करूंगा !

उसने एक ज़ोर का अट्टहास लगाया ....

ऐसा लगा जैसे दीवालें भी उस अट्टहास से हिल गयी हों ।

उसके हाथ मे जो आधी बोतल रखी हुई थी उसने उसे फिर अपने मुंह से लगा दिया !

इस बार बोतल की आधी और खाली हो गई अर्थात अब उसमें केवल एक चौथाई बचा था ।

उसे उसने मेरी तरफ बढ़ा दिया और बोली - तू प्रयास करना चाहता है .....

मैंने सहमति मे सिर हिलाया ...

उसने फिर एक अट्टहास किया और बोली - तो ले ! इसे ग्रहण कर !

मैंने उसे लिया और पूरा गटक गया !

ऐसा लगा जैसे कोई दहकती हुई चीज गले से नीचे उतर गई हो ।

ऐसा नहीं था कि इससे पहले मैंने नहीं पिया था !

आम तौर पर पानी मिलकर ही पीते हैं तब भी उसकी कड़वाहट कायम रहती है ।

यह बिना पानी का था शायद इसलिए बेहद ज्यादा ही कड़वा और दाहक लगा ....

उसके अंदर जाते ही दिमाग मे सनसनी सी छाने लगी ....

थोड़ी देर मे मेरे अंदर उन्माद सा छाने लगा ....

उसने फिर से एक जोरदार अट्टहास किया और फिर मेरे चारों तरफ घूमने लगी !

मुझे वह कमरा घूमता हुआ सा लग रहा था !

अचानक कमरे में हल्का नीला प्रकाश फैलने लगा !

ऐसा लग रहा था.....

जैसे वह प्रकाश उसके शरीर से ही निकल रहा हो ....

क्योंकि यह बिल्कुल उसके आभामंडल के जैसा ही नीला प्रकाश था ....

कुछ-कुछ वैसा ....

जैसे दीपावली की नीली एलईडी लाइट से बिखरता है ....

पूरा कमरा तेज खुशबू से महकने लगा .....

थोड़ी देर के बाद उसने मुझे जमीन पर लेटा दिया ।

उसके बाद उसने मेरे शरीर को स्पर्श करना प्रारंभ किया.....

उसका हाथ सबसे पहले मेरे वक्षस्थल पर पड़ा ।

वह स्थान जहां हृदय स्थित माना जाता है और अनाहत चक्र की स्थिति होती है ।

वहां उसके स्पर्श करते ही मुझे बेहद ठंडक का आभास हुआ ....

ऐसा लगा जैसे कोई बर्फ की सिल्ली वहां रख दी गई हो !

उसके बाद मुझे बेहद अनोखी शांति का अनुभव होने लगा ....

वह एक ऐसा अनुभव था ......

जिसकी व्याख्या करना बिल्कुल वैसा ही है..... जैसे गूंगे का गुड़....

इसके बाद उसने हाथ आगे बढ़ाकर मेरे माथे मे दोनों भौंह के बीच के स्थान पर अपने अंगूठे को रखकर दबाया ।

वहां एक अजीब सी ऊष्मा और गर्मी का एहसास होने लगा था ।

कुछ कुछ वैसा एहसास जैसे किसी गर्म चीज के स्पर्श से होता है ।

उसके बाद उसने तीन बार सिर से पाँव तक और पाँव से सिर तक पूरे शरीर को अपने हाथों की तर्जनी मध्यमा और अंगूठे से एक विशेष आकृति बनाते हुए स्पर्श किया ....

संभवतः वह कोई गोपनीय मुद्रा रही होगी ।

उसके बाद उसने अपने गुह्य स्थल पर अपनी बाईं हथेली रखी और दायीं हथेली को मेरे गुह्य स्थल पर स्पर्श कर दिया ।

उसी के साथ मुझे एक बिजली का झटका सा लगा ......

उस झटके के साथ ही मेरा अंग उठने लगा ....

पूरा शरीर आवेश और उत्तेजना से भर गया .....

मैं आतुर होने लगा ...
काम का आवेग मेरे स्नायुओं में दौड़ पड़ा .....
मेरा अंग पूर्ण रूप से उन्मत्त हो गया ...
मुझे साहचर्य की तीव्र आकांक्षा ने मथना चालू कर दिया ....
मेरी साँसे चढ़ने लगी !
आँखों मे नशा सा छाने लगा था ...
आकांक्षा उछाल मारने लगी थी ......
और तभी ....
विनोदिनी किलकती हुई एक झटके मे मुझ पर आरूढ़ हो गई.....
उसने क्रिया का आरम्भ किया !
लगभग दस मिनट अत्यंत तीव्र गति से क्रिया चलती रही ....
मेरे अंगों मे पीड़ा होने लगी थी ....
बीच बीच मे वह बड़े ज़ोरों का हुंकार लगाती ....
हूँ .....
पूरा कमरा उस हुंकार से हिलता प्रतीत होता ....
काफी समय हो चुका था ...
वह भी बुरी तरह से हाफने लगी थी .....

उसकी गति पहले से थोड़ी कम हुई और फिर वह उसी स्थिति मे स्थिर हो गयी ...

उसकी आंखें पूरी लाल हो चुकी थी और वह सीधा मेरी आंखों में देख रही थी ।

उसकी जलती हुई आंखों में देखने की हिम्मत नहीं हो रही थी ....

इसलिए मैंने नजरें फेर ली ....

जैसे ही मैंने नजरें फेरी उसने मेरे गाल पर एक जोर का थप्पड़ मारा और अपनी आंखों में देखने का संकेत किया ।

मैंने घबराते हुए उससे नजरें मिलाई !

ऐसा लग रहा था जैसे उसकी आंखों से अग्नि की किरणें निकल रही हो ।

कोई शक्ति का पुंज सा उसकी आंखों से निकल कर मेरी आंखों में समा रहा था ....

मुझे अपनी रीढ़ की हड्डी में एक लहर सी दौड़ती हुई महसूस हो रही थी ।

लगातार उसकी ओर देखते रहने की वजह से मेरी आंखों से आंसू बहने लगे .....

ऐसी स्थिति तीन चार मिनट रही होगी और उसके बाद उसने अपनी उंगलियों से मेरी दोनों आंखों को बंद कर दिया .....

आंखें बंद होते ही एक विचित्र सा दृश्य दिखाई देने लगा ....

मंदिर

वह एक गोलाकार चौसठ योगिनी मंदिर के जैसे दिखने वाला एक मंदिर था !

उसका आकार काफी छोटा था ! लगभग 8 या 10 फुट के व्यास का रहा होगा ।

उसके बीच में बने हुए मंडप में मृग चर्म के 2 आसन लगे हुए थे । उसमें से एक पर एक पुरुष और दूसरे पर एक स्त्री दिखाई दे रही थी । जब दृश्य थोड़ा स्पष्ट हुआ तो मुझे दिखा कि वह पुरुष स्वयं मैं था लाल धोती पहने हुए .....

और वह स्त्री विनोदिनी थी लाल साड़ी मे .....

बीच मे हवन कुंड था ....

लेकिन दिखने वाला परिदृश्य काफी पुराना सा लग रहा था ।

संभवतः मेरे पूर्व जन्म का कोई दृश्य रहा हो ।

इस प्रकार के कई दृश्य मेरे मानस पटल पर आकर लुप्त होते रहे ।

उन दृश्यों को देखकर मुझे यह एहसास हो गया कि विनोदिनी के साथ में मेरा साहचर्य इस जीवन का नहीं है, बल्कि कई जन्मों से वह मेरी साधना संगिनी रही है ।

एक दृश्य में हम दोनों गुरुदेव के सामने बैठे हुए थे । वे हमें कुछ साधना संबंधी ज्ञान प्रदान कर रहे थे ।
एक दृश्य और सामने आया जिसमें हम दोनों चिता के समक्ष बैठकर आहुतियां प्रदान कर रहे थे और बगल में बाबा भैरुंड नाथ भी बैठे हुए थे ....
इन सारी चीजों को देख कर मुझे ऐसा लगा कि संभवतः मैं इसी मार्ग का यात्री हूं .....
फिर सब कुछ विलुप्त हो गया और वह नीला प्रकाश मेरे मानस पटल में भी दिखने लगा !
कुछ देर तक वह नीला प्रकाश उसी प्रकार दिखता रहा !
उसके बाद वह हल्का होता हुआ लुप्त हो गया और वहां दिखाई देने लगी एक नीला प्रकाश बिखेरती शिवलिंग की आकृति ....
तभी मुझे एक झटका सा लगा ...उसने फिर से क्रिया प्रारंभ कर दी थी ।
मंद गति से क्रिया शुरु हुई !
कुछ देर मे उसकी गति बढने लगी ।

मैं मंत्र जाप कर रहा था ....

अचानक उसने जोर का हुंकारा भरा ......

हूं....

हूं....

हूं....

मर्दन तीव्र होने लगा ....

किसी चक्रवाती तूफान की तरह उसका वेग बढ़ता चला गया.....

उसके प्रहार तीव्र होकर और अधिक चोट कर रहे थे.....

लगभग आधे घंटे का समय बीत चुका था इस संघर्ष में......

मेरी हालत खराब हो चुकी थी !

लेकिन अच्छी बात यह थी कि ध्वज स्तंभन अब भी बना हुआ था !

कुछ समय के प्रचंड आघातों के बाद वह निढाल होकर मेरे वक्ष पर गिर गई .....

थोड़े समय के बाद उसने अपना मुख ऊपर उठाया ...

उस पर स्मित हास्य बिखरा हुआ था !

वह संतुष्ट हो चुकी थी.......

कुछ समय बाद वह उठ खड़ी हुई

उसने मेरे सर पर हाथ फेरा ......

बोली - भैरवी प्रसन्न हुई ! क्या चाहता है तू ?

मैंने हाथ जोड़कर कहा – आपका वरदहस्त ...

एक घनघोर अट्टहास फिर से गूंजा और उसने वरद मुद्रा में हाथ उठा दिया .....

मैं उन दिव्य चरणों में साष्टांग दंडवत लेट गया .....

वही घरघराती हुई गंभीर वाणी गूँजी - मेरा वरद हस्त तुझ पर बना रहेगा.....

फिर विनोदिनी ने मुझे उठाया और मुझे अपनी बाहों में समेट लिया ।

मैंने भी उसे कसकर अपनी बाहों में भर लिया ....

दस पंद्रह सेकंड हम उसी स्थिति मे रहे .....

अचानक वह ढीली पड़ गई.....

किसी प्राणहीन शरीर की तरह वह मेरे सहारे झूल गई !

ऐसा लगा जैसे उसके शरीर के अंदर से कोई बाहर निकल गया हो ....

संभवतः भैरवी शक्ति के निकलने की वजह से वह निढाल होकर मेरी बाहों में झूल गई । ऐसा लग रहा था जैसे बेहोश हो गयी हो ...

मैंने उसे उठाया और बिस्तर पर लिटा दिया ....

थोड़ी देर मे उसके खर्राटे आने लगे !

मैं समझ गया कि वह ठीक है । उसे मैंने एक चादर उढ़ायी ।

मेरी हालत भी खराब हो चुकी थी तो मैं भी उसकी बगल मे लुढ़क कर सो गया ....

नदी का किनारा

चेहरे पर पडती हुई धूप की तेज गर्मी से मेरी आंखें खुली और जब मैं ने आंखें खोली तो मैं आश्चर्यचकित रह गया क्योंकि मैं अपने कमरे में नहीं था !
बल्कि रेत पर लेटा हुआ था.......

रेत को देखकर ऐसा लग रहा था जैसे वह नदी के किनारे की रेत हो !
मैंने नजरें इधर-उधर घुमाई तो मुझसे लगभग दो तीन हाथ की दूरी पर विनोदिनी भी पड़ी हुई थी और हम से करीब करीब 50 मीटर की दूरी पर नदी की पतली धारा बह रही थी ।

मेरी समझ में नहीं आया कि मैं अपने कमरे से यहां कैसे आ गया ?
विनोदिनी अभी भी आराम से पड़ी हुई थी !
पास मे वह चादर भी थी जो मैंने उसे ओढ़ाई थी ।
बेहोश थी या सो रही थी , यह समझ में नहीं आ रहा था !
लेकिन वह बिल्कुल बिंदास पड़ी हुई थी, जबकि हम दोनों के शरीर पर एक भी वस्त्र नहीं था ।

सबसे अजीब बात यह थी कि दूर-दूर तक कोई दिखाई भी नहीं दे रहा था ।

ऐसा लग रहा था जैसे वह कोई जंगली इलाका हो ......

मैं आसपास की जगहों का मुआयना करने के लिए निकल पडा , तो देखा कि दूर दूर तक कुछ भी नहीं था !

एक तरफ जंगल था और दूसरी तरफ नदी थी !

मैं इसी उहापोह में था कि हम यह कहां आ गए ।

फिर मैंने सोचा कि चलो विनोदिनी को उठाते हैं, तो मैंने उसे उठाने की कोशिश की ....

लेकिन वह नहीं उठी ।

जब काफी प्रयास के बाद वह नहीं उठी तो मैं चादर को लेकर नदी की ओर चल पड़ा ।

नदी में जाकर मैंने पहले अपनी प्यास बुझाई !

उसके बाद चादर को भीगा कर ले आया क्योंकि पानी लाने का कोई और साधन नहीं था । इतनी दूर से चुल्लू में पानी भरकर लाना भी संभव नहीं था । चादर को निचोड़कर मैंने विनोदिनी के चेहरे पर छिड़क दिया और वह कुनमुना कर उठ खड़ी हुई और अपनी अवस्था को देखकर शरमा गई ...

उसने मेरी चादर को खींच कर अपने शरीर पर लपेट लिया ।

इसके बाद जब उसने उस स्थान को देखा तो मुझे प्रश्नवाचक निगाहों से देखने लगी । मुझे कुछ समझ में आ रहा होता तो मैं उसे बता पाता ....

मेरी स्थिति भी तो उसके जैसी ही थी मैंने भी निराशा जताते हुए अपना सर हिला दिया....

वह बोली - यह हम कहां आ गए ?

मैंने कहा - मुझे भी नहीं मालूम ।

वापस कैसे जाएंगे ? - उसका अगला सवाल ।

ऐसा सवाल जिसका जवाब मेरे पास भी नहीं था !

बड़ी ही विचित्र स्थिति थी !

दो लोग जो मुंबई के कमरे में सोए हुए थे ....

वह नींद से जागने पर एक जंगल के किनारे रेत पर पड़े हुए थे ।

कहां पड़े थे ?

क्यों पड़े थे ?

इसके बारे में कोई जानकारी नहीं थी ।

मेरे मन में विचार आ रहा था कि हो सकता है इसमें गुरुदेव की कोई माया हो ...

या बाबा भैरुंडनाथ का कोई लक्ष्य हो ।

जो भी हो .... कुछ स्पष्ट नहीं हो रहा था ।

जब तक यह स्पष्ट नहीं हो जाता.....

तब तक कुछ कहा नहीं जा सकता था ।

जब काफी देर तक कुछ समझ में नहीं आया तो मैंने ध्यान लगाने के लिए सोचा ।

मैंने अपनी आंखें बंद कर ली ।

आंखें बंद करते ही गुरुदेव का बिम्ब मानस पटल पर स्पष्ट हुआ .....

उन्होंने कहा - थोड़ी देर प्रतीक्षा करो । आगे का मार्ग जल्द ही स्पष्ट होगा । बाई तरफ जो पगडंडी दिख रही है । उसमें चले जाओ । आधा किलोमीटर चलने के बाद तुम्हें रहने का स्थान मिलेगा । अभी कुछ दिन वहीं पर रहो । किसी प्रकार का कोई प्रतिबंध नहीं है । उन्मुक्त अवस्था में तुम्हारी जो इच्छा हो कर सकते हो । इतना कह कर वे लुप्त हो गए ।

रहस्यमय बंगला और महासंभोग

मैंने आंखें खोली तो मेरे सामने विनोदिनी बैठी हुई थी .... मैंने उसे सारी बात बताई ।

हम दोनों एक साथ उस पगडंडी की ओर बढ़ गए । लगभग आधा एक किलोमीटर चलने के बाद हम एक खंडहर के पास पहुंचे । वह खंडहर काफी पुराना लग रहा था । ऐसा लग रहा था जैसे अंग्रेजों के जमाने का कोई बंगला हो । उसे देखने से किसी भूत बंगले जैसा लगता था ।

विनोदिनी ने मेरा हाथ कस कर पकड़ लिया । हम दोनों झिझकते हुए उसके अंदर घुसे । छत कई जगह से टूट चुकी थी !

दीवालें भी दरकने लगी थी !

सामने का गलियारा भी आधा टूटा हुआ था । हम उस में से होते हुए आगे की तरफ बढ़े ....

सामने एक लकड़ी का दरवाजा दिखाई दिया वह दरवाजा गहरे काले रंग के किसी लकड़ी का बना हुआ था ...

जो लगभग 7 फुट ऊंचा और 4 फीट चौड़ा रहा होगा और उसकी मोटाई कम से कम 6 इंच की जरूर रही होगी। अब इतना मोटा लंबा चौड़ा दरवाजा क्यों बनाया गया था ? यह तो भगवान जाने।

हम धीरे-धीरे उस दरवाजे के सामने जाकर खड़े हुए और उसे खटखटाया। आठ दस बार खटखटाने के बाद जब कोई हलचल नहीं हुई तो मैंने दरवाजे को खींचने की कोशिश की ...

वह नहीं खुला.....

मैंने उसे ढकेला तो वह अंदर की ओर खुलता चला गया। लगभग दस ग्यारह बजे का समय रहा होगा, इसलिए धूप बिखरी हुई थी ....

जंगल के बीच होने की वजह से पत्तियों के बीच में से छन छन कर आती हुई धूप ही उस बंगले तक आ रही थी।

इतनी रोशनी थी कि कमरे के अंदर की चीजें दिखाई दे रही थी ...

कमरे के अंदर एक टेबल रखा हुआ था। जिसके ऊपर एक लालटेन रखी थी और उसकी बगल में एक बड़ा सा पलंग पड़ा हुआ था।

वह भी उसी प्रकार के काले रंग की लकड़ी का बना हुआ था और वह सामान्य से काफी बड़ा था । उसकी लंबाई 8 फुट के करीब रही होगी और चौड़ाई भी करीब करीब उतनी ही थी । इतना बड़ा पलंग मैंने अपने जीवन में कभी नहीं देखा , क्योंकि आमतौर पर हमारे यहाँ डबल बेड के पलंग भी 6 बाय 6 के या साढ़े छह बाय साढ़े छह की साइज के होते हैं ।

संभव है उस बंगले में जो भी रहा करता होगा वह काफी लंबा रहा होगा....

इसलिए उसने इस प्रकार की व्यवस्था की होगी ... जो भी हो अंदर की स्थिति को देखकर ऐसा नहीं लग रहा था कि वहां काफी दिनों से कोई रहता होगा ।

हम दोनों ने मिलकर साफ-सफाई की और उसे रहने लायक साफ किया । इतना करते करते धूप चढ़ने लगी थी और लगभग बारह या एक बजे का समय हो चुका होगा क्योंकि सूरज सर के ऊपर दिखाई देने लगा था ।

हम दोनों धूल में सन चुके थे । इसलिए स्नान करने का विचार मन में आया और मैंने विनोदिनी से इसके विषय में पूछा । वह तुरंत इसके लिए सहमत हो गई ...

हम दोनों नदी के तट की ओर चल पडे । वहां पहुंचकर विनोदिनी ने जैसे ही चादर हटाई उसके शरीर पर नजर पड़ते ही मेरा शरीर उत्तेजित होने लगा और वह तैयार हो गया । मेरे शरीर पर नजर पड़ते ही विनोदिनी ने शरमा कर नजर फेर ली ।
मैं स्वाभाविक कामना के चलते उसकी ओर बढ़ने लगा और फिर नदी तट पर होने का आभास होते ही हम दोनों स्नान करके वापस हाथों में हाथ डालकर उस पुराने बंगले में लौट आए ।

बंगले में पहुंचते तक मेरी उत्तेजना चरम पर पहुंच चुकी थी और मैंने विनोदिनी को उस बड़े पलंग पर खींच लिया । लगभग एक घंटे तक सब कुछ चलता रहा और हम दोनों निढाल होकर सो गए ।
उस दिन और रात में कुल मिलाकर ऐसा चार-पांच बार हुआ होगा । लगभग पंद्रह दिनों तक रोज लगभग यही स्थिति रही । सोलहवें दिन जब हम सुबह सो कर उठे तो कमरा चमेली की महक से भरा हुआ था ।
ऐसा लग रहा था जैसे पूरा कमरा चमेली के फूलों से भरा हुआ हो .... लेकिन वास्तव में वहां पर कोई भी

चमेली का फूल नहीं था लेकिन उसकी महक वहां पर विराजमान थी । मुझे समझ में आ गया था कि कोई शक्ति वहां पर मौजूद है जो अपनी उपस्थिति का आभास इस प्रकार से करा रही है, लेकिन वह शक्ति कौन सी है ? यह समझ में आने की स्थिति में मैं भी नहीं था ।

विनोदिनी भी उस खुशबू को एहसास कर पा रही थी । उस खुशबू से हम दोनों के शरीर में फिर से उत्तेजना होने लगी और फिर हम रतिक्रिया में लग गए, लेकिन इस बार परिस्थितियां कुछ और प्रकार की हो गई थी ।

सुबह लगभग साढ़े छह या सात बजे प्रारंभ हुई क्रिया दोपहर के बारह बजे तक चलती रही । हम दोनों की हालत खराब हो चुकी थी .....

न ही मेरा स्तंभन समाप्त हो रहा था ना हम एक दूसरे से अलग हो पा रहे थे.....

उसी प्रकार से क्रिया चलती रही और लगभग दो बजे हम दोनों निढाल होकर लगभग बेहोश हो गए ।

जब फिर से नींद खुली तो रात्रि आ चुकी थी । चांदनी भी चारों ओर बिखरी हुई थी ....

फिर से कमरे में चमेली की महक आने लगी और फिर हम लोग क्रिया में लीन हो गए.....
इस बार की क्रिया पहले की तुलना में लगभग दुगने समय तक चली होगी क्योंकि जब हम लोग अपनी अंतिम अवस्था में पहुंचे उस समय तक दोपहर का समय हो रहा था ...
इस प्रकार से लगभग बारह दिन तक हमारा समय थोड़ा थोड़ा बढ़ता रहा और तेरहवें दिन जब क्रिया प्रारम्भ हुई तो वह पूरे 24 घंटे तक चलती रही ....
इसे साधना के क्षेत्र में महा संभोग कहा जाता है । यह एक ऐसा संभोग होता है जिसके बाद संभोग करने की इच्छा ही समाप्त हो जाती है । साधक समाधि की अवस्था में चला जाता है । संभोग के समय जो आनंद की अनुभूति होती है वह क्षण मात्र के लिए होती है.... उसी आनंद की फिर से अनुभूति प्राप्त करने के लिए पुरुष और स्त्री दोनों सहवास में लिप्त होते हैं । अगर वही आनंद आपके मस्तिष्क में स्वयं अनुभूत होने लगे तो आप सहवास की ओर आकर्षित नहीं होंगे यही स्थिति इस प्रक्रिया में बनती है ...

हम दोनों का वह संभोग लगभग चौबीस घंटे तक चलता रहा और उसके बाद जब वह पूर्ण हुआ तो मेरे मानस पटल पर गुरुदेव की आकृति स्पष्ट हुई ।

उन्होंने कहा - स्त्री और पुरुष के बीच का संभोग इस जीवन का सबसे बड़ा आकर्षण है और प्रकृति में किसी भी चीज को उत्पन्न होने के लिए प्रयुक्त होने वाला कारक भी ....

वास्तव में इस में जो आनंद की प्राप्ति होती है, उसे ब्रह्मानंद सहोदर कहा गया है अर्थात उस आनंद का सहोदर जिसे समाधि की अवस्था में प्राप्त किया जाता है ....

तुम्हारे द्वारा संपन्न यह महासंभोग तुम्हें ब्रह्मानंद का अनुभव करने मे सक्षम बनाएगा ।

अब जब भी तुम ध्यान की अवस्था में बैठोगे तो तुम्हें उस आनंद की अनुभूति स्वयमेव होगी.....

इसके लिए तुम्हें स्त्री शरीर के साथ सहवास की आवश्यकता नहीं होगी ...

तुम्हारे अंदर स्थित अर्धनारीश्वर स्वरुप के जागरण के कारण आंतरिक रुप से पुरुष और स्त्री का मिलन संपन्न होगा और तुम्हें उस आनंद की अनुभूति होगी ...

आने वाले समय में तुम्हें इसका अनुभव होगा ।

तुम दोनों का जन्म विशेष उद्देश्य से हुआ है । गृहस्थ जीवन तुम्हारे लिए नहीं है । आने वाले समय में तुम्हें साधनाओं के क्षेत्र में आगे बढ़ना है और श्रेष्ठता प्राप्त करनी है .....
विनोदिनी को भी अभी कई साधनाएं संपन्न करनी है और इसके लिए वह दूसरे स्थान पर जाएगी । संभव है कि तुम काफी लंबे समय तक एक दूसरे से ना मिल पाओ ।
अब से तुम दोनों की अलग-अलग यात्रा प्रारंभ होगी ...
इतना कहकर गुरुदेव लुप्त हो गए ।

मैंने विनोदिनी को इसके विषय में बताया । तो उसने कहा कि उसे भी कुछ इसी प्रकार के संकेत प्राप्त हो चुके हैं ।

उसकी आंखें गीली हो गई थी । मुझसे अलग होने की बात सोच कर मेरी आंखें भी नम थी । इन कुछ दिनों में हम एक दूसरे के बहुत करीब आ चुके थे और अब अलग होने का समय हो चुका था ।

हम दोनों वहां बैठकर सोचते रहे ....

इसके बाद कुछ अजीब सा घटित होने लगा ।

हम दोनों निर्वस्त्र होने के बावजूद एक दूसरे की तरफ आकर्षित नहीं होते थे !

हाथ पकड़ना !

बात करना !!

साथ में बैठना !!!

यह सब तो चलता रहता था लेकिन वह जो शारीरिक आकर्षण था, वह समाप्त हो चुका था ।

उसके बाद लगभग दस दिनों तक हम वहीं पर मौजूद रहे । इस बीच में कई बार 15 मिनट से लेकर दो से चार घंटे तक हम समाधिस्थ रहते । उस दौरान समय का पता ही नहीं चलता था चित्र विचित्र किस्म के दृश्य भी दिखाई देते थे....

भौतिक जीवन में अगर आप देखे तो स्त्री और पुरुष के बीच में जो आकर्षण होता है, वह उसी एक आंशिक क्षण मात्र की सुखद अनुभूति के लिए होता है, जो स्त्री पुरुष के बीच संबंधों के दौरान उन्हे प्राप्त होती है.....

उसी सुख को प्राप्त करने के लिए अलग-अलग प्रकार से प्रयास किए जाते हैं ...

कई प्रकार के संबंध बनाए जाते हैं....

कई प्रकार के प्रपंच रचे जाते हैं....

समाधि की उस अवस्था में उसी आनंद को मैं लंबे समय तक महसूस कर सकता था ।

उसे प्राप्त कर लेने के बाद शारीरिक संबंधों से प्राप्त होने वाला क्षणिक सुख नगण्य सा प्रतीत होता था....

इसलिए उसके प्रति आकर्षण धीरे-धीरे समाप्त होने लगा और उस एक हफ्ते के भीतर हम लोगों ने अनेक विचित्र प्रकार की अनुभूतियां प्राप्त की ....

जिसमें प्रत्यक्षीकरण से लेकर सुनने में असंभव लगने वाली अनुभूतियां शामिल थी ।

दस दिन गुजरने के बाद एक दिन बाबा भैरुंडनाथ और नंदिनी वहां पर प्रकट हुए । वे शून्य से अचानक वहां पर ऐसे प्रकट हुए जैसे वहां पर कोई गुप्त द्वार हो ।

बाबा ने मुझसे कहा - बेटा ! अब तुम्हारा गृहस्थ जीवन को छोड़कर आने का समय हो चुका है । इसलिए तुम जाओ और अपना क्लीनिक बंद करके घर वालों की

अनुमति लेकर वापस बनारस पहुंचो। विनोदिनी पहले ही घर छोड़ चुकी है। इसलिए उसे अब और कुछ करने की आवश्यकता नहीं है। उसे हम लेकर जा रहे हैं। इतना कहकर नंदिनी और भैरुंडनाथ विनोदिनी को लेकर वहां से लुप्त हो गए।

योगमाया और योग शिक्षा

/*/*/*/*/*/*/

आगे योग से संबंधित कुछ विशेष क्रियाओं का जानकारी के लिए उल्लेख किया गया है । इस संबंध में पाठकों से अनुरोध है कि वह इसे पढ़कर कोई क्रिया ना करें । योग का अभ्यास किसी अनुभवी गुरु के सानिध्य में ही करना चाहिए । जटिल योगिक क्रियाएं अपने से नहीं करनी चाहिए । इससे आपको शारीरिक नुकसान हो सकता है । इस प्रकार से होने वाले नुकसान को ठीक करना काफी कठिन और लगभग असंभव होता है । अतः सावधानी रखें ।

/*/*/*/*/*/*/

मैं वहां बैठा हुआ था.....

बैठे-बैठे फिर से मेरा ध्यान लग गया और मैं शून्य की अवस्था में पहुंच गया ।

कितनी देर तक वैसे बैठा रहा ....

यह मुझे पता नहीं पर किसी के हिलाने से मेरा ध्यान टूटा ।

जब मैं ने आंखें खोली तो मेरे शरीर में सिहरन सी दौड़ गई ।

जिसने मुझे हिलाया था, वह लगभग साढ़े छह या पौने सात फुट के आसपास ऊंची मजबूत शरीर वाली एक गोरी अंग्रेज़ महिला थी ।

उसने काले कंबल जैसे कपड़े का गाउन जैसा पहना हुआ था ....

जो मुश्किल से उसके घुटनों तक आ रहा था ....

उसके गले में बड़े-बड़े रुद्राक्ष के दानों की माला थी । वे दाने लगभग आंवले के आकार के थे । आमतौर पर रुद्राक्ष के दाने काले या गहरे लाल रंग के होते हैं, लेकिन उसके गले में पड़ी हुई माला के दाने बादामी रंग के थे.....

बाएं हाथ में एक लोहे का बना हुआ त्रिशूल था । जो लगभग 5 साढे 5 फीट लंबा रहा होगा ।

उसके मुंह से गरजती हुई आवाज निकली - यहां बैठने के लिए आया है या कुछ सीखना भी है ?

मैं सकपका गया और उठ कर खड़ा हो गया ।

मैंने पूछा - आप कौन हैं ?

वह मुझे छोड़ कर आगे की ओर चल पड़ी जैसे उसने मेरे सवाल को सुना ही नहीं यह देखकर मैं भी उनके पीछे पीछे हो लिया....

उसके बाद मेरा योग का प्रशिक्षण प्रारंभ हुआ। जिसमें उन्होंने विभिन्न प्रकार की मुद्राएं और आसनों का अभ्यास कराना प्रारंभ किया।

एक दिन जब वे ध्यान में बैठी थी तो मैं भी उनके सामने ध्यान लगा कर बैठा हुआ था। मेरी आंखें अचानक खुल गई तो मैंने अचानक देखा कि उनका पूरा शरीर पारदर्शी हो गया था। उसके भीतर घूमते हुए चक्र स्पष्ट दिखाई दे रहे थे ....

ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे वे कांच की बनी हुई हो और उसके अंदर सारे चक्र घूम रहे हो।

उस दौरान उनके चारों तरफ एक विचित्र सा आभामंडल फैला हुआ था। जो लगभग 10 फुट के व्यास में रहा होगा। वैसा आभामंडल मैंने उनके बाद किसी और का नहीं देखा। उसी अवस्था में मैंने उन्हें अपने आसन से ऊपर उठते हुए भी देखा। वह जमीन से लगभग 3 फुट ऊपर जाकर स्थिर हो गई। वे उसी अवस्था में लगभग आधे घंटे तक बनी रही। फिर अपने आप उनका आसन वापस जमीन पर आकर स्थिर हो गया। ऐसी कई विचित्र घटनाएं उनके साथ मैंने महसूस की।

उन्होंने मुझे कई प्रकार के आसनों का अभ्यास कराया। वे सिखाने के मामले में बहुत कठोर थी और उनके हाथ में एक बेंत हमेशा रहती थी। जहां गलती हुई वहां पीठ पर बेंत की मार पड़ती थी ....

एक तो वह खुद लंबे चौड़े बदन की स्वामिनी थी। उसके साथ उनकी मार भी पूरी ताकत के साथ होती थी। इतनी ताकत से कि शरीर पर लंबे लंबे निशान पड़ जाते थे !

जैसा कि आप लोग भी जानते हैं कि योग के कई आसन ऐसे होते हैं, जिन्हें करने के लिए निरंतर अभ्यास की जरूरत होती है, और शरीर में लचीलापन होना भी जरूरी होता है।

मैंने अपने जीवन में कभी योगाभ्यास नहीं किया था इसलिए मेरा शरीर लचीला नहीं था। इस वजह से कई बार आसन नहीं लग पाते थे और जब उनकी बेंत पीठ पर पड़ती तो न जाने कैसे जटिल और मुश्किल आसन भी लग जाता था। संभवत: वे उस मार के साथ कुछ और क्रिया भी करती रही होंगी।

धीरे धीरे मेरा शरीर उन आसनों के अभ्यास से रबर की तरह लचीला हो गया था।

इसके अलावा वे मुझे शरीर शुद्धि के लिए कई प्रकार की क्रियाएं करवाती थी ...

जिसमें तीन क्रियाओं का विशेष रूप से उल्लेख करना चाहूंगा ।

पहली थी नेति ! जिसमें नाक के एक छिद्र में से पानी डालकर दूसरे में से पानी निकाला जाता है । जिसे जल नेति कहते हैं । इसी में दूसरी क्रिया में धागा नाक में एक छेद से डालकर दूसरे से निकाला जाता है । इसे सूत्र नेति कहते हैं । इससे नाक के अंदर किसी प्रकार का मल जमा हो तो वह साफ हो जाता है । इन क्रियाओं के दौरान नाक से थोड़ा-थोड़ा खून भी निकल जाता पर धीरे-धीरे उसकी आदत हो गई ।

दूसरी क्रिया थी धौति !

इसमे मुलायम कपड़े का लगभग 2 इंच चौड़ा और 3 मीटर के आसपास लंबा कपड़ा लिया जाता था और उसे धीरे धीरे चबाकर निगला जाता था । इस निगलने की प्रक्रिया के दौरान कपड़ा आहार नली के अंदर सारे मल को अपने साथ लेता हुआ आगे बढ़ता था । जब इसे धीरे-धीरे कर के आखिर में बाहर निकाला जाता था

एनिमा लिया हो या एनिमा देते हुए देखा हो तो ....
उसमें एक एनिमा का डब्बा होता है जिसके अंदर पानी भरा होता है । उसमें से एक पाइप निकला होता है जिसके किनारे में एक एनिमा बल्ब होता है, जिसे गुदा मार्ग में लगाया जाता है । उस डब्बे में से पानी हमारे गुदा मार्ग से होता हुआ अंदर चला जाता है । फिर वह आंतों को साफ करके इसी प्रकार से बाहर निकल जाता है .... जैसा मैंने अभी आपको बताया था ।

यह सारी क्रियाएं आंतरिक मल को साफ करने के लिए की जाती हैं । इन सारी क्रियाओं को करने के बाद मेरा पूरा शरीर मुझे बेहद हल्का सा लगने लगा था ....
ऐसा लगता था जैसे पूरा शरीर रुई का बना हुआ हो ।
हां ! उस दौरान भोजन की मात्रा भी बहुत कम हो गई थी और बेहद अल्प मात्रा में शुद्ध घी से बनी हुई खिचड़ी ही खाने को मिलती थी । केवल उसे खाकर यह सारी क्रियाएं संपन्न करनी थी ।

इनमें सबसे विचित्र बात यह थी कि उस बंगले मे न तो कोई गाय थी ना कोई भैंस और ना ही कोई रसोई ।
लेकिन जब भोजन का समय होता था तो वहां बने हुए डायनिंग रूम में लगे हुए काले रंग के लकड़ी के बने लंबे

से टेबल के ऊपर चांदी की प्लेट में खिचड़ी रखी हुई होती थी और साथ में लाल रंग के पानी का जग होता था, संभवतः उस पानी मे कोई औषधि मिली रहती थी ....

इसके अलावा वहां कुछ भी नहीं रहता था.......

भोजन कर लेने के बाद थाली वही छोड़ना होता था और एक दो बार जब मैंने बाद मे चुपके से वहां जाकर देखा तो टेबल फिर से खाली थी ...

वह थाली न जाने कौन वहां से लेकर जा चुका था !

अगले दिन के भोजन के समय पर उसी प्रकार से थाली दुबारा प्रकट हो जाती थी....

इसके पीछे का रहस्य उन्होंने मेरे पूछने के बाद भी नहीं बताया .....

समय बीतने के साथ उन से चर्चा भी होने लगी और उन्होंने अपने जीवन के विषय में भी बहुत कुछ बताया ।

वह गुरुदेव की गुरु बहन थी और उनका नाम था योगमाया ...

वे लगभग 105 वर्ष की अंग्रेज महिला थी ।

वह मूल रूप से ब्रिटेन की रहने वाली थी ।

जब वे लगभग पंद्रह वर्ष की हुई तो एक दिन ब्रह्म मुहूर्त में उन्हें एक तिब्बती लामा के दर्शन हुए । जो उनके कमरे में उनके बिस्तर के पास खड़ा हुआ था । उसके चारों तरफ हल्के सफेद रंग का प्रकाश बिखरा हुआ था । उसने उनके माथे पर हाथ फेरा और लुप्त हो गए । इस घटना के बाद उनकी रुचि अध्यात्म में बढ़ने लगी । योग तथा उससे संबंधित विद्याओं पर उनकी विशेष रुचि थी । वह तिब्बती लामा उन्हें निरंतर मार्गदर्शन प्रदान करता रहता था और उस के माध्यम से वे योग साधना के क्षेत्र में काफी आगे बढ़ चुकी थी और उन्हें कई प्रकार के आध्यात्मिक अनुभव भी होने लगे थे । बीस वर्ष की आयु मे एक दिन जब वे ध्यान लगा रही थीं तो उनके साधना कक्ष मे तिब्बती लामा का बिम्ब प्रकट हुआ । उसने उसे भारत जाने का निर्देश दिया । उस रहस्यमय लामा के निर्देश पर वे भारत की यात्रा पर आई थी और यहीं पर बस गई ।

यह बंगला उनके द्वारा अपने लिए बनवाया गया था । इसलिए उसके दरवाजे और पलंग का आकार सामान्य से बड़ा था क्योंकि वह स्वयं विशाल आकृति की थी ।

बिल्कुल गोरे चिट्टे रंग की स्वामिनी और हल्के नीले रंग की आंखों वाली योग माया का व्यक्तित्व अपने आप में अद्भुत और रहस्यमय था ।

वह बंगला उत्तराखंड के जंगलों में बना हुआ था जो कि भारत की सीमा के काफी करीब था । उसी के साथ तिब्बत की सीमा भी लगी हुई थी । वह स्थान प्राकृतिक सौंदर्य से भरा पूरा था ।

मौसम भी काफी ठंडा और स्थिर होता था ...

योग से उठने वाली उर्जा को संभालने के लिए यह जरुरी होता है कि वातावरण थोड़ा शांत और ठंडा हो । इसीलिए अधिकांश योगी हिमालय जैसे ठंडे स्थानों पर योग का अभ्यास करते हैं । यह भी उसके आसपास का इलाका था और योग करने के लिए सर्वश्रेष्ठ स्थान था ।

वज्रोली

मेरी ट्रेनिंग चलती रही....

मुझे आसनों के अभ्यास के अलावा एक विशेष प्रकार के मंत्र का जाप भी करना होता था।

वह मंत्र किसी अजीब सी भाषा में था जो मैंने इससे पहले नहीं सुना था। इसके विषय में बाद में उन्होंने बताया कि वह तिब्बती भाषा का मंत्र है।

भारत की सीमा पर स्थित तिब्बत तंत्र साधना में काफी उच्च स्तर पर पहुंचा हुआ क्षेत्र है। हिमालय की तराई में मौजूद बर्फ से ढके हुए अद्भुत देश में आज भी सैकड़ों साल की आयु प्राप्त अति विशिष्ट योगी पाए जाते हैं। वहां बने हुए मंदिरों या बौद्ध मठ को गोंपा कहा जाता है।

गोम्पा भिक्षुओं की सुरक्षा के लिए मज़बूत दिवारों और द्वारों से घिरे होते हैं। इनका निर्माण भी तांत्रिक विधि विधान से संपन्न किया जाता है और इसकी संरचना इस प्रकार से बनाई जाती है कि यह एक मंडल या यंत्र के रूप में बना हुआ होता है। जिसके केंद्र में भगवान

बुद्ध की मूर्ति या उनके किसी स्वरूप को दर्शाने वाली तांत्रिक पेंटिंग जिसे थंका पेंटिंग भी कहते हैं..... वह बनी हुई होती है । आमतौर पर यह गोम्पा किसी पहाड़ के या चट्टान के ऊपर बनाए जाते हैं । ऐसा संभवत: सुरक्षा की दृष्टि से किया जाता होगा ।

उनकी साधना पद्धति और क्रियाएं बेहद अद्भुत और जटिल होने के साथ-साथ शीघ्र सिद्धि प्रदायक भी होती है ....

इस प्रकार की कुछ-कुछ रहस्यमय बातें वह बीच-बीच में बताया करती थी लेकिन वह मंत्र जाप क्यों किया जा रहा है ?
यह उन्होंने शुरु में नहीं बताया ....
वास्तव में वह मंत्र जाप इन सब क्रियाओं के अंत में जो क्रिया वह मुझे बताने वाली थी उसके लिए आवश्यक था ....
वह अंतिम योग या तांत्रिक क्रिया जो उन्होंने मुझे बताई थी वह थी ..... वज्रोली !
वज्रोली की क्रिया तंत्र साधना में उच्च्व स्तर पर पहुंचने के बाद संपन्न की जाने वाली एक प्रक्रिया है । इसे

बुद्ध की मूर्ति या उनके किसी स्वरुप को दर्शाने वाली तांत्रिक पेंटिंग जिसे थंका पेंटिंग भी कहते हैं..... वह बनी हुई होती है । आमतौर पर यह गोम्पा किसी पहाड़ के या चट्टान के ऊपर बनाए जाते हैं । ऐसा संभवत: सुरक्षा की दृष्टि से किया जाता होगा ।

उनकी साधना पद्धति और क्रियाएं बेहद अद्भुत और जटिल होने के साथ-साथ शीघ्र सिद्धि प्रदायक भी होती है ....

इस प्रकार की कुछ-कुछ रहस्यमय बातें वह बीच-बीच में बताया करती थी लेकिन वह मंत्र जाप क्यों किया जा रहा है ?
यह उन्होंने शुरू में नहीं बताया ....
वास्तव में वह मंत्र जाप इन सब क्रियाओं के अंत में जो क्रिया वह मुझे बताने वाली थी उसके लिए आवश्यक था ....
वह अंतिम योग या तांत्रिक क्रिया जो उन्होंने मुझे बताई थी वह थी ..... वज्रोली !
वज्रोली की क्रिया तंत्र साधना में उच्च्च स्तर पर पहुंचने के बाद संपन्न की जाने वाली एक प्रक्रिया है । इसे

करने के लिए शरीर को योगिक रूप से भी सक्षम होना चाहिए। यह क्रिया मूल रूप से संकुचन विकोचन की एक क्रिया है जिसके माध्यम से लिंग के माध्यम से किसी द्रव पदार्थ को अंदर खींचा जा सकता है ....
जैसा कि आप लोग जानते ही हैं कि लिंग के द्वारा वीर्य और मूत्र दोनों चीजें बाहर निकलती है जो कि स्वाभाविक रूप से संपन्न होने वाली क्रिया है , लेकिन यह इन सब के विपरीत क्रिया है अर्थात बाहर की चीज को अंदर खींच लेने की क्रिया वज्रोली कहलाती है .....
इसके लिए उन्होंने मुझे कई प्रकार की प्रक्रियाओं से पार कराया ....
इसमें सबसे पहले पानी को अंदर खींचा जाता है। जब पानी को खींचने का अभ्यास हो जाता है तो फिर दूध जैसे थोड़े से मोटे द्रव का इस्तेमाल किया जाता है। आखिरी चरण में शहद का इस्तेमाल किया जाता है। जब शहद को अंदर की तरफ खींचने की प्रक्रिया पूर्ण हो जाती है तब उसके बाद वज्रोली क्रिया को करने में योगी को सफलता प्राप्त हो जाती है।

वास्तव में यह क्रिया युग युगल तंत्र साधना में प्रयुक्त होती है। इसके माध्यम से पुरुष और स्त्री साधक स्खलित हुए वीर्य को वापस अपने शरीर में खींच लेते हैं।

इसे ही वास्तव में वीर्य का उर्ध्वगामी होना कहा जाता है ....

ऊर्ध्व का मतलब होता है ऊपर और गामी का मतलब होता है जाना ....

सामान्यतः वीर्य नीचे की तरफ आता है....

और बाहर निकल जाता है.....

जो उसकी स्वाभाविक गति है.....

इसे अधोगामी कहा जाता है।

इसका विपरीत होता है ऊर्ध्वगमन !

जहां पर उसे वापस खींच लिया जाता है और यह लिंग के माध्यम से अंदर जाता है और नाड़ियों से होता हुआ सहस्रार तक पहुंचता है ....

ऐसा उर्ध्वगामी वीर्य इस यात्रा में सारे चक्रों को चैतन्य करता जाता है.....

यह क्रिया बहुत जटिल है और इसके लिए बहुत कड़े अभ्यास और आत्म नियंत्रण की आवश्यकता पड़ती है।

वायुगमन

वज्रोली की क्रिया सिद्ध हो जाने के बाद एक दिन उन्होने नौली क्रिया के विषय में जानकारी देते हुए नौली क्रिया से वायुगमन सिद्धि के विषय में बताया । यह सुनने में मेरे लिए एक बहुत ही अजीब सी बात थी, लेकिन यह बात योगमाया बता रही थी इसलिए मुझे लगा कि यह संभव होगा तभी वे ऐसा बता रही है ....

बाबा रामदेव ने योग के कई रहस्यों को आम जनता के समक्ष उजागर किया है । वे वास्तव मे वर्तमान समय के योग के विश्वगुरु हैं । उनकी वजह से आज करोड़ों लोग प्राणायाम और योग आसनों को अपनाकर स्वास्थ्य लाभ प्राप्त कर रहे हैं । वह वास्तव में भारत रत्न है ।

अगर आपने उनको नौली क्रिया करते हुए देखा हो तो आप जानते होंगे कि नौली क्रिया का तात्पर्य नाभि भाग में स्थित नाडियों के गुच्छों को गोल-गोल घुमाना होता है !

इसमें ऐसा महसूस होता है जैसे कोई गोल चीज नाभि के इर्द-गिर्द घूम रही हो । यह क्रिया भी काफी

जटिल है और इसे करने के लिए लगातार अभ्यास की जरूरत पड़ती है। इसे जितनी सहजता से बाबा रामदेव करके दिखाते हैं वैसा करना इतना आसान नहीं होता। क्योंकि आमतौर पर हमारे नाभि के ऊपर चर्बी की काफी परतें जमी हुई होती है ....

वायुगमन सिद्धि का विवरण हमे हनुमान जी के समुद्र लंघन के प्रकरण मे मिलता है। इसमें हनुमान जी समुद्र के इस पार से हवा में उड़ते हुए लंका पहुंच गए थे। इसे तंत्र साधना की विशिष्ट सिद्धियों में से एक माना गया है और काफी उच्च्च कोटि के साधक ही इस स्थिति को प्राप्त कर पाते हैं.....
यूं समझ लीजिए कि करोड़ों में कोई एक इस स्थिति तक पहुंच पाता है ....

नौली क्रिया के माध्यम से वायुगमन हो सकता है, यह मानने में मुझे थोड़ा सा संदेह हो रहा था और वह मेरी आंखों में छलक गया। उसे देखकर उन्होंने मुझे वह क्रिया करके दिखाने का मन बना लिया ...
वे पद्मासन में बैठ गईं ! उसी स्थिति मे उन्होंने अपनी नाभि को गोल-गोल घुमाना चालू कर दिया और धीरे-

धीरे उसकी गति बढ़ती चली गई । लगभग 15 मिनट के बाद धीरे-धीरे उनका शरीर भूमि से उठने लगा और लगभग चार फुट तक ऊपर उठ गया .... उसके बाद उनके शरीर मे हलचल हुई और उनका पद्मासन मे स्थित शरीर दरवाजे से होता हुआ बाहर निकल गया ...
मैं देखने के लिए पीछे भाग कर गया तो मैंने देखा कि उनका शरीर पेड़ों के ऊपर से होता हुआ गायब हो गया ....
मैं वहीं ऊपर ताकता खड़ा रहा....
लगभग तीन चार मिनट के बाद पेड़ों के ऊपर वे फिर से प्रकट हुई और धीरे-धीरे मेरे सामने आकर भूमि पर स्थिर हो गई ....
उनका पूरा शरीर भीगा हुआ था जैसे वह नदी में डुबकी लगा कर आई हो ।
मैं यह सारी चीजें अपने सामने स्पष्ट होता हुआ देख रहा था और आश्चर्यचकित था योग के चमत्कार को देखकर ....
चमत्कार को हमेशा नमस्कार किया जाता है !
हम अपने जीवन में भी इसी नियम का पालन करते हैं ।
जब भी हम कोई ऐसी चीज देखते हैं जो हमारे लॉजिक

से बाहर हो या जिसकी व्याख्या करने में हमें दिक्कत हो तो हम उसे चमत्कार में स्वीकार करते हैं ....
और ऐसे चमत्कार दिखाने वाले को सिद्ध योगी मान लेते हैं ।
मैं भी इसका अपवाद नहीं था ।
उन्हें इस प्रकार से भूमि से ऊपर उठता हुआ देखकर मेरे हृदय में श्रद्धा का भाव अपने आप बढ़ने लगा था .....
बाद में उन्होंने मुझे नौली क्रिया भी सिखाई ....
कुल मिलाकर चार-पांच महीने का समय उनके साथ व्यतीत हुआ । उन्होंने मुझे योग के हर विषय को सिखाने में कोई कसर नहीं छोड़ी ।
अगर मैं कहूं तो वे योग विद्या की पूरी एनसाइक्लोपीडिया थी । योग विद्या का कोई भी क्षेत्र कोई भी बिंदु ऐसा नहीं था जो उनके सीमा से बाहर हो । हर विषय पर उनकी बेहद तगड़ी पकड़ थी । योग को जैसे उन्होंने अपने पूरे शरीर में रचा बसा लिया था ।
उनकी आयु 105 वर्ष की थी लेकिन उनको देखकर कोई भी 40 या 45 वर्ष से ज्यादा का नहीं बोल सकता था ।
उनके बाल सुनहरे थे और पूरी त्वचा तनी हुई थी । शरीर में कहीं भी झुर्री का नामोनिशान नहीं था ।

त्राटक

योग के अलावा वे त्राटक का अभ्यास भी करती थीं । त्राटक का मतलब किसी भी चीज को बिना पलकें झपकाए एकटक देखते रहना होता है । इसका अभ्यास पहले एक बिंदु से प्रारंभ होता है फिर दीपक और अग्नि से बढ़ते बढ़ते सबसे अंतिम चरण में सूर्य पर त्राटक का अभ्यास किया जाता है ।

शुरुआती दौर में कभी भी सूर्य पर त्राटक नहीं करना चाहिए क्योंकि ऐसा करने से आपकी आंखों की रोशनी जा सकती है । इसलिए सूर्य त्राटक का अभ्यास किसी योग्य और समर्थ गुरु के मार्गदर्शन और उनकी अनुमति से ही करना चाहिए क्योंकि इसमें कुछ तांत्रिक क्रियाएं और मंत्रों का भी प्रयोग किया जाता है ।

वह प्रतिदिन सूर्य त्राटक का अभ्यास करती थी । इसके लिए वे उसी प्रकार शून्य में आसन लगा लेती थी और पेड़ों के ऊपर उठ जाती थी । वहां से उगते हुए सूरज पर त्राटक करती थी और कभी-कभी तो मध्यकालीन सूर्य को भी वे दस मिनट तक एकटक देख लेती थी.....

जो कि सामान्यतः संभव नहीं होता है ।

उन्होंने एक दिन मुझे बताया कि त्राटक के अभ्यास से नेत्रों में भी दिव्य शक्ति जागृत होने लगती है । इससे वह चीजें भी दिखाई देने लगती है जो सामान्य आंखों से नहीं दिखाई देती ....
यहां तक कि सौ मीटर की दूरी पर किसी पेड़ में चल रही चींटी भी स्पष्ट दिखाई दे सकती है ।

यह सुनकर मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ और साथ ही थोड़ा सा संदेह भी कि क्या वास्तव में ऐसा संभव है ? सौ मीटर की दूरी से पेड़ का दिखना तो स्वाभाविक है । पेड़ की छाल का दिखना भी समझ में आता है, लेकिन उसमें चल रही चींटी का दिखना थोड़ा सा अविश्वसनीय सा महसूस हुआ ।
यह तो किसी आधुनिक कैमरे के टेलिफोटो लेंस जैसा मामला हो गया था.... जिसमें फोकस करके आप दूर की चीजों को आसानी से देख सकते हैं । जिसका इस्तेमाल आमतौर पर वाइल्ड लाइफ फोटोग्राफर करते हैं । जो काफी दूर से चिड़ियों और जंगली जानवरों की फोटो इस प्रकार से खींचते हैं । इसके लिए कैमरे में

लगभग एक फुट का लेंस सेट लगाया जाता है, जिसके अंदर कई अलग-अलग लेंस का कॉम्बिनेशन होता है , जिनकी सहायता से दूर की चीजें पास में दिखाई देने लगती हैं ।

हमारी आंख में तो कुल जमा एक छोटा सा लेंस होता है उससे इस प्रकार देख पाना कैसे संभव होगा यह मेरे लॉजिक में बैठ नहीं रहा था ।

बतौर गुरु सिखाने के मामले में वे जितनी कठोर थी अंदर से उतनी ही मृदुल और ममतामई थी । ठीक वैसे ही जैसे बालक के अनुरोध पर माँ उसे सब कुछ प्रदान कर देती है...

वैसा ही मुझे वहां महसूस होता था ...

उनके व्यक्तित्व के विषय में निम्नलिखित श्लोक एकदम सही बैठता है ।

नारिकेल समाकारा पश्यंती सज्जना: ।
अन्या बदरिकाकारा बहिरेव मनोहरा ॥

अर्थात जो सज्जन पुरुष होते हैं, वह नारियल के समान बाहर से कठोर दिखाई देते हैं । लेकिन जब हम उस

कठोर बाहरी आवरण को पार करके उनके पास या केंद्र मे पहुंचते हैं, तो मीठा गूदेदार फल मिलता है, और शीतल अमृत के समान जल की प्राप्ति होती है ।

योग माया जी साक्षात इसका प्रमाण थी ।

इस श्लोक की दूसरी लाइन का मतलब होता है कि जो दुष्ट तथा चालाक या कुटिल किस्म के लोग होते हैं, वह बाहर से अत्यंत सज्जन या सुंदर दिखाई देते हैं । उनके बात करने का ढंग इतना लच्छेदार और प्रभावी होता है कि आप उसके आकर्षण में बंध कर ऐसा सोचने लगते हैं कि यह बहुत ही अच्छा पुरुष या स्त्री है , लेकिन ऐसे लोग उस बेर की तरह होते हैं जो बाहर से बहुत सुंदर दिखाई देता है लेकिन जब उसे खोलकर देखा जाता है तो उसके अंदर कीड़े निकलते हैं ।

खैर.....

योगमाया ने मुझे बहुत सारी चीजें प्रैक्टिकली करके दिखाई । जब कोई गुरु अपने शिष्य को ज्ञान प्रदान करता है और उसका व्यावहारिक अनुभव भी प्रदान करता है तो शिष्य उन चीजों को ज्यादा क्षमता के साथ

और ज्यादा पूर्णता के साथ सीखता है और अपने जीवन में उतारता है ।

इसलिए एक श्रेष्ठ गुरु का सानिध्य मिलने मात्र से ही शिष्य अपने आप में अद्बितीय हो जाता है ....

मेरे साथ भी ऐसा ही हुआ....

उनके द्बारा सिखाए गए योग विद्या के मर्म को मैंने आत्मसात किया क्योंकि उन्होंने सारी चीजें बहुत ही व्यवहारिक ढंग से मुझे सिखाई ।

त्राटक के विषय में बताने के बाद मेरे संशय को दूर करने के लिए उन्होंने मुझे उसका प्रैक्टिकल भी करके दिखाया ।

उन्होंने हवा में हाथ फैलाया और गोमची के दस दाने प्राप्त किए । गोमची एक लाल काले रंग का बीज होता है ,जो कुछ मटर के दाने के आकार का होता है । उन्होंने मुझे सौ मीटर दूर किसी भी पेड़ में उन दानों को रखने के लिए कहा और यह भी कहा - दानों की संख्या तुम अपने हिसाब से तय कर लेना ... मैं यहां से देख कर बताऊंगी कि तुमने कितने गोमची के दाने किस पेड़ पर रखे हैं ।

मैं अंदाज से लगभग सौ मीटर दूर चला गया । वहां पर पेड़ों की कोई कमी नहीं थी ....
इसलिए सीध में तीन पेड़ मुझे मिल गए ।

मैंने उनमें से पहले पेड़ में दो दाने रखे ।
दूसरे पेड़ में चार दाने रखें और तीसरे पेड़ में होशियारी दिखाते हुए तीन ही दाने रखे और एक दाने को अपने पास रख लिया ।
मैं पढ़ा लिखा था तो बीच-बीच में इस तरह की होशियारी अपने आप आ जाती थी और बच्चा समझकर वह मुझे क्षमा भी कर देती थी ।

तीसरे पेड़ के पास खड़े होकर मैंने उनसे बताने को कहा ...
उन्होंने अपनी आंखों को फैला कर मुश्किल से 1 सेकंड तक पेड़ की ओर देखा होगा और तीन उंगलियां उठा दी ...... तीन .... उनकी आवाज आई ....

इसके बाद मैं पहले पेड़ के पास आया और पूछा कि इसमें कितने दाने हैं ?
उन्होंने दो उंगलियां उठाई और जोर से कहा दो ।

दोनों जवाब सही थे ।

इसी प्रकार से मैं फिर तीसरे पेड़ के पास गया और इस बार भी उन्होंने बिल्कुल सही जवाब देते हुए 4 उंगलियां ऊपर की और कहा चार ।
यानी कि उनको वे दाने इतनी दूर से भी दिखाई दे रहे थे । यह वास्तव में एक अद्भुत और आश्चर्यजनक बात थी

....

तिब्बत

एक दिन उन्होंने अपने विषय में बताया- जब मैं यहां आई थी तब तिब्बत और यहां के लोगों के बीच में आना जाना इतना मुश्किल नहीं था और आसानी से लोग इस पार से उस पार और उस पार से उस पार आ जाया करते थे ।

तिब्बत कुनलुन एवं हिमालय के उच्च पर्वत श्रेंणियों के बीच मे बड़े ही दुर्गम भौगोलिक स्थिति में है । यहां जनसंख्या का घनत्व बहुत कम है क्योंकि यहां जीवन बड़ा मुश्किल है ।

तिब्बत की मुख्य नदी यरलुंग त्संगपो है, जो मानसरोवर झील से निकल कर पूर्व दिशा की ओर प्रवाहित होती है और फिर दक्षिण की ओर मुड़कर भारत एवं बांग्लादेश में होती हुई बंगाल की खाड़ी में गिर जाती है।

यरलुंग त्संगपो नदी को ही भारत में ब्रह्मपुत्र नदी कहा जाता है । त्संगपो की घाटी में वहाँ के प्रमुख नगर ल्हासा, ग्यान्त्से एवं शिगात्से आदि स्थित है।

तिब्बत एक लंबे समय तक स्वतंत्र देश रहा वहां भारतीय मुद्रा चलती थी और भारत ही वहां की डाक

व्यवस्था भी देखता था। लेकिन 1951 में चीन ने कुटिलता दिखाते हुए उस पर अपना कब्जा स्थापित कर लिया। ऐसा माना जाता है कि भारत का मौन भी इसका एक प्रमुख कारण रहा।

दरअसल तिब्बती इलाके में स्वर्ण एवं रेडियो धर्मी खनिजों के संचित भंडार प्रचुर मात्रा में उपलब्ध हैं। संभवत: चीन के द्वारा तिब्बत को अपने नियंत्रण में जबरदस्ती हासिल करने के पीछे यही कारण रहा होगा।

यरलुंग त्संगपो की घाटी कई जगह चार से पाँच हजार फुट तक गहरी है और ऐसी ही एक घाटी में वह तिब्बती गोंपा बना हुआ है जहां से मेरे गुरु यरलुंग रिंपों लामा संबंधित है।
उनकी आयु लगभग 311 साल की है और वे अभी 103 साल और जीवित रहेंगे।
मैं 105 वर्ष की योग माया को देखकर आश्चर्यचकित हो रहा था और यहां उनके गुरुदेव तो उनसे भी 200 साल ज्यादा जीवन जी चुके थे और 100 साल और जीवित रहने वाले थे।

यह सब मुझे किसी काल्पनिक कथा जैसा लग रहा था ।

लेकिन यह सत्य था ।

योग माया ने बताया कि तिब्बत की अनेक गोंपाओ में ऐसे सिद्ध पुरुष आज भी मौजूद हैं जिनकी आयु सैकड़ों वर्षों की हो चुकी है ।

यह विवरण सुनकर मेरे मन में उन के गुरुदेव के दर्शन की इच्छा प्रबल होने लगी और यह विचार आया कि अगर ऐसे अद्भुत और दिव्य महात्मा के दर्शन हो जाए तो जीवन धन्य हो जाएगा ।

योग माया एक सिद्ध योगिनी थी और वे मन के विचारों को भी पढ़ लेती थी उन्होंने मेरे मन के विचारों को भी पढ़ लिया ।

वे मेरी तरफ देख मुस्कुराइ और कहा - तुम्हें उनसे मिलने का अवसर अवश्य प्राप्त होगा क्योंकि तुम भी इसी श्रंखला से जुड़े हुए हो और उस गोम्पा में तुमसे जुड़ा हुआ एक बड़ा रहस्य भी छुपा हुआ है । जिसे जानने के लिए तुम्हें वहां ले जाना जरुरी है यह सुनकर मेरी

उत्तेजना बढ़ गई और मैं यह सोचने लगा कि वहाँ मुझसे जुड़ा कौन सा रहस्य छुपा हुआ है ....

क्योंकि मैंने तो उस गोम्पा के विषय में कभी सुना भी नहीं था ....

सच कहूँ तो किसी गोम्पा के विषय में नहीं सुना था ।

अध्यात्म और तंत्र का क्षेत्र बहुत ही अद्भुत है, विचित्र है और रहस्यमय है । इसके विषय में कुछ भी कहना संभव नहीं होता । यहां ऐसी ऐसी घटना हो जाती है जिसके विषय में सामान्य व्यक्ति सोच भी नहीं सकता ....

यह कुछ कुछ ऐसी ही बात थी !

यह सारी बातें होने के बाद वह अपने काम में लग गई और मुझे नदी में जाकर स्नान करके आने के लिए कहा ...

मैं नदी में स्नान करने के लिए चला गया ।

जब मैं स्नान करके वापस लौटा तो उन्होंने एक गहरे हरे रंग का काढ़ा जैसा कोई द्रव बनाकर रखा हुआ था जो एक कपाल पात्र में रखा हुआ था । उन्होंने मुझे उसके सामने सिद्धासन मे बैठ जाने के लिए कहा .....

उन्होंने कुछ विशेष मंत्रों का उच्चारण करना प्रारंभ कर दिया !

वे मंत्र हिंदी या संस्कृत के मंत्र नहीं लग रहे थे। संभवतः वे तिब्बती भाषा के मंत्र थे.....

सूर्य का चमत्कार

इसमें कुछ अक्षरों को लंबा लंबा खींचा जाता था । उनका यह मंत्र उच्चारण पाँच से सात मिनट तक चला होगा ।

वह बंगला बहुत ही विचित्र और रहस्यमय ढंग से बना हुआ था । जिस कमरे में हम बैठे थे उस कमरे की छत नहीं थी । चारों तरफ पेड़ थे इसलिए कमरे में धूप का आना तभी संभव था जब सूरज ठीक सर के ऊपर हो । यानी कि दोपहर के समय !

वह वैसा ही समय था....

उनके मंत्र जाप करते-करते में धूप कमरे में आने लगी थी ।

उन्होंने मुझे कपाल पात्र को अपनी गोद में रख लेने के लिए कहा । मैंने उसे दोनों हाथ में लेकर अपनी गोद में रख लिया.....

वे अपने स्थान से उठ खड़ी हुई और सूर्य भगवान की ओर देखते हुए प्रणाम किया और कुछ अजीब सी मुद्राएं बनाई और आसमान की तरफ हाथ फैला दिये.......

ऐसा प्रतीत हुआ जैसे सूर्य से कुछ प्रकाश पूंज सा निकलकर नीचे की ओर आया हो और उनके फैले हुए हाथों में टकरा गया हो ...

उसके बाद...

आश्चर्यजनक रुप से...

उनके हाथ में एक अजीब सा सफेद रंग का गोल पारदर्शी पत्थर जैसा कुछ आ गया । जो आटा सानने वाले गोल पाटे जैसा दिखाई देता था ।

उन्होंने उस पत्थर को दोनों हाथ में पकड़ लिया और उसे अपने माथे से स्पर्श किया और उसके बाद सूर्य की किरणों के सामने उसे एक विशेष कोण में घुमाने लगी ।

ऐसा लग रहा था जैसे उन्होंने सूर्य की किरणों को उस गोल चीज के माध्यम से केंद्रित किया और उसे उस कपाल पात्र में डालना चालू कर दिया ।

उसके बाद कपाल पात्र में रखा हुआ वह हरा द्रव उबलता हुआ दिखने लगा । लगभग 2 या 3 मिनट तक ऐसा हुआ होगा उसके बाद उन्होंने हाथ मे पकड़े हुए उस रहस्यमय चीज को हवा में उठा दिया और जिस प्रकार

से वह प्रकट हुआ था उसी प्रकार से वह गायब भी हो गया ।

यहां तक तो सब ठीक था क्योंकि सूर्य की किरणों की गर्मी से कागज में आग लगाने का खेल हम बचपन में आवर्धक लेंस के बारे में पढ़ते समय अवश्य करके देखते हैं और उसकी गर्मी से कागज में आग लग जाया करती है।

दिलचस्प खेल इसके बाद प्रारंभ हुआ !
वह रहस्यमय चीज शून्य में गायब हो चुकी थी !
योगमाया का मंत्र जाप जारी था
सूरज आसमान में था !
कपाल पात्र मेरी गोद में था !
उसके नीचे में किसी प्रकार की आंच नहीं थी !
ना ही वह कपालपात्र गर्म हो रहा था ......
लेकिन....
उसके अंदर का द्रव उबलता हुआ मुझे दिख रहा था !
उसमें से बुलबुले से बाहर की ओर निकल रहे थे !

जब तक उनका मंत्र जाप चलता रहा ..... बुलबुले उसी प्रकार द्रव से बाहर निकलते रहे ।

चार पाँच मिनट के बाद उनका मंत्र पूरा हो गया ।

मंत्र जाप पूरा होते ही द्रव का उबलना भी बंद हो गया ।

उन्होंने मुझे संकेत किया और उसको पी लेने के लिए कहा । मैंने वह कपालपात्र अपने होठों से लगाया और हल्का सा सिप लिया जैसे हम गर्म चाय या कॉफी का लेते हैं ।

वह बिल्कुल बेस्वाद सा द्रव था !

लेकिन जो द्रव कुछ क्षण पहले उबल रहा था वह बिल्कुल गरम नहीं था .....

संभवत: वह कोई रासायनिक क्रिया या कोई और चीज रही होगी..... जिसकी वजह से वह उबलता हुआ प्रतीत हो रहा था ।

मैं उसे पूरा गटक गया ।

उन्होंने मुझे अपने साथ चलने के लिए कहा वह मुझे लेकर लगभग तीन-चार घंटे तक जंगलों में इधर-उधर घूमती रही ।

इस दौरान वे लगातार इधर-उधर की बातें करती रही जो मुझे आधी समझ आ रही थी!

बीच-बीच में मुझे नींद के झोंके से लगते थे ...

तो वह मेरे सर पर जोर का थप्पड़ मारती थी ....

और मेरी नींद खुल जाती थी ।

उन्होने इस दौरान तीन अलग अलग प्रकार के पेड़ों से फलों को तोड़कर मुझे खाने को दिया जिसके बाद मुझे और नींद आने लगी ....

वह संभवत: उस औषधि का प्रभाव रहा होगा और मुझे लेकर इस प्रकार से घूमने के पीछे का कारण यह होगा कि उस औषधि को पीने के बाद तीन चार घंटे तक जागृत रहना जरूरी होगा तभी उसका प्रभाव पड़ता होगा !

जो भी रहा हो ....

तीन चार घंटे के बाद घूम कर हम लोग वापस उस बंगले में आ गए ।

वहां आने के बाद उन्होंने मुझे पलंग पर लिटा दिया और मेरे ऊपर मोटे-मोटे दो कंबल ओढा दिए ....

मुझे समझ में नहीं आया कि दोपहर को जबकि मौसम सामान्य था तो उन कंबलों की क्या जरूरत है ?

इसका उत्तर मुझे 10 मिनट के बाद मिल गया ......
जब मेरा शरीर जूड़ी के मरीज की तरह थरथर कांपने
लगा ।

दो कंबल ओढ़े होने के बावजूद मुझे ठंडी का अहसास
हो रहा था । योगमाया मेरे पास ही बैठी हुई थी .....
और मेरी ओर अपनी करुणामयी दृष्टि से निहार रही थी
।
उनके चेहरे पर उस समय किसी मां के समान वात्सल्य
के भाव दिखाई दे रहे थे । गुरु के विषय में कहा जाता है
कि "त्वमेव माता....
अर्थात गुरुवर आप स्वयं माता का स्वरूप हो !

मेरा पूरा शरीर थरथर कांप रहा था । उसी प्रकार से
कांपते कांपते मेरी नींद लग गई या पता नहीं क्या
हुआ .... मेरी चेतना समाप्त हो गई । जब मेरी नींद
खुली तो सुबह हो चुकी थी ....
जो आग लगाने का स्थान था उसमें लकड़ियां पड़ी हुई
थी और आग जल रही थी ...
दोनों कंबल मेरे ऊपर पड़े हुए थे । कंपकंपी पहले से
काफी कम थी । बिस्तर से उतर कर मैंने नित्य कर्म

सम्पन्न किए , मल मूत्र का सामान्य रंग पीला होता है..... लेकिन उस दिन दोनों बिल्कुल गाढ़े नीले रंग के थे । जिसे देखकर मुझे बड़ा अजीब सा लगा और उसका कारण जानने की जिज्ञासा भी मन में पैदा हुई । इसका कारण और रहस्य केवल एक ही व्यक्ति बता सकता था और वह थी योग माया ।

उनकी तलाश में आसपास मैंने इधर उधर देखा कोई भी नहीं दिख रहा था ....

ठंड जोरों से लग रही थी तो फिर से कंबल में घुस गया ।

जब दुबारा नींद खुली तो सूरज ढलने की स्थिति में आ चुका था....

फायर प्लेस में आग अभी भी जल रही थी और उसकी गर्मी से कमरा अभी भी गर्म था ....

ठंड लगभग गायब हो चुकी थी और मुझे सामान्य सा फील हो रहा था ।

तिब्बत यात्रा

लगभग आधे घंटे के बाद योग माया वहां पर फिर से आई और उन्होंने मुझे चलने के लिए कहा हम दोनों तैयार होकर एक लंबी यात्रा पर निकल पड़े। लगभग डेढ़ घंटे चलने के बाद हम एक नदी के तट पर पहुंचे जिसका पाट लगभग सौ मीटर का रहा होगा।

वहां एक नाव खड़ी थी जिसके ऊपर दो हट्टे कट्टे लोग बैठे हुए थे !

हम दोनों उस नाव में बैठ गए और नाव नदी की धारा के विपरीत दिशा में आगे बढ़ने लगी। अंधेरा चारों तरफ फैल चुका था और हल्की हल्की चांदनी बिखरी हुई थी। उसी प्रकार से चलते चलते जब सुबह की रोशनी आने लगी तब हमारी नाव किनारे पर जाकर लगी। वह एक गुफा के मुहाने जैसा लग रहा था। हम वहां पर उतर गए और उन दोनों ने नाव को खींचकर किनारे पर बांध दिया और उसे पत्तों से ढक दिया।

हम चारों गुफा के अंदर आ गए।

गुफा में एक लामा खड़ा हुआ था। उसने योग माया को नमस्कार किया और मेरी तरफ इशारा किया।

योग माया ने तिब्बती भाषा में कुछ कहा। जिसे सुनकर

उसने सहमति में सिर हिलाया । दोनों नाविक वहीं रुक गए । हम दोनों को लेकर वह लामा गुफा के अंदरूनी हिस्से की ओर बढ़ गया । वहां सीढ़ियां बनी हुई थी जो ऊपर की तरफ जा रही थी । लामा उसमें आगे बढ़ गया । उसके पीछे पीछे योग माया और सबसे पीछे मै चलने लगा । सीढ़ियाँ इतनी सारी थी कि मुझे लग रहा था कि पता नहीं कब खत्म होंगी । लगभग 2 घंटे तक हम लोग उन सीढ़ियों पर चढ़ते रहे । तब तक सूरज की रोशनी बिखरने लगी थी ।

हम उन सीढ़ियों को पार करके एक पहाड़ी के ऊपर पहुंच चुके थे ...

और सामने था.....

एक अद्भुत और अविश्वसनीय नजारा .....

हमारे बगल में गहरी खाई थी !

जिसमें नदी बह रही थी और हमारे सामने खड़ा था एक विशाल गोम्पा ।

उसे देखकर ऐसा प्रतीत होता था जैसे उसमें कम से कम सात मंजिले तो जरूर रही होंगी क्योंकि खिड़कियों के बने होने से वैसा ही अंदाज हो रहा था !

जो भी हो वह काफी विशालकाय था !

वह उस पहाड़ी के ऊपर उसके आधे से ज्यादा भाग में बना हुआ था !

पहाड़ी उबड़ खाबड़ थी और उसी के हिसाब से वह गोम्पा भी ऊपर नीचे आधार वाला था । उतने ऊपर इतनी बड़ी संरचना कैसे बनी होगी ? यह सोचता हुआ मैं थोड़ी देर खड़ा रहा ।

मेरा ध्यान योग माया की डांट से हटा क्योंकि वह मुझसे काफी आगे जा चुकी थी और मैं वहीं खड़ा हुआ था .....

मैं दौड़ता हुआ उनके पीछे जाने लगा !

कुछ और आगे जाने पर एक दरवाजा था । उस दरवाजे पर बड़े-बड़े सांप जैसे बने हुए थे । जिनके पांव भी थे । उनके मुंह खुले हुए थे और दांत बाहर निकले हुए थे । वे सारे के सारे पीले पीले रंग के थे और उनके मुख से लाल रंग की लपटें बाहर निकलती दिखाई गई थी । बाद में मुझे पता चला कि यह थानका पेंटिंग में ड्रैगन बनाया गया था जोकि रक्षक शक्ति के रूप में स्वीकार किया जाता है ।

हम लोग उस दरवाजे से होते हुए अंदर गए ।

वहां पर तीन दरवाजे थे ।

जिनमें से पहला दरवाजा वह था जिसके बारे में मैंने आपको बताया। उसके आगे चलते चलते दूसरा दरवाजा आया जो बेहद अजीब ढंग से बना हुआ था। उसमे दो पत्थरों को इस प्रकार से रखा गया था कि उसके बीच में से मुश्किल से एक आदमी निकल पाए और वह भी घिसटता हुआ...

उसमें से पार हो जाने के बाद तीसरा दरवाजा आया।

जहां एक विशालकाय लामा खड़ा हुआ था।

जो किसी बाउंसर के जैसा दिखाई दे रहा था। उसकी ऊंचाई भी योगमाया के जैसी थी बल्कि थोड़ी सी ज्यादा ही रही होगी ....

कुछ आठ फुट के आसपास का वह जरूर रहा होगा। उसने अपने शरीर पर योद्धाओं जैसी वेशभूषा डाली हुई थी। उसके हाथ में नंगी तलवार थी .... जो कम से कम 4 फुट लंबी रही होगी और उसका फाल लगभग 6 इंच चौड़ा और दोनों तरफ से धारदार था। उसका धार इतना तेज दिखाई दे रहा था कि गलती से अगर उसकी रगड़ भी गले में लग जाए तो पूरी गर्दन ही कट जाए। वह अलर्ट मुद्रा में वहां पर खड़ा हुआ था। जिसे देखकर मैं ठिठक गया। योग मुद्रा आगे बढ़ी योग माया आगे

बढ़ी और उसके सामने खड़े होकर कुछ विशेष योग मुद्राओं का प्रदर्शन किया जिसके बदले में उसने भी अपने हाथ मे रखी तलवार तीन बार हवा मे एक विशेष क्रम मे लहराई ।

योग माया ने पुनः योग मुद्राओं के माध्यम से कुच्छ संकेत किया ।

जिसके बाद उसने दरवाजा खोल दिया । लामा वहाँ से वापस लौट गया और हम दोनों अंदर की ओर चल पड़े .....

अपना शव

अंदर पहुंचने के बाद एक और लामा मिला ।
जो मुश्किल से सोलह या सत्रह साल का रहा होगा ....
मुझे ऐसा लगा कि वह इसी आयु का होगा क्योंकि
तिब्बत के लोग इतनी कसी हुई बनावट के होते हैं कि
उनकी आयु के बारे में अनुमान लगाना बहुत मुश्किल
होता है ।
आपने भी अपने यहां ऊन के बने हुए सामान बेचने आने
वाले तिब्बतियों के गठन को देखा होगा उसी से आप
इसका अंदाज लगा सकते हैं ।
वह लामा युवक हम दोनों के सामने सर झुकाकर खड़ा
हो गया । योग माया ने उसे तिब्बती भाषा में कुछ
निर्देश दिए और मुझे उसके साथ जाने के लिए कहा
और स्वयं एक और चली गई । मैं उस लामा के साथ
चल पड़ा !

उसने मुझे एक गलियारे से होकर गुजारा । उस गलियारे
में बहुत सारे कमरे बने हुए थे और सारे के सारे बंद थे ।
उन कमरों की खासियत यह थी कि उसके दरवाजे पत्थर
के बने हुए थे । उसमें खांचे जैसे बने हुए थे । जिसमें

लोहे की लगभग 2-2 फुट लंबी मोटी मोटी संकल लटक रही थी । उस गलियारे से चलते चलते हम आगे बढ़ते गए ..... सबसे आखिरी कक्ष के सामने जाकर वह लामा रुक गया और मुझे भी रुकने का इशारा किया । उस कक्ष की सांकल आपस में गुथी हुई थी ! जैसे कोई गठान बांधी गई हो ।

कक्ष के दरवाजे के सामने वहां दो यंत्र बने हुए थे उसमे से एक पर उसने मुझे खड़ा होने के लिए कहा ...

मैं वहां खड़ा हो गया !

वह दूसरे यंत्र पर खड़ा हो गया और उसने कुछ अजीब से मंत्रों का उच्चारण करना प्रारंभ कर दिया ।

मुश्किल से 10 मिनट बीते होंगे.......

जब वह सांकल अपने स्थान पर हल्के हल्के से हिलने लगी !

धीरे-धीरे उनकी गति बढ़ने लगी ....

वे आपस में टकरा रही थी ..

और.....

आवाज कर रही थी !

ऐसा लग रहा था......

जैसे....

कोई उसे पकड़ कर हिला रहा हो !

लेकिन.....

वहां कोई भी दिखाई नहीं दे रहा था !

वे दोनों सांकल जो आपस में गुथी हुई थी .....

अब हिलते हिलते दोनों एक दूसरे से अलग हो चुकी थी

और अब एक दूसरे से टकराकर आवाज पैदा कर रही

थी !

लगभग दस मिनट के बाद उसने मुझे उस दरवाजे को

धकेलने के लिए कहा !

यह सुनकर मुझे बड़ा अजीब सा लगा क्योंकि वह

दरवाजा देखने में ही इतना बड़ा लग रहा था .....

और उस में लगी हुई मजबूत लोहे की संकल बता रही

थी कि वह कितना मजबूत दरवाजा रहा होगा ....

साथ ही कितना भारी भी.....

उसे मैं अकेला कैसे खोल पाऊंगा ?

यह था मेरे मन का संशय !

तो मैंने उस लामा की तरफ प्रश्नवाचक निगाहों से

देखा !

लेकिन उसके चेहरे पर कोई भाव नहीं थे !

वह नजरें झुका कर खड़ा था ।
वह मुझसे बेहद सम्मान के साथ पेश आ रहा था ।
उसके लामा होने की वजह से और इतने विशिष्ट गोम्पा में रहने की वजह से मेरे मन में स्वाभाविक रुप से उसके प्रति आदर था । मैं स्वयं भी उसके साथ बड़े सम्मान से व्यवहार कर रहा था और उसकी हर बात मान रहा था ।

उसके बार-बार निर्देश देने पर मैं उस दरवाजे की ओर बढ़ा ......
जैसे ही मैं उस दरवाजे के पास पहुंचा ....
उसमें लटकी हुई दोनों साँकलें किसी डंडे की तरह खड़ी हो गई......
पूरे 90 डिग्री पर......
दरवाजे से खड़ी मुद्रा में ......
जैसे मुझसे हाथ मिलाना चाहती हों .....
मुझे समझ में नहीं आया कि यह क्या हो रहा है ?
मैंने पीछे मुड़कर लामा को देखने का प्रयास किया !
लेकिन वहां पर वह लामा था ही नहीं !
फिर मैंने दाहिने बाएं तरफ देखा तो वह गलियारा भी गायब हो चुका था । मेरे दोनों तरफ एक धुंध का

आवरण छाया हुआ था, जिसके आर पार कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था । उन दोनों साँकलों पर मैंने अपना हाथ रखा .....

जैसे ही मैंने अपने हाथों को उन साँकलों पर रखा.....

मुझे ऐसा लगा जैसे किसी अदृश्य शक्ति ने मुझे और उस पत्थर के दरवाजे को एक जोरदार धक्का दे दिया हो !

वह दरवाजा पीछे की तरफ खुल गया !

मैं भी खुली जगह से होता हुआ अंदर आ गया और दरवाजा एक जोर की आवाज के साथ बंद हो गया ।

इस अचानक धक्के की वजह से मैं नीचे गिर चुका था !

कहां गिरा था ? यह तो मुझे भी पता नहीं चला ।

मैं हाथ पैर झाड़ कर खड़ा हुआ !

देखा तो वह एक अंधेरा कमरा था । जिसमें बिल्कुल हल्की सी रोशनी बिखरी हुई थी । हल्की मतलब लगभग उतनी ही रोशनी जितनी हमारे टीवी के अंदर लगे हुए एलईडी के अंदर में से निकलती है।

सिर्फ इतना प्रकाश वहां मौजूद था......

जब आप किसी अंधेरे कमरे में जाते हैं तो शुरु में आपकी आंखें किसी भी चीज को देखने में अक्षम होती हैं।

अगर वहां पर बेहद हल्की रोशनी हो तब भी आपको शुरु में कुछ दिखाई नहीं देता......

धीरे-धीरे जब आपकी आंखें वहां की रोशनी के हिसाब से एडजस्ट हो जाती हैं तो आपको वहाँ रखी हुई चीजें भी दिखाई देने लग जाती है !

मेरे साथ भी कुछ-कुछ वैसा ही हो रहा था.......

अब मुझे उस कमरे के अंदर रखी हुई चीजें दिखाई दे रही थी। उन में जो सबसे स्पष्ट दिखाई दे रहा था वह था एक चौकौन सा बक्सा .....

रोशनी उसी के अंदर से आ रही थी।

रोशनी उसके भीतर रखी हुई किसी चीज में से आ रही थी जो बक्से से थोड़ी ऊंची दिखाई दे रही थी। ऐसा लग रहा था जैसे वह हवा में लटका हुआ कोई बल्ब हो। उसके अलावा अन्य चीजें भी रखी थी लेकिन वह स्पष्ट नहीं हो रही थी। सबसे बड़ी वस्तु वही चौकोन बक्सा ही था। वह बक्सा एक प्लेटफार्म जैसी जगह पर रखा हुआ था।

जो लगभग 2 फुट के आसपास ऊंचा रहा होगा ......
थोड़ा और स्पष्ट होने के बाद मुझे दिखाई दिया कि उस बक्से के अंदर एक मानव आकृति दिखाई दे रही थी और उसी के हृदय के आसपास से यह रोशनी दिखाई दे रही थी !

बिल्कुल अंधेरे कमरे में अचानक से विचित्र ढंग से पहुंच जाना !
उसके बाद उस कमरे में किसी मनुष्य के बैठे होने का आभास होना !
अपने आप में काफी डरावना और सिहरन पैदा कर देने वाला अनुभव था.....
मैं भयभीत हो गया था लेकिन मन में यही विश्वास था कि योग माया मुझे यहां पर लेकर आई है तो कुछ अच्छा घटित होने वाला है !
मेरा कुछ भी नुकसान नहीं होगा !!
यह आत्मविश्वास उस डरावने माहौल में भी मुझे होश में बनाए रखने के लिए काफी था ।
उसी के सहारे मैं अपने आपको आश्वासन देता हुआ हिम्मत बांध कर खड़ा था ।

आप स्वयं कल्पना करें कि आपको अचानक किसी अंधेरे कमरे में डाल दिया जाए ....
और जब तक आपकी आंखें वहां कुछ देखने के लायक हो जाए..... तब आपको उस कमरे में किसी मानव आकृति के होने का आभास हो..... तो आप की स्थिति क्या होगी ?

दिल का दहलना स्वाभाविक था .....
कुछ समय तक मैं उस रहस्यमय आकृति को देखता हुआ वहीं खड़ा रहा ।

परा पश्यन्ती और मध्यमा

अचानक मुझे अपने मस्तक में स्पंदन सा महसूस हुआ । जैसे ही वह स्पंदन महसूस हुआ उसके बाद मुझे ऐसा लगने लगा जैसे मैं किसी के साथ बात कर रहा हूं ।
हमारा शरीर का सिस्टम जिस प्रकार से काम करता है उसे आप लोग भी जानते हैं !
जब कोई हमसे बात करता है तो उसकी आवाज हमारे कानों से होते हुए हमारे मस्तिष्क तक पहुंचती है !
अगर वह भाषा हम जानते हैं..... तो जो शब्द हमारे कानों से होते हुए मस्तिष्क तक पहुंचते हैं..... उनका मतलब हम निकाल पाते हैं....... और फिर उसके अनुसार मस्तिष्क प्रतिक्रिया देता है

उदाहरण के लिए आप हिंदी भाषी हैं और कोई व्यक्ति अगर आपको तेलुगु में गाली देता है, तो आपको कोई प्रभाव नहीं पड़ता, क्योंकि आप उसको समझ ही नहीं पाते हैं ।
इसके ठीक विपरीत अगर हिंदी में कोई आपको गाली दे तो तुरंत आप का पारा चढ़ जाएगा ।
हमारा शरीर इसी प्रकार से काम करता है ।

यहां स्थिति बिल्कुल अलग थी !

वार्तालाप बिल्कुल मौन हो रहा था !

जिसमें शब्दों की आवश्यकता नहीं थी !

कुछ ऐसा ही आपने एलियन फिल्मों में भी देखा होगा । जब किसी दूसरे ग्रह से आए हुए एलियन अपनी बात को मनुष्य के मस्तिष्क में सीधे भेज देते हैं और वह उसे समझ जाता है ।

"वैदिक चिन्तन में वाक् की अवधारणा" मे श्रीमान त्रिभुवननाथ शुक्ल जी ने वाणी के विषय मे विस्तार से लिखा है , जिसे आप

http://www.sanskrit.nic.in/

SVimarsha/V3/c11.pdf

मे पढ़ सकते हैं । उनके अनुसार वाणी के विषय में योग कुण्डल्युपनिषद्(3-18-19) मे कहा गया है कि :-

परायामंकुरो भूयं पश्यन्त्यां द्विदलीकृता ।

मध्यमायां मुकुलिता वैखर्या विकसीकृता।

पूर्वे यथोदिता या वाग्विलोमेनास्त्तगा भवेत्।

अर्थात वाणी का उद्भव परा से होता है। पश्यन्ती में विकसित हो कर उसकी दो शाखाएँ होती हैं। मध्यमा में वह पुष्पों से लद जाती है और वैखरी में वह फलित होती है। जिस क्रम से उसका विकास होता है उसके उलटे क्रम से वह लय भी हो जाती है।

वाणी की सर्वोच्च स्थिति को परा कहा गया है । परा विकसित होकर पश्यंति बनती है और फिर उसमें से मध्यमा का विकास होता है और फिर वह वैखरी में विकसित होती है ।

शुरु की तीन स्थितियां अर्थात परा पश्यन्ती और मध्यमा को देव वाणी कहा गया है । इसमें शब्दों की आवश्यकता नहीं होती । भाव मात्र से या मानसिक संकेतों से ही विचारों तथा विषय का आदान प्रदान संभव हो जाता है ।

वैखरी को वह वाणी कहा गया है, जिसमें शब्दों की जरूरत होती है, भाषा की जरूरत होती है । यह हम सामान्य मनुष्यों के द्वारा प्रयोग की जाती है ।

साधना के स्तर की उच्चता के अनुसार साधक वैखरी से मध्यमा और उच्चतम स्थितियों में पहुंच सकता है। व्यावहारिक रुप से इसका उदाहरण आप तब प्राप्त करते हैं, जब आप अपने किसी इच्छा को लेकर किसी गुरु या सिद्ध पुरुष के पास पहुंचते हैं। वह स्वयं आपकी इच्छा या आकांक्षा के विषय में आपसे बातें करने लग जाता है..... क्योंकि उसे आपकी वैखरी वाणी की जरुरत नहीं है वह मध्यमा के माध्यम से आपके विचारों को पढ़ लेता है।

कहने का तात्पर्य यह है कि विचारों को दूसरे व्यक्ति के मस्तिष्क में संप्रेषित करने के लिए शब्दों की आवश्यकता हमेशा नहीं पड़ती। मानसिक स्तर के हिसाब से आप अपने विचारों को बिना शब्दों के भी दूसरे के मस्तिष्क में डाल सकते हैं।
अस्तु.......

वह जो आकृति वहां पर बैठी हुई थी वह कुछ कुछ ऐसा ही कर रही थी। शब्दों का आदान-प्रदान नहीं हो रहा था लेकिन सब कुछ मस्तिष्क में स्पष्ट होता हुआ प्रतीत होता था।

उपस्थित होकर अलग-अलग प्रकार की क्रियाएं संपन्न कर जाते हैं !

यह तभी संभव हो पाता है जब वह गुरु ब्रह्मांड भेदन संपन्न कर चुके हो !

साधना के क्षेत्र में ब्रह्मांड भेदन साधना संपन्न करना काफी ऊंची स्थिति मानी जाती है। मानसिक रुप से उस आकृति ने मुझे यह बताना चालू किया कि मैं उस समय ब्रह्मांड भेदन की क्रिया में संलग्न था और उसके अंतिम चरण में था।

उपस्थित होकर अलग-अलग प्रकार की क्रियाएं संपन्न कर जाते हैं !

यह तभी संभव हो पाता है जब वह गुरु ब्रह्मांड भेदन संपन्न कर चुके हो !

साधना के क्षेत्र में ब्रह्मांड भेदन साधना संपन्न करना काफी ऊंची स्थिति मानी जाती है । मानसिक रुप से उस आकृति ने मुझे यह बताना चालू किया कि मैं उस समय ब्रह्मांड भेदन की क्रिया में संलग्न था और उसके अंतिम चरण में था ।

गोम्पा और पूर्वजन्म की कथा

यह गोम्पा 3000 वर्ष पुराना है ! यहां अत्यंत प्राचीन समय से विभिन्न प्रकार की तंत्र साधनाओं की शिक्षा-दीक्षा दी जाती रही है । यहां अनेक ऐसे लामा मौजूद हैं जो देव दुर्लभ साधनाएं को सिद्ध कर चुके हैं । कई कालजयी साधक भी हैं जिनकी आयु 400 से 500 वर्ष तक की है । इसके वर्तमान अधिष्ठाता लामा रिमपोचे की आयु लगभग 1000 वर्ष की है ।

इस गोम्पा के अंदर अत्यंत दुर्लभ किस्म की तांत्रिक सामग्रियों के अलावा हीरे जवाहरात और सोना भी मौजूद है ।

जिस पर लामा जहूआ की नजर थी । जो मेरा ही गुरूभाई था !

वह मुझसे पहले इस गोम्पा मे आया था और वह भी ब्रह्मांड भेदन की क्रिया सीखना चाहता था । लेकिन गुरुदेव लामा रींपोचे ने मुझे इसके योग्य समझा ।

इससे लामा जहुआ को ऐसा प्रतीत होने लगा कि उसके वरिष्ठ होने के बावजूद गुरुदेव मुझे ज्यादा सम्मान और अवसर दे रहे हैं । जबकि वह ज्यादा योग्य है ।

इस ईर्ष्या की वजह से उसने गुरुदेव से विद्रोह किया और इसके परिणाम स्वरूप उसे इस गोम्पा से निष्कासित कर दिया गया ।

साधनात्मक रूप से वह काफी अच्छी स्थिति में था । लेकिन अहंकार और ईर्ष्या किसी भी साधक के अध: पतन के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है यही जोहुआ के साथ भी हो रहा था । गोम्पा से निकलने के कुछ समय के बाद उसने कुछ लोगों की मदद से गोम्पा पर आक्रमण कर दिया । गोम्पा की सुरक्षा भेदकर वे लोग अंदर घुस गए । काफी लामाओं को मारकर वे उस मंजिल तक पहुँच गए जहां मैं साधना कर रहा था .....

वहाँ पहुँचते ही गोम्पा की रक्षक शक्तियों और रक्षक लामाओं ने बाकी लोगों को मार दिया लेकिन लामा जहूआ उनके घेरे को तोड़कर अंदर दाखिल हो गया । उसने अपनी शक्तियों के माध्यम से उन सभी को स्तंभित करके गति हीन कर दिया जिससे वह कुछ करने की स्थिति में नहीं रहे ।

वह आर या पार की स्थिति थी !

मैं ब्रह्मांड भेदन साधना के अंतिम चरण में था !

वह स्थिति.....

जहां पर मैं एक सामान्य व्यक्ति से ब्रह्मांडीय व्यक्ति में परिवर्तित हो जाता.......

संपूर्ण ब्रह्मांड में निर्बाध आवागमन की क्षमता प्राप्त कर लेता.....

लेकिन !

वहां भी शर्त यही थी.....

कि......

किसी भी स्थिति में अगर साधना खंडित हुई तो सिद्धि हाथ से गई ....

वहां अपने साधना से उठने का मतलब साधना को खंडित करना होता .....

और ना उठने का मतलब.....

लावा जोहुआ को मनमानी करने के लिए छोड़ देना होता । जिससे पूरा गोम्पा का अस्तित्व ही खतरे में आ सकता था ।

ऐसी स्थिति मे मुझे अपने गुरु भाइयों और गोम्पा की रक्षा ज्यादा महत्वपूर्ण लगी और मैं अपनी साधना को छोड़कर लामा जोहुआ के साथ संघर्ष में लग गया ।

हम दोनों ही साधनात्मक रूप से काफी उच्च्च स्तर पर थे !

हमारे पास उन साधनाओं से प्राप्त दिव्य अस्त्र भी मौजूद थे। जिनका प्रहार गोम्पा के अस्तित्व को समाप्त कर सकता था। उनके संचालन के लिए वह गोम्पा उपयुक्त स्थान नहीं था। इसलिए मैंने लामा जोहुआ को अपने पाश में बांध लिया और उसे हवा में उछाल दिया और उसके साथ-साथ खुद भी बाहर आ गया।

अब हम दोनों बगल में बह रही यरलुंग त्संगपो नदी के ऊपर एक दूसरे से युद्ध करने लगे !

शक्तियों का प्रयोग चलता रहा.....

उसने अपने पास उपलब्ध सारे अस्त्रों का प्रयोग करने का निश्चय कर लिया था और इसमें किसी मर्यादा का भी ध्यान नहीं रख रहा था।

जब उसने अपने म्यान में रखी हुई तलवार को संहारक मंत्रों का प्रयोग करके मेरी ओर उछाला.....

तो.....

वह तलवार मेरा संहार करने के लिए आगे बढ़ने लगी .....

उसने जिन संहारक मंत्रों के साथ तलवार को अभिमंत्रित किया था वह किसी को भस्मीभूत कर देने के लिए पर्याप्त थी ।

वह एक ऐसा प्रयोग था जो अचूक था । जो असफल नहीं हो सकता था । बिल्कुल किसी गाइडेड मिसाइल की तरह...... जो जब एक बार लक्ष्य को केंद्रित करके छोड़ दी जाती है तो उस लक्ष्य पर जाकर विस्फोट करती है और संहार उपस्थित कर देती है ।

वह संहारक तलवार मेरी ओर प्रचंड वेग से बढ़ रही थी.....

उसकी काट मेरे पास भी नहीं थी ....

अपने पास उपलब्ध सिद्धियों के माध्यम से उसकी संहारक शक्तियों को मैंने रोकने का प्रयास किया....

इसमें काफी हद तक सफल भी रहा !

लेकिन पूरी तरह सफल नहीं हो पाया !

और.....

वह तलवार मेरे एक हाथ को कोहनी के पास से काटती हुई नदी में विलीन हो गई ।

गुरु भाई होने के नाते मैं जोहुआ का संहार नहीं करना चाहता था लेकिन जो नियति द्वारा निश्चित हो वह तो करना ही पड़ता है ।

हम दोनों के शरीर पर चोटों के अनंत निशान बन चुके थे.....

कई जगह से कटे फटे हमारे शरीर से लहू की धाराएं बह रही थी .....

लंबे संघर्ष के बाद मैंने वज्र प्रयोग किया जो सबसे शक्तिशाली प्रयोग था !

मेरा वज्र सीधा उसके ब्रह्मरंध्र से जा टकराया और उसके सर के सैकड़ों टुकड़े होकर बिखर गए । इस प्रकार जोहुआ की मृत्यु हो गई ......

लेकिन बात यहां खत्म नहीं हुई थी !

उसने भी अंतिम समय में अपने वज्र का प्रयोग कर दिया था । मेरी रक्षक शक्तियों ने उसे रोकने का पूरा प्रयास किया लेकिन वे उसे रोक नहीं पाई !

वज्र एक विशेष प्रकार का अस्त्र होता है, इसका उल्लेख कई स्थानों पर मिलता है । वज्र का एक अर्थ बिजली भी होता है । प्राचीन उल्लेख के अनुसार

देवराज इंद्र के हाथ में यह अस्त्र विराजमान होता है ।
इसका निर्माण देव शिल्पी भगवान विश्वकर्मा ने महर्षि दधीचि की हड्डियों से किया था और यह अत्यंत अभेद्य अस्त्र माना जाता है ।

बौद्ध परंपरा में जिस वज्र का उल्लेख मिलता है वह एक ऐसा शस्त्र है जिसमें दोनों तरफ गोल संरचनाएं बनी होती है और किनारे नुकीले होते हैं ।

युद्ध कलाओं में इसका मारक प्रयोग होता रहा होगा ....

अधिकांश वज्र अष्टधातु, पीतल या कांस्य के बने होते हैं । दुर्लभ स्थितियों में इसे रत्नों से बना हुआ भी देखा गया है ।

लामा जोहुआ के वज्र को रोकने के मेरी शक्तियों के प्रयास निष्फल हो गए थे । वह अपने लक्ष्य की ओर .... यानी मेरी ओर..... बढ़ता चला आ रहा था !
मेरी शक्तियों के प्रहार से वह वज्र बीच से टूट चुका था ......

उसका आधा हिस्सा नदी में गिर चुका था इसकी वजह से उसकी प्रचंडता भी कम हो गई थी। लेकिन वह अपना लक्ष्य भेदने के लिए प्रतिबद्ध था।

वह आधा वज्र सनसनाता हुआ मेरी गर्दन के पास आकर टकराया ! मेरी गर्दन का आधा हिस्सा काटकर, जोहुआ के मारे गए वज्र का वह बचा हुआ हिस्सा भी नदी में विलीन हो गया।

मेरा संपूर्ण शरीर हवा में लटका हुआ था ..... लेकिन वज्र के इस प्रहार के बाद वह तेजी से नदी की ओर गिरने लगा ......

जैसे ही मेरा शरीर नीचे की ओर बेसुध अवस्था में गिरने लगा .....

तभी गोम्पा की रक्षक योगिनी जींगलिंग हवा में उड़ती हुई आई और मेरे गिरते हुए शरीर को संभाल कर वापस गोम्पा के अंदर ले आई।

यदि वह ऐसा नहीं करती तो संभवतः मेरा शरीर भी लामा जोहुआ के शरीर की तरह ही यरलुंग त्सांग्पो नदी में बहती हुई अनंत जल राशि में विलीन हो जाता।

दिव्य औषधियाँ

गोम्पा के अंदर पहुंचने के बाद मुझे वापस स्वस्थ करने के प्रयास प्रारंभ हुए । तिब्बत के गोंपाओं में रहने वाले लामा अनेक प्रकार की औषधियों के बारे में भी ज्ञान रखते हैं ।

आयुर्वेद में 64 दिव्य औषधियों के विषय में बताया गया है जो मृत व्यक्ति को भी जीवन प्रदान करने में समर्थ होती है । इसका उल्लेख रामायण में लक्ष्मण के ऊपर मेघनाद द्वारा किए गए शक्ति प्रयोग के संदर्भ में आता है । कथा है कि लक्ष्मण जी मृत्यु तुल्य अवस्था में पहुंच गए थे और वैद्य सुषेण के द्वारा दिए गए निर्देश के अनुसार हनुमान जी संजीवनी लेने के लिए हिमालय पर्वत पर आए थे और यहीं से वो संजीवनी बूटी नहीं बल्कि पूरा पहाड़ ही उठाकर ले गए थे। हनुमान जी द्वारा लाई गई बूटी से लक्ष्मण जी के प्राण बच गए थे । इस विषय में एक रोचक कथा भी मौजूद है । देवभूमि उत्तराखंड में एक गांव है द्रोणागिरि। चमोली क्षेत्र में आने वाले द्रोणागिरि गांव के निवासियों की ऐसी मान्यता है कि जिस पर्वत को हनुमान जी संजीवनी बूटी के लिए उखाड़ कर ले गए थे वह इसी गांव में स्थित

था। द्रोणागिरि गाँव के लोग इस पर्वत की पूजा किया करते थे।

यहां रहने वालों के अनुसार हनुमान जी संजीवनी बूटी लेने आए थे तब पहाड़ देवता अपने आराध्य के ध्यान में लीन थे ।
हनुमान जी को सुषेण वैद्य ने लक्ष्मण जी की दशा के बारे में बता दिया था और सूर्योदय से पहले औषधि लेकर आने की आवश्यकता भी बताई थी इसके चलते हनुमान जी भी हड़बड़ी में थे ।
हमारे सनातन धर्म में किसी भी ध्यान में बैठे हुए साधु या व्यक्ति का ध्यान नहीं तोड़ा जाता बल्कि उसके स्वयं ध्यान समाप्त करने की प्रतीक्षा की जाती है । इसके अलावा किसी भी औषधि को तोड़ने से पहले उसकी अनुमति लेने की परंपरा रही है, लेकिन इस घटनाक्रम में हनुमान जी ने पहाड़ देवता से इसके लिए अनुमति भी नहीं ली और न ही उनकी साधना पूरी होने का इंतजार किया।

ग्रामवासी यह मानते हैं कि हनुमान जी ने उनके पहाड़ देवता की ध्यान साधना भंग कर दी। इतना ही नहीं

हनुमान जी ने द्रोणागिरी पर्वत से पर्वत खंड ले जाते समय पहाड़ देवता की दाईं भुजा भी उखाड़ दी थी । इसी वजह से आज भी वहाँ पर्वत देवता से लाल रंग का रक्त बहता है ऐसा वे मानते हैं ।

इस प्रकार की मान्यता के चलते आज भी द्रोणागिरी गांव के लोग हनुमानजी की पूजा नहीं करते हैं और न ही लाल रंग का ध्वज लगाते हैं।

हमारे भारत मे इस प्रकार अपने आराध्य और जीवनदायक प्राकृतिक तत्वों के मानवीकरण और उन्हे देवीय शक्तियों के रूप मे पूजे जाने के अनेक उदाहरण मौजूद हैं । इसके पीछे संभवतः उत्पन्न होने वाली सहज मानवीय समीपता ही कारण रही होगी ।

एक विशेष बात यह है कि आयुर्वेद मे जिन दिव्य औषधियों का उल्लेख मिलता है उनमे से अधिकांश औषधियां हिमालय तथा हिमालय की तराई के क्षेत्रों में पाई जाती है । भगवान शिव को महामृत्युंजय तथा वैद्यनाथ कहा जाता है अर्थात वे जीवनी शक्ति को प्रदान करने वाले देवता हैं । हिमालय तथा उसकी तराई

का क्षेत्र शिव क्षेत्र है । इसलिए उस स्थान पर ही यह दिव्य औषधियां पाई जाती हैं......
संभवत: बाबा रामदेव के दिव्य फार्मेसी नाम के पीछे भी इन्ही दिव्य औषधियों का चिंतन है !
अस्तु .....

मेरा उपचार प्रारंभ हो गया । मेरा एक हाथ कोहनी से कट चुका था और वह हाथ नदी में विलीन हो चुका था । अगर वह कटा हुआ हिस्सा मिल जाता तो संभवत: उसे भी वे लामा मेरे शरीर से वापस जोड़ सकते थे .... उनके पास इतनी औषधीय क्षमताएं मौजूद थी । लगभग 2 महीने में मेरे शरीर के सारे घाव भर गए । लेकिन गर्दन पर लगी चोट की वजह से शारीरिक नियंत्रण वापस सामान्य नहीं हो पा रहा था ।

समाधि और पुनर्जन्म

वज्र के प्रहार की वजह से मेरी गर्दन में गंभीर चोटें आई थी और गर्दन की वह नाड़ी जो ब्रह्मांड भेदन के हिसाब से बेहद महत्वपूर्ण मानी जाती है और कुंडलिनी शक्ति के प्रवाह का माध्यम मानी जाती है वह नाड़ी कट गई थी .....

काफी प्रयासों के बाद यह पता चल गया था कि अब वह शरीर उच्च स्तरीय साधना के योग्य नहीं रह गया है । इसलिए उसे समाधिस्थ करके पुनर्जन्म की प्रतीक्षा करने का फैसला किया गया ।

इसके लिए संपूर्ण शरीर पर विशेष प्रकार की औषधियों का लेप करके उसे एक विशेष द्रव पदार्थ में रखा जाता है । उसके बाद उपयुक्त समय की प्रतीक्षा की जाती है जब उस शरीर में स्थित आत्मा को उचित गर्भ में प्रवेश दिलाया जाए ।

लामा तेयांग की आत्मा एक अति विशिष्ट आत्मा थी और उसे जन्म लेने के लिए किसी ऐसे गर्भ की आवश्यकता थी जो एक विशिष्ट मुहूर्त में जीवन प्राप्त

करने वाला था । इसके लिए जो मुहूर्त निकाला गया वह एक सौ पचहत्तर साल के बाद आने वाला था ......

जब मै गर्भस्थ हुआ तब लामा तेयांग की आत्मा ने इस शरीर को छोडकर मेरे शरीर मे प्रवेश किया ।

मुझे यह बड़ी आश्चर्यजनक बात लग रही थी कि 200 साल पुराना मेरा शरीर मेरे सामने बैठा हुआ था और मानसिक रूप से मुझसे संपर्क बनाकर मुझे अपने ही अतीत से अवगत करा रहा था ।

कमरे में अंधेरा था और स्पष्ट कुछ दिखाई नहीं दे रहा था, लेकिन मेरे अंदर प्रबल इच्छा हो रही थी कि मैं अपने पुराने स्वरुप को देखूँ ।
मैंने अपने मन में इस विचार को व्यक्त किया......
इसका उत्तर आया कि यह अत्यंत विकृत अवस्था में है ! युद्ध में चोट लगी थी ! युद्ध के समय कई अंगों में मांस के लोथड़े कटकर अलग हो गए थे .....
इसलिए ठीक हो जाने के बाद भी यह शरीर अत्यंत भयानक स्वरुप का है...........

उस विकराल स्वरुप को देखने की स्थिति तुम्हारी हो..... तो तुम्हें यह स्वरुप दिखाया जा सकता है

यह सुनकर मुझे थोड़ा डर लगा......
क्योंकि होम्योपैथिक डॉक्टर होने के बावजूद......
होम्योपैथी एक ऐसी पद्धति है जिसमें बहुत ज्यादा खून या चोट देखने की आवश्यकता नहीं होती ।
अधिकतर मीठी गोलियों और दवाओं से काम चल जाता है । सामान्यतः लोग होम्योपैथी के डॉक्टरों के पास ऐसे ही समस्याओं मे जाते हैं जो काफी समय से ठीक नहीं हो पा रहे हो । उनमें चोट वाली समस्या नहीं के बराबर आती है । इसलिए मैंने कटे-फटे या विकृत शरीरों को बहुत ज्यादा नहीं देखा था ....
इसलिए मेरे मन में उसे लेकर थोड़ा भय अवश्य था ।
पोस्टमार्टम करने वाले डॉक्टर के लिए क्षत-विक्षत शव को देखना कोई बहुत भयानक बात नहीं होती है, क्योंकि उसे रोज ही ऐसे क्षणों से पाला पड़ता है और धीरे-धीरे उसकी आदत पड़ जाती है लेकिन अगर आप किसी नए आदमी को पोस्टमार्टम वाले कक्ष में ले जाएं

तो वहां पड़े हुए शवों को देखकर ही वह बेहोश हो जाएगा......

मैं भी काफी संवेदनशील था और मुझे लगा कि क्या मैं उस प्रकार के शरीर को देख पाऊंगा ?
लेकिन अपने ही शरीर को फिर से देखने की इच्छा को मैं दबा नहीं पाया और उसे देखने की चाहत प्रकट की.....
मेरे मन में संकेत आया कि अपनी आंखें बंद कर लो !
निर्देश मिलने पर आंखें खोलना !
कुछ क्षणों के लिए तुम्हें तुम्हारे पूर्व शरीर का स्वरुप देखने को मिलेगा ।

मैंने अपनी आंखें बंद कर ली......
आँखें बंद करने के बाद मानसिक संदेश आया कि सिर्फ सात क्षण के लिए इस कक्ष में प्रकाश आएगा क्योंकि जिस रसायन में यह रखा गया है वहां प्रकाश की उपस्थिति अनुकूल नहीं मानी गई है । उन सात क्षणों में तुम अपने पूर्व शरीर को देख सकते हो ।
मैंने मानसिक रूप से सहमति व्यक्त की !
अपनी आंखें बंद करके खड़ा हो गया !

कुछ क्षणों तक मस्तिष्क में कोई भी संकेत नहीं आया......

पूरी तरह से शांत शून्य की अवस्था मौजूद रही फिर कुछ क्षण के बाद संकेत आया कि आंखें खोलो.....

मैंने आंखें खोली तो कमरे में हल्का सफेद प्रकाश फैला हुआ था......

जो बक्से के अंदर की मानव आकृति थी उसे देखकर मेरी आत्मा तक हिल गई......

क्योंकि वह एक मनुष्य शरीर था !

जिसके सर का बायाँ हिस्सा अंदर की ओर धंसा हुआ था । उस तरफ का कान भी नहीं था, आँख भी एक ही दिख रही थी !

एक हाथ कोहनी के नीचे कटा हुआ था !

शरीर पर अनगिनत चोटों के निशान दिखाई दे रहे थे और गर्दन कंधे के साथ लगी हुई थी !

ऐसा लग रहा था जैसे अगर कंधे का सहारा ना मिले तो वह नीचे गिर जाएगा ।

उसके उस महाविकृत भयानक शरीर को देखकर मेरे पूरे शरीर में सिहरन सी दौड़ गई .... और मैं बेहोश होकर गिर गया !

उसके बाद मैंने भी अपने तलवार से वार किया उसका हाथ कंधे से कटकर अलग हो गया .....

इसके बाद उसने वहां से गायब होने का प्रयास किया लेकिन उसे ऐसा करने देना गोम्पा की सुरक्षा के हिसाब से ठीक नहीं था !

इसलिए मैंने अंतिम युद्ध करने का निर्णय बना लिया था और अपनी रक्षक शक्तियों को उसे रोकने के लिए जागृत किया !

मेरे देखते देखते ही मेरे शरीर के इर्द-गिर्द से चार ड्रेगन बाहर निकले और उन्होंने हमारे दोनों के चारों तरफ एक गोल घेरा बना दिया ।

जिससे वह बाहर नहीं निकाल पाया !

वह समझ गया कि अब यहां से बच निकलना तभी संभव है जब वह वह मुझे समाप्त कर दे। उसने अपनी तलवार को म्यान में रख दिया था और कमर में फंसे हुए वज्र को बाहर निकाल लिया ....

जिसे देखकर मैं भी सतर्क हो गया था क्योंकि यह उसका आखिरी हथियार था और बेहद अचूक भी ....

उसकी काट निकालना जरूरी था !

मैंने भी अपने कमर में फंसे हुए वज्र को बाहर निकाल लिया और उसे मंत्रों के द्वारा जागृत करना प्रारंभ कर दिया।

दिव्यास्त्र के साथ विशेषता यही होती है कि उन्हें प्रयोग के समय कुछ विशेष मंत्रों के द्वारा जागृत करके आह्वान करना पड़ता है और फिर वह कार्य करते हैं।

उस दिव्यास्त्र की उपस्थिति इस बात पर निर्भर करती है कि उसे इस्तेमाल करने वाला साधक कितनी उच्च कोटि का है और उसका मंत्रों पर कितना नियंत्रण है।

जितना साधक प्रबल होगा उतनी जल्दी अस्त्र कार्य करेंगे.....

मेरे द्वारा नियुक्त किए गए ड्रैगन उसे चारों तरफ से घेर चुके थे !

एक ड्रेगन उसके पाँवों में लिपट गया था ! वह उसके पैर में अपने दांत गड़ा चुका था और धीरे-धीरे उसके शरीर के खून को चूस रहा था ......

बाकी ड्रेगन भी धीरे-धीरे उसकी तरफ बढ़ते हुए घेरे को छोटा करते जा रहे थे ....

अगर वे चारों उसके शरीर तक पहुंचने में सफल हो जाते हैं तो फिर उसके बचने की कोई संभावना नहीं थी !

यह बात जोहुआ भी समझ गया था !

उसने वज्र का आह्वान कर लिया था और उसे उछाल दिया !

लेकिन रक्षक शक्ति के रक्षा चक्र के होते हुए उसका मेरी तरफ आना संभव नहीं था । इसलिए वह वज्र हवा में उछला और उसके दो टुकड़े हो गए । एक टुकड़े में से चार बिजली की किरणों जैसी चीजें निकली और चारों ड्रेगनों के ऊपर जा गिरी ....

वे चारों धुएं के गोले में बदलकर गायब हो गए !

वह बचा हुआ आधा वज्र मेरी ओर तेजी से आने लगा......

तब तक मैं भी अपने वज्र का आक्रमण कर चुका था और उससे भी ज्यादा तेजी से लामा जोहुआ की तरफ बढ़ रहा था ।

उसके सिर से टकराने के बाद जोहुआ का सिर क्षण मात्र में टुकड़े-टुकड़े होकर बिखर गया था और उसका कोई अंश भी दिखाई नहीं दे रहा था उसके बाद उसका सिर कटा शरीर किसी कटी हुई डाली की तरह नीचे नदी में जा गिरा.....

यह बात जोहुआ भी समझ गया था !

उसने वज्र का आह्वान कर लिया था और उसे उछाल दिया !

लेकिन रक्षक शक्ति के रक्षा चक्र के होते हुए उसका मेरी तरफ आना संभव नहीं था। इसलिए वह वज्र हवा में उछला और उसके दो टुकड़े हो गए। एक टुकड़े में से चार बिजली की किरणों जैसी चीजें निकली और चारों ड्रेगनों के ऊपर जा गिरी ....

वे चारों धुएं के गोले में बदलकर गायब हो गए !

वह बचा हुआ आधा वज्र मेरी ओर तेजी से आने लगा......

तब तक मैं भी अपने वज्र का आक्रमण कर चुका था और उससे भी ज्यादा तेजी से लामा जोहुआ की तरफ बढ़ रहा था।

उसके सिर से टकराने के बाद जोहुआ का सिर क्षण मात्र में टुकड़े-टुकड़े होकर बिखर गया था और उसका कोई अंश भी दिखाई नहीं दे रहा था उसके बाद उसका सिर कटा शरीर किसी कटी हुई डाली की तरह नीचे नदी में जा गिरा.....

दूसरी तरफ उसके द्वारा भेजा गया वज्र कमजोर पड़ने के बावजूद भी अपना काम कर चुका था !

उसने मेरी गर्दन पर गंभीर चोट कर दी थी !

जिसके बाद मैं भी मरणासन्न अवस्था में नीचे की ओर गिरने लगा ......

तभी एक स्त्री शक्ति को मैंने प्रकट होते हुए देखा ....

वह हवा में उड़ती हुई आई और मेरे गिरते शरीर को संभाल लिया और उसे लेकर वापस गोम्पा में चली गई !

उसके बाद दृश्य बदला !

मैं एक चबूतरे पर रखे हुए बक्से में लेटा हुआ दिखाई दे रहा था । मेरे आस-पास 3-4 लामा खड़े होकर कुछ औषधियों का प्रयोग कर रहे थे !

तभी.....

एक अत्यंत तेजस्वी और भव्य व्यक्तित्व वाले महापुरुष का आगमन हुआ !

उनके चारों तरफ आभा मंडल फैला हुआ था और उनके आते ही सभी लोग हाथ जोड़कर खड़े हो गए .....

वे थे योगमाया के गुरु ......

साक्षात लामा यरलुंग रिंपोंचे

उन्होंने तिब्बती भाषा में कुछ कहा !

जिस पर सभी लोगों ने सहमति व्यक्त की !

उसके बाद गुरुदेव ने मुझे कुछ निर्देश दिया और मुझे पद्मासन लगाकर बैठने के लिए कहा !

मैं किसी प्रकार पद्मासन मे बैठ गया ।

मेरी गर्दन बार-बार लटक जा रही थी .....

उनमें से एक उसे संभाले हुए था !

मेरे पद्मासन लगाते ही उन्होंने उस गर्दन को कंधे के सहारे टिका कर स्थिर कर दिया !

गुरुदेव ने मुझे अपने ब्रह्मरंध्र पर ध्यान केंद्रित करने के लिए कहा !

मैं अपने ब्रह्मरंध्र पर ध्यान केंद्रित करने के लिए मानसिक रूप से चेतना को उस बिन्दु पर स्पष्ट करने का प्रयास करने लगा !

लेकिन......

ब्रह्मरंध्र तक चेतना को पहुंचाने के लिए जो नाड़ी आवश्यक थी.......

वह खंडित हो चुकी थी....

और चेतना का प्रवाह वहां तक नहीं पहुंच पा रहा था !

इसे देखते हुए गुरुदेव ने मुझे अनाहत पर अर्थात हृदय वाले चक्र पर ध्यान केंद्रित करने के लिए कहा !

मैंने अनाहत चक्र पर अपने ध्यान को केंद्रित करने का प्रयास किया......

तभी गुरुदेव ने अपने दाहिने हाथ की तर्जनी उंगली से मेरे हृदय पर स्पर्श किया .....

उस स्पर्श के साथ मेरी चेतना वहाँ केंद्रित हो गई !

उसके बाद एक विशेष क्रिया के द्वारा उन्होंने मेरी आत्मा को शरीर से अलग कर दिया !

उस समय मेरा ध्यान अनाहत में ही केंद्रित था इसलिए वहां पर मेरे ही रक्त से बनी हुई एक रक्त मणि को स्थापित कर दिया गया।

जो स्व प्रकाश से प्रकाशित है ....

और इस बात का प्रतीक है कि यह शरीर अनाहत चक्र की अवस्था में समाधि की स्थिति में गया है ......

इसके अंदर से निकली हुई आत्मा कम से कम अनाहत चक्र जागृत साधक के शरीर में ही प्रवेश कर पाएगी.......

क्योंकि उससे निचले स्तर की उर्जा में इस आत्मा की चेतन शक्ति का पूर्ण प्रवेश होने पर वह शरीर उसे संभाल नहीं पाएगा ।

इसके बाद गुरुदेव ने मेरी आत्मा को गोम्पा के अंदर ही एक अलग आयाम मे स्थित एक विशेष लोक में स्थापित कर दिया......
जहां वह अपने अगले जन्म की प्रतीक्षा में रहेगी ।

इस पृथ्वी पर हर सेकंड कई बच्चे गर्भ में आते हैं और उनमें से हर एक शरीर में आत्माएं प्रवेश करती है । यदि आप ध्यान दें तो इनमें से अधिकांश आत्माएं जब शरीर धारण करती हैं तो समाज के लिए या मानवता के लिए कुछ विशेष नहीं करती ।
वे अपने जीव होने का धर्म निभाती हैं । कोई रोजगार प्राप्त करती है । विवाह या समकक्ष संबंधों के माध्यम से संतान की उत्पत्ति करती है । अपने वंश को आगे बढ़ाती है और समाप्त हो जाती है ।
इसमे कुछ गलत नहीं है और न ही इसमे कुछ कमी है .....
यह सृष्टि का क्रम है !
जैसा भगवती ने तय किया हुआ है ।
अगर ऐसा नहीं होगा तो सृष्टि का क्रम प्रतिबंधित हो जाएगा .....

मैं लगभग 175 साल तक इंतजार करता रहा !

जिस लोक में मेरी आत्मा को रखा गया था .....

वह एक विशिष्ट लोक था !

जिसमें अनेक आत्माएं प्रकाश बिंदु के रूप में विचरण करती रहती थी !

वे सभी की सभी उच्च कोटि की आत्माएं थी !

जिनमें से एक दो तो लगभग तीन सौ वर्षों से अपने लिए उपयुक्त गर्भ का इंतजार कर रही थी !

कुछ 20 से 100 वर्ष से प्रतीक्षा कर रही थीं । वैसी आत्माओं की संख्या ज्यादा थी !

सनातन धर्म में गर्भाधान के लिए मुहूर्त की व्यवस्था इसीलिए की गई थी ।

अभी हम वैज्ञानिक रूप से काफी विकसित हो गए हैं और अपने हिसाब से गर्भनिरोधक साधनों का इस्तेमाल भी कर सकते हैं । ऐसी स्थिति में विशेष मुहूर्त में समागम के द्वारा संतानोत्पत्ति के लिए प्रयास करना किसी विशिष्ट आत्मा को आपके बच्चे के गर्भ में भी स्थापित होने का अवसर प्रदान कर सकता है .....

और हो सकता है ऐसी स्थिति में आपका बच्चा अति विशिष्ट निकले ।
काम सुख के लिए अपने इच्छानुसार सहवास कर लें, लेकिन गर्भधारण करने के लिए सहवास करते समय अपने आसपास सात्विक वातावरण बना कर रखना चाहिए और अपने मन में किसी उच्च कोटि की आत्मा को अपने शिशु के रूप में प्राप्त करने की इच्छा के साथ सहवास में रत होना चाहिए । इसके साथ साथ भगवान या अपने इष्ट से यह प्रार्थना करनी चाहिए कि मुझे एक श्रेष्ठ और योग्य संतान की प्राप्ति हो ।

ऐसी स्थिति में संभव है कि आपके द्वारा किए जा रहे समागम से कोई श्रेष्ठ व्यक्तित्व इस संसार में आए और अपनी गतिविधियों से इस संसार को एक बेहतर स्थान बनाने में योगदान प्रदान करें ।
अस्तु.....

धीरे धीरे समय आगे की ओर बढ़ता गया और उसके बाद मैंने गुरुदेव के आने के आदेश को स्पष्ट सुना । उसके बाद मैं उनके साथ निकल पड़ा । उस समय मै

एक सूक्ष्म प्रकाश पिंड के रूप मे था जो एक स्फटिक जैसे किसी पदार्थ के बने हुए गोले मे घिरा हुआ था !

गुरुदेव मुझे लेकर मेरे वर्तमान गांव की ओर पहुंचे !

वहाँ अपनी माता के गर्भ में एक अति सूक्ष्म पिंड के रूप में मैंने अपने आपको देखा ।

मेरे माता पिता बेहद सात्विक प्रवृत्ति के लोग थे और उनके मन में ईश्वरीय शक्तियों के प्रति अगाध श्रद्धा थी ।

मैंने वहां सूक्ष्म रूप मे रक्षक ड्रेगनों को देखा जो गोम्पा की दीवालों पर बने हुए थे । वह मेरी माता के चारों तरफ सूक्ष्म रूप से मौजूद थे और पूरी तरह सजग थे ।

गुरुदेव के वहाँ पहुंचते ही वे प्रणाम करके घर के बाहर चारों दिशाओं मे खड़े हो गए ।

उस समय मेरी माँ सो रही थी !

वह पूरा कमरा एक दिव्य प्रकाश से जगमगा रहा था !

जो हल्का सफेद रंग का था ।

वह गुरुदेव के आभामंडल से निकलने वाला शुद्ध और तेजस्वी प्रकाश था !

उस प्रकाश मंडल के घेरे में मां का शरीर भी आ गया था ।

फिर गुरुदेव ने मंत्रों का उच्चारण करना प्रारंभ कर दिया ! मंत्रों के उच्चारण के साथ वह स्फटिक जैसा बाल मेरी माता के नाभि स्थल के पास जाकर स्थिर हो गया । वह स्फटिक का गोला चमकने लगा ....
क्षण के सौवे हिस्से के बराबर समय के लिए मुझे ऐसा लगा जैसे प्रकाश का एक विस्फोट सा हुआ हो !
उसके बाद मैंने अपने आप को माता के गर्भ में पाया !
गुरुदेव को मैं बाहर खड़ा हुआ देख सकता था । उन्होंने करुणा भरी दृष्टि से मेरी ओर देखा और अभय मुद्रा में हाथ उठाया ......
उसके बाद मेरी चेतना लुप्त होती चली गई ।
गुरुदेव ने मुझे गर्भ में स्थापित करने के बाद सभी रक्षक शक्तियों को सजग रहकर मेरी रक्षा करने का निर्देश दिया और वहां से चले गए !

एक झटके से मेरी आँखें खुल गई ! मैंने देखा तो मैं एक अन्य कक्ष मे था और मेरे ऊपर कंबल पड़ा हुआ था । कक्ष मे मशाल जल रही थी उसकी रोशनी मे मैंने देखा कि वह एक कमरा था जिसमें दीवारों पर तिब्बती पेंटिंग्स बनी हुई थी !

उनमें क्या बना था ? यह मुझे बहुत ज्यादा समझ में तो नहीं आया लेकिन उसमें बीच-बीच में कई जगह पर विशालकाय सर्प या ड्रैगन बने हुए थे ।

उनकी आकृतियाँ बड़े बड़े चेहरे वाली थीं !

जिनकी आँखें भी काफी बड़ी बड़ी थीं ....

जो डरावनी लगती थीं !

तभी योगमाया उस कक्ष मे आई ।

मैंने उठकर उनके चरण स्पर्श किए ! उन्होने मेरे सर पर आशीर्वाद का हाथ फेरा !

पूछा - सब देख लिया ?

मैंने कहा - हाँ !

वे बोलीं - क्या क्या देखा ?

मैंने उन्हे शुरु से लेकर अपने गर्भ मे जाने तक की सारी घटना बताई ।

वे बोलीं - तुम्हारी सुरक्षा के लिए गुरुदेव ने सारे इंतजाम किए थे.... लेकिन एक दिक्कत बाकी थी । जो शक्ति ड्रैगन वहां सुरक्षा के लिए नियुक्त किए गए थे उनके ऊपर एक प्रतिबंध था । अगर दो ग्रहण एक पक्ष में आ जाए अर्थात पूर्णिमा और अमावस्या में लगातार दो ग्रहण पडते हों । उसमें भी पूर्ण चंद्र ग्रहण पहले आए

और उसी पक्ष में पूर्ण सूर्यग्रहण भी पडे तो ऐसी स्थिति में उन 15 दिनों के लिए ड्रैगन शक्तियां अपने लोक में वापस चली जाती है ....

इन्हीं पंद्रह दिनों में वे अपनी विशेष क्रियाएँ और साधना सम्पन्न करती हैं, जिससे उनकी शक्तियों का विस्तार होता है या पुनर्जागरण होता है ....

ऐसी स्थिति में उनकी शक्तियां बढ़ती जाती है ।

इसलिए ड्रैगन शक्तियां इन पंद्रह दिनों में रक्षा के लिए उपलब्ध्य नहीं रहती है ।

ऐसे संयोग दुर्लभ होते हैं, जब लगातार पड़ने वाले दोनों ग्रहण पूर्ण ग्रहण हो । आमतौर पर आंशिक ग्रहण ही लगते हैं या फिर दोनों में से एक ग्रहण आंशिक होता है ।

जब तुम साढ़े चार वर्ष के थे तब एक ऐसा ही संयोग आने वाला था । एक ऐसा विचित्र संयोग जो तुम्हारे लिए प्राण घातक हो सकता था । ग्रहण लगने के साथ ही रक्षक शक्तियां वहां से विलुप्त हो चुकी थी । तुम्हारे अंदर शक्तियां तो विराजमान थी लेकिन वह पूरी तरह से चैतन्य नहीं हुई थी इसलिए तुम उसका प्रयोग करना नहीं जानते थे और ना ही अपनी शक्तियों के बारे में

जानते थे। ऐसी स्थिति में तुम्हारा आत्मरक्षा करना भी संभव नहीं था।

जिस प्रकार से सकारात्मक शक्तियों का अस्तित्व रहता है उसी प्रकार से नकारात्मक शक्तियों का अस्तित्व भी हमेशा से रहा है ।

हमारे सनातन धर्म में माना जाता है कि देवता और राक्षस अनंत काल से मौजूद है । प्रकृति का निर्माण संभवतः इसी प्रकार से हुआ है कि सकारात्मक और नकारात्मक शक्तियां हमेशा समानांतर रुप से उपस्थित रही है ।

योगमाया आगे बोली - तुम्हारे साथ हुए युद्ध में लामा जोहुआ पराजित हुआ था और मृत्यु को प्राप्त हो गया था । उसका सर कटा शरीर यरलुंग त्सांग्पो नदी में गिर गया था । जो बहता हुआ आगे की ओर जा रहा था । यरलुंग त्सांग्पो के तट पर ही लगभग तीन किलोमीटर आगे एक और गोम्पा है जिसका नाम है गुइजिए गोम्पा ! वहाँ रहता है लामा सिसुग्वे । वह काली शक्तियों का साधक है । उसकी आयु भी लगभग 130 वर्ष की है । उसने नदी में बहते हुए लामा जोहुआ के शरीर को अपनी शक्तियों के माध्यम से खींचकर मंगवा लिया

। वह उससे अपने लिए वज्र का निर्माण करना चाहता था ......

उसके लिए लामा जोहुआ की आत्मा की सहमति भी जरुरी थी.....

मृत्यु के पश्चात मृत शरीर के साथ आत्मा कुछ समय तक विचरण करती रहती है । ऐसा आमतौर पर तब तक होता है, जब तक शरीर का अंतिम संस्कार ना हो जाए ।

लामा सिसुग्वे ने लामा जोहुआ की आत्मा के साथ संपर्क किया और वज्र के रुप में उसके शरीर की हड्डियों को इस्तेमाल करने की अनुमति मांगी ।जोहुआ ने एक शर्त रखी और वह शर्त थी तुम्हारी मृत्यु । इस गोम्पा का इलाका ऐसा था जिसमें प्रवेश करना सिसुग्वे के लिए असंभव था । इसलिए सिसुग्वे ने गोम्पा से बाहर निकालने पर तुम्हें मारने के लिए वज्र प्रयोग का वचन दिया । जिसके बाद जोहुआ ने अपनी हड्डियों के इस्तेमाल की अनुमति प्रदान कर दी ।

*****

प्राचीन कथाओं के अनुसार देवराज इन्द्र के द्वारा धारण किया जाने वाला संहारक दिव्यास्त्र वज्र भी हड्डियों से बना हुआ है ।
कथा है कि दैत्य वृत्रासुर ने इंद्रपुरी अमरावती में पहुंचकर देवो का विध्वंस करना शुरु कर दिया। देवता त्राहि-त्राहि कर उठे। जब वह किसी के रोके नहीं रुका तो देवराज इंद्र उसके सामने पहुंचा और उस पर अपने दिव्य अस्त्रों से आक्रमण किया, किन्तु वृत्रासुर पर कोई प्रभाव नहीं हुआ और उसने इन्द्र को पराजित कर दिया । पराजित इंद्र भागकर सीधे विष्णुलोक में भगवान विष्णु के पास पहुंचे।

उन्होंने इन्द्र को उपाय बताया - तुम्हारी रक्षा केवल महर्षि दधीचि ही कर सकते है। तपस्या के प्रभाव से उनकी हड्डियाँ अत्यंत प्रचंड शक्तियुक्त हो गई हैं । यदि तुम उन्हें प्रसन्न करके किसी तरह उनके शरीर की हड्डियां प्राप्त कर लो और उन हड्डियों से वज्र बनाकर वृत्रासुर से युद्ध करो तो उसे समाप्त कर पाओगे .....

भगवान विष्णु का परामर्श मानकर देवराज इंद्र ऋषि दधीचि के आश्रम में पहुंचे । इंद्र ने ऋषि से हाथ

प्राचीन कथाओं के अनुसार देवराज इन्द्र के द्वारा धारण किया जाने वाला संहारक दिव्यास्त्र वज्र भी हड्डियों से बना हुआ है ।
कथा है कि दैत्य वृत्रासुर ने इंद्रपुरी अमरावती में पहुंचकर देवो का विध्वंस करना शुरू कर दिया। देवता त्राहि-त्राहि कर उठे। जब वह किसी के रोके नहीं रुका तो देवराज इंद्र उसके सामने पहुंचा और उस पर अपने दिव्य अस्त्रों से आक्रमण किया, किन्तु वृत्रासुर पर कोई प्रभाव नहीं हुआ और उसने इन्द्र को पराजित कर दिया । पराजित इंद्र भागकर सीधे विष्णुलोक में भगवान विष्णु के पास पहुंचे।

उन्होंने इन्द्र को उपाय बताया - तुम्हारी रक्षा केवल महर्षि दधीचि ही कर सकते है। तपस्या के प्रभाव से उनकी हड्डियाँ अत्यंत प्रचंड शक्तियुक्त हो गई हैं । यदि तुम उन्हें प्रसन्न करके किसी तरह उनके शरीर की हड्डियां प्राप्त कर लो और उन हड्डियों से वज्र बनाकर वृत्रासुर से युद्ध करो तो उसे समाप्त कर पाओगे .....

भगवान विष्णु का परामर्श मानकर देवराज इंद्र ऋषि दधीचि के आश्रम में पहुंचे । इंद्र ने ऋषि से हाथ

जोड़कर देव लोक तथा देवताओं की दुर्दशा के विषय में बताया और यह भी बताया कि देवता वृत्रासुर के भय से देवलोक छोड़कर छिपते फिर रहे है।

सुनकर ऋषि दधीचि बोले- बताओ देवराज तुम्हारी इस समस्या के समाधान मे मैं क्या सहायता कर सकता हूँ ?

इंद्र ने याचना की - यदि आप मुझे अपनी हड्डियो का दान दे दे और उनसे वज्र बनाया जाए तो वह दैत्य उस वज्र के प्रहार से मर सकता है ।

महर्षि दधीचि ने सहर्ष अपनी अस्थियों का दान कर दिया । इंद्र ने उन अस्थियों से वज्र बनाया ।

वज्र लेकर इन्द्र वापस इंद्रलोक पहुंचे और दोनों के मध्य भयंकर युद्ध हुआ । इंद्र ने अपने वज्र प्रहार से उसका वध कर डाला । इसके बाद देवलोक मे देवताओं को वापस आधिपत्य मिल पाया ।

******

लामा सिसुग्वे ने जोहुआ की हड्डियों के द्वारा एक प्रचंड वज्र का निर्माण किया । उसका लक्ष्य भी इस गोम्पा पर कब्जा करना था । उसने अपने साथियों के

साथ फिर एक बार गोम्पा पर आक्रमण किया लेकिन वह नाकामयाब रहा । इस आक्रमण से उसकी सारी शक्तियां क्षीण हो गईं और वह भाग खड़ा हुआ और सिक्किम के सुदूर पहाड़ों मे जाकर रहने लगा । उसका वज्र जो उसने जोहुआ की हड्डियों से बनाया था, वह भी उसके साथ ही था । वहाँ साधनाएं करके उसने अपनी शक्तियों को फिर से इकट्ठा किया और अपने वचन के अनुसार तुम्हारी मृत्यु के लिए उस वज्र का प्रहार तुम्हारे ऊपर करने की योजना बनाई ।

तुम्हारे गर्भ धारण करते ही लामा सिसुग्वे ने तुम्हारे ऊपर आक्रमण करने के लिए अवसर ढूँढना प्रारंभ कर दिया था, लेकिन रक्षक ड्रेगनों की शक्ति के कारण वह सफल नहीं हो पाया ।

जब तुम साढ़े चार वर्ष के हुए तो ग्रहण वाला संयोग पडा और उसे अवसर मिल गया । लामा सिसुगवे ने अवसर देखकर तुम्हारे ऊपर वज्र प्रहार किया !

प्रकृति जिसकी रक्षा करना चाहती है उसके लिए वह स्वयं व्यवस्था करके रखती है । तुम्हारे पिता नित्य श्री

नरसिंह कवच का पाठ करते थे । वे लगभग 25 वर्षों से इसका पाठ कर रहे थे इसलिए उनको वह कवच सिद्ध हो चुका था .....

जिस घर मे इस प्रकार के पाठ होते हैं या मंत्र जाप होता है वहाँ रक्षक शक्तियों के द्वारा एक अदृश्य रक्षा चक्र बन जाता है । जो वहाँ के रहवासियों की रक्षा करता है !

वज्र प्रहार होने से पहले ही तुम्हारे पिता को अनहोनी का आभास हो गया था । वे ग्यारह कवच पाठ का संकल्प लेकर घर के मंदिर मे बैठ गए थे !

लामा का वज्र प्रहार उस पाठ से उत्पन्न रक्षा चक्र के कारण कमजोर हो गया और तुम्हारे ऊपर हुआ प्रहार तुम्हें मार तो नहीं पाया ।

लेकिन.....

तुम्हें मरणासन्न अवस्था मे पहुंचा गया था !

मृत्यु तुल्य कष्ट भोगने के लिए......

उधर तुम्हारे पिता की स्थिति भी गंभीर हो गई थी ..

क्योंकि नरसिंह कवच अत्यंत उग्र माना जाता है और सामान्यतः उसका रोज एक से ज्यादा पाठ नहीं किया जाता ।

ग्यारह कवच पाठ करने के बाद उनके शरीर में इतनी ऊर्जा फैल गई थी कि उनके गुह्य भाग से रक्त निकलना प्रारंभ हो गया था । जिसके बाद वे अपने आसन पर ही अचेत हो गए ......

तुम पंद्रह दिन तक और तुम्हारे पिता पूरे सप्ताह तक अस्पताल मे भर्ती रहे ।
ऐसे समय मे मातृ शक्तियां ही रक्षा करती हैं । तुम्हारी दादी संकल्प लेकर महामृत्युंजय पाठ के लिए बैठी और पंद्रह दिनों मे सवा लाख मंत्र जाप का अनुष्ठान पूरा किया ।

अमावस्या को सूर्यग्रहण लगा और प्रतिपदा को रक्षक शक्तियों की वापसी हो गई ।
पंचमी के दिन घर मे पूर्णाहुति के साथ तुम्हारे स्वास्थ्य मे सुधार आना चालू हुआ और एक महीने के बाद तुम वापस स्वस्थ हो पाए ।

वज्र प्रहार से बचना आसान नहीं होता ।
एक साढे चार साल के नन्हे बालक के लिए तो बिल्कुल नहीं ।

तुम्हारी दादी के द्वारा किए गए अनुष्ठान की वजह से उस संकट से तुम बच गए.....
लेकिन उसका दुष्प्रभाव दादी ने स्वयं अपने ऊपर ग्रहण कर लिया था ।

उन्होंने अपनी संकल्प शक्ति के माध्यम से तुम्हारे कष्ट को अपने ऊपर ले लिया ।
इसके परिणाम स्वरुप वे बीमार पड गईं और तीन महीने के बाद उनकी मृत्यु हो गई ।

कई सिद्ध गुरु भी अपने शिष्यों या अनुयायियों के कष्ट को अपने ऊपर ले लेते हैं और उसके बाद गंभीर शारीरिक कष्ट भोगते हैं । ऐसा वे सहज करुणा के वशीभूत होकर करते हैं.....
लेकिन लोगों को ऐसा लगता है कि यह सिद्ध पुरुष नहीं हो सकते !
यदि इनके पास कोई सिद्धि होती तो वह स्वयं ऐसा कष्ट क्यों सहन करते ।
लेकिन प्रकृति की माया वही जाने......

नरसिंह कवच के प्रभाव के कारण वह वज्र प्रहार के बाद खंडित हो गया और नष्ट हो गया .....

उधर पूरे 154 साल की प्रतीक्षा के बाद जोहुआ का भी पुनर्जन्म हो चुका था । यानि तुमसे लगभग 20 साल पहले जोहुआ भी जन्म ले चुका है ।

उसे लामा सिसुग्वे ने 25 वर्ष की आयु मे खोज लिया था और उसे तंत्र साधनाओं की शिक्षा देनी प्रारंभ कर दी थी ।

इस जन्म मे उसका नाम नोरबू है और वह सिक्किम मे एक गुप्त मठ मे रहता है । दो साल मे उसकी तांत्रिक शिक्षा पूरी हो जाएगी और उसके बाद लामा सिसुग्वे नोरबू को अपना उत्तराधिकारी घोषित कर देगा क्योंकि उसके भी शरीर त्यागने का समय आ चुका है ।

लामा,पुनर्जन्म, तिब्बत और चीन

***

तिब्बत मे लामाओं का पुनर्जन्म एक स्वीकार्य स्थिति है
।

तिब्बत के सर्वोच्च धर्मगुरु दलाई लामा भी अपने पूर्व लामा के पुनर्जन्म के रुप में स्वीकारे जाते हैं। उन्हें भी पहले के लामा द्वारा दिए गए संकेतों के आधार पर चुना गया था और परीक्षा के बाद जब वह सफल हुए तो उन्हें तिब्बत का धर्मगुरु घोषित किया गया।

इसका प्रसंग भी काफी रोचक और रहस्यमय है। वर्ष 1933 में तेरहवें दलाई लामा थुब्तेन ग्यात्सो की मौत हो गई। उसके बाद, नौवें पंचेन लामा ने एक सपना देखा
।

तिब्बती परंपरा मे पंचेन लामा ही दलाई लामा के बाद सर्वोच्च धार्मिक पद पर होते हैं और उन्हें ही पुनर्जन्म के संकेत मिलते हैं।

उन्होंने अपने सपने मे मिले उन संकेतों का अर्थ निकाला
। उसके आधार पर लामाओं का एक खोजी समूह
पूरे तिब्बत में उन्हें ढूंढने के लिए निकला और अंततः

ताक्तसेर गांव में ल्हामो धोन्डुप नामक बच्चे के रूप मे उन्हे 14वां दलाई लामा मिल गया ।

अब बाकी था उसका परीक्षण ......

पुराने लामा के द्वारा इस्तेमाल की गई वस्तुओं को पहचानने की परीक्षा पास करने के बाद कुछ और परीक्षण किए गए और उन सबमे सफल होने के बाद उन्हें चौदहवाँ दलाई लामा घोषित किया गया । उन्हे नाम दिया गया तेन्ज़िन ग्यात्सो ।

चीन की विस्तार वादी नीति के चलते उसने तिब्बत पर कब्जा कर लिया । दलाई लामा को अपने 80 हजार अनुयायियों के साथ तिब्बत छोड़कर भारत में धर्मशाला नामक जगह पर निर्वासित जीवन व्यतीत करना पड़ रहा है । यहीं से वर्तमान तिब्बत सरकार कार्य करती है । उन्हें भारत सरकार का संरक्षण प्राप्त है ।
चीन के विरुद्ध बाद मे तिब्बत मे विद्रोह हुआ और उसे दबाने के लिए चीन ने तिब्बत में भयानक नरसंहार किया । बीबीसी की एक रिपोर्ट के अनुसार, जब विद्रोह शांत हुआ, तब ल्हासा की सड़कों पर लाशें पटी पड़ी थीं ।

उन लाशों को बाद में जला दिया गया । उसकी आग की लपटें बारह घंटे तक आसमान को छूती रहीं । आज भी तिब्बत में दलाई लामा की फोटो लगाना अपराध माना जाता है और ऐसा करने पर उसे जेल में डाल दिया जाता है ।

चीन ने तिब्बत में अपना दमन जारी रखा । कई बौद्ध मठों को नष्ट कर दिया गया । अनेक बौद्ध ग्रंथों को जला दिया गया । वहां बाहरी लोगों को लाकर बसाया गया ताकि तिब्बत की मूल परंपरा नष्ट हो जाए और वे अपने सांस्कृतिक मूल्यों से परे हट जाएं ।
इस प्रकार चीन ने तिब्बत के संस्कृतिक और धार्मिक स्वरूप को नष्ट करने का क्रूर प्रयास जारी रखा हुआ है ।
खैर......

विनोदिनी से पुनः मुलाक़ात और जल समाधि

काफी देर तक खामोशी छाई रही .....

मैं अंधेरे कमरे में कंबल के अंदर में सो रहा था !

मुझे थोड़ी देर के बाद एक महिला की आकृति दिखाई दी, जो तिब्बती वेशभूषा में थी !

उसे देखकर मैं आश्चर्यचकित रह गया .....

क्योंकि वह विनोदिनी थी ।

हां .... विनोदिनी !

हम बहुत दिनों के बाद मिले थे इसलिए हम एक दूसरे के गले लग गए ।

तभी योगमाया का कमरे में आगमन हुआ ।

वे बोलीं - अब क्योंकि तुम सब कुछ जान चुके हो और पुराने शरीर में से सारी शक्तियों को प्राप्त कर चुके हो इसलिए आज तुम्हारे पुराने शरीर को जल समाधि दे दी जाएगी ।

उस समय सुबह के करीब दस बज रहे थे ।

ग्यारह बजे के आसपास जल समाधि के लिए प्रक्रिया प्रारंभ हो गई । एक बहुत बड़ा लकड़ी का पिजड़े जैसा बना हुआ था ..... जो नदी तक जा सकता था ।

सबसे पहले मेरे पिछले जन्म के उस शरीर को तीन बार किसी विशेष द्रव से नहलाया गया । उस शरीर के ऊपर एक वार्निश जैसी पारदर्शक सी परत थी जो उस द्रव से नहलाने के बाद हट गई !

अब ऐसा लगने लगा जैसे वह ताजा शरीर हो ..... उसे देख कर कोई भी यह नहीं बोल सकता था कि वह 175 साल पुराना शरीर है !

तभी तीन लामा मेरे पास आए और फिर वे मुझे उस शरीर के पास लेकर गए । उन्होंने मुझसे ढेर सारी पूजन प्रक्रिया संपन्न करवाई । जिसके बाद किसी विशेष उबटन जैसे काले पदार्थ को पूरे शरीर पर लेप कर दिया गया । इसके बाद शरीर को उस लकड़ी के बने हुए पिंजड़े में रखने के बाद उसे रस्सी के सहारे नदी में उतार दिया गया.....

जब वह नदी के लगभग तीन या चार फूट ऊपर था तभी एक लामा ने अपने हाथ मे पकड़ी हुई मशाल को जलाकर पिंजड़े की ओर उछल दिया ।

मशाल के पिंजरे के पास टकराते ही उस देह में आग लग गई ।

वह आग बेहद प्रचंड थी !

कुछ कुछ वैसी ही जैसे गैस के चूल्हे को थोड़ी देर चालू करके छोड़ दिया जाए और फिर लाइटर ऑन करें तो जैसे भभक कर आग लगती है ठीक वैसी ही आग .....

वह आग कितनी प्रचंड थी.....

इसका अंदाजा इसी बात से लगा सकते हैं कि पिंजरे के आग पकड़ने से पहले ही वह शरीर धू धू करके जलने लगा था ।

पिंजरे में आग पकड़ कर जब तक वह रस्सी जलती तब तक वह शरीर लगभग भस्म हो चुका था ।

ऐसा तभी संभव है जब आग की लपटों में इतना ज्यादा तापमान उत्पन्न हो गया हो जैसा कि विद्युत शवदाह गृह में उत्पन्न होता है ।

इस पूरी प्रक्रिया में मुश्किल से 4 या 5 मिनट का समय लगा होगा । उतने समय में पूरा शरीर जलकर राख में बदल चुका था.....

रस्सी के जलते ही नदी मे गिरकर पिंजड़े समेत वह शरीर अनंत जल प्रवाह में विलीन हो गया !

वह एक अद्भुत और अविस्मरणीय क्षण था !

जब मैं अपने पूर्व जन्म के शरीर के साथ मौजूद था !

पुनर्जन्म की अवधारणा कई धर्मों में मौजूद है और कुछ घटनाएं ऐसी होती हैं । जो इस अवधारणा को प्रमाणित भी करती हैं ।

एक ऐसी घटना महात्मा गांधी जी के समय में मिली थी । जिसमें शांति देवी नामक बच्ची ने अपने आप को मथुरा की लुगदी देवी बताया था और अपने पति का नाम केदारनाथ चौबे .... उसकी जांच के लिए स्वयं महात्मा गांधी जी ने एक कमेटी का गठन किया था और जांच के बाद शांति देवी के बताए सारे तथ्य सही पाए गए थे । इसके विषय मे आप गूगल कर सकते हैं ।

सारे विश्व में इस प्रकार की कई घटनाएं हो चुकी है ।

कई लोग पुनर्जन्म को मानते भी हैं । पुनर्जन्म समय संभवत: पुरानी यादों को विस्मृत कर दिया जाता है । यह अवश्य ही महामाया की कोई विशेष प्रक्रिया है, जिसके कारण व्यक्ति अपने पूर्व जन्म के संबंधों और अनुभवों को भूल जाता है ....

जो शायद नए जन्म में सहज रूप से जीवन बिताने के लिए आवश्यक भी है ।

दलाई लामा के पुनर्जन्म के विषय में मैंने आपको विस्तार से जानकारी पिछले भाग में जानकारी दी थी ।

कुल मिलाकर पुनर्जन्म होता है ऐसा मुझे भी लगता है .....
बाकी आप स्वतंत्र हैं इस विषय पर अपनी राय रखने के लिए......
खैर .....
उस मृत देह का अंतिम संस्कार जिस विधि से किया गया । वह शायद उसके किसी भी प्रकार के दुरुपयोग को रोकने के लिए किया गया होगा क्योंकि आमतौर पर लामाओं का अंतिम संस्कार इस प्रकार से नहीं किया जाता । जो भी हो वह एक अजीबोगरीब विलक्षण और आश्चर्यजनक अनुभव था ।

तांत्रिक विधि से देह त्याग की वजह से मेरी उर्जा का एक अंश मेरे पुराने शरीर में मौजूद था , जिसे पूर्णत: प्राप्त करने के लिए जरूरी था कि मेरी आत्मा उस शरीर में प्रवेश करके अपने अंश को आत्मसात करके उस ऊर्जा को वापस ग्रहण करें और फिर पुन: मेरे शरीर में वापस लौट जाए ।
यह सारी प्रक्रिया संपन्न हो चुकी थी !

मैं अपने अपने शरीर में लौट चुका था । पुराने शरीर को जल प्रवाह दे दिया गया था । मैं अपने शरीर में नई ऊर्जा महसूस कर रहा था । मुझे ऐसा लग रहा था कि मैं ज्यादा प्रबल और शक्तिशाली हो गया हूं ।
संभवत: उस अंश के अपने अंदर स्थापित हो जाने की वजह से ऐसा महसूस हो रहा होगा ।

वह दिन अनेक प्रकार के अनुष्ठानों और विधि विधान को संपन्न करने में बीत गया । उसके बाद अगले चरण की प्रक्रिया संपन्न होनी थी.....
जिसके विषय में योग माया ने मुझे बताया था ।

शाम के समय विनोदिनी मेरे कक्ष में आई और हम दोनों के बीच में बातें होने लगी मैंने उसे अपने अनुभवों के विषय में बताया और उसने अपने अनुभवों के विषय में बताया ।

बाबा भैरुंडनाथ और नंदिनी के साथ जाने के बाद उन लोगों ने उसे कठोर परीक्षण से गुजारा । उसे विभिन्न प्रकार की साधनाएं संपन्न करवाई गई । तत्पश्चात उसे

भी योग की क्रियाओं का, जिसमें वज्रोली भी शामिल थी, अभ्यास कराया गया ।

हम दोनों को अलग हुए लगभग छह महीने का समय हो चुका था । हम दोनों को साधना का अगला चरण पूर्ण करना था, जिसके लिए संभवत: हमें अलग अलग रख ट्रेनिंग दी गई थी ।

मेरे साधनात्मक जीवन का एक चरण पूरा हो चुका था और मैं अब अगले चरण के लिए तैयार था जो लामा पद्धति से किया जाना था ।

हमारे शरीर में कुंडलिनी शक्ति की उपस्थिति मानी जाती है और उसे मूलाधार से सहस्त्रार तक विस्तृत माना जाता है । मूलाधार की स्थिति लिंग और गुदा स्थान के बीच वाले स्थान पर होती है । जहां यह शक्ति सुसुप्त अवस्था में किसी सर्प की तरह कुंडली मारकर बैठी हुई है.... ऐसा माना जाता है । जैसे-जैसे साधना या योग की ऊर्जा शरीर में बढ़ती है यह कुंडली किसी सांप की तरह सरसराती हुई ऊपर उठती है और सहस्त्रार तक पहुंचती है जिसके बाद वह साधक ब्रह्मांडमय हो जाता है.....

पूर्व जन्म में मैं ब्रह्मांड भेदन की साधना को संपन्न कर रहा था जब मेरे देह पर आघात की वजह से वह साधना पूर्ण नहीं हो पाई थी जिसे मुझे इस जन्म में संपन्न करना था ।
इडा पिंगला और सुषुम्ना तीन प्रमुख नाड़ियाँ मानी गई हैं , ये जिन स्थानों पर मिलती हैं उसे चक्र कहा जाता है । जब इन तीनों नाड़ियों को किसी योगिक या तांत्रिक प्रक्रिया के द्वारा आपस में मिला दिया जाता है तब वहां शक्ति का प्रस्फुटन होता है और वह चक्र जागृत हो जाता है ।
तिब्बती लामाओं में कुंडली जागरण की एक अत्यंत विचित्र पद्धति मौजूद है । वे एक सोने की कील के माध्यम से इन नाड़ियों को आपस में संबंधित कर देते हैं जिससे वह चक्र जागृत हो जाता है । इस संबंध में विश्वविख्यात तंत्र मर्मज्ञ गुरुदेव डॉ नारायण दत्त श्रीमाली जी ने अपने प्रवचनों में उल्लेख किया था जिसे आप नेट पर सुन सकते हैं ।
इस प्रकार की प्रक्रिया को संपन्न करने के लिए साधक भी समर्थ होना चाहिए और साथ में गुरु भी समर्थ होना चाहिए ।

क्योंकि....

इससे अचानक उर्जा शरीर में बढ़ जाती है और सामान्य शरीर ऊर्जा के भार को संभालने में अक्षम होने की वजह से मृत्यु को भी प्राप्त हो सकता है ।

यह ऊर्जा विद्युत तरंगों की तरह होती है । यह कुछ कुछ वैसी होती है जैसे ठंडी के मौसम में अगर आप स्वेटर आदि पहन के प्लास्टिक की कुर्सी पर बैठे हो और अचानक कोई आपको छू ले या आप किसी लोहे या धातु की चीज को छुए.... जैसे अलमारी आदि..... तो एक हल्का सा झटका आपको लगता है ...... उससे कई गुना तेज झटका ऐसे साधकों को स्पर्श करने से लग सकता है ।
यह झटके तब ज्यादा तेज हो जाते हैं जब वह साधक कोई विशेष या उग्र साधना संपन्न कर रहा हो जैसे महाविद्या साधना ।

समाधि और स्पर्श

इस संबंध में एक उदाहरण देना चाहूंगा जिससे आप इस बात को और बेहतर ढंग से समझ पाएंगे ।

स्वामी रामकृष्ण परमहंस के प्रिय शिष्य थे नरेंद्र यानी स्वामी विवेकानंद ।

रामकृष्ण परमहंस जी ने नरेंद्र को ध्यान करना सिखाया और धीरे-धीरे हुए वह ध्यान की उच्चतर अवस्था में पहुंचने लगे जिसे समाधि कहा जाता है । उस अवस्था में होने वाले अनुभव के विषय में चर्चा के दौरान उन्होंने अपने मित्र गोपाल को बताया । गोपाल के मन में स्वाभाविक रूप से ही उस अनुभव को प्राप्त करने की इच्छा हुई ।

लेकिन जैसा कि मैंने बताया था कि हर साधक का शरीर योग्य नहीं होता इसलिए गुरु शिष्य की योग्यता को देखकर उसे सिद्धियां प्रदान करता है ।

जब युवावस्था रहती है तो दिमाग में नए प्रकार के विचार आते हैं । कुछ करके देखने की इच्छा भी प्रबल होती है । जिसमें आमतौर पर लीक से हटकर करने की

इच्छा भी होती है । इसलिए युवाओं को विद्रोही कहा जाता है .....
तो युवा नरेंद्र के मस्तिष्क में विचार आया और उसने गोपाल को कहा कि जब मैं समाधि की अवस्था में रहूंगा तब तुम मुझे स्पर्श कर लेना , तब हो सकता है तुम्हें भी मेरे जैसे अनुभव प्राप्त हो ।

दोनों दोस्तों मे बात तय हो गयी । नरेंद्र और गोपाल दोनों ध्यान लगाने के लिए बैठे । पाँच मिनट के बाद नरेंद्र समाधि की अवस्था में चले गए । गोपाल थोड़ी देर तक इंतजार करते रहे । जिन लक्षणों के विषय में नरेंद्र ने उन्हें बताया था ..... वह जब दिखाई देने लगा तो वह समझ गए कि नरेंद्र की समाधि लग चुकी है !
गोपाल भी उनके बगल में जाकर बैठ गया.....
आंखें बंद करके ध्यान को केंद्रित करते हुए उसने नरेंद्र को स्पर्श कर लिया !
जैसे ही उसने नरेंद्र को स्पर्श किया .... उसके अंदर की कुंडलिनी ऊर्जा उछलने लगी और वह समाधि में चला गया ।

लगभग डेढ़ घंटे के बाद नरेंद्र की समाधि टूटी और वे सामान्य हो गए.....

लेकिन.....

जब उन्होंने अपने बगल में देखा तो गोपाल समाधि की अवस्था में बैठा हुआ था !

जब काफी देर तक उसका ध्यान नहीं टूटा ....

तो नरेंद्र को चिंता होने लगी.....

वह रामकृष्ण परमहंस जी के पास पहुंचा और सारी बात कह सुनाई ।

पहले गुरुदेव राम कृष्ण जी ने उसे जमकर फटकार लगाई और कहा कि इस प्रकार के प्रयोग कभी भी नहीं करनी चाहिए और इससे साधक को प्राणों का संकट भी आ सकता है ।

इतना कहने के बाद वे गोपाल के पास पहुंचे और किसी गोपनीय प्रक्रिया के द्वारा उसको समाधि से बाहर निकाला .....

लेकिन गोपाल को सामान्य होने में लगभग 1 हफ्ते का समय लग गया .....।

योग्यता के बिना शक्ति संचरण प्राणघातक भी हो सकता है ।

अस्तु......

ओम मणि पद्मे हुम

योग माया ने उसके आगे की प्रक्रिया के विषय में समझाया - लामा पद्धति में एक विशेष मंत्र है, जो इस प्रकार है

॥ "ओम मणि पद्मे हुम" ॥

इस मंत्र का जाप कई प्रकार की सिद्धियों को प्राप्त करने के लिए किया जाता है। मणि पद्मा को महाविद्या भगवती तारा का स्वरूप भी माना जाता है। इस मंत्र का जाप तुम्हें करना है।

उसके बाद उन्होंने कुछ विधियां बताएं जिसके अनुसार मुझे जाप करना था।

पहले चरण में अर्धरात्रि से सूर्योदय तक मैंने मंत्र जाप संपन्न किया।

जब मैं आसन से उठा तो उन्होंने मुझे चाय जैसा गरम पेय मुझे पीने को दिया। उसे पीने के दस मिनट के बाद मुझे अपने पेट में गुड़गुड़ाहट सी महसूस होने लगी .....

आधे घंटे के बाद बड़े जोरों से शौच की इच्छा हुई .....

जब मैं वापस आया तो उन्होंने दोबारा एक और बार वैसा ही पेय मुझे पीने को दिया । इस बार उसके साथ तीन चार गिलास पानी भी था ।

फिर से वैसी ही इच्छा हुई और इस बार शौच में जाने पर ऐसा लगा जैसे पूरा पेट के अंदर का मल बाहर निकल गया हो .....

जब मैं वापस लौटा तो उन्होंने फिर से मुझे एक गिलास गहरे काले रंग का पेय दिया ।

मैंने पी लिया !

इस बार मूत्र मार्ग से गहरे काले रंग का द्रव बाहर निकला......

उसके बाद योग माया के निर्देशानुसार नदी के जल में गले तक डूब कर खड़ा हो गया ।

धूप निकली थी !

इसलिए थोड़ी सी राहत थी......

लेकिन ठंड तेज थी.....

जिसका एहसास बहुत हो रहा था !

शरीर बीच-बीच में कांप उठता था !

मुझे मेरा शरीर अकड़ता हुआ महसूस हो रहा था !

लगभग आधे घंटे तक मैं उसी स्थिति में खड़ा रहा ....

फिर उन्होंने मुझे आवाज देकर बाहर बुलवा लिया ....

गोम्पा के अंदर आने के बाद मेरे पूरे शरीर पर किसी चीज का लेप लगाया गया......

जो तेल जैसा लग रहा था !

बाद में उन्होंने मुझे बताया कि वह लौंग का तेल था जो ठंड में राहत प्रदान करता है ।

तब तक दोपहर हो चुकी थी......

मुझे फिर से मंत्र जप प्रारंभ करना था । दूसरे चरण में उसी दिन दोपहर से लेकर संध्या तक फिर मैंने मंत्र जाप किया ......

पेट पूरी तरह से खाली था लेकिन भूख नहीं लग रही थी । ऐसा संभवतः सुबह योगमाया द्वारा पेय पिलाने की वजह से रहा होगा ....

जिसका उद्देश्य शायद आने वाले प्रयोग के लिए तैयार करना रहा होगा ।

दोपहर से शाम तक मंत्र जाप चलता रहा और अंतिम चरण में रात्रि बारह बजे से लेकर अगली रात्रि के बारह

बजे तक एक ही आसन पर बैठकर मंत्र का जाप करना था .....

उस कमरे में दीवारों पर बेलन जैसी चीजें लगी हुई थी । जो तिब्बती और बौद्ध पद्धति में पूजन के लिए घुमाई जाती है । इसका प्रभाव मंत्र जाप करने के जैसा माना गया है । मूलतः जो लोग मंत्र जाप नहीं कर सकते हैं उनके लिए इसकी व्यवस्था की गई थी । जो कालांतर मे पूजन के अनिवार्य अंग के रूप मे स्वीकार्य हो गई । जिसे सभी घुमाते हैं ।

जब मेरा मंत्र जाप प्रारंभ हुआ तो वे बेलन अपने आप घूमने लगे ......

उनके घूमने से कमरे में अजीब सी ध्वनि तरंगे फैल रही थी । लगभग 15-20 मिनट तक घूमने के बाद वे शांत हो गई !

मेरा मंत्र जाप जारी था !

कमरे में अंधेरा छाया हुआ था !

मुझे अंधेरे में बैठकर ही मंत्र जाप करना था । लगभग डेढ़ बजे के आसपास जो बेलनाकार संरचनाएं वहां पर

लगी हुई थी...... उसके पीछे एक ड्रैगन दिखाई देने लगा ।

वह हल्के लाल रंग का था !

उसका शरीर बेहद चमकदार था !

इसलिए रात के अंधेरे में भी दिखाई दे रहा था ।

वह उन बेलनों के बीच से सरकता हुआ आगे बढ़ रहा था.......

उसके सरकने से वे बेलन हिल रहे थे और अजीब सी आवाज कर रहे थे .....

धीरे धीरे बढ़ता हुआ वह मेरे पास आ गया और ठीक मेरे सामने आकर बैठ गया ।

उसका आकार धीरे-धीरे बढ़ने लगा और उसके मुंह से आग की लपटें निकलने लगी !

वे लपटें मेरे इर्द-गिर्द से होकर गुजर रही थी और मैं उनकी गर्मी को महसूस कर सकता था !

लगभग आधे घंटे तक ऐसा ही चलता रहा वह सामने बैठकर मेरी तरफ आग उगलता रहा.....

उसके बाद लगभग एक घंटे तक वह शांत बैठा रहा !

मेरे विचार से लगभग ब्रह्म मुहूर्त का समय रहा होगा......

जब वह धीरे से मेरे चारों तरफ घेरा बनाने लगा । उसने मुझे चारों तरफ से घेर लिया । अब मैं किसी पाइप जैसे बने हुए उसके घेरे के अंदर बैठा हुआ था ।

यह एक अच्छी बात थी कि उसने मुझे कसा नहीं था,क्योंकि वह इतना विशालकाय था कि अगर वह कस लेता तो फिर शायद मेरी हड्डियों का भी चुरा बन जाता .....

घेरा बन जाने के बाद उसने फिर से एक बार बड़े ज़ोर की आग उगली ....

इस बार आग उगलने के साथ ही मुझे ऐसा लगा जैसे मैं किसी और लोक में पहुंच गया हूं ।

एक ऐसा लोक......

जिसमें हर तरफ पानी ही पानी था !

जैसे कोई विशाल ..... अनंत ..... समुद्र......

उसकी सतह पर हर तरफ नीले रंग के कमल बिखरे हुए थे !

वैसे कमल मैंने अपने जीवन में कभी नहीं देखे थे। यह बिल्कुल नीले थे ! नीलम जैसे ......

कुछ की पंखुड़ियां पूरी खुली हुई थी और कुछ की पंखुड़ियां अभी खुली नहीं थी !

समान्यतः कमाल के फूल मुश्किल से चार या छह इंच तक व्यास के होते हैं......

लेकिन वहाँ जो कमल थे उनका आकार काफी बड़ा था !

लगभग एक से दो फीट तक व्यास के फूल हर तरफ दिखाई दे रहे थे .....

वह समुद्र या जलराशि जो भी थी उसका कोई अंत नहीं दिखाई दे रहा था।

यानी वहां सिर्फ पानी था !

पानी के ऊपर खिले हुए वे नीले रंग के कमल थे !

चारों और कोई और चीज नहीं दिखाई दे रही थी !

विस्तृत आकाश था !

जिसमें तपता हुआ सूरज दिख रहा था !

जिसकी वज्र किरणें हर तरफ बिखरी हुई थी और वहां का ताप बढ़ा रही थी !

ऐसा लग रहा था जैसे सूर्य शायद और करीब आ गया हो ....

बिल्कुल गर्मी के मौसम में जिस प्रकार की धूप की उष्णता दिखाई देती है....

ठीक वैसी ही तीव्रता उस समय मुझे महसूस हो रही थी !

उन्हीं में से एक कमल के ऊपर मैं चारों तरफ देखता हुआ खड़ा था !

यह भी सोच रहा था कि कहीं यह कमल पानी में ना डूब जाए ....

क्योंकि आप भी जानते हैं कमल का फूल भले ही वह दो फुट का भी हो, है तो फूल ही.....

और वह एक आदमी का वजन कैसे संभाल लेगा ।

लेकिन...........

वैसा हो रहा था !

मैं उस फूल के ऊपर स्थिर खड़ा हुआ था !

चारों तरफ बिखरी हुई उस खूबसूरती .....

उस अद्भुत खूबसूरती को निहारता हुआ.....

अचंभित होता हुआ खड़ा था !

पानी में कुछ अजीब सी हलचल शुरु हो गई थी ....

ऐसा लग रहा था कि कुछ घटित होने वाला है और तभी कुछ कलियां जोकि नीले रंग की ही थी वह धीरे-धीरे ऊपर की ओर उठने लगी......

कमल की वे कलियाँ जल के नीचे से बाहर आ रही थी ....

ऊपर लगभग एक डेढ़ फुट से ज्यादा ऊंचाई तक वे कलियां बाहर आ गई !

उनका आकार 2 फुट के आसपास का रहा होगा और फिर वह खिलने लगी ......

जब वे खिल गई तो उनका व्यास लगभग 5 फीट के आसपास रहा होगा .....

यह सारे फूल जो बड़ी साइज के थे, और बाद में बाहर निकले थे, वह एक वृत्त जैसी आकृति में खिले हुए थे ।

ऐसा लग रहा था जैसे उन बड़े फूलों से एक गोला बना हुआ हो .....

पानी के ऊपर फूलों से बने उस गोले का व्यास लगभग 25-30 फीट का रहा होगा .....

ऊपर आकाश मे सूर्य अपने तेजस्वी रूप में चमक रहा था.....

भगवती महामाया महातारा

अचानक वहां मंत्र ध्वनियाँ गुंजरित होने लगी !

मंत्र की वे ध्वनियाँ हर तरफ से आ रही थीं ।

वे ध्वनियाँ ऐसी प्रतीत हो रही थी जैसे चारों तरफ से उन मंत्रों का उच्चारण हो रहा हो !

असंख्य मुखों से न जाने कहां-कहां से उस मंत्र की ध्वनियाँ आ रही थीं !

कुछ ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे हजारों लाखों लोग एक साथ बैठकर उस मंत्र का उच्चारण कर रहे हो......

उस मंत्र को मैंने ध्यान से सुना तो उसमें जो ध्वनि उच्चरित हो रही थी वह इस प्रकार थी :-

॥ ॐ तारे तुत्तारे तुरे सोहा ॥

मंत्र की वे ध्वनियाँ हल्के हल्के स्वर में प्रारंभ हुई थी और धीरे-धीरे उनका उच्चारण तीव्र होने लगा !

ऐसा प्रतीत हो रहा था.....

जैसे संपूर्ण ब्रह्मांड उसी मंत्र से गूंज रहा हो !

सूर्य पहले से ही तेज था.....

लेकिन मंत्र के उच्चारण के साथ साथ ऐसा प्रतीत होने लगा......

जैसे उसकी तेजस्विता थोड़ी और बढ़ गई हो !

तभी......

एक रोशनी का धमाका सा हुआ !

उस गोले के पास समुद्र की सारी सतह चमकीले प्रकाश से जगमगाने लगी ।

ऐसा लगा जैसे सूर्य स्वयं उस जल राशि के ऊपर प्रकट हो गया हो ....

जब वह रोशनी गायब हुई तो मैंने देखा .....

उन वृत्ताकार खिले हुए उन बड़े फूलों पर बुद्ध भिक्षुओं जैसी आकृतियां खड़ी हुई दिखाई दे रही थी ।

उनके वस्त्र विन्यास की वजह से सभी बौद्ध भिक्षु लगभग भगवान बुद्ध जैसे ही दिखाई देते हैं ...

इसलिए ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे बहुत सारे बुद्ध उन कमल के फूलों के ऊपर खड़े हो....

या उनके जैसे ही अवतार पुरुष उन फूलों पर खड़े हुए दिखाई हों ......

सारे के सारे लगभग 8 से 10 फुट लंबे थे .....

अद्भुत तेजस्वी पुरुष ....

सभी के सर के ऊपर चोटी जैसी बंधी हुई थी !

उनका शरीर उत्तरीय से ढका हुआ था !

कुछ की आंखें दिखाई दे रही थी !

कुछ मेरी ओर पीठ करके खड़े हुए थे.....

जिनकी आंखें दिखाई दे रही थी ....

वह वैसी ही थीं जैसी भगवान बुद्ध की प्रतिमाओं में हमें दिखाई देती है .....

अर्ध निमिलित सी.......

बाद में मुझे योगमाया से पता चला कि....

वह सब बोधिसत्व थे.......

अर्थात भगवान बुद्ध के अलग-अलग प्रकार के अवतार ....

सिद्ध पुरुष .....

भगवती तारा के पुत्र.....

उन सभी के सिर के पीछे हल्के पीले रंग का आभामंडल स्पष्ट दिखाई दे रहा था....

तभी......

अचानक.....

मैंने देखा कि.....

उस गोले के अंदर की तरफ पानी में हलचल होने लगी !

पानी के भीतर से एक नीले रंग का कमल पुष्प , जो
काफी विशाल आकार का था वह ऊपर की तरफ
निकलने लगा !
वह बंद था !
उसकी नोक दिखाई दे रही थी !
धीरे-धीरे वह ऊपर आने लगा !
जब वह ऊपर आया तो उसका आकार कम से कम छह
फूट का रहा होगा ।

कमल की उस कली के ऊपर आने के बाद सूर्य के
अंदर से किरणों का पुंज उस कमल दल पर गिरता हुआ
दिखने लगा ......
ऐसा लग रहा था जैसे कोई उन किरणों के माध्यम से
उस फूल के अंदर प्रकट होने जा रहा हो......
या सूर्य अपनी शक्तियों को पूंजी भूत करके उस फूल
के अंदर कुछ अद्भुत दृश्य उत्पन्न करने को आतुर हो गया
हो ......
उन किरणों का गिरना बिल्कुल वैसा ही था जैसे हम
शादी की पार्टियों में आजकल लाइट देखते हैं..... जो

काफी ऊंचाई तक सीधी रेखा में जाती हुई दिखाई देती है ।

वैसी ही किरणें सूर्य से आकर उस बड़े कमल पर गिरने लगी !

यह कुछ तीन या चार सेकंड तक हुआ होगा !

उसके बाद वह कमल धीरे-धीरे खुलने लगा !

वह कमल पूरा खुल गया तब उसका व्यास लगभग बारह से पंद्रह फीट के आसपास रहा होगा.......

अभी भी सूर्य की रश्मिया उसके भीतर गिर रही थी......

उसके अंदर स्वर्ण जैसा कुछ चमकता हुआ दिखाई दे रहा था .....

इतनी तेज रोशनी थी कि स्पष्ट कुछ दिखाई नहीं दे रहा था .....

लेकिन सुनहरा रंग अवश्य स्पष्ट हो रहा था !

वह विशालकाय कमल अब पूरा खिल चुका था और उसके बीच में सोने के शिवलिंग के जैसा कुछ दिखाई दे रहा था .....

धीरे-धीरे सूर्य की किरणें मध्यम होती हुई शांत हो गई ।

कुछ क्षणों के लिए तो कुछ भी दिखाई देना बंद हो गया !

क्योंकि बहुत तेज रोशनी के बाद जब रोशनी कम हो जाती है तो एक पल के लिए आंखों को एडजस्ट होने में समय लगता है ।

उसके बाद जब मैंने देखा तो उस कमल के बीचो बीच एक स्वर्ण से बना हुआ दिव्य सिंहासन दिखाई दे रहा था ....

उस दिव्य स्वर्ण के बने हुए सिंहासन के ऊपर चारों तरफ अनेक प्रकार के रत्न जड़े हुए थे जिनमें से रोशनी फूट रही थी .....

उस अद्भुत सिंहासन के ऊपर विराजमान थी !

जगत जननी !

महामाया !

विश्व तारिणी !

महाविद्या तारा !!

साक्षात महाविद्या तारा ......

उनका स्वरूप वैसा नहीं था जैसे हमारे देवी देवताओं का होता है ।

वह एक अलग ही स्वरुप में दिखाई दे रही थी । उनके शरीर का रंग गहरे हरे रंग का था ।

भगवान शिव और भगवान कृष्ण को हल्के नीले या श्याम रंग का बताया जाता है ।
उसी प्रकार से महामाया महाकाली को काले रंग का बताया जाता है, लेकिन इस स्वरूप का रंग बिल्कुल हरा था ......
बिल्कुल वैसा .....
जैसे गहरे हरे रंग के पत्तों का होता है ।

अद्भुत सौंदर्य की स्वामिनी वह महाविद्या उस स्वर्णिम सिंहासन पर बैठी हुई थी !
उनका सौंदर्य इतना तेजयुक्त था कि नजरें उनके चेहरे पर पड़ती ही नहीं थी और एक पल मे अपने आप झुक जाती थी ।
उनका हाथ वरद मुद्रा में उठा हुआ था ।

उनके चेहरे पर हल्की सी मुस्कुराहट बिखरी हुई थी !
जिसे देखकर ऐसा लग रहा था जैसे जीवन में अब कुछ प्राप्त करने के लिए बचा ही ना हो !

उनकी करुणामई दृष्टि अपने आप में इतनी अद्भुत थी जिसका वर्णन करना शब्दों की सीमा से परे है ।

मैं उस दिव्य स्वरुप को देखकर हतप्रभ था !
वाणी बुद्धि विचार दृष्टि सब कुछ स्तंभित हो चुकी थी ....
और मैं उसी अवस्था में खड़ा हुआ था ......

****

भगवती तारा को सभी बुद्ध धर्म के बोधिसत्व की जननी माना जाता है अर्थात वे ही संपूर्ण विश्व की माता मानी जाती है ।
तारा के जो स्वरूप तिब्बत मे माने जाते है वह लगभग 28 प्रकार के है । जिसमें से दो स्वरूप ज्यादा प्रचलित हैं इनमें से एक है श्वेत तारा और दूसरी है हरित तारा ।
हरित तारा प्रकृति का विश्वरूप है !
ऐसा कहा जाता है कि प्रथम दलाई लामा ने भगवती हरित तारा को अष्ट कष्टों से मुक्ति दिलाने वाला बताया था और यह आठ मनुष्य के कष्ट निम्नानुसार है :-

1. *अहंकार,*
2. *अज्ञानता,*

3. घृणा,
4. ईर्ष्या,
5. कुविचार,
6. लोभ,
7. मोह तथा
8. अश्रद्धा ।

...

मैं स्तब्ध अचंभित खड़ा हुआ था ......

लगभग पंद्रह सेकंड तक वैसी ही स्थिति रही होगी !

धीरे धीरे बोधिसत्व का मंडल एक-एक करके उस दिव्य कमल के अंदर समाहित होने लगा !

मेरे देखते-देखते वह संपूर्ण समुद्र उसके अंदर छुपे हुए सारे कमल के साथ ....

उस दिव्य कमल में समाहित होने लगा जिसमें भगवती का विग्रह विराजमान था ....

फिर जिस प्रकार से वह प्रकाश का गोला अचानक प्रकट हुआ था ....

उसी प्रकार से फिर से प्रकाश का धमाका हुआ !

प्रकाश का वह गोला कुछ समय तक वहां बना रहा ...

प्रकाश के लुप्त होने के बाद वापस सब कुछ सामान्य हो गया ......

मैं अपने कक्ष मे मौजूद था ....

मेरा मंत्र जाप चलता रहा !

धीरे-धीरे संध्या होने लगी !

संध्या होने के साथ चकरियों की घूमने की गति बढ़ने लगी !

उस कमरे में छत पर एक घंटा बंधा हुआ था !

वह घंटा काफी विशाल था !

लगभग 3 फुट या 4 फुट की ऊंचाई रही होगी और

उसका व्यास लगभग 5 फुट के आसपास रहा होगा ।

उसके बीच में बजने वाला घंटा नहीं था ।

जैसा कि आप लोगों ने देखा होगा कि घंटे में बाहर स्पीकर जैसी एक आकृति होती है और बीच में डंडी जैसा झूलने वाला भाग होता है, जो उस बाहरी स्पीकर जैसे भाग में टकराने पर आवाज पैदा करता है ।

लेकिन....

इसमें ऐसा कुछ भी नहीं था ।

उस घंटे से कुछ दूरी पर एक लकड़ी का बना हुआ डंडा हवा में रस्सियों के सहारे लटका हुआ था । संभवतः उस डंडे से चोट मारने से घंटे की आवाज आती रही होगी ....

लेकिन अजीब बात यह थी कि वह डंडा ऐसी जगह पर था , जहां पर जमीन में खड़े होकर पहुंचना असंभव था ....

उसे बजाने के लिए उस डंडे को अपने स्थान से लगभग तीन चार फुट आगे तक धकेलना पड़ता तभी वह उस घंटे से जाकर टकरा सकता था ।
उसमे कोई रस्सी भी नहीं बंधी हुई थी जिसके द्वारा उसे हिलाकर बजाया जा सके ।

उस समय शाम के लगभग छह बजे होंगे जब वह डंडा अपने आप उस घंटे से टकराया !
उस टकराव के साथ उस कमरे में ओम का गुंजरण होने लगा !
यह ध्वनि उस घंटे से आ रही थी ....
और वह भी काफी लंबे समय तक आ रही थी !

जब घंटा बजता है तो उसकी गूंज थोड़ी देर तक सुनाई देती है लेकिन इस घंटे के बजने के साथ आने वाली ॐ की वह गूंज लंबे समय तक सुनाई देती रही ....
वह ऐसी आवाज थी जो अपने आसपास गूंजने के साथ-साथ शरीर और मस्तिष्क के अंदर भी गूँजती प्रतीत हो रही थी......
वह डंडा उसी प्रकार उस घंटे में थोड़ी थोड़ी देर में आकर टकराता और ॐ की ध्वनि निकलने लगती ....

ऐसा कैसे हो रहा था ?

यह मेरी समझ में नहीं आया ....

क्योंकि कमरे का दरवाजा बंद था !

कमरे के अंदर केवल मैं था !

मेरे अलावा वहां पर कोई भी नहीं था ....

और अगर कोई था तो वह दिखाई भी नहीं दे रहा था !

तो मेरे हिसाब से वहां मेरे अलावा कोई और नहीं था ..... लेकिन वह डंडा अपने आप हवा में स्थित होने के बावजूद जाकर इस घंटे से टकराता था ......

इस प्रकार से लगभग दस बार हुआ होगा....

उसके बाद कमरे में वही तारा मंत्र उच्चरित होने लगा....

ॐ तारे तुततारे तूरे सोहा ....

ॐ तारे तुततारे तूरे सोहा ....

ॐ तारे तुततारे तूरे सोहा ....

मेरा मंत्र जाप भी उसी के साथ चल रहा था ....

मैं मन ही मन मंत्र जाप कर रहा था, लेकिन जैसे-जैसे वहां ध्वनियां गुंजरित हो रही थी ....

मेरे मुंह से भी उस मंत्र का उच्चारण लयबद्ध तरीके से होने लगा ...

और वह पूरा कमरा उन मंत्रों के गुजरण के साथ गूंज रहा था ....

हर बार ओम के उच्चारण के साथ वह घंटी बजती और चकरियाँ मंत्रों के उच्चारण के साथ घूम रही थी .....

वह क्रम यूं ही चलता रहा !

अजीब सा माहौल बन चुका था.....

जो रात के नौ दस बजे तक चला होगा उसके बाद वे ध्वनियाँ शांत होने लगी !

चकरियों का घूमना और घंटे का बजना दोनों शांत हो चुके थे !

मेरा मंत्र जाप धीरे-धीरे सौम्य होता चला गया और फिर मानसिक रूप से मंत्र जाप होने लगा ......

वह दिव्य आश्रम

मेरा ध्यान मेरी दोनों आंखों के बीच में आकर चक्र वाले स्थान पर केंद्रित हो रहा था ......

कुछ समय के बाद वहां पर नीले रंग की हल्की-हल्की आभा बिखरने लगी.....

जो धीरे-धीरे एक शिवलिंग के रुप में परिवर्तित हो गया !

नीले रंग का शिवलिंग !

नीलम के जैसे नीले रंग का प्रकाश बिखेरता हुआ शिवलिंग !!

शिवलिंग का प्रकाश धीरे-धीरे बढ़ता गया और एक प्रकाश की सुरंग दिखाई देने लगी ....

जिसमें से होता हुआ मेरा अस्तित्व आगे बढ़ रहा था और मैं उसमे से निकलता हुआ एक विशेष स्थान पर पहुंच गया !

वह किसी आश्रम के जैसा दिखाई दे रहा था !

उस आश्रम में लंबी लंबी दाढ़ी वाले बुजुर्ग तपस्वी बैठे हुए थे !

सभी के चेहरे से तेज टपक रहा था !

उन्हें देखने से ही पता चल रहा था कि काफी समय से तपस्या में लीन है......

मैं उनके बीच में से होता हुआ आगे बढ़ रहा था । वे काफी संख्या में थे जो चारों तरफ दिखाई दे रहे थे ।

सभी अलग-अलग पेड़ों के नीचे बैठे हुए थे । उन पेड़ों के नीचे छोटे-छोटे चबूतरे बने हुए थे जिसके ऊपर वे ऋषि तुल्य तपस्वी बैठे हुए थे ......

वह स्थान हिमालय के आसपास कहीं रहा होगा क्योंकि मुझे वहाँ बर्फ की चोटियाँ दिखाई दे रही थी....

लगभग दस मिनट तक मैं उसी रास्ते पर चलता रहा .....

इसी से आप अंदाज लगा लें कि वहाँ कितने तपस्वी रहे होंगे !

उनमें से कई महिला तपस्वी भी थीं ....

कोई भी अपने स्थान से हिल नहीं रहा था !

किसी की आंखें खुली हुई थी तो किसी की आंखें बंद थी !

लेकिन उनमे किसी प्रकार की कोई हलचल नहीं हो रही थी ....

जब हम ने डुबकी लगाई तो मुझे पानी के अंदर एक सफेद रंग का प्रकाशपिंड दिखाई देने लगा । वह लगभग 10 फीट की दूरी पर रहा होगा । योग माया मुझे उसी पिंड की ओर खींच रही थी । हम दोनों चलते हुए पानी के अंदर ही उस तरफ जा रहे थे । वहां पहुंच कर हम उस पिंड के अंदर प्रवेश कर गए ।

उस प्रकाश पिंड को छूते ही मुझे जोरदार बिजली का झटका लगा और मैं बेहोश हो गया या चेतना शून्य हो गया .... मुझे पता नहीं चला ।

बस मुझे ऐसा एहसास हो रहा था कि योग माया मुझे खींच कर ले जा रही है और मैं उनके साथ घिसटता चला जा रहा हूं......

जब मुझे होश आया तो हम एक अद्भुत आश्रम में खड़े हुए थे ......

यह आश्रम कई मायनों में अद्भुत था....

क्योंकि वहां गिनती के पंद्रह बीस वृक्ष थे और उनकी पत्तियां ऐसी थी जैसी मैंने अपने जीवन में कभी नहीं देखी थीं ....

लगभग एक डेढ़ फुट चौड़ी पत्तियां !

यहां भी उन पेड़ों के नीचे तपस्वी बैठे हुए थे .... लेकिन यहां बैठे हुए सारे तपस्वी बिल्कुल युवा लग रहे थे ..... ऐसा लग रहा था जैसे पच्चीस तीस वर्ष की आयु के बीच के हो....

मजबूत और सुडौल शरीर के स्वामी वे तपस्वी ध्यान मग्न अवस्था में आंखें बंद करके बैठे हुए थे.....

सभी के सिर के पीछे हल्के पीले रंग का आभामंडल बिखरा हुआ था ।

उनके बीच से आगे बढ़े तो वहां पर एक छोटी सी कुटिया बनी थी ....

जिसका दरवाजा बंद था !

योग माया मुझे लेकर उसके सामने पहुंची और वहीं पर बैठकर उस मिट्टी को अपने माथे पर लगाया और साष्टांग दंडवत की मुद्रा में लेट गई !

मैं भी उसी प्रकार से साष्टांग दंडवत प्रणाम की मुद्रा मे लेट गया ....

कुछ समय के बाद जब मैंने योग माया की तरफ देखा तो वे अभी भी उसी प्रकार से दंडवत मुद्रा में लेटी हुई थी ...

इससे मुझे आभास होने लगा कि उस कुटिया के अंदर जो भी था वह उनके लिए बहुत ज्यादा सम्माननीय और महत्वपूर्ण रहा होगा !

अन्यथा योग माया को मैंने सामान्यत: किसी के सामने झुकते हुए भी नहीं देखा था ....

और यहां वे पूरी तरह साष्टांग दंडवत की मुद्रा में लेटी हुई थी !

मैं उठने के विषय में सोच रहा था लेकिन उन्हे दंडवत देख मैं भी उसी मुद्रा मे प्रणाम करता रहा ।

लगभग पाँच मिनट बीते होंगे !

उसके बाद एक गुरु गंभीर वाणी गूंजी - उठो और अंदर आ जाओ !

हम दोनों उठकर खड़े हो गए ....

सामने झोपड़ी का दरवाजा खुला हुआ था !

हम दोनों उस दरवाजे से होते हुए अंदर घुसे !

अंदर एक अत्यंत तेजस्वी पुरुष बैठे हुए थे !

जिनकी आंखें बेहद चमकदार थी .....

उनका आभामंडल अत्यंत विस्तृत था !

उन्हें देखते ही अत्यंत शांति का अनुभव हो रहा था !

उनको देखते ही मुझे ऐसा लगा जैसे मैं उनको पहले से जानता हूं..... जबकि मैं उनसे पहली बार मिल रहा था ।

योगमाया ने उनके चरण स्पर्श किए फिर मैंने उनके चरण स्पर्श किए .... अचानक मेरी रुलाई फूट पड़ी और मैं फफक फफक कर रोने लगा .... मेरे आंसू आंखों से बह कर उनके चरणों को धो रहे थे !

कुछ समय तक मेरी वही स्थिति रही....

उनकी धीर गंभीर वाणी गूंजी - उठो वत्स !

उन शब्दों ने जैसे कोई चमत्कार सा किया और मैं उस आदेश का पालन करते हुए सावधान की मुद्रा में खड़ा हो गया ।

उन्होंने मुझे अपने पास बुलाया और मेरे आज्ञा चक्र वाले स्थान पर अपने अंगूठे का हल्का सा स्पर्श किया ......

उस स्पर्श के साथ ही मैं वापस शून्य की स्थिति में आ गया ....

जब मुझे होश आया तो सुबह हो चुकी थी !

हल्की हल्की धूप रोशनदान से छनकर आ रही थी और मैं अपने आसन पर पड़ा हुआ था ....

वह रहस्यमय प्रक्रिया

तभी योग माया की आवाज सुनाई दी - चलो ! तुम्हारा यह क्रम पूरा हो गया है । अभी आगे के विधान को पूरा करने के लिए कुछ विशेष प्रकार की प्रक्रियायेँ सम्पन्न की जाएगी । इसके लिए तैयार हो जाओ ।

मैं तुरंत उठ खड़ा हुआ और योग माया के साथ चल पड़ा !

वह मुझे लेकर उसी गोम्पा के एक कक्ष मे ले गई ।

उसको देख कर ऐसा लगता था जैसे कोई वर्क शॉप हो !

वहाँ पर कई प्रकार की चीजें थी !

वहां पर एक छोटी सी भट्टी जैसी बनी हुई थी !

कई प्रकार के औजार दीवाल पर लटके हुए थे !

जिसमें कील से लेकर हथौड़ी तक सभी प्रकार की चीजें थी ।

उस कमरे के बीचो बीच एक टेबल लगा हुआ था !

जो लगभग चार फीट चौड़ा और आठ फीट लंबा था !

उस टेबल में बीच-बीच में कई छेद बने हुए थे !

वहाँ एक बुजुर्ग और तेजस्वी लामा खड़े थे !

उन्होंने मुझे उस टेबल के ऊपर औंधा लेट जाने के लिए कहा ।

मुंह नीचे करके जैसे ही मैं उस पर जा कर लेटा उन्होंने कोई आवाज निकाली और तभी बहुत सारे लामा न जाने कहाँ से प्रकट हो गए !

उन्होंने बड़ी तेजी से मुझे रस्सियों से बांध दिया । मुझे इतनी मजबूती से बांधा गया था कि मेरा हाथ पैर ही नहीं बल्कि शरीर का कोई भी हिस्सा हिल नहीं सकता था ......

इसके बाद चालू हुआ एक बेहद अजीब सा प्रक्रम !

सबसे पहले उन्होंने मेरे मूलाधार वाले स्थान पर एक छोटे हथौड़ी जैसी चीज से तीन बार प्रहार किया !

हर प्रहार के साथ मेरी चीख निकल जाती थी !

उसके बाद वह मेरे रीढ़ की हड्डी पर एक एक प्रहार करता हुआ ऊपर की तरफ बढ़ने लगा !

वह प्रहार बेहद तीव्र था ....

हर प्रहार के साथ मैं दर्द के मारे कराह उठता था ....

लेकिन मेरे कराहने का या दर्द का उसके ऊपर कोई असर नहीं हो रहा था ....

वह बड़ी सहजता से उसी प्रकार चोट करता हुआ ऊपर की ओर बढ़ रहा था !

जैसा कि आप लोग जानते ही होंगे कि हमारे रीढ़ की हड्डी बेहद लचीली होती है और उसके अंदर गोल गोल हड्डियों का समूह एक सीध में लगा हुआ होता है ....

वे आपस में जुड़ी हुई नहीं होती....

बल्कि किसी व्यवस्था के तहत बीच में लगे हुए स्पंज के परत जैसी किसी चीज के माध्यम से आपस में एक दूसरे को बांधे रखती हैं ।

इनके अगल बगल से बहुत सारी संवेदनशील नाड़ियां और शिराएं गुजरती है ।

अगर आप की रीढ़ की हड्डी में चोट लग जाए तो आप जिंदगी भर के लिए विकलांग हो सकते हैं । कमर का दर्द या स्लिप डिस्क जैसी समस्या रीढ़ की हड्डियों से संबंधित है....

जब यह अलग-अलग गोटियां किसी वजह से अपने स्थान से खिसक जाती है......

या उनके बीच में लगे हुए स्पंज किसी वजह से बाहर की तरफ निकल आते हैं....

तो वह आजू-बाजू से गुजरने वाली नसों को दबाने लगते हैं....

और फिर शुरु होता है असहनीय पीड़ा का एक अंतहीन क्रम जो काफी लंबे समय तक चलता है ......

हो सकता है आपमे से कुछ ने इसे महसूस किया हो या देखा हो ...

खैर ....

वह लामा मेरे रीढ़ की हड्डी की गोटियों पर चोट करता हुआ ऊपर की ओर चला जा रहा था....

उसकी हर चोट के साथ मेरे पूरे शरीर में दर्द की लहर दौड़ जाती थी....

उससे बेपरवाह वह धीरे-धीरे चोट करता हुआ गर्दन तक पहुंच गया !

उसके बाद उसने एक अजीब सी चीज को मेरी गर्दन में फंसा दिया । उससे ऐसा लग रहा था जैसे मेरी गर्दन दोनों तरफ से दब गई हो । उसका निचला हिस्सा मेरे कंधे पर फंसा हुआ था । जिसे उसने किसी औजार से धीरे-धीरे कसना चालू कर दिया । वह मेरे कंधे पर किसी चिमटे की तरह फस गया और वहां फिट हो गया !

अब मुझे ऐसा लग रहा था जैसे मेरी गर्दन और मेरे कंधे के हिस्से से लेकर मेरे रीढ़ की हड्डी तक का वह पूरा हिस्सा उस लोहे से बने हुए अजीब से उपकरण में फंसा हुआ था ।

उसकी चुभन मैं अपने कंधे के साथ-साथ अपने रीड की हड्डी के पास वाले हिस्से में भी महसूस कर रहा था । उसे इस प्रकार से लगाया गया था कि मेरी गर्दन किसी भी प्रकार से इधर उधर नहीं हो सकती ।

इसी प्रकार का लगभग एक फीट के आसपास चौड़ा क्लेम्प उसने मेरे कमर पर फंसा दिया । वह भी इस प्रकार से उस बेंच पर बने हुए छेद के द्वारा कसा हुआ था कि मैं वह हिस्सा भी किसी स्थिति में थोड़ा भी नहीं हिला सकता था ।

मेरे पैर को दोनों तरफ फैलाकर रस्सी से बांध दिया गया ।

इसी बीच में एक और लामा वहां पर प्रकट हो चुका था । जो मेरे सर के बालों को मूँडने लगा ।

इन सारे प्रक्रमों को देख कर मुझे डर लग रहा था !

ठीक वैसे ही जैसे संभवतः ओपेरेशन टेबल पर लेटे हुए मरीज को लगता होगा .....

मुझे समझ में नहीं आ रहा था कि आखिर वे लोग क्या करने जा रहे हैं ....

मैं अपनी तरफ से चीखने चिल्लाने और पूछने की कोशिश कर रहा था ......

लेकिन ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे उनके ऊपर सारी चीजों का कोई असर नहीं हो रहा था !

वे अपने-अपने काम में लगे हुए थे !

कुछ देर में उस लामा ने मेरे सर को मुंड दिया ।

अब मेरे सिर पर बिल्कुल बाल नहीं थे !

यह कुछ कुछ वैसा ही था जैसा ऑपरेशन करने से पहले या चीरा लगाने से पहले किसी भी हिस्से के बाल को साफ किया जाता है ।

इसके बाद एक चमड़े का बना हुआ पट्टे जैसे आकार का अजीब सा उपकरण उन्होंने मेरे सर के ऊपर बांध दिया ।

उसमें से रस्सियाँ लटकी हुई थी ....

जिसे उन्होंने टेबल में बने हुए छेद के अंदर से निकाल कर उसे बुरी तरह से टाइट कर दिया । अब मेरी नाक टेबल की सतह के साथ सटी हुई थी और सिर्फ इतना

मुझे समझ में नहीं आ रहा था कि आखिर वे लोग क्या करने जा रहे हैं ....
मैं अपनी तरफ से चीखने चिल्लाने और पूछने की कोशिश कर रहा था ......
लेकिन ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे उनके ऊपर सारी चीजों का कोई असर नहीं हो रहा था !
वे अपने-अपने काम में लगे हुए थे !

कुछ देर में उस लामा ने मेरे सर को मुंड दिया ।
अब मेरे सिर पर बिल्कुल बाल नहीं थे !
यह कुछ कुछ वैसा ही था जैसा ऑपरेशन करने से पहले या चीरा लगाने से पहले किसी भी हिस्से के बाल को साफ किया जाता है ।
इसके बाद एक चमड़े का बना हुआ पट्टे जैसे आकार का अजीब सा उपकरण उन्होंने मेरे सर के ऊपर बांध दिया ।
उसमें से रस्सियाँ लटकी हुई थी ....
जिसे उन्होंने टेबल में बने हुए छेद के अंदर से निकाल कर उसे बुरी तरह से टाइट कर दिया । अब मेरी नाक टेबल की सतह के साथ सटी हुई थी और सिर्फ इतना

स्थान बाकी बचा था कि मेरी सांस मुश्किल से आ जा सके .....

वह भी इसलिए क्योंकि जहां पर मेरी नाक थी उसके आसपास छेद बने हुए थे और उन्हीं में से एक छेद में मेरी नाक धसी हुई थी ।

अब मेरा पूरा शरीर ऐसी अवस्था में था जहां मैं चाह कर भी अपनी पलकों को छोड़कर किसी और चीज को नहीं हिला सकता था । हाथ पैर सिर सब कुछ बुरी तरह जकडे हुए थे ।

किसी प्रकार का रिस्पांस ना मिलने की वजह से मैंने भी चीखना चिल्लाना छोड़ दिया था....

क्योंकि मुझे पता चल चुका था कि जो होने वाला है वह वह लोग करके ही रहेंगे....

मेरी योग गुरु योग माया मुझे यहां पर ले कर आई थी ...

इसलिए जो भी होने वाला होगा वह संभवत: मेरे साधनात्मक जीवन से जुड़ा हुआ होगा ..... यह सोच कर मैं अपने आप को संयत करने की कोशिश कर रहा था !

लेकिन....

जिस प्रकार की स्थिति में मैं था उससे मेरी धड़कन बार-बार बढ़ जा रही थी और मैं आने वाले समय में होने वाले घटनाक्रम और मेरे सर को इस प्रकार से बांधने के बाद की जाने वाली क्रियाओं के विषय में सोच सोच कर परेशान हो रहा था ।

तभी.....

मुझे अपने सिर पर हल्की सी चुभन के जैसी महसूस होने लगी !

वह लामा जो मेरे सर की तरफ खड़ा था वह किसी सुई जैसी चीज को मेरे सर के ऊपरी हिस्से में चुभा रहा था ....

वह कुछ कुछ वैसा ही था..... जैसे इंजेक्शन लगाते समय नर्स आप की नस को ढूंढने के लिए इधर उधर चुभा कर देखती है .....

ऐसा लग रहा था जैसे वह कोई चीज ढूंढ रहा हो !

तीन चार बार इधर उधर चुभाने के बाद उसे संभवतः वह स्थान मिल गया होगा जहां उसे उस कील जैसी चीज को चुभाना था !

वहाँ रखके उसने उसे हल्का सा दबा दिया । उसके दबाते ही वह कील मेरे सर में धंस गया और मुझे ऐसा लगने लगा जैसे वहां से खून बह रहा हो ......

वह लामा इतने पर ही नहीं रुका !

उसने किसी हथौड़े जैसी चीज से उस कील पर प्रहार करना प्रारंभ कर दिया ।

पहले प्रहार के साथ मुझे ऐसा लगा जैसे वह कील मेरे खोपड़े के अंदर धसने लगी हो !

जिस स्थान पर वह कील धंस रही थी वहां से खून के बहने का आभास मुझे हो रहा था .....

वह खून वहां से बहता हुआ मेरे माथे से बह कर उस बेंच पर टपक रहा था .... जो कि बहता हुआ मेरी आंखों के सामने से जा रहा था .... और कुछ मेरे नाक पर भी आकर लग रहा था ।

कमरे में मुझे और भी लोगों की उपस्थिति का आभास हो रहा था !

लेकिन मैं यह देख पाने में अक्षम था कि कितने लोग वहां पर मौजूद हैं !

उनमें से कई लोग किसी विशेष मंत्र का एक लय में उच्चारण कर रहे थे !

वह कोई तिब्बती मंत्र था , जिसका उच्चारण संस्कृत जैसा नहीं था । वे उस मंत्र का उच्चारण बड़ी तेजी से कर रहे थे ....

इतनी तेजी से कि उनके शब्द पकड़ मे नहीं आ रहे थे कि वह क्या बोल रहे हैं ...

वह मंत्र काफी लंबा था.....

जो लगभग दो तीन लाइन का रहा होगा जिसे पढ़ने में तेजी से पढ़ने के बावजूद दस पंद्रह सेकंड लग जाते थे ... उस मंत्र के समाप्त होते ही वहां खड़ा हुआ लामा मेरे सर की कील पर एक चोट मार देता था .....

लगभग 10-15 चोट इसी प्रकार से लगती रही !

हर चोट के साथ मुझे दर्द का आभास होता था , लेकिन लगातार हो रहे उस दर्द की वजह से मुझे उतनी पीड़ा महसूस नहीं हो रही थी क्योंकि लगातार पीड़ा हो रही थी ....

उस कील के ऊपर लगभग बीस चोटें लग चुकी होंगी, जब मुझे अचानक बिजली का झटका सा लगा ... और

उसके बाद कील पर पड़ने वाली हर मार के साथ मुझे ऐसा लगता था जैसे मेरे शरीर के अंदर कोई बिजली सी दौड़ गई हो ....

तीन चार बार जब ऐसा हुआ तो मैं बेहोश हो गया ....

खून अभी भी मेरे माथे से टपक रहा था ।

मैं कितने दिन बेहोश रहा ....

यह मुझे पता नहीं चला । जब मुझे होश आया तब भी मैं उसी बेंच से बंधा हुआ उसी प्रकार से पड़ा था । मेरे इर्द-गिर्द बंधी हुई सारी रस्सियाँ वैसे ही बंधी हुई थी । उस समय वहां पर एक लामा मौजूद था । जैसे ही मुझे होश आया उसने फिर से कुछ अजीब सी आवाज निकाली । उस आवाज के साथ ही कमरे में और ढेर सारे लोग इकट्ठा हो गए । वह पुनः उसी प्रकार से किसी मंत्र का उच्चारण करने लगे और मंत्रों के उच्चारण के साथ साथ मुझे अपने शरीर के अंदर विद्युत तरंगे दौड़ती हुई सी महसूस हो रही थी ....

ऐसा लग रहा था जैसे उन मंत्रों के उच्चारण से मेरे शरीर के अंदर कुछ घटित हो रहा हो ...

कुछ ऐसा .... जिसका विवरण दे पाना बहुत मुश्किल है !

लगभग चार पाँच मिनट तक उन्होंने मंत्रों का उच्चारण किया होगा ...

उसके बाद एक लामा ने मेरे सिर के ऊपर लगे हुए उस पट्टे जैसे आवरण को खोल दिया । अब मैं सर को थोड़ा सा ऊपर नीचे कर सकता था...... लेकिन मेरी स्थिति ऐसी नहीं थी कि मैं ऐसा कुछ कर पाऊं । कंधे पर एक और क्लेम्प लगा हुआ था । उन्होंने उसको भी खोल दिया ।

बाकी रस्सियाँ अभी भी बंधी हुई थी कंधे के क्लेम्प को खोलते ही मैंने अपने सर को थोड़ा सा ऊपर उठाया ... सर के ऊपरी हिस्से में पीड़ा अभी भी हो रही थी लेकिन मुझे कमरे में मौजूद सारे लोग दिखाई दे रहे थे !

उनमें से अधिकांश लोग काफी बुजुर्ग लग रहे थे !

वे सारे के सारे कम से कम साठ सत्तर साल के तो रहे ही होंगे क्योंकि उनमें से अधिकांश के बाल सफेद थे ।

एक और विचित्र बात यह थी कि उन सभी के गले में बड़े-बड़े मनको वाली मालाएं पड़ी हुई थी ! जिनका रंग सतरंगी था अर्थात एक ही मनके में अलग-अलग प्रकार के रंग दिखाई दे रहे थे ... जो संभवत: प्रकाश की

किरणों के हिसाब से रंग बदलते होंगे । उनका आकार आंवले के बराबर बड़ा था ।

उनका लबादा भी बिल्कुल सुनहरे रंग का था । ऐसा लग रहा था जैसे सोने की तारों से बनाया गया हो । सभी के सिर पर सोने के मुकुट जैसे कुछ लगा हुआ था । इन सब को देखकर ऐसा प्रतीत हो रहा था कि वह अवश्य ही उच्च कोटि के लामा रहे होंगे जो किसी विशेष संप्रदाय या वर्ग के होंगे, क्योंकि बाकी लामाओं की वेशभूषा उनसे अलग थी ।

सिर्फ इस कक्ष में जो लामा मुझे दिखाई दे रहे थे वह इस प्रकार की वेशभूषा में थे ।

उनमें से एक प्रमुख लामा था जो अपने हाथ में एक छड़ी जैसी चीज भी पकड़े हुए था । उस छड़ी के ऊपर जो मूठ थी वह तिब्बती वज्र जैसी थी । उसने उस वज्र को अपने हाथ में पकड़ा हुआ था । थोड़ी देर तक मंत्रोच्चार करने के बाद वे लोग शांत हो गए !

उनके शांत होने के बाद उस प्रमुख लामा ने अपने सहायक लामा को कोई संकेत किया और वह अपने हाथ में एक लेप लेकर मेरी ओर बढ़ा और उस लेप को

मेरे सर के ऊपर जहां उन्होंने कील ठोकी थी वहां लगा दिया !

जैसे ही उस लेप को वहां लगाया गया मुझे ऐसा लगा जैसे मिर्च छिड़क दिया गया हो ।

मैं दर्द से तड़पने लगा ! लेकिन रस्सियों की वजह से वहां से छूटकर निकलने का कोई रास्ता नहीं था । वह जलन लगभग 10 मिनट तक रही और उस जलन की वजह से मेरी चीखें लगातार निकलती रही । जिसका वहां खड़े लोगों के ऊपर कोई खास असर होता हुआ मुझे दिखाई नहीं दे रहा था ।

जब 10 मिनट के बाद मुझे जलन से थोड़ी राहत मिली तब मैं शांत हो गया और उसके बाद उस लामा ने एक और लेप मेरे माथे पर लगाया । यह कुछ अलग किस्म का था जिसके लगने से मुझे थोड़ी राहत सी महसूस होने लगी । मैं शांत होने लगा । उस लेप को उस लामा ने मेरे सर पर और मेरे पीठ के पूरे हिस्से पर जहां चोट की गई थी.... वहां लगा दिया .....

धीरे-धीरे मुझे ऐसा महसूस होने लगा जैसे मैं शांत होता हुआ गहरी निद्रा में जा रहा हूं !

मैं फिर से सो गया या बेहोश हो गया यह मुझे पता नहीं चला !

कितने दिनों तक या कितने घंटे तक उस अवस्था में रहा इसका मुझे आभास नहीं हुआ !
जब मुझे होश आया तो मैं अपने कमरे में मौजूद था ...
उसी गोम्पा वाले कमरे में जहां पर मुझे पहले रखा गया था। मैं चबूतरे नुमा बिस्तर पर लेटा हुआ था और मेरे ऊपर कंबल पड़ा हुआ था। मुझे अपना शरीर किसी फूल की तरह हल्का लग रहा था।
मैंने अपने सर को छू कर देखा तो वहां पर कुछ लगा हुआ था .....
संभवत: वह कोई औषधि रही होगी जिसे मेरे सर के ऊपर लगाकर पट्टी से बांधा गया था .....

उसी प्रकार से मेरे मध्य भाग को भी कपड़े की पट्टियों से पूरी तरह से लपेटा गया था जैसे ममी को लपेटा जाता है ....
हो सकता है कि यह पीठ पर किसी प्रकार की औषधि लगाने के बाद उन्होंने लपेटा होगा।
मैंने प्रयास किया तो मैं उठ कर बैठ गया !

सर मैं हल्का दर्द अभी भी मौजूद था !

लेकिन वह सहने के लायक था !

मैं उठकर बैठने के बाद कमरे में इधर-उधर देख ही रहा था कि तभी.....

योग माया के साथ एक लामा मेरी तरफ आया ....

यह भी उसी प्रकार के सुनहरे लबादे वाला लामा था । उसने सबसे पहले मेरी नाडी को छूकर देखा । उसके चेहरे पर संतोष के भाव उभरे !

जैसे सब ठीक लगा हो ।

उसके बाद उसने मेरे सर की पट्टी हटा कर उसका निरीक्षण किया और उसे वापस बांध दिया .....

उसने योगमाया को कुछ कहा, जिसे सुनकर योग माया के चेहरे पर भी संतुष्टि के भाव आए । उसने मुझे बताया की प्रक्रिया सही ढंग से संपन्न हो गई है ।

योग माया ने भी उसी प्रकार के सुनहरे रंग का लबादा पहना हुआ था, यानी वह भी उन्हीं उच्च कोटि के लामाओं की परंपरा से थी ।

साधकों का संसार भी वास्तव में अद्भुत और विचित्र है ! आप किसी को देखकर उसकी साधनात्मक उच्चता का अंदाज नहीं लगा सकते । जितना उच्च कोटि का

साधक होगा वह उतना ही सरल, सहज और अपने आप को गोपनीय रखने वाला होगा। जो उचित समय आने पर ही अपने आप को किसी के सामने प्रकट करेगा..... वह भी किसी विशेष कार्य के लिए .....

अस्तु ....

अपने निरीक्षण से संतुष्ट हो जाने के बाद उस बुजुर्ग लामा ने मुझसे तारा मंत्र का उच्चारण करने के लिए कहा।

मैंने उसे उच्चारण करके सुनाया तो उसने लगातार उच्चारण करते रहने के लिए कहा !

मैंने अपनी आँखें बंद कर ली....

और मैं बोलता गया....

ॐ तारे तुततारे तूरे सोहा ....

ॐ तारे तुततारे तूरे सोहा ....

ॐ तारे तुततारे तूरे सोहा ....

ॐ तारे तुततारे तूरे सोहा ....

लगभग 5 मिनट तक मैं उसी प्रकार से उच्चारण करता रहा .....

मेरा ध्यान लग गया , उसके बाद अचानक मुझे एक अद्भुत दृश्य दिखाई देने लगा .....

वहाँ एक श्मशान दिखाई दे रहा था !
उसे श्मशान की बजाय महाश्मशान कहना ज्यादा उचित होगा ..... क्योंकि उसका कोई ओर छोर दिखाई नहीं दे रहा था !
वह एक बहुत विस्तृत भू-भाग पर फैला हुआ था जहां चारों तरफ चिता ही चिता दिखाई दे रही थी !
मांस, हड्डी और बालों के जलने की बदबू आ रही थी .....
चिता की लपटें आसमान को छूती हुई प्रतीत हो रही थी ।
मैं उस दृश्य को आश्चर्य के साथ देखता हुआ खड़ा था ।
तभी कुछ अजीब सी आवाजें आने लगी..... जैसे कोई भीड़ चली आ रही हो ......

हल्ला गुल्ला करती हुई ....

आपने प्रदर्शन करने के लिए जाते हुए लोगों को अवश्य देखा होगा जो कई प्रकार की नारेबाजी करते हुए आगे बढ़ते रहते हैं कुछ कुछ वैसा ही प्रतीत हो रहा था .....

मेरे सामने सड़क जैसा लंबा मार्ग था !

जिसके इस किनारे पर मैं खड़ा हुआ था !

दूसरी छोर पर काफी दूर से सामने से धूल का गुबार उड़ता हुआ दिखाई दे रहा था । उसी दिशा से कोई समूह मेरी तरफ आ रहा था ....

थोड़ी देर में चित्र विचित्र प्रकार की आकृति वाले स्त्री पुरुषों का झुंड आता हुआ दिखाई देने लगा .....

वह सैकड़ों की संख्या में थे......

उनकी आकृति और वेशभूषा सब कुछ चित्र विचित्र थी !

उनमे से कुछ की लंबाई एक डेढ़ फुट की थी !

कुछ की लंबाई दस बारह फुट की थी !

कुछ इतने लंबे थे कि उनका ऊपर का हिसा ही नहीं दिखाई दे रहा था !

इसी प्रकार से कुछ दुबले पतले थे ...... इनमें सामान्य दुबले पतले से लेकर झाड़ू के बराबर मोटाई वाले लोग

भी मौजूद थे जो किसी बांस के डंडे की तरह दिखाई देते थे .....

कुछ सामान्य आकृति के थे ....

कुछ इतने मोटे थे जैसे कोई बड़ी सी पानी की टंकी बांधकर घूम रहे हो .....

उनकी संख्या सैकड़ों में दिखाई दे रही थी !

वह सामने से आ रहे थे........

उन्हें देखने से ऐसा लगता था जैसे उन्हें मेरे वहां उपस्थित होने का आभास ही नहीं है जबकि मैं उन सारी चीजों को देख सकता था ।

यह कुछ सीसीटीवी कैमरे जैसे वाला एहसास था ।

आप वहां पर सशरीर उपस्थित तो नहीं है लेकिन वहां घटित हो रही सारी घटनाओं को उसी प्रकार से देख पा रहे हैं जैसे साक्षात वहां पर उपस्थित हो ।

वे आकृतियां बिखरकर उन चिताओं के पास एक-एक दो-दो करके खड़ी हो गई !

चिताओं के ऊपर अलग-अलग किस्म के वायवीय शरीर घूम रहे थे ! उनमें से कुछ बालकों के थे .... कुछ

युवाओं के थे..... कुछ वृद्ध लग रहे थे .... उनमे स्त्री पुरुष दोनों थे ।

मुझे ऐसा लगा जैसे वे सारी आत्माएं थी जो वहाँ जल रहे मृत शरीरों के अंदर से निकलकर वायुमंडल में भटक रही थी .....

जो भीड़ वहां पर आई थी उसमें से निकलकर खड़े हुए लोग इन भटकती हुई आत्मा को उसी प्रकार से पकड़ने की कोशिश कर रहे थे जैसे बच्चे तितलियों को पकड़ने की कोशिश करते हैं ।

कुछ के हाथ में वे लग भी गई थी.....

वे उनके साथ इसी प्रकार खेल रहे थे जैसे बच्चे खेलते हैं ।

कोई उन्हे रस्सी जैसी चीजों से बांधकर गोल गोल घूमा रहा था ....

कोई उसे उठा कर इधर-उधर फेंक रहा था ।

कोई उनको चोट पहुंचा रहा था ....

यह सब करते हुए उनका चीखना चिल्लाना और अट्टहास भी चालू था !

यह कुछ समय तक चलता रहा और फिर अचानक धरती धसकने जैसी आवाज आने लगी !

यह आवाज कुछ कुछ ऐसी थी जैसे कोई बड़ा सा पत्थर भूमि पर गिर गया हो !

उस आवाज के आते ही वे सारी की सारी आकृतियां सावधान की स्थिति में आ गई !

यह कुछ कुछ ऐसा था जैसे किसी बड़े पुलिस अधिकारी के आने पर पुलिस वाले सावधान हो जाते हैं ......

या किसी बड़े सेना के अधिकारी की आने पर सारे सैनिक सावधान की मुद्रा में खड़े हो जाते हैं ।

पूरा माहौल शांत हो चुका था और केवल वह भयानक धमक एक निश्चित अंतराल पर सुनाई दे रही थी ।

थोड़ी देर के बाद एक विशालकाय पैर लगभग सौ मीटर की दूरी पर दिखाई देने लगा !

विशालकाय कहने का तात्पर्य वाकई में विशालकाय !

करीब करीब दस फुट लंबा था उस पैर का वह तलवा ......

इसी से आप उसके आकार के बारे में सोच सकते हैं !

उस पर में बंधे हुए थे मोटे मोटे नाग .....

जो पायल के जैसे दिखाई दे रहे थे !

वे उस विशाल पैर में किसी मोटी रस्सी की तरह लिपटे हुए थे !

वह पैर धीरे-धीरे मेरी और बढ़ रहा था !

मैं स्तब्ध सा वहां पर खड़ा हुआ था .....

कि अब यह कौन है ?

इतना तो मुझे समझ में आ गया था कि यह कोई महाशक्ति है ....

जिसकी वजह से वे सारे बदमाश किस्म के गण शांत होकर खड़े हुए हैं ......

धीरे धीरे वह फिर मेरी तरफ पहुंचता गया और मुझसे मुश्किल से 15 या 20 मीटर की दूरी पर आकर स्थिर हो गया । वे सारे के सारे गण उस चरण के पास जाकर दंडवत मुद्रा में हो गए थे....

चिता की लपटें भी लहरा लहराकर उठ रही थीं । जैसे वे उस दिव्य शक्ति को नमन कर रही हों !

जब मैंने नजरें उठाई तो आकृति का आकार कम से कम साठ सत्तर फिट का रहा होगा !

आकाश के जैसे नीले रंग की वह स्त्री आकृति बेहद डरावनी और भयानक लग रही थी !

पूर्ण निर्वस्त्र अवस्था की आकृति की कमर पर केवल एक व्याघ्र चर्म लिपटा हुआ था !

वह व्याघ्र चर्म भी कोई सामान्य चर्म नहीं लग रहा था.....

क्योंकि उसके अगले हिस्से पर उसकी मुखाकृति भी दिख रही थी जो काफी डरावनी थी ....

उनके हाथों में... कमर में.... हर तरफ सर्प लिपटे हुए थे ....

यहां तक कि सिर पर भी एक सर्प अपना फन काढ़े बैठा हुआ था .....

और उसके ऊपर दिख रहा था अर्ध चन्द्र....

ठीक वैसे ही........

जैसे भगवान शिव के सर के ऊपर दिखता है ....

बीच बीच मे उस महाशक्ति की लाल लाल जीभ बाहर की तरफ आ रही थी !

आंखें भी सुर्ख लाल थी !

जैसे आंखों से खून बह रहा हो !

क्रोध से भरी हुई वे आंखें भय उत्पन्न करने के लिए पर्याप्त थी !

एक हाथ में खप्पर था और एक हाथ में कैंची जैसा शस्त्र उठा हुआ था !

चतुर्मुखी वह देवी अत्यंत उग्र स्वरुप मे थी !

जिसे देखने मात्र से हृदय की धड़कन रुक जाने का आभास हो रहा था !
बस एक क्षण के लिए मैंने उसको देखा होगा !
उसके बाद मेरी आँखें उस तेजस्विता को सहन न कर पाने के कारण झुक गयी थी .....
सिद्ध शक्तियों और महाविद्याओं को देखना या उन्हें अपने सामने उपस्थित करना सामान्यत: असंभव होता है .... क्योंकि उस तेजस्विता को साधक का शरीर सहन नहीं कर सकता ..... और वह तत्काल मृत्यु को भी प्राप्त हो सकता है । इसलिए महाविद्यायें और सिद्ध शक्तियां सौम्य रुप में या माध्यम के द्वारा अपनी उपस्थिति का आभास कराती है ।
इसीलिए तंत्र में भैरवी या माध्यम का बड़ा महत्व होता है, क्योंकि उसी के माध्यम से अनेक शक्तियां साधकों के पास उपस्थित होती है या अपनी उपस्थिति का आभास कराती है ।
इससे साधक को नुकसान नहीं होता और उसके अंदर सिद्धियों और शक्तियों का जागरण होने लगता है .....
यह एक गोपनीय रहस्य है .....

जो वे दिव्य शक्तियाँ अपने चुने हुए साधकों को ही ही अवगत कराती हैं .....

खैर.....

अचानक एक भयानक अट्टहास गूँजा !

वह इतना भयानक था जैसे संपूर्ण ब्रह्मांड उस से गुंजरित हो गया ...

अचानक उस शक्ति ने अपने दाएं पैर को जोर से जमीन पर पटका !

शमशान की जमीन में दरारें पड़ने लगी !

वह कुछ कुछ ऐसा लग रहा था..... जैसे किसी बेसन के लड्डू के ऊपर दबाव पड़ने से उसमे दरार पड जाती है और वह फट जाता है ......

शमशान की वह जमीन भी उसी प्रकार फट चुकी थी ...

जमीन पर लंबी-लंबी दरारें फट चुकी थी ....

जो खाई की शक्ल में दिखाई दे रही थी !

उस खाई में से आग की लपटें बाहर की ओर लपलपाकर निकल रही थी.....

ऐसा लग रहा था जैसे ज्वालामुखी जैसा कुछ उस दरार से फट कर बाहर निकल रहा हो ....

बस उसमें फर्क इतना था कि लावे की जगह आग की लपटें निकल रही थी.....

जो लपटें निकल रही थी .... वे हल्के नीले रंग की थी.... यह कुछ-कुछ ऐसी ही थी जैसे गैस वेल्डिंग करने वाले नोजल से निकलती है..... वैसी ही नीले रंग की लपटें....

जैसे गैस के चूल्हे से निकलती हैं ....

बेहद तीव्र....

उस लपट की ऊंचाई लगभग 10 से 15 फीट रही होगी !

उनकी वजह से वह पूरा क्षेत्र नीला नीला दिखाई देने लगा था !

लपटें धीरे-धीरे बढ़ती जा रही थी और उसके साथ ही उन्होंने एक आकार लेना प्रारंभ कर दिया.......

जो धीरे-धीरे अग्निशिखा से बना हुआ विशाल कमल का फूल सा प्रतीत हो रहा था !

जो अब स्पष्ट होने लगा था ....

विशालकाय कमल....

लगभग पचास साठ फीट के व्यास मे फैला हुआ ....

जब वह कमल पूरा स्पष्ट हो गया ...

तो वह दिव्य शक्ति उस पर विराजमान हो गयी ....

उनके चरण दिख रहे थे क्योंकि मेरी नजरे अभी भी झुकी हुई थीं ....

सहज उत्सुकतावश मैंने नजर ऊपर उठाई....

घोर आश्चर्य.....

वहाँ तो महामाया के स्थान पर उस कमलपुष्प पर विराजमान थे ....

नीलकंठ ....

देवधिदेव ...

देवों के देव महादेव !

शांत .....

समाधिस्थ....

जटा जूट धारी.....

गले पर सर्प लपेटे.....

कटि पर मृगचर्म .....

सिर पर चंद्रमा धारण किए हुए .....

बंद आँखों से किसी रहस्य को खोजने मे लीन !

मैंने तो महाशक्ति को देखा था ...

उनके स्थान पर महादेव.....

मेरा सिर चकरा गया .....

यह देखकर मैंने अपनी आँखों को दुबारा से मसलकर देखा .....

इस बार फिर से दिमाग घूम गया .....

अब वहाँ बैठी थी वही महाशक्ति ....

लेकिन अबकी बार उनकी जीभ अंदर थी !

आंखे भी सहज थीं ...

वह शांत हो चुकी थी !

वे वरद मुद्रा के साथ उस कमल पुष्प के ऊपर बैठी हुई थी !

उनके होठों पर मुस्कान उभरी हुई थी !

उनकी आंखों से वात्सल्य की वर्षा हो रही थी......

ठीक वैसे ही जैसे अपने शिशु को देखकर माता की आँखों से होती है !

यह दृश्य कुछ चार पाँच सेकंड रहा होगा !

उसके बाद फिर से प्रकाश का एक धमाका हुआ और सब कुछ गायब हो गया ...

मन मे विचार आया

"शिव और शक्ति एक ही तो हैं "

शायद वे यही समझाना चाहते थे !

संभवतः महामाया और महादेव के दिव्य स्वरुप को देखने की वजह से ऐसा हो रहा होगा....

मेरे आँखों से आंसू दोपहर तक बहते रहे !

अनवरत....

ऐसा लग रहा था..... जैसे अंदर से कुछ जल का सोता फूट गया हो और आंखों के माध्यम से फूटकर बाहर निकल रहा हो !

उन क्षणों में कुछ ऐसा था जिसे शब्दों में व्यक्त नहीं किया जा सकता !

अद्भुत !

कुछ अनिर्वचनीय !!

जो व्याख्या से परे है !!!

उस आनंद की अनुभूति को मैं कभी नहीं भूल सकता....

समय आगे बढ़ता गया.....

मेरी आँखें बंद थी ....

मेरी जिह्वा महामाया का मंत्र उच्चरित कर रही थी ......

ॐ तारे तुततारे तूरे सोहा ....

ॐ तारे तुततारे तूरे सोहा ....

ॐ तारे तुततारे तूरे सोहा ....

मेरी आँखें खुली तो वही लामा सामने खड़ा हुआ था ...
उसकी आँखों मे संतुष्टि के भाव दिखाई दे रहे थे ....
उसने योगमाया से तिब्बती भाषा मे कुछ कहा और वहाँ से चला गया ....
योग माया ने बताया - तुम्हारी गोम्पा दीक्षा सफलतापूर्वक संपन्न हो गई है और कुंडलिनी को जागृत कर दिया गया है । इसके अगले चरण मे तुम्हें कुंडलिनी मंत्र का 36 घंटे तक लगातार उच्चारण करते रहना है ...
इस मंत्र जाप से तुम्हारे शरीर के अंदर भयंकर उष्मा उठेगी और वह तुम्हारे शरीर को नुकसान पहुंचा सकती है ।
इसलिए तुम्हें यह मंत्र जाप और ऊंचे स्थान पर जहां का तापमान शून्य डिग्री से भी कम है वहां रहकर करना है ।

इसके लिए तुम्हें शाम को यहां से करीब एक किलोमीटर ऊपर बने हुए साधना कक्ष में पहुंचा दिया जाएगा । वहां रहकर तुम्हें 36 घंटे का जाप संपन्न करना है और उसके बाद 15 दिनों तक तुम्हें वही रहना है ।

लामा डिंचुक जो अभी यहाँ थे वही तुम्हें वहाँ छोडकर आएंगे और वापस लेने पंद्रह दिनों के बाद आएंगे ।
इतना कहकर वे कक्ष से बाहर जाने के लिए निकली और जाते-जाते पलट कर बोली - इस पूरे कालखंड में अजीब अजीब सी घटनाएं घट सकती हैं.....
और जो भी घटित होगा उसे घटित होने देना !
उसमें अपना दिमाग लगाने का प्रयास ना करना.....
क्योंकि जो भी होगा वह तुम्हारे साधनात्मक जीवन में आगे काम आएगा....
तुम्हें ज्यादा मजबूत और सक्षम साधक बनने में मदद करेगा ।
इतना कहकर योगमाया बाहर निकल गई....

मैं उनके द्वारा कहे गए शब्दों का मतलब समझने की कोशिश करता हुआ वहां बैठा था और सोच रहा था कि न जाने अभी आगे और क्या-क्या देखना शेष बचा हुआ है ...

शरीर में आग सी लगी हुई थी ऐसा लग रहा था जैसे कोई भट्टी सी मेरे शरीर के अंदर धीरे-धीरे सुलग रही हो ।

लामा डिंचुक और री ली

दोपहर को लामा डिंचुक के साथ मैं उस गोम्पा से बाहर निकला ....

लगभग तीन चार घंटे की कठिन चढ़ाई के बाद मैं लामा के साथ में उस बर्फीली पहाड़ी मे काफी ऊपर बने हुए एक छोटे से गोम्पा में पहुंचा ! उसकी बनावट से ऐसा लग रहा था जैसे वह काफी पुराना हो ....

वहां पर मुश्किल से तीन या चार कमरे रहे होंगे पुराने वाले गोम्पा की तुलना में यह बिल्कुल ही छोटा सा था ....

उस गोम्पा मे तो संभवत: सैकड़ों कमरे थे और यहां मुश्किल से तीन या चार कमरे ही थे । मुझे उस छोटे गोम्पा में अगले कुछ समय तक रहना था और वहां पर अपनी कुंडलीनी मंत्र की साधना को पूरा करना था, जैसा कि योग माया ने मुझे बताया था ।

वहां पहुंचने के बाद लामा डिंचुक ने उस गोम्पा की केयरटेकर से मिलवाया ।

उसका नाम था री ली!

लामा डिंचुक और री ली

दोपहर को लामा डिंचुक के साथ मैं उस गोम्पा से बाहर निकला ....

लगभग तीन चार घंटे की कठिन चढ़ाई के बाद मैं लामा के साथ में उस बर्फीली पहाड़ी मे काफी ऊपर बने हुए एक छोटे से गोम्पा में पहुंचा ! उसकी बनावट से ऐसा लग रहा था जैसे वह काफी पुराना हो ....

वहां पर मुश्किल से तीन या चार कमरे रहे होंगे पुराने वाले गोम्पा की तुलना में यह बिल्कुल ही छोटा सा था ....

उस गोम्पा मे तो संभवत: सैकड़ों कमरे थे और यहां मुश्किल से तीन या चार कमरे ही थे । मुझे उस छोटे गोम्पा में अगले कुछ समय तक रहना था और वहां पर अपनी कुंडलीनी मंत्र की साधना को पूरा करना था, जैसा कि योग माया ने मुझे बताया था ।

वहां पहुंचने के बाद लामा डिंचुक ने उस गोम्पा की केयरटेकर से मिलवाया ।

उसका नाम था री ली!

वह करीब पैंतीस वर्ष की मजबूत शरीर की स्वामिनी महिला थी । उसने चमड़े का एक कोट पहना हुआ था जो उसके पैर के घुटने के नीचे तक था और उसने एक लंबा चमड़े का जूता भी पहना हुआ था ।
वहां का तापमान काफी कम था !
बर्फ गिरती रहती थी !
कमरे के अंदर एक फायर प्लेस यानि आग लगाने वाली जगह बनी हुई थी । जिसके अंदर कुछ लकड़ियाँ पड़ी हुई जल रही थी ।
जब मैं लामा डिंचुक के साथ वहां पहुंचा तो री ली चाय बनाकर लाई जिसे लामा ने मुझे पीने से रोक दिया .... क्यों रोका यह मुझे बाद मे पता चला ।

चाय पीने के बाद लामा डिंचुक ने अपनी जेब से एक कपूर जैसी चीज का ढेला निकालकर सामने रखा । उसके बाद उन्होंने मुझे उस साधना का मंत्र और उसकी विधि को मुझे उच्चारण सहित समझाया और जेब से निकालकर एक चीनी मिट्टी की नीले रंग की प्याली मेरे सामने रख दी ।

उन्होने समझाया - साधना प्रारंभ करने के बाद उसी आसन पर तुम्हें 36 घंटे तक बैठे रहना है, वहां से तुम नहीं उठ सकते हो, कोशिश करना कि उसके पहले खाना-पीना ना करो क्योंकि वैसी स्थिति में तुम्हें दिक्कत हो सकती है । इसके अलावा तुम जब साधना मे बैठो तो इस ढेले को नीली प्याली में अपने सामने रखकर बैठना ...

जब साधना पूर्ण हो जाएगी तो यह अपने आप जल उठेगा ....

तब समझ जाना कि साधना सफल रही ....

जब मैंने उस नीले पदार्थ को छू कर देखा तो वह बेहद ठंडा था !

बर्फ के टुकड़े से भी ज्यादा ठंडा और हल्का हल्का गीलापन भी मौजूद था .....

थोड़ी देर के बाद लामा डिंचुक वहां से प्रस्थान कर गए ...

मंत्र जाप की उष्मा का प्रभाव कहिए या कुंडलिनी जागरण की उष्मा का .... वहां पर भी मुझे ठंड नहीं लग रही थी !

बल्कि थोड़ा बेहतर महसूस हो रहा था !

मैं नंगे बदन था और बर्फ गिर रही थी ....

लेकिन जैसे ही वह बर्फ मेरे शरीर पर टकराती तो कुछ पलों मे वह पिघल कर पानी बन के नीचे की ओर बह जाती थी !

इसी प्रकार से मेरा मंत्र जाप चलता रहा !

जैसे-जैसे मेरा मंत्र जाप आगे बढ़ रहा था .... ऊष्मा भी बढ़ती जा रही थी !

उस दालान पर लगभग तीन इंच मोटी बर्फ की परत जमी रही होगी जो भुरभुरी सी थी। जिसके ऊपर मैं बैठा हुआ था। जहां पर मैं बैठा हुआ था वहां पर धीरे-धीरे बर्फ पिघल रही थी ....

जब मुझे जाप करते हुए लगभग बीस घंटे हो गए, तो वह दालान पूरी तरह से साफ दिखाई देने लगी थी। उसके ऊपर बिछी हुई वह बर्फ की परत पूरी की पूरी पिघल कर पानी हो चुकी थी !

इसी से आप उस समय शरीर मे उठ रही ऊष्मा का
अंदाज लगा सकते हैं ...
गर्मी अभी भी उसी प्रकार से थी लेकिन गिरती हुई बर्फ
की वजह से काफी राहत महसूस हो रही रही !
समय आगे बढ़ता रहा ... अगले दिन की आधी रात हो
चुकी थी, और मैं उसी प्रकार खुले में बैठकर मंत्र जाप
कर रहा था ।
री ली बीच में कई बार आकर मुझे देख कर गयी और
मेरी स्थिति को देखकर उसने कुछ भी नहीं कहा .....
हो सकता है ....
वह इस प्रकार की और घटनाओं की साक्षी रही होगी !
तभी उसे कुछ विचित्र नहीं लगा होगा !!
अन्यथा.....
किसी भी स्त्री के लिए एक अपरिचित नंगे आदमी को
इस प्रकार बैठा हुआ देखना एक विचित्र अनुभव अवश्य
हो सकता है .....
लेकिन उसके चेहरे पर इस प्रकार के कोई भाव नहीं थे ।
ऐसा लग रहा था जैसे वह आकर चेक कर रही हो कि
सब ठीक है ....
खैर.....

वह जाकर अपने कक्ष में सो चुकी थी !

अर्ध रात्री पार हो चुकी थी और मैं उसी प्रकार से बैठा हुआ मंत्र जाप कर रहा था .....

प्रकाश बिन्दु

रात के लगभग ढाई तीन बजे का समय रहा होगा

तभी...

अचानक....

मुझे एक प्रकाश का गोला दिखाई दिया !

जो चने के आकार का रहा होगा !

वह मुझसे लगभग 10 फुट आगे हवा में तैर रहा था !

मैं उसी को देख रहा था....

कुछ पल बाद मैंने देखा कि एक और गोला वहां प्रकट हो गया और आधे घंटे के भीतर मेरे आस-पास वैसे सैकड़ों गोले जो प्रकाशमय थे.... और जुगनू की तरह दिख रहे थे...

वह घूमने लगे !

वह जुगनू तो बिल्कुल नहीं थे..... क्योंकि इतनी ठंड में वहां पर जुगनुओं गुणों का होना लगभग असंभव था।

कीट पतंगे इतनी ठंड बर्दाश्त नहीं कर सकते... जो कि आप लोग भी जानते होंगे।

वे प्रकाश बिंदु मेरे इर्द-गिर्द उसी प्रकार से घूमते रहे ....

उनको देखना भी एक सुखद और आश्चर्यजनक अनुभव था !

कभी वे एक गोल चक्कर जैसे आकार में घूमने लगते और मुझे घेरा बनाकर गोल गोल चक्कर काटते.....

कभी वे अलग-अलग प्रकार की ज्यामितीय आकृतियां बनाने लगते ...

कभी त्रिकोण बन जाते !

अचानक श्री यंत्र जैसी आकृति के बन जाते....

और कभी किसी और यंत्र के जैसी आकृति के बन जाते !

कभी वज्र या त्रिशूल जैसी आकृति में बदल जाते !यह सब कुछ देखता हुआ मैं अपने मंत्र जाप में लगा हुआ था....

एक घंटे तक उनकी यह लीला चलती रही !

उसके बाद प्रकाश बिंदु आकर मेरे शरीर से टकराने लगे....

उनके मेरे शरीर से टकराते ही प्रकाश का एक छोटा सा धमाका सा होता और उसके बाद वे गायब हो जाते ।

लगभग 5 मिनट के अंदर वे सारे के सारे प्रकाश बिंदु मुझ से टकराकर या तो मेरे अंदर समाहित हो गए थे या गायब हो गए थे ......

अब वह मुझे नहीं दिख रहे थे .....

वायवीय शरीर और चक्र

मेरा पूरा शरीर रात के अंधेरे मे सुनहरे प्रकाश मे जगमगा रहा था और मैं उसी प्रकार बैठा हुआ अपने मंत्र जाप में लीन था .....

मेरे शरीर से निकलती हुई वह रोशनी धीरे-धीरे मेरे सामने मेरे जैसे ही एक वायवीय आकार की रचना करने लगी ....

जो मेरे ही आकार प्रकार का था ...

लेकिन पूर्णतः पारदर्शी.....

सफेद रंग से बना हुआ दिखाई दे रहा था ।

अब स्थिति यह थी कि मैं मेरी शरीर की उष्मा से पिघले हुए बर्फ के अंदर से निकले हुए पानी के बीच में बैठा हुआ था ......

उस ठंडी में बैठना मुझे अब भी बहुत अच्छा लग रहा था ....

मंत्र जाप जैसे-जैसे आगे बढ़ रहा था ... मुझे अपना वायव्य शरीर स्पष्ट दिखाई देने लग रहा था ।

उस शरीर के अंदर मुझे कुंडलिनी के चक्र भी दिखाई दे रहे थे......

यह सारी चीजें ऐसी थी जिन के विषय में मुझे ज्यादा जानकारी नहीं थी .....

लेकिन जो मुझे दिख रहा था उसके विषय में मुझे जानकारी हो जा रही थी ....

ऐसा लग रहा था जैसे मैं यह सारी चीजें पहले से ही जानता हूं....

कोई अदृश्य ज्ञानमय सत्ता मेरे मस्तिष्क में चक्रों और उसमें दिख रही शक्तियों के विषय में अवगत कराती जा रही थी .....

मुझे वह सब कुछ ऐसे समझ में आ रहा था जैसे कि कोई मुझे अंदर से यह सारी बातें बता रहा हो ....

संभवत: इसीलिए हमारे शास्त्रों में

अहम् ब्रह्मास्मि

कहा गया होगा....

क्योंकि इस ब्रह्मांड में जो कुछ भी है अर्थात जो ब्रह्म है....

वह हम स्वयं ही है !

जब हमारे अंदर की ब्रह्म सत्ता का जागरण हो जाता है.... तब हम सारी चीजों के विषय में जानने लग जाते हैं।

ऐसी चीजों के बारे में भी हमें सहज ज्ञात हो जाता है जिन के विषय में ना हमने कभी पढ़ा होता है और ना कभी कुछ सीखा होता है....

इसे ही शायद आत्मज्ञान भी कहा गया होगा !

जिसके पीछे हमारे ऋषि गण सतत प्रयासरत हुआ करते हैं .....

भगवान शिव के द्वारा स्वयं ध्यानस्थ होना भी इसी प्रकार से उच्च कोटि के ज्ञान को आत्मसात करने का अभ्यास ही होगा ....

ऐसा मुझे प्रतीत होता है !

अस्तु.....

वह वायवीय शरीर बिल्कुल मेरे ही जैसा था। फर्क सिर्फ इतना था कि वह काफी हद तक पारदर्शी लग रहा था। उसमें भी रीढ की हड्डीओं का आकार दिखाई दे रहा था। जो कि अलग-अलग गुरियों से मिलकर बनी

हुई दिख रही थी और नीचे में पतली होती हुई जा रही थी ।

रीढ़ की हड्डी की शुरुआत की जो हड्डी होती है वह गुदा द्वार के पास स्थित होती है । इसके विषय में आप लोग भी जानते होंगे ....

अगर नहीं जानते हैं तो आप गूगल में सर्च करेंगे तो आपको रीढ की हड्डी की आकृति मिल जाएगी । इसका जो निचला नुकीला हिस्सा होता है छोटे-छोटे हड्डियों से बना हुआ वह गुदा मार्ग और लिंग मार्ग के पास तक पहुंचा हुआ होता है ....

जब हम ध्यान करते हैं तो सबसे पहले ध्यान को यहीं लाया जाता है।

शास्त्रीय व्याख्या के अनुसार यह त्रिकोण रूप में है और कुण्डलिनी शक्ति यहीं पर लपेटा लेकर बैठी हुई रहती है । जिस प्रकार से सर्प कुंडली मार कर बैठा रहता है ।

यह चक्र कमल के आकार का दिखाई दे रहा था जो हल्का पीलापन लिए हुए था और उसमें चार दल निकले हुए दिखाई दे रहे थे । यहां दो शक्तियां मुझे दिखाई दे रही थी जिसमें से एक थे प्रातः स्मरणीय विघ्न राज महागणपति ....

हमारे साधनात्मक साहित्य में वर्णन है कि जहां पर भी कोई देव शक्ति होती है तो उसके साथ में उसकी सहयोगिनी देवी शक्ति भी विराजमान रहती है। इसी प्रकार से जहां पर भी देवी शक्ति विराजमान होती है, वहां उसके सहयोगी के रूप में एक सहयोगी देवता या भैरव भी विराजमान होता है।

मूलाधार चक्र के देवता भगवान श्री गणेश हैं !

जिन्हें किसी भी कार्य के प्रारंभ के पहले स्मरण किया जाता है, पूजन किया जाता है और उन्हें प्रथम पूज्य माना जाता है।

इसी प्रकार से कुंडली के प्रारंभिक चरण में भी वही विराजमान हैं। उनकी कृपा और अनुकूलता के बिना कुंडली का जागरण संभव नहीं है। उनके साथ जो देवी शक्ति विराजमान है.... उसे डाकिनी कहा जाता है।

इसे दूसरे संदर्भ मे देखें तो जिस कार्य को करने के दौरान बुद्धि और विवेक का प्रयोग होता है वहां अनुकूलता प्राप्त होती है। सनातन धर्म मे भगवान विघ्न राज गणेश बुद्धि और ज्ञान के देवता हैं। अर्थात बुद्धि और विवेक का प्रयोग करते हुए कार्य को प्रारम्भ करना है .....

इस विषय मे भगवान शंकर के अवतार जगतगुरु आदि शंकराचार्य का स्पष्ट मत था कि

“ज्ञानविहीन: सर्वमतेन, मुक्ति न भजति जनमशतेन। “

यानी जो ज्ञान से विहीन है अर्थात गणेश तत्व से विहीन है उसे किसी भी मत का आश्रय लेने पर भी और सौ जन्म तक प्रयास करने के बाद भी मुक्ति संभव नहीं है।

कहा भी गया है कि :-

"कलौ चंडी विनायको"

अर्थात - कलियुग मे चंडी और विनायक अर्थात गणेश भगवान की आराधना ज्यादा फलप्रद रहती है ...

भगवान गणेश को सनातन पूजा पद्धति में इस कारण और भी ज्यादा महत्वपूर्ण माना जाता है क्योंकि उनका आगमन जीवन में ज्ञान के प्रकाश को लेकर आता है ....

यहां पर बहुत ज्यादा कथाओं के विषय में सोचने की आवश्यकता नहीं है । आप सिर्फ इतना मान ले कि

जितनी देव शक्तियां है वह शिव का स्वरुप है और
जितनी देवी शक्तियां हैं वह शक्ति का स्वरुप है ।
चाहे वह भगवान गणेश हो चाहे वह देवी दुर्गा हो चाहे
वह महाकाली हो चाहे वह सरस्वती मां चाहे वह विष्णु
भगवान हो सब उसी सत्ता का पुरुष या स्त्री स्वरुप है ।
अस्तु...

उस चक्र के ऊपर भगवान गणेश अपनी शक्ति डाकिनी
के साथ विराजमान थे और मंद मंद मुस्कुरा रहे थे .....

थोड़ी सी व्याख्या ज्यादा हो जा रही है ...
ऐसा मुझे भी लग रहा है लेकिन इस प्रकार की
जानकारी से आप भी संभवतः अवगत होना चाहते होंगे
।
कुंडली के हर चक्र में अलग-अलग शक्तियों की
उपस्थिति मानी जाती है । सारी शक्तियों की व्याख्या
करने लगूंगा तो 10-12 भाग उसी में निकल जाएंगे ....
जो शायद ज्यादा हो जाएगा ....
इसलिए वह फिर कभी ....
कुंडली में स्थित सभी चक्रों का जागरण करना एक लंबी
और कष्ट साध्य प्रक्रिया है ।

जो कि उन लोगों के लिए उपयुक्त है जो समाधि की अवस्था को प्राप्त करना चाहते हैं !

अध्यात्म के चरम को छूना चाहते हैं !!

लेकिन जो सामान्य साधक हैं ..... वे अगर मूलाधार को जागृत करने पर ही ज्यादा ध्यान दें तब भी उनके अंदर बहुत सारी दिव्य शक्तियों का जागरण हो सकता है .....

इसलिए मूलाधार मे जो शक्ति है उसका संक्षिप्त में उल्लेख कर देता हूं । इसी से आप आगे की शक्तियों की उच्चता दिव्यता और महत्ता सब कुछ समझ पाएंगे कि जब प्रारंभिक स्थिति की देवी इतनी विशिष्ट है.... तो आगे के चक्रों में कितनी उच्च्य कोटि की देवियां विराजमान होंगी

डाकिनी शक्ति

तंत्र जगत में डाकिनी एक उग्र स्वरुप की शक्ति के रूप में स्वीकार की जाती है। हम सारी देवियों को शक्ति कहते हैं यानी एनर्जी यानी ऊर्जा। वैज्ञानिक भी मानते हैं कि इस ब्रह्मांड में स्थित सारी चीजें ऊर्जा का ही रूपांतरण है।

डाकिनी नाम की यह शक्ति ऊर्जा का एक अति उग्र रूप है जो हमारे मूलाधार में शांत भाव से बैठी रहती है। जब इसका जागरण प्रारंभ होता है तो हमारे शरीर में अनेक क्षमताएं विकसित हो जाती हैं। यहां से कुंडलिनी शक्ति का स्पंदन प्रारंभ होता है और फिर हम देह से परे जाकर कई प्रकार के कार्यों को संपन्न कर पाते हैं।

इसकी जागृति के हिसाब से मानव मे ऊर्जा होती है ...

आपने कई लोगों को देखा होगा जो दिन भर कुछ न कुछ करते रहते हैं और कुछ लोग जल्दी थक जाते हैं ....

यह मूलाधार की ऊर्जा ही है ....

यह साधना जगत का रहस्य है !

जो गुरु गम्य है !

समय साध्य है !

तंत्र साधनाओं के क्षेत्र में महाकाली अर्थात मूल शक्ति को अनेक स्वरूपों में स्वीकार किया जाता है उसमें से एक स्वरुप डाकिनी का भी है । यह काली की उग्रतम शक्ति है जो मूलाधार मे है |

बौद्ध धर्म के अंतर्गत जो तांत्रिक संप्रदाय हैं । उसमें डाकिनी को विशेष महत्व दिया गया है, इसके विषय में आप चाहे तो गूगल करके जानकारी प्राप्त कर सकते हैं ।

तंत्र जगत में डाकिनी की साधना स्वतंत्र रुप से भी होती है । माना जाता है कि यदि डाकिनी सिद्ध हो जाए अर्थात मूलाधार की सिद्धि हो जाए तो अन्य चक्र अथवा अन्य देवी-देवता, अल्प प्रयासों के माध्यम से या यूं कह लीजिए कि थोड़ी सरलता से सिद्ध हो सकते हैं ....

डाकिनी को श्मशान में स्थित देवी भी माना जाता है जो कि अघोरपंथी तांत्रिकों की प्रसिद्द साधना है | यह कहा

यह साधना जगत का रहस्य है !

जो गुरु गम्य है !

समय साध्य है !

तंत्र साधनाओं के क्षेत्र में महाकाली अर्थात मूल शक्ति को अनेक स्वरूपों में स्वीकार किया जाता है उसमें से एक स्वरूप डाकिनी का भी है । यह काली की उग्रतम शक्ति है जो मूलाधार मे है |

बौद्ध धर्म के अंतर्गत जो तांत्रिक संप्रदाय हैं । उसमें डाकिनी को विशेष महत्व दिया गया है, इसके विषय में आप चाहे तो गूगल करके जानकारी प्राप्त कर सकते हैं ।

तंत्र जगत में डाकिनी की साधना स्वतंत्र रुप से भी होती है । माना जाता है कि यदि डाकिनी सिद्ध हो जाए अर्थात मूलाधार की सिद्धि हो जाए तो अन्य चक्र अथवा अन्य देवी-देवता, अल्प प्रयासों के माध्यम से या यूं कह लीजिए कि थोड़ी सरलता से सिद्ध हो सकते हैं ....

डाकिनी को श्मशान में स्थित देवी भी माना जाता है जो कि अघोरपंथी तांत्रिकों की प्रसिद्द साधना है | यह कहा

जाता है कि डाकिनी की सिद्धि कर लेने वाले साधक के अंदर भूत-भविष्य-वर्त्तमान जानने की क्षमता आ जाती है ।

डाकिनी शक्ति वास्तव में इस प्रकृति के अंदर किसी भी वस्तु या जीव के अंदर विकृति उत्पन्न करने की क्षमता रखती है ।

यह क्षमता किसी को भी नियंत्रित करने या वशीभूत करने की क्षमता प्रदान करती है ।

इसके अलावा यह साधक की रक्षा करती है और मार्गदर्शन भी .....

अस्तु ....

मेरे वायवीय शरीर मे स्थित वह कमल का फूल जो हल्का पीलापन लिए हुआ था अपने स्थान पर बेहद मन्द गति में घूमता हुआ प्रतीत हो रहा था !

बिल्कुल उसी प्रकार से जैसे भगवान गणेश अपने विशाल काय शरीर के कारण मंद गति में चलते हैं ।

मेरे देखते देखते दोनों शक्तियों का संपर्क हुआ और एक विद्युत ऊर्जा सी कौंधी जो ऊपर की तरफ किसी लहर की तरह उठने लगी ...

वह उठते हुए लिंग स्थान के पास स्थित स्वाधिष्ठान चक्र पर पहुंच गयी ...

वहाँ सफेद रंग का कमल था !

जिसमे स्थित ब्रह्मा और शक्ति राकिनी का संपर्क कराते हुए वह ऊर्जा उठकर नाभि चक्र मे बने लाल कमल में पहुंची । वहाँ के अधिष्ठाता विष्णु और शक्ति लाकिनी को ऊर्जित करके हृदय चक्र मे पहुँच गयी ...

वहाँ विराजमान थे .... साक्षात शिव अपनी शक्ति काकिनी के साथ.....

ऊर्जा के वहाँ पहुँचते ही शरीर का रंग सफ़ेद से हल्का नीला और प्रकाशमान होने लगा !

वह ऊर्जा एक तीव्र कौंध के साथ विशुद्ध चक्र और आज्ञा चक्र की शक्तियों को चैतन्य करती हुई सहस्त्रार चक्र तक पहुँच गयी और वह वायवीय शरीर नीले रंग के गहरे प्रकाश से चमचमाने लगा !

ऐसा लग रहा था जैसे नीलम के ऊपर सूरज की रोशनी पड़ गई ....

भयंकर तेज प्रकाश फैल गया और कुछ समय में वह प्रकाश गायब भी हो गया और उसके साथ साथ गायब हो चुका था ...

मेरा वह वायव्य शरीर ।

वह वायव्य शरीर उसी प्याले के ऊपर प्रकट हुआ था .... जिसमें लामा डिंचुक का दिया हुआ वह कपूर जैसे किसी पदार्थ का ढेला रखा हुआ था !

जैसे ही वह वायव्य शरीर गायब हुआ....

वह ढेला जलने लगा !

वह भभक कर जल रहा था .... लेकिन उसकी ऊष्मा उस ठंडक में सुखद लग रही थी ।

उसकी लपटें लगभग दस ग्यारह फुट तक ऊपर उठती रही ....

कुछ पंद्रह बीस सेकंड के अंदर वह लगभग आधा किलो के आसपास का ढेला जलकर हवा में विलीन हो गया....

ठीक वैसे ही.... जैसे कपूर को जलाने के बाद आग लगती है और कपूर पूरा का पूरा गायब हो जाता है !

ना उसकी कोई राख बचती है ना कुछ और ....

प्याली में भी कुछ भी नहीं बचा था !

मैं उसी दिव्य दृशय और अनुभूति के आनंद मे डूबा हुआ बैठा था ...

उस समय सुबह के तीन या चार बजे होंगे....

जब मुझे हल्की ठंड का आभास होना शुरु हो गया !

अब मुझे ठंड लगने लगी थी !

सुबह छह सात बजे तक मेरी हालत बुरी तरह से खराब हो चुकी थी !

ना मैं उठने की स्थिति में था ......

और ना ही मेरे मुंह से आवाज निकल रही थी ...

मुझे ऐसा लगने लगा था कि अब मेरा अंत समय आ चुका है ...

और मैं इस ठंड में अकड़ कर समाप्त हो जाऊंगा .....

जब मेरे मन में यह विचार उठ रहे थे तभी मैंने देखा की री ली मेरे पास आकर खड़ी हो गई ।

ठंड की वजह से मैं अकड़कर हड्डी हो चुका था...

अगर आपने कभी फ्रिज में से बर्फ निकालकर कुछ देर तक हाथ में पकड़ा होगा.....

तो आप इस अहसास को समझ सकते हैं .....

जब आप बर्फ को बहुत देर तक पकड़ते हैं तो आपके हाथ धीरे-धीरे सुन्न होने लगते हैं.....

उसके बाद एक स्थिति ऐसी आती है.....

जब आपको लगता है कि वह हाथ आपके शरीर से नियंत्रण खो चुका है.....

सुबह छह सात बजे तक मेरी हालत बुरी तरह से खराब हो चुकी थी !
ना मैं उठने की स्थिति में था ......
और ना ही मेरे मुंह से आवाज निकल रही थी ...
मुझे ऐसा लगने लगा था कि अब मेरा अंत समय आ चुका है ...
और मैं इस ठंड में अकड़ कर समाप्त हो जाऊंगा .....

जब मेरे मन में यह विचार उठ रहे थे तभी मैंने देखा की री ली मेरे पास आकर खड़ी हो गई ।
ठंड की वजह से मैं अकड़कर हड्डी हो चुका था...

अगर आपने कभी फ्रिज में से बर्फ निकालकर कुछ देर तक हाथ में पकड़ा होगा.....
तो आप इस अहसास को समझ सकते हैं .....

जब आप बर्फ को बहुत देर तक पकड़ते हैं तो आपके हाथ धीरे-धीरे सुन्न होने लगते हैं.....
उसके बाद एक स्थिति ऐसी आती है.....
जब आपको लगता है कि वह हाथ आपके शरीर से नियंत्रण खो चुका है.....

आपके हाथ आपके शरीर का हिस्सा नहीं है !

वह उससे अलग हो चुका है !!

कुछ कुछ ऐसा ही आभास मुझे हो रहा था !!!

मेरा मस्तिष्क तो कह रहा था कि यह पूरा शरीर मेरा है .....

लेकिन शरीर के किसी हिस्से पर अपने नियंत्रण का आभास मुझे नहीं हो रहा था ....

हां !

सोचने की शक्ति मौजूद थी.....

लेकिन वह भी धीरे-धीरे छूट रही है ऐसा महसूस हो रहा था .....

उसने मेरे पास आकर मुझे छुआ तो उसे शायद मेरी हालत का आभास हुआ होगा !

उसने मुझे तीन चार बार आवाज देने की कोशिश की.....

लेकिन मुझे कुछ सुनाई भी नहीं दे रहा था ।

उस पर प्रतिक्रिया करने का तो कोई प्रश्न ही नहीं था ....

मुझे इस हालत में उसने देखा तो उसे हालत की गंभीरता का आभास हुआ ।

और धीरे-धीरे फायरप्लेस की ओर खिसक कर बैठने लगा। उसकी गर्मी से मुझे अपने शरीर में एक नई ऊर्जा का आभास हो रहा था।

अब तक मेरा शरीर पूरी तरह से सूख चुका था ....

मैं उठकर खड़ा हो गया ..... और घूम घूमकर अपने नंगे बदन को आग की गर्मी पहुंचाने लगा। रीली एक चमड़े का कोट लेकर आई और उसने मुझे वह दे दिया। मैंने उसे पहन लिया।

वह संभवत: याक या किसी जानवर की चमड़ी से बना हुआ कोट था। उसे पहनने से गर्मी का आभास हो रहा था ....

जैसा कि आप लोग भी जानते होंगे कि ठंडे इलाकों में जहां बेहद जोरदार ठंड पड़ती है वहां विशेष प्रकार के कोट खासतौर से चमड़े के बने हुए कोटो का इस्तेमाल किया जाता है , जो ठंड को अच्छी तरह से रोक पाते हैं। उनकी वजह से वहां रहने वाले लोग इतनी ठंडी को बर्दाश्त भी कर पाते हैं। सामान्य ऊनी स्वेटर और जैकेट वहां पर काम नहीं आते।

वह चमड़े का बना हुआ जैकेट था !

उसमें से हल्की-हल्की बदबू भी आ रही थी !

जैसे कि चमड़े की बनी हुई वस्तुओं में आती है !

बड़ी गंदी सी बदबू थी ...

लेकिन.... वहां यह सब देखने का समय नहीं था । मैं उस कोट को पहनने के बाद काफी बेहतर स्थिति में आ गया .....और वहां रखी हुई कुर्सी के ऊपर बैठ गया । थोड़ी देर में रीली चाय लेकर आ गई । उस समय वह मुझे साक्षात देवी का अवतार लग रही थी जिसने मेरे प्राणों की रक्षा की । लेकिन जैसा कि लामा डिंचुक ने कहा था मैं उस चाय को पीने में थोड़ा झिझक रहा था । मेरी झिझक को उसने महसूस कर लिया और कहा - लामा ने साधना के पहले कुछ भी खाने पीने से मना किया था । पीने से मल मूत्र त्याग की आवश्यकता होगी और तुम आसन छोड़ोगे तो तुम्हारी साधना भंग हो जाएगी । इसलिए लामा ने तुम्हें कुछ पीने से मना किया था । अब तुम्हारी साधना पूरी हो चुकी है और वह प्रतिबंध हट गया है । मैंने तुरंत प्याले को लपक लिया और हम दोनों ने साथ में बैठकर चाय पी ।

चाय पीने के बाद उसने मुझे बिस्तर पर लेट जाने का इशारा किया ।

मैं जाकर बिस्तर पर लेट गया....

लेकिन वह कोर्ट इतना कड़ा था कि वह मुझे इधर-उधर चुभ रहा था ...

रीली वहां पर खड़ी थी इसलिए मैं उसे उतार भी नहीं सकता था ....

इसलिए मैं उसे पहने पहने ही कंबल के अंदर हो गया ।

रीली ने भी उसी प्रकार का एक कोट पहना हुआ था । प्याली लेकर कमरे से बाहर चली गई तो मैंने तुरंत उस कोट को उतार फेंका और कंबल के अंदर घुस गया । बर्फीली ठंड से निकलने के बाद भेड़ के ऊन से बने हुए उस कंबल के अंदर घुसने का एहसास स्वर्ग मिलने के एहसास से बिल्कुल भी कम नहीं था !

री ली

कुछ देर में मेरी आंखों में नींद झूमने लगी ... क्योंकि पिछले 36 घंटे से मैं कुंडलिनी जागरण वाले मंत्र की साधना में लगा हुआ था ।

वह भी बर्फ के बीच में ....

इसलिए पूरे शरीर के अंदर एक सुस्ती सी छा गई थी ।

कुछ मिनट लगे होंगे और मैं खर्राटे मार कर सोने लग गया ।

फायर प्लेस में लकड़ियों की आग में कमरा गर्म होने लगा और उसके बाद मैं गहरी नींद में जा चुका था ।

नींद की उस अवस्था में मुझे अजीब अजीब से स्वप्न आने लगे !

ऐसे स्वप्न जो मैंने अपने जीवन में कभी नहीं देखे थे ।

ऐसे स्वप्न जिन के विषय में मैंने कल्पना भी नहीं की थी ।

इस प्रकार के चित्र विचित्र सपने मेरे मानस पटल पर उपस्थित होने लगे थे ।

उसमें से कई ऐसे चित्र भी थे जो वासनात्मक थे !

स्त्री पुरुषों को आपस में संयुक्त अवस्था में मैं देख पा रहा था .....

ठीक वैसे ही अवस्था में जैसे खजुराहो में मूर्तियां हैं ....

मेरी समझ में नहीं आ रहा था कि यह क्या है ?

लेकिन वह भी दिख रहा था ....

उसमें दिखाई देने वाले स्त्री और पुरुष दोनों ही काफी आकर्षक देहयष्टि के स्वामी थे ....

ऐसा लग रहा था जैसे वे किसी मंदिर की मूर्तियों से निकलकर मनुष्य शरीर धारण कर सामने आ जा रहे हो ।

इसके अलावा कभी ड्रैगन दिखाई देते थे तो कभी आग की लपटें दिखाई देती थी !

कभी-कभी तो विचित्र प्रकार की लहरें समुद्र में से उठती हुई दिखाई देती थी ....

जो कि कम से कम 50-60 फुट ऊंची लगती थी ।

इसी प्रकार के अनेक सपनों को देखता हुआ मैं काफी देर तक सोता रहा ।

समय आगे बढ़ रहा था और उस छोटे गोम्पा मे मेरा तीसरा दिन था !

चौथे दिन सुबह जब मेरी आंखें खुली तब मुझे काफी राहत महसूस हो रही थी ।

मैं अपने आप को सामान्य महसूस कर पा रहा था ।

शरीर की उष्मा काफी हद तक शांत हो चुकी थी ....

लेकिन.....

शरीर में लगातार उत्तेजना बनी हुई थी ।

मन में अनेक प्रकार के विचार आ रहे थे !

थोड़ी देर में रीली चाय लेकर आई ।

मैंने इसके पहले उसे बहुत गौर से नहीं देखा था । मैंने उसे इस बार काफी गौर से देखा ।

वह लगभग 30-35 वर्ष की आयु की युवती थी । वह मध्यम आकार और मध्यम देहयष्टि की स्वामिनी थी । उसने भी चमड़े का कोट पहना हुआ था । ठीक वैसे ही जैसे मैंने कल रात को पहना था।

उसे देख कर मन में विचारों का प्रवाह होने लगा । जिसे मैंने किसी प्रकार शांत किया और चाय पीने लगा ।

तिब्बत जैसे स्थानों पर भोजन का काफी अभाव होता है । वहां पर न्यून मात्रा में ही भोजन किया जाता है । जो चाय बनी थी उसमें मक्खन जैसा कोई चीज मिला हुआ था जो काफी गरम तासीर का होता है । उससे वहां की ठंडक में काफी राहत मिलती है । चाय पीने के बाद शरीर मे गर्मी महसूस होने लगी रीली कप लेकर चली

गयी थी .... मैं चमड़े का कोट पहनकर थोड़ी दूर तक
घूम आया ...
आसपास बर्फ बिखरी हुई थी ...
वहां देखने लायक कुछ खास नहीं था !
कुछ पेड़ थे !
उन पर भी बर्फ लगी हुई थी !
सूरज की स्थिति जैसे जैसे ऊपर की ओर जा रही थी
बर्फ हल्की-हल्की पिघल कर गिर रही थी ।
काफी अच्छा लग रहा था !
कुछ देर घूमने के बाद मैं वापस अपने कमरे में आ गया
और फिर से कंबल के अंदर घुस कर सो गया ।
ठंड भी थी और कंबल की गर्मी भी थी !
इसलिए फिर नींद आ गई ....
और मैं सो गया ।
जब कमरे में कुछ हलचल हुई......
तो मेरी नींद खुली !
उस समय तक बाहर अंधेरा दिखने लगा था !
संभवत: शाम हो चुकी थी !
कमरे में रीली लकड़ी लेकर आई थी और उसने फायर
प्लेस में लकड़ियां डाल दी ।

तभी उसने कुछ अजीब सा किया ....

उसने अपने कोट को उतार दिया और पास रखी हुई कुर्सी में डाल दिया ...

वह अंदर से पूरी तरह से निर्वस्त्र थी !

उसकी इस हरकत को देखकर मैं पहले तो दंग रह गया और उसके बाद मेरे शरीर में भी उत्तेजना फैलने लगी !

'शारीरिक इच्छाएं पुरुष और स्त्री दोनों में विद्यमान होती है ....

अवसर और एकांत यह दोनों ऐसी चीजें हैं जो उपलब्ध हो जाए तो स्त्री हो या पुरुष आमतौर पर इसका लाभ उठाने से नहीं चूकते हैं !

वहां एकांत भी था !

अवसर भी था !

और किसी के आने की संभावना भी नहीं थी!!

मैं युवावस्था में था !

और वह भी युवावस्था में थी !

संभवत: काफी समय से एकांत में रह रही थी उस वजह से या फिर संभवत: दो-तीन दिन से मुझे उस अवस्था में देखने की वजह से ...

या साथ में रहने की वजह से....

जो भी हो ....

वह उसी अवस्था में चलती हुई मेरे कंबल के अंदर आ गई ।

इस अवस्था में वही हुआ जो सामान्य तौर पर स्त्री पुरुष के एकांत में मिलने पर होता है !

वह रात उसी प्रकार से गुजरी !

पहले तो मुझे थोड़ी सी झिझक महसूस हुई ...

लेकिन शारीरिक आवश्यकता और मानसिक आकांक्षा कभी-कभी व्यक्ति को मजबूर कर देती है .....

जब क्रिया संपन्न हो गई, तब मुझे थोड़ी सी ग्लानि हुई ....

लेकिन फिर मुझे वे शब्द याद आ गए कि..... जो भी होगा वह होने देना ।

तो मैं थोड़ा सा निश्चिंत हो गया ।

रात भर हम दोनों उसी प्रकार से एक ही कमरे में एक ही कंबल के अंदर मौजूद रहे ।

स्त्री और पुरुष के बीच में जब शारीरिक समीपता आ जाती है तो उनके बीच आत्मीयता बढ़ जाती है । एक दूसरे के साथ रहने की इच्छा भी बढ़ जाती है....

तो वैसा ही चलता रहा !

लगभग एक हफ्ते तक हम उन्मुक्त भाव से एक दूसरे के साथ लगे रहे ।

लगभग एक हफ्ते तक हम उन्मुक्त भाव से एक दूसरे के साथ लगे रहे ।

वज्रोली और उसका प्रभाव

जब लगभग एक हफ्ते का समय बीत गया तो मुझे अचानक वज्रोली क्रिया की याद आई....

जैसा कि मैंने आपको इसके पहले ही बताया था .... वज्रोली योग की एक अत्यंत उच्च्च स्तर की क्रिया है ..... जिसमें स्खलित बिंदु को वापस शरीर में खींच लेने का अभ्यास किया जाता है ।

जिसका अभ्यास मुझे योग माया ने करवाया था । इस प्रकार से बिंदु के वापस खींच लेने से शरीर के अंदर अनंत शक्तियों का जागरण हो जाता है और विचित्र प्रकार के अनुभव प्राप्त होते हैं । योग माया के द्वारा दिए गए प्रशिक्षण के दौरान मैंने दूध और शहद जैसे विभिन्न द्रव पदार्थों को वापस खींचने का अभ्यास अवश्य किया था .... लेकिन किसी स्त्री के साथ उसका व्यवहारिक ज्ञान प्राप्त नहीं किया था । यह विचार मन में आते ही मुझे लगा कि री ली के साथ सारी क्रियाएं तो हो रही है.....

तो क्यों ना उसके साथ एक बार वज्रोली का भी अभ्यास करके देखा जाए.....

मुझे लगा कि री ली के साथ सारी क्रियाएं तो हो रही है.....

तो क्यों ना उसके साथ एक बार वज्रोली का भी अभ्यास करके देखा जाए.....

यह विचार मन में आते ही मैंने सहवास के बाद निकले हुए बिंदु को वज्रोली क्रिया के माध्यम से खींचना प्रारंभ कर दिया.... लगभग पाँच मिनट के प्रयास के बाद उसमें मैं सफल भी हो गया !

जैसे जैसे वह बिंदु मेरे शरीर में अंदर प्रवेश कर रहा था .....

मुझे एक अजीब सी ऊष्मा का आभास अपने शरीर में हो रहा था ....

कुंडलिनी में स्पंदन प्रारंभ हो गया था !

पूरा शरीर किसी अजीब सी उर्जा से ओतप्रोत होने लगा !

पूरे शरीर में एक अलग ही ताकत का आभास होने लगा । मेरे विवाहित तथा अनुभवी पाठक जानते ही हैं कि आमतौर पर जब स्त्री पुरुष सहवास पूर्ण होता है तो शरीर में थकावट का आभास होता है.....

लेकिन....

वज्रोली के बाद मुझे अपने शरीर में बहुत ही तीव्र ऊर्जा आती हुई महसूस होने लगी ....

मैं ध्यान की अवस्था में चला गया !

लगभग पांच सात मिनट उसी अवस्था में रहा होऊँगा !

उसके बाद मैं सामान्य हुआ !

जब मैंने रीली के चेहरे की तरफ देखा तो वह आंखें बंद करके पड़ी हुई थी ....

मुझे लगा कि संभवतः वह नींद में चली गई होगी और मैं भी पलट कर सो गया !

जब मुझे पहली बार में सफलता मिल गई तो मेरा उत्साह बढ़ गया.....

मैंने उसके बाद संपन्न होने वाले सहवास में भी इसी प्रक्रिया का उपयोग किया करने के विषय में सोचा ।

दूसरी बार जब मैंने इस प्रक्रिया को संपन्न किया तब भी मेरे शरीर में ऊर्जा का प्रवाह बढ़ने लगा था.....

क्रिया पूर्ण हो जाने के बाद मुझे री ली के चेहरे पर उसी प्रकार के कमजोरी के लक्षण दिखाई दे रहे थे ।

इस बार मुझे थोड़ा सा संशय हुआ !

लेकिन....

अपने वज्रोली क्रिया में सफल होने की अनुभूति
कहिए...
या उससे उत्पन्न हुआ उत्साह कहिए....
मैं उस पर ज्यादा ध्यान नहीं दे पाया ।

जब तीसरी बार यह क्रिया संपन्न हुई तो मुझे तो ऊर्जा
का आभास हो रहा था .....
लेकिन मुझे ऐसा लगा कि री ली बेहोश हो गई है !
यह देखकर मेरा माथा चकरा गया !
मैंने उसकी नब्ज पकड़ कर देखी !
वह काफी धीमे-धीमे चल रही थी !!
उसके गालों को थपथपा कर देखा !
लेकिन उसके शरीर में कोई हलचल नहीं हो रही थी !
मैंने उसके सीने में कान लगाकर देखा तो दिल की
धड़कन चल रही थी.....
इससे मुझे थोड़ी सी राहत महसूस हुई !
मैं हड़बड़ा गया !
क्योंकि वह एक ऐसी जगह थी जहां पर किसी प्रकार
की सहायता मिलने की कोई संभावना नहीं थी ....

आसपास में दूर-दूर तक फैली हुई बर्फ के अलावा कुछ भी नहीं था !

जो भी करना था खुद ही करना था !

कुल मिलाकर मैं बुरी तरह से परेशान हो गया ।

वज्रोली का प्रभाव होगा ऐसा विचार भी मेरे मन मे नहीं आया .....

मैंने सोचा कि संभवत: ठंड लग गई होगी !

मैंने फायरप्लेस में बाहर से कुछ लकड़ियां लाकर डाली !

कमरे का तापमान कुछ बढ़ा !

उसके बाद मैं उसके तलवे की मालिश करने लगा ,

लेकिन कोई खास प्रभाव नहीं पड़ा !

अब क्या किया जाये ??

यह एक यक्ष प्रश्न मेरे सामने मुह खोले खड़ा था !

मैंने एक कंबल फायरप्लेस के बगल में बिछा दिया और री ली को उठाकर उस पर लिटा दिया और दूसरा कंबल भी उसे ओढा कर उसकी हथेलियों और तलवों की मालिश करने लगा .....

मेरे पास करने के लिए और कुछ भी नहीं था क्योंकि मुझे समझ में ही नहीं आ रहा था कि असल में हुआ क्या है ?

लगभग आधा एक घंटे के बाद उसकी पलकें हल्के से हिलीं !

जिसे देख कर मुझे स्वर्गीय सुख की अनुभूति हुई ....

थोड़ी देर के बाद उसने अपनी आंखें खोल दी ।

मैंने उससे पूछा - तुम्हें क्या हुआ ?

री ली - मुझे भी समझ में नहीं आया । एकदम से कमजोरी सी लगने लगी ....

ऐसा लग रहा था जैसे शरीर मे प्राण ही नहीं रह गए हों !

हो सकता है ठंड लग गई हो !

इतना कहकर वह मुस्कुराइ और उसने मुझे अपनी तरफ आने का इशारा किया !

फिर हम दोनों एक दूसरे के साथ लिपट गए !

मुझे लगा कि ठंड लगी होगी तो शरीर की गर्मी से उसमें राहत मिलेगी ....

री ली पूरे उत्साह मे थी !

जिसे देखकर मैं भी प्रसन्न था ...

उसके बाद आगे की क्रिया भी संपन्न हो गई ।

मैं लगातार वज्रोली का प्रयोग कर रहा था इसलिए इस बार भी मैंने उस क्रिया का प्रयोग किया .....

बिंदु जैसे ही अंदर की ओर खिंचाया .....

मैं लेटे-लेटे ही अजीब सी अवस्था में चला गया !

मुझे अपने आसपास की चीजों का आभास बिलकुल खतम होने लगा ...

ऐसा लगा जैसे मैं वहाँ हूँ ही नहीं....

लगा जैसे मैं हवा मे उड़ रहा हूँ !

उसके बाद मुझे विचित्र प्रकार के दृश्य दिखाई देने लगे जो कि वास्तव में पारलौकिक दृश्य थे !

मैं उस अवस्था में न जाने कितने समय तक रहा ....

जब वापस सामान्य हुआ, तब मैंने देखा कि फायरप्लेस की आग धीमी हो चुकी थी ।

रीली की आंखें बंद थी !

मैंने सोचा कि वह सो रही होगी !

उसे ठीक से कंबल ओढ़ाकर मैं लकड़िया लेने के लिए चला गया ।

बाहर में री ली ने लकड़ियां काट कर रखी हुई थी । मैं उसे ले आया और फायरप्लेस में डाल दिया ।

आग फिर से जोर पकड़ने लगी और कमरे में गर्मी बढ़ने लगी .....

मैं भी उस गर्मी का आनंद लेते हुए कंबल मे घुस कर सो गया ।

जब मेरी नींद खुली तो संभवतः सुबह के आठ नौ बजे होंगे !

बगल में री ली भी सो रही थी !

यह थोड़ी सी अजीब बात थी ....

क्योंकि वह सुबह होते ही उठकर अपने कामकाज में लग जाती थी ।

मैंने उसे हिला डूला कर देखा !

लेकिन वह बिल्कुल भी नहीं हिल रही थी ।

सभी प्रकार के प्रयास मैंने कर लिए लेकिन वह बेहोश लग रही थी ....

मैं सोच रहा था कि क्या करूं ?

तभी मेरे मन में यह विचार कौंधा .... कि.... कहीं यह मेरे द्वारा की जा रही वज्रोली क्रिया की वजह से तो इस स्थिति में नहीं पहुंच जा रही है ।

इस विचार से मुझे एक झटका सा लगा !

और आत्मग्लानि भी हुई !

कि मैंने री ली की ऊर्जा को खींचकर उसे इस जटिल स्थिति में पहुंचा दिया है ।

यह विचार मन में आते ही मैं थोड़ी देर तक सन्न होकर बैठा रह गया ।

तभी....

मेरे मानस पटल पर योग माया का बिम्ब आया और उसने मुझे संकेत किया - तुम्हारे वापस आने का समय हो चुका है । लामा डिंचुक तुम्हें लेने के लिए वहां आ रहे हैं ।

उस मानसिक संकेत के मिलते ही मैं सचेत हो गया । मैंने री ली की अवस्था के विषय में भी योग माया को जानकारी दी ।

उन्होंने उत्तर दिया - लामा डिंचुक इस समस्या का समाधान भी कर देंगे । इतना कहकर उनका बिम्ब मानस पटल से लुप्त हो गया ।

यह जानकारी होते ही मुझे थोड़ी सी राहत मिली कि लामा वहां आने वाले हैं ....

योगमाया ने लामा द्वारा इस समस्या के समाधान की बात भी कही तो थी लेकिन मुझे थोड़ा अजीब सा भी लगा कि मैं उन्हें क्या कहूंगा ?

उन्होंने तो मुझे यहां साधना करने के लिए भेजा था ।

वह साधना तो मैंने अवश्य पूर्ण कर ली....

लेकिन उसके बाद जो किया.....

वह मुझे करना था या नहीं करना था....

यह तो मुझे नहीं पता ।

उसके बाद यह वज्रोली वाली क्रिया भी मैंने बिना किसी के अनुमति के कर डाली थी । जिसकी वजह से शायद री ली की हालत खराब हो चुकी थी और वह लगभग बेहोश अवस्था में पड़ी हुई थी ...

मेरी सारी होशियारी धरी की धरी रह गई थी और मैं आने वाले समय में लामा डिंचुक के द्वारा पडने वाली डांट के विषय में सोच कर विचलित हो रहा था ....

मैंने सोचा जब तक लामा आते हैं तब तक फिर से री ली को उठाने के लिए प्रयास किया जाए ।

यह बात मेरी समझ में आ गई थी कि हो न हो यह सारी प्रक्रिया मेरे वज्रोली करने की वजह से ही हो रही है !

मेरे मन में विचार आया कि अगर उसे ही विपरीत करने का प्रयास करु तो संभवतः ऊर्जा का प्रवाह वापस हो सकता है !

यह विचार मन में आते ही मैंने पुनः प्रयास प्रारंभ किया और इस बार बिंदु को वापस खींचने के बाद उसे नीचे की ओर धकेल कर री ली के अंदर स्थापित कर दिया !

इस बार वाकई चमत्कार हुआ !

बेहोश पड़ी हुई री ली के शरीर में थरथराहट सी हुई और थोड़ी देर में वह होश मे आ गयी ....

मैंने उसे चाय गरम करके पिलाई और थोड़े समय के बाद वह सामान्य हो गई ।

उससे मैंने चर्चा की तो उसने बताया कि जब क्रिया संपन्न हो जाती है....

तब तो बहुत अच्छा लगता है !

लेकिन....

उसके बाद अचानक से ऐसा प्रतीत होता है जैसे शरीर से पूरी ऊर्जा निकल गई हो ....

उसके बाद शरीर एकदम कमजोर पड़ जाता है ।

यह सुनकर मेरी समझ में आ गया कि उसकी यह हालत सौ प्रतिशत मेरे वज्रोली क्रिया की वजह से ही हुई है ।

उसके स्वस्थ हो जाने से मैं प्रसन्न था !

लगभग एक घंटे के बाद वहां लामा डिंचुक प्रकट हुए ....

तब तक री ली पूरी तरह सामान्य हो चुकी थी !

उसे देखते ही लामा ने मेरी तरफ अर्थपूर्ण निगाहों से देखा ।

मैंने निगाहें झुका दी ।

उन्होंने री ली को अपने सामने जमीन पर बैठने के लिए कहा ।

जब वह नीचे बैठी तो उन्होंने कुछ मंत्रों का उच्चारण करते हुए आसमान की तरफ हाथ उठाएं और कुछ विचित्र प्रकार के आकारों का निर्माण करते हुए दोनों हाथों को री ली के सर के ऊपर रख दिया ।

जैसे ही उनका हाथ री ली के सर पर आया उसका शरीर थरथरा गया । यह कुछ कुछ ऐसा था जैसे अचानक बिजली का झटका लगने से हमारा शरीर थरथरा जाता है ।

लामा ने थोड़ी देर के बाद री ली के सिर से अपना हाथ हटा लिया ।

री ली अब आँखें बंद करके बैठी हुई थी !

लामा डिंचुक ने उठकर उसके चारों तरफ एक चक्कर लगाया और फिर वापस चक्कर लगाया ।

पुनः उसके सामने आकर लामा ने कुछ विचित्र प्रकार की मुद्राओं का प्रदर्शन किया ...

उसके बाद अपने बाएँ हाथ का अंगूठा उसके माथे पर रख दिया । वह पीछे की ओर लुढ़क कर गिर गयी ।

लामा डिंचुक ने बताया कि री ली की पिछले पंद्रह दिनों की याददाश्त को हटा दिया गया है ।

मुझे लगा कि यह कैसे हो सकता है ?

थोड़ी देर के बाद जब री ली को होश आने लगा तो लामा मुझे लेकर बाहर निकल गए ....

दरवाजा बंद करके उन्होने बाहर से उसे खड़काया !

यह सब मेरी समझ मे नहीं आ रहा था ।

तभी री ली ने दरवाजा खोला । अब तक री ली पूरी तरह सामान्य हो चुकी थी ।

वह हमे देखकर मुस्कुराइ और अभिवादन किया ।

उसे देखकर मेरे चेहरे पर सहज मुस्कुराहट आ गयी जैसे परिचित लोगों को देखने पर आती है । लेकिन उसके चेहरे पर अलग ही भाव थे !

वह मुझे अपरिचितों की तरह देख रही थी !

उसने मेरी ओर प्रश्नवाचक निगाहों से देखा जैसे पहली बार देख रही हो !

लामा डिंचुक ने मेरा परिचय कराया !

उसने मेरा अभिवादन किया जैसे अपरिचितों का करते हैं !

उसका यह व्यवहार मेरे लिए आश्चर्यजनक था !

पिछले दस बारह दिनों से हम दोनों सब कुछ कर रहे थे और उसे उसके विषय मे कुछ भी याद नहीं था !

वह वास्तव मे अद्भुत था ....

थोड़ी देर मे उसने हमारे लिए चाय भी बनाई ।

जिसे देकर वह वापस जाने लगी तो लामा उसे देख कर बोले - री ली तुम कमजोर लग रही हो ! कुछ औषधि दूँ क्या ?

री ली ने सहमति मे सिर हिलाया ।

लामा ने अपने कोट की जेब से निकाल कर री ली को एक जड़ी दी और उसे चाय मे मिलाकर पीने को कहा ....

वैसी ही एक जड़ी का टुकड़ा उन्होने मेरी तरफ भी बढ़ाया ....

चाय मे डालते ही वह घुलने लगी ....

रीली और लामा उस जड़ी को चाय मे गोल गोल घूमा रहे थे उसे देखकर मैं भी घुमाने लगा और वह जड़ी तेजी से घुलने लगी .....

जब वह लगभग पूरी घुल गयी तो हम तीनों ने उसे पी लिया ।

उसे पीने की थोड़ी देर बाद स्फूर्ति का अनुभव होने लगा ....

अब री ली भी पहले से बेहतर महसूस कर रही थी । वह हम दोनों को वहीं छोड़कर अपने काम में लग गई ।

लामा ने मुझसे साधना के अनुभव के विषय में पूछा । लगभग आधे घंटे तक मैंने विस्तार से जानकारी दी । जिसके बाद उनके चेहरे पर संतुष्टि के भाव आए ।

उन्होंने उस नीली प्याली का निरीक्षण किया जिसमे वह

कपूर जैसा पदार्थ जला था । उसका निरीक्षण करने के बाद उन्होंने उसे वापस अपनी जेब में डाल लिया । थोड़ी देर और हम आपस में चर्चा करते रहे । उसके बाद हम दोनों री ली से विदा लेकर वापसी की यात्रा पर निकल पड़े .....

वापसी की यात्रा और वज्र का प्रहार

लामा डिंचुक के साथ मैं वापस गोम्पा की ओर जा रहे थे ।

जैसा कि मैंने पहले भी आपको बताया था वह बेहद ठंडा इलाका था ! जहां शून्य से भी कम तापमान था । चारों तरफ बर्फ ही बर्फ की सफेद रंग की चादर बिछी हुई थी । उसी बर्फ में से होते हुए हम लोग आगे बढ़ते जा रहे थे । कहीं-कहीं पेड़ों के ठूंठ नजर आ रहे थे । वहां से लगभग एक डेढ़ किलोमीटर नीचे उतरना था तभी हम पुराने गोम्पा में पहुंच पाते ।

हम दोनों साथ साथ चलते हुए लगभग आधा किलो मीटर आ चुके थे ....

तभी मैंने देखा कि एक सुनहरे रंग का पक्षी उड़ता हुआ आ रहा है ! वह देखने में बाज के जैसा दिखाई दे रहा था ! उसके पंख सुनहरे रंग के थे उसकी आंखें गहरे लाल रंग की थी ! उसके गले में एक नीले रंग का पट्टे जैसा निशान बना हुआ था ।

वह उड़ता हुआ लामा डिंचुक के पास आ गया । ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे वह लामा का पालतू पक्षी है

। वह सामान्य बाज की तुलना में काफी बड़ा था .... लगभग तीन फुट लंबा रहा होगा.... वह आकर लामा के सर के ऊपर चक्कर काटने लगा और आवाज करने लगा ।

लामा ने अपना हाथ सीधा किया और वह उस में आकर बैठ गया और कुछ अजीब सी आवाजें निकालने लगा ...... जिसे लामा बड़े ध्यान से सुन रहा था । मुझे ऐसा लग रहा था जैसे दोनों एक दूसरे की भाषा को समझते हो । उसके जैसी ही भाषा में वह लामा भी कुछ आवाज निकाल रहा था । यह वार्तालाप कुछ पंद्रह सेकंड तक चला होगा और उसके बाद वह पक्षी वापस उड़ गया ।

लामा डिंचुक के चेहरे पर परेशानी के भाव दिखाई दे रहे थे । ऐसा लग रहा था जैसे किसी संकट की पूर्व चेतावनी देने के लिए वह पक्षी आया था । लामा ने मेरी तरफ देखा और जल्दी चलने का इशारा किया । हम दोनों तेजी से नीचे की ओर उतरने लगे । हम लगभग सौ मीटर और नीचे उतरे होंगे तभी एक वज्र सनसनाता हुआ हमारी तरफ आया ....

वह कहां से आया ?
उसे फेंकने वाला कौन था ?
यह कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था .....
लेकिन उसके आने से पहले ही लामा सचेत हो चुका था । संभवत उस पक्षी ने उसे इसकी पूर्व सूचना दे दी होगी या वह अपने दिव्य चक्षु से इस घटना के विषय में जानता होगा ....
क्योंकि मुझे सिर्फ उसकी आवाज सुनाई दी थी लेकिन लामा ने उस वज्र के ऊपर अपनी कमर में बंधी हुई तलवार निकालकर प्रहार भी कर दिया था ।
उस प्रहार से वह वज्र अपनी दिशा बदल कर पास खड़े हुए ठूंठ में जाकर धंस गया था ।
उसके वहां टकराते ही उस ठूंठ में आग लग गई और वह भभक कर जलने लगा । उस वज्र के प्रहार से उतनी ठंडी बर्फीली जगह में बर्फ से ढके हुए उस ठूंठ में आग लग गई थी .... वह अगर हमारे शरीर से टकराती तो उसका क्या हाल होता इसकी आप कल्पना कर सकते हैं ।
मैं भौचक्का खड़ा हुआ था और सोच रहा था कि यह क्या हो रहा है ?

रहती हो ..... तो इस बात की पूरी संभावना है कि आप किसी झगड़े वाली परिस्थिति में तुरंत लाठी लेकर या खाली हाथ भी लड़ने को तैयार हो जाए .....

लेकिन अगर आप किसी फ्लैट या पॉश कॉलोनी में रहे हो .... जहां पड़ोसी पड़ोसी आमतौर पर एक दूसरे से कोई खास वास्ता नहीं रखते .... और दूरी बनाए रखते हैं ! व्यवहार में भी बहुत ज्यादा शांति और सद्भावना रहती है .... तो इस बात की संभावना बहुत कम है कि आप किसी लड़ाई झगड़े वाली परिस्थिति में बीच में कूदे ..... आप कोशिश करेंगे कि वहां से चुपके से निकल जाए !!!

यह परिस्थितिजन्य मानसिक स्थिति है जो अलग अलग स्थानों पर पलने बढ़ने के हिसाब से अलग अलग हो सकती है ।

मैं भी कुछ कुछ वैसी ही शांति और सद्भावना वाली मानसिक अवस्था में था इसलिए तुरंत आक्रामक अवस्था में नहीं आ पाया ।

तभी एक और वज्र ऊपर से आया और लामा डिंचुक से जा टकराया । उसके टकराते ही लामा नीचे गिर पड़ा .... और खड़ी ढलान पर लुढ़कने लगा .....

लामा के नीचे गिरते ही मेरे अंदर से एक ऊर्जा सी उठने लगी और मुझे अपने अंदर वीर भाव के जागने का एहसास होने लगा !

मुझे ऐसा लगने लगा कि मैं वास्तव में एक योद्धा हूं !

जैसे ही मेरे मन में इस प्रकार के भाव जागे ...

तभी अचानक न जाने कहां से एक विचित्र सा गहरे पीले रंग का ड्रैगन वहां दिखाई देने लगा !

उसके मुंह से आग की लपटें मेरी ओर बढ़ीं । मैं उन लपटों से बचने के लिए थोड़ा सा झुका.... लेकिन उस लपट को छोड़ने के बाद वह ड्रैगन गायब हो चुका था ....

और मेरे शरीर पर आ चुका था ....

एक कवच !

जिसके दोनों तरफ वज्र लटक रहे थे और कमर के पास लगी हुई थी ..... एक तलवार !

जो लगभग तीन साढे तीन फुट लंबी रही होगी ।

वह कवच लोहे जैसे किसी पदार्थ का बना हुआ था ।

मैं लुढ़कते हुए लामा को पकड़ने के लिए उसके पीछे पीछे जाने लगा लेकिन लामा काफी तेजी से नीचे की ओर लुढ़क रहा था । उसके पास तक नहीं पहुंच पाया...

करीब पचास मीटर उतरने के बाद अचानक सामने एक और लामा प्रकट हो गया । उसने गहरे काले रंग के वस्त्र पहने हुए थे । उसके शरीर में भी कवच लगा हुआ था और वह आक्रमण की मुद्रा में सामने खड़ा था । उसे देख कर मैं ठिठक गया और जब तक मैं संभलता तब तक उसका दूसरा आक्रमण हो चुका था और मेरे सामने हवा का एक अजीब सा वर्तुल उत्पन्न हो गया .... और उसने मुझे अपने अंदर खींच लिया !

हवा के चक्रवात मैं घूमने लगा और जब वह चक्रवात शांत हुआ तो जिस जगह पर मैं गिरा वह कोई कमरा लग रहा था, जबकि हमारा चक्रवात उस बर्फीली पहाड़ी से प्रारंभ हुआ था जहां पर वह पुराना गोम्पा मौजूद था ।

मैंने गौर से देखा तो वह एक कमरे का फर्श था जो लकड़ी का बना हुआ था । उस कमरे में रोशनदान थे जो लगभग आठ नौ फीट की ऊंचाई पर बने हुए थे । उसके अलावा कमरे में कोई खिड़की नहीं थी.... केवल एक दरवाजा था और वह दरवाजा बंद था ।

वह एक लकड़ी का बना हुआ कमरा था । पहाड़ी इलाकों में इस प्रकार के घर बनाए जाते हैं क्योंकि

पहाड़ी इलाकों में दूसरे प्रकार की भवन सामग्री को ले जाना मुश्किल काम होता है । लकड़ी उनकी तुलना में हल्की होती है और उसका ट्रांसपोर्टेशन आसान होता है । यही नहीं वह आसानी से काफी लंबे समय तक टिक भी जाती है ....

मुझे अपने शरीर मे कमजोरी लग रही थी !
संभवतः इसकी वजह री ली को अंतिम समय में जो मैंने बिंदु का हस्तांतरण किया था वह हो सकता था या फिर संभवत: उस चक्रवात के अंदर से निकलने की वजह से मुझे कमजोरी लग रही थी !
जो भी हो मुझे ऐसा लग रहा था जैसे मेरे शरीर की ताकत कम हो गई है ।
यह एहसास मुझे हो रहा था लेकिन जैसी परिस्थितियां थी उसको देखते हुए मुझे वहां से जल्दी से जल्दी निकलने की कोशिश करनी थी ।
वह काला लबादे वाला लामा अभी तक सामने नहीं आया था, इसलिए यह स्पष्ट नहीं था कि वह कौन है और मुझे वहां लाने का उद्देश्य क्या है ?

यह एक अजीब सी स्थिति थी जिससे होकर मैं गुजर रहा था ....

वह कमरा

वहां उस कमरे के फर्श पर पड़े पड़े मैं अपने साथ पिछले पंद्रह दिनों में घटी हुई घटनाओं के विषय में सोच रहा था ....

और उस काले लबादे वाले लामा के बारे में भी सोच रहा था.....

क्योंकि जिस प्रकार की क्रिया उसने संपन्न की थी ....

उसके बाद उसे मेरे सामने आना चाहिए था या उसके किसी प्रतिनिधि को आकर आगामी क्रिया को संपन्न करना चाहिए था ।

लेकिन कोई भी उपस्थित नहीं हुआ था !

यह अजीब बात थी जिसे मैं समझ नहीं पा रहा था ।

उस कमरे के अंदर मैंने ध्यान लगाने की कोशिश की लेकिन जैसे ही ध्यान लगाने की कोशिश करता था ....

उस कमरे में लगे हुए चक्र घूमने लगते थे और उनमें से कुछ अजीब ही किस्म की ध्वनि निकलती थी ....

जो मेरे ध्यान को खंडित करने के लिए पर्याप्त थी !

यह उन ध्वनियों के जैसे पॉजिटिव नहीं थी जैसी उस गोम्पा के कमरे में लगी हुई घंटियों के अंदर से आती थी

वह कमरा

वहां उस कमरे के फर्श पर पड़े पड़े मैं अपने साथ पिछले पंद्रह दिनों में घटी हुई घटनाओं के विषय में सोच रहा था ....

और उस काले लबादे वाले लामा के बारे में भी सोच रहा था.....

क्योंकि जिस प्रकार की क्रिया उसने संपन्न की थी ....

उसके बाद उसे मेरे सामने आना चाहिए था या उसके किसी प्रतिनिधि को आकर आगामी क्रिया को संपन्न करना चाहिए था ।

लेकिन कोई भी उपस्थित नहीं हुआ था !

यह अजीब बात थी जिसे मैं समझ नहीं पा रहा था ।

उस कमरे के अंदर मैंने ध्यान लगाने की कोशिश की लेकिन जैसे ही ध्यान लगाने की कोशिश करता था ....

उस कमरे में लगे हुए चक्र घूमने लगते थे और उनमें से कुछ अजीब ही किस्म की ध्वनि निकलती थी ....

जो मेरे ध्यान को खंडित करने के लिए पर्याप्त थी !

यह उन ध्वनियों के जैसे पॉजिटिव नहीं थी जैसी उस गोम्पा के कमरे में लगी हुई घंटियों के अंदर से आती थी

। यह कुछ अजीब सी ध्वनि थी जो मस्तिष्क के अंदर कुछ इस प्रकार का विचलन का भाव पैदा कर देती थी जो ध्यान लगाने में बाधा उत्पन्न करता था ।

ध्वनि से हमारा संबंध काफी गहरा है । हम आपस में एक दूसरे से वार्तालाप करने के लिए भाषा का उपयोग करते हैं । जो कि ध्वनि पर आधारित होती है । आपने देखा होगा कि कई स्त्री और पुरुष जब बात करते हैं तो उनके मुंह से निकलने वाली ध्वनि या आवाज की मधुरता आपको प्रभावित करती है और आप उनकी बातों की ओर आकर्षित भी होते हैं । इसके विपरीत कई महिला और पुरुषों की आवाज ऐसी होती है कि उसे सुनते ही आपके दिमाग में खुजली सी मच जाती है । उनकी आवाज ऐसी होती है कि वह अच्छी बात भी कहे तो उसका प्रभाव कम पड़ता है ।

जब आपस में हम बातें करते हैं तो हमारी ध्वनि की सौम्यता और उसे प्रस्तुत करने की शैली दोनों मिलकर यह तय करते हैं कि सामने वाले व्यक्ति के ऊपर उसका सकारात्मक प्रभाव पड़ा है या नकारात्मक प्रभाव पड़ा है ।

इसका सबसे सरल उदाहरण भिखारियों के संदर्भ में देख सकते हैं । जो भिखारी सबसे ज्यादा करुण स्वर में आपसे भीख मांगता है वही सबसे ज्यादा भीख पा जाता है ....

क्योंकि उसके अंदर की पीड़ा..... उसकी वेदना चाहे वह असली हो या बनावटी हो जब वह अपनी कातर ध्वनि में पिरो कर पेश करता है तो वह आपके हृदय को छू जाता है ।

आपके हृदय में उसकी वेदना को आभास करने पर आप भी दुखी हो जाते हैं और उस भाव को दूर करने के लिए आप उसे कुछ न कुछ देने का प्रयास करते हैं ....

और यह कई बार उससे ज्यादा होता है जो आमतौर पर आप किसी भिखारी को देते हैं ।

यही ध्वनि की क्षमता है ।

कुल मिलाकर कहने का तात्पर्य है यह है कि ध्वनियों का अपना एक विचित्र संसार है और हम उन्हीं ध्वनियों के बीच में रहते हैं । मंत्र भी ध्वनि का ही एक स्वरुप है जिसके माध्यम से हम कई प्रकार के कार्यों को कर पाते हैं ।

लेकिन इसमें सबसे महत्वपूर्ण यह है कि आपके मुंह से सही ध्वनि उच्चरित हो और सही ध्वनि का उच्चारण करने के लिए जरूरी है कि आप किसी योग्य और गुणी गुरु के सानिध्य में बैठकर उच्चारण सीखें ।

उदाहरण के लिए ओंकार की ध्वनि .... जिसे हम ॐ के नाम से जानते हैं और उसे ब्रह्मांड से स्वतः उत्पन्न कहा जाता है !

जिसे अनहद नाद भी कहा जाता है ....

इसका उच्चारण भी अलग अलग लोग अलग अलग प्रकार से करते हैं । उच्चारण के अनुसार उसके परिणाम भी अलग-अलग हो सकते हैं ।

खैर ...

उस कमरे में घूम रहे चक्रों से निकलती हुई ध्वनियाँ कुछ इस प्रकार की थी कि जैसे ही में ध्यान में बैठता था मेरे सर में भयानक पीड़ा का आभास होने लगता था ....

ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे दो अलग-अलग विरोधी शक्तियां आपस में संघर्ष कर रही हो !

ठीक वैसे ही जैसे मान लीजिए कि आपका एक हाथ दूसरे हाथ को मरोड़कर विपरीत दिशा में खींचने की

कोशिश कर रहा हो तो आपको उस हाथ में दर्द की अनुभूति होगी ...
कुछ वैसे ही अनुभूति मुझे अपने मस्तिष्क में होती थी ! जैसे ही मैं ध्यान लगाने की कोशिश करता था वह ध्यान टूट जाता था । संभवतः वह किसी प्रकार की नकारात्मक ऊर्जा को उत्पन्न करने वाले ध्वनियाँ थी । जो सकारात्मक ऊर्जा को रोकने के लिए बनाई गई थी ......

उन घूमते चक्रों को अजीब से पेटर्न मे जमाया गया था । आम तौर पर वे एक लाइन मे होते हैं । लेकिन ये चक्र एक गोल वर्तुल के आकार मे लगाए गए थे और उसमे चार भुजाएँ निकली हुई थीं .... जिनमे थोड़े छोटे आकार के चक्र लगे हुए थे ....

उस कमरे में आए हुए मुझे दस बारह घंटे हो चुके थे ! भूख लग रही थी.... जिसे मैं सप्रयास नियंत्रित करने की कोशिश कर रहा था !
शरीर में थकावट का भी आभास हो रहा था !
कमरे में ठंड भी लग रही थी ...

उस चक्रवात में ड्रैगन के सौजन्य से मिला हुआ मेरा कवच और मेरा पहना हुआ कोट..... जो री ली ने मुझे दिया था .... वह दोनों ही गायब हो चुके थे .... शायद उस झंझावात में उड़ गए होंगे ।

जो ऊनी कपड़े मैंने पहने हुए थे वह भी कई जगह से फट चुके थे । उन फटी हुई जगहों से ठंडी हवा शरीर में टकरा रही थी और ठंडक का अहसास करा रही थी ....

संभवत: कमजोरी की वजह से भी ज्यादा ठंड लग रही थी !

उसके बावजूद मैंने काफी प्रयास करके ध्यान लगाने की कोशिश की....

लेकिन ध्यान नहीं लग पाया !

घूमते हुए उन रहस्यमय चक्रों की ध्वनियाँ मुझे विचलित करने के लिए काफी थी और मैं अपने हर प्रयास में असफल हो जा रहा था ।

अचानक कमरे का दरवाजा खुला और वही काले लबादे वाला लामा अंदर आया । उसे देख कर मैं ने उठकर खड़े होने की कोशिश की ....

लेकिन कमजोरी की वजह से वैसा नहीं कर पाया और मैं बड़ी मुश्किल से बैठ पाया ।

वह तेजी से मेरी ओर बढ़ा और उसने मुझे कस कर तीन चार लात मारी और मैं पीछे लुढ़क गया .....

काले लबादे वाला लामा क्रोध भरी नजरों से मुझे देख रहा था जैसे मुझे मार ही डालेगा !

काले लबादे वाला लामा लगभग 40-45 वर्ष का था और 5 फुट के आसपास लंबा रहा होगा । उसका शरीर दुबला पतला लेकिन काफी मजबूत दिखाई दे रहा था ।

उसके साथ में एक बुजुर्ग लामा भी था ।

जो उसे रोकने की कोशिश करता दिखाई दे रहा था ।

उसके साथ में जो बुजुर्ग लामा आया था वह लगभग साढ़े चार फूट लंबा रहा होगा ! वह 70 वर्ष से ज्यादा की उम्र का लग रहा था और उसके सारे बाल सफेद हो चुके थे । उसने भी काले रंग का ही लबादा पहना हुआ था जो यह बताने के लिए पर्याप्त था कि वह भी उसी श्रेणी का साधक है ।

दोनों के काले लबादे में कमर पर रस्सी का तीन चार चक्कर वाला बेल्ट लगा हुआ था और वह सामने की तरफ लगभग एक फुट लटका हुआ था । उसके फुंदने

की जगह पर खोपड़ी जैसी लगभग टेनिस बाल के आकार की सफ़ेद चीज लटक रही थी !

उस काले लबादे वाले लामा का क्रोध शांत नहीं हुआ था ! उसने मुझे आठ दस लात और मारी , वह मुझे प्रतिशोध भरी नजरों से देख रहा था और काफी उत्तेजित अवस्था में था ।

बुजुर्ग लामा ने उसका हाथ पकड़ा हुआ था ....

जैसे उसे रोकने की कोशिश कर रहा हो !

उसकी आंखें क्रोध से लाल थी !

ऐसा लग रहा था कि उसका बस चले तो वह वहीं पर मुझे मार डाले !

काले लबादे वाला युवा लामा मुझे मार डालने की भावना के साथ खड़ा हुआ था उसके विपरीत वह बुजुर्ग लामा कुछ दूसरी तिकड़म में व्यस्त था !

उसने उसे समझाते हुए कहा - नोरबू, सूर्य ग्रहण की रात को तुम जो करना चाहो कर सकते हो, लेकिन अभी अगर तुम उसकी जान ले लोगे तो इसका शरीर किसी काम का नहीं रहेगा !

सिर्फ तुम्हारे बदले की भावना को संतुष्ट करेगा ....

सूर्य ग्रहण की रात को अगर यही कार्य संपन्न करोगे तो इसकी शक्तियाँ भी तुम खींच पाओगे और तुम्हारे अंदर की शक्तियों का विस्तार हो जाएगा जो भविष्य में तुम्हारे काम आएगा !

इसलिए नादान मत बनो और बुद्धिमानी से काम लो।

इतना कहने के बाद वह थोड़ा सा ठिठका और मेरी तरफ उपहास भरी नजरों से देखा..... जैसे कोई कसाई बकरे की ओर देखता है। जैसे यह कहना चाहता हूं कि बस अब तू कुछ दिनों का मेहमान है उसके बाद तेरी शक्तियां तक हम निचोड़ लेंगे।

नोरबू , देवी और सूर्यग्रहण का प्रयोग

उसकी बातों से मुझे यह समझ में आ गया कि आसपास में ही ग्रहण लगने वाला है ....

इन लोगों का जो प्लान है वह शायद मुझे ग्रहण वाले दिन बलि देने का है या किसी अनुष्ठान में इस्तेमाल करने का है ।

जो भी हो मेरे लिए वह स्थिति अवश्य खतरनाक होने वाली थी !

यह सुनकर मुझे थोड़ा सा डर भी लगा और थोड़ी सी सांत्वना भी मिली कि अभी बचने की संभावना मौजूद है, क्योंकि ग्रहण काल के आते तक यह लोग मुझे नुकसान नहीं पहुंचाएंगे ...

तब तक मैं कोई जुगाड़ बैठा सकता हूं !

कुछ और लात मारने के बाद वह बुजुर्ग लामा नोरबू को लेकर जाने में सफल हो गया ।

मुझे यह पता चल गया था कि यह उसी लामा जोहुआ का पुनर्जन्म है जो पिछले जन्म में मेरे साथ हुए युद्ध में मारा गया था । वह अपनी मौत का बदला मुझसे लेना चाहता है । यह आर पार वाली स्थिति थी और

अब मुझे अपने आप को किसी भी तरह से बचाना था, क्योंकि नोरबू के बारे में जान लेने के बाद मुझे यह पता चल चुका था कि फिर से हम उसी मोड़ पर आ पहुंचे हैं जहां पर प्राणघातक संघर्ष हो सकता है और ऐसी परिस्थितियां आ सकती है जहां पर किसी एक की या दोनों की मृत्यु संभव है ।

अब सबसे ज्यादा जरूरी था कि मैं उनके रहस्यमय कमरे से बाहर निकल सकूँ ताकि अपनी शक्तियों का उपयोग कर सकूं । जब तक ध्यान केंद्रित करके मंत्रों का उच्चारण नहीं किया जाए तब तक उनका प्रभाव नहीं आता और मेरे साथ वही हो रहा था ।

यही नहीं ! संभवत: उस कमरे में किसी प्रकार का बंधन भी मौजूद था जो मुझे अपनी शक्तियों का जागरण नहीं करने दे रहा था ....

सबसे पहला काम उस कमरे से बाहर निकलना था । जब बुजुर्ग लामा नोरबू को लेकर बाहर निकल गया तो मुझे लगा कि अब समय आ गया है कि मुझे यहां से बाहर निकलने का प्रयास करना चाहिए । क्योंकि दरवाजा अभी भी खुला हुआ था ....

मैंने अपने जगह से उठने का प्रयास किया लेकिन उससे पहले ही वह बुजुर्ग लामा वापस कमरे में आ गया । इस बार उसके साथ दो और लोग मौजूद थे । उन लोगों ने मुझे उठाया और एक दूसरे कक्ष में ले जाकर निर्वस्त्र करके एक बेंच में बांध दिया । वह बेंच लगभग 6 फुट लंबा था । उसमें उन्होंने मुझे इस प्रकार से बांध दिया कि मैं अपने शरीर का कोई भी हिस्सा नहीं हिला सकता था । सिर्फ मेरा बाया हाथ उन्होंने एक लकड़ी के सहारे लटका दिया था । उसके बाद वह बुजुर्ग लामा एक नीले रंग की प्याली लेकर आया जो बिल्कुल वैसे ही लग रही थी जैसी कि मुझे लामा डिंचुक ने उस कपूर जैसे ढेले जलाने के लिए दी थी जिसके अंदर वह जलकर पूरी तरह गायब हो गया था....
मुझे लगा कि संभवतः वह प्याला वहीं था क्योंकि वह बिल्कुल उसी प्रकार का दिख रहा था ।
जो हाथ लकड़ी के सहारे लटका हुआ था वह भी उन दो सहयोगी लामाओ ने कस कर पकड़ लिया ।
बुजुर्ग लामा ने अपने हाथ से एक सुई जैसा हथियार जो सफेद रंग का था वह निकाला और मेरी कलाई के पास चुभा दिया । वह संभवतः अंदर से पोला था और उसके

अंदर से रक्त की धार छूट निकली जो उसने प्याली में भरना चालू कर दिया। जैसे ही वह प्याली भरी .....
लामा ने उस सूई को बाहर निकाल लिया।
जहां से रक्त निकल रहा था उस जगह को सहयोगी ने एक चमड़ी की पट्टी से बांध दिया।
इस कमरे के अंदर एक विचित्र सी आदमक़द मूर्ति लगी हुई थी।
वह एक देवी की मूर्ति थी !
जो लाल रंग की बनी हुई थी !
देवी निर्वस्त्र स्वरुप में थी और उनके एक हाथ में खप्पर था ....
एक हाथ मे लंबा डंडे जैसा लोहे का बना हुआ कोई अस्त्र था जो भाले के जैसा दिखता था ...
उस भाले के ऊपर जो नोक बनी थी वह ठीक वैसी थी जैसी भगवान कार्तिकेय के दक्षिण भारत में बने हुए विग्रह में दिखाई देती है। कुछ कुछ कमल की कली का जो आकार होता है वैसी ही उसकी नोक बनी हुई थी। उसमें एक गोल रिंग बना था जिसके ऊपर एक वज्र आड़ा लगा हुआ था। वह एक चमचमाता वज्र था जो चाँदी का बना लग रहा था। उस वज्र के ऊपर तीन

नरमुंड फंसे हुए दिखाई दे रहे थे और उन्हें देखकर ऐसा लगता था जैसे भी बिल्कुल ताजा-ताजा लगाए गए हो उसमें से एक नरमुंड एक पुरुष का था !

एक नरमुंड एक स्त्री का था !

और एक नरमुंड एक बच्चे का था......

जिसे देखते ही भय की अनुभूति होती थी। वह संभवतः कोई तांत्रिक डाकिनी मूर्ति थी जिसकी आराधना वे लोग किया करते होंगे।

लामा ने हुंकार भरी और उसके साथ जो लोग आए थे वे लोग कमरे से बाहर हो गए। अब कमरे के अंदर बेंच पर बंधा हुआ मैं लेटा था !

वह भयानक देवी का विग्रह था !

और वह रहस्य बुजुर्ग लामा.......

मेरे शरीर से निकाले हुए उस रक्त को नीले प्याले में लेकर वह लामा उसके सामने बैठ गया और उसकी ओर देखता हुआ अजीब से मंत्रों का उच्चारण करने लगा। लगभग 10-15 मिनट तक उच्चारण होने के बाद वातावरण मे श्मशान जैसी नीरवता आने लगी !

और हवा भारी होने लगी.....

एक अजीब सा सन्नाटा छा गया था !

उस मूर्ति में एक अजीब सा आकर्षण था !

भयानक होते हुए भी मै उस मूर्ति की ओर एकटक देख रहा था !

तभी अचानक ....

उस मूर्ति की पलकें एक बार झपकी !

या शायद मुझे ऐसा लगा कि पलक एक बार झपकी होगी और उसके बाद उस लामा ने मेरे खून से भरे हुए प्याले को उनके मुख से लगा दिया। एक जोरदार चटकारे की आवाज सुनाई दी और उसके बाद ऐसा लगा जैसे कोई कुछ सुड़क सुड़क कर पी रहा हो ....

प्याला खाली हो चुका था !

जिसे उस लामा ने उस मूर्ति के योनि भाग के सामने रख दिया .....

उसका मंत्र जाप चालू था !

कुछ देर मे प्याले मे रक्त की बूंदे टपकने लगीं ....

तभी.....

कमरे में एक स्त्री ने प्रवेश किया !

उसने भी उसी प्रकार के वस्त्र पहने हुए थे जैसे दोनों लामाओं ने पहने थे.....

उस विग्रह के गुप्त भाग से गिरते हुए रक्त से वह प्याला लगभग एक चौथाई भर चुका था जब रक्तस्राव बंद हो गया ।

मूर्ति के सामने खड़ा हुआ लामा पीछे की तरफ पलटा और तभी वह स्त्री उसके सामने जाकर खड़ी हो गई ।

उसके बाद उसने अपना काला लबादा उतार दिया अब वह दिगंबर थी । लामा ने उस रक्त से उसके माथे पर तिलक किया । मेरी ओर इशारा किया और प्याला उसके हाथ मे थमा दिया ।

उसके बाद लामा वहाँ से चला गया !

लामा के जाने के बाद उसने उस रक्त से भरा प्याला अपने हाथ मे लिया और मेरी तरफ बढ्ने लगी .....

मैं बेंच पर बंधा हुआ उसे अपनी ओर आता हुआ देख रहा था ... क्योंकि उसके अलावा मैं कुछ भी करने की स्थिति मे नहीं था ।

वह मेरे पास आई और मेरे पूरे शरीर का एक चक्कर लगाया ....

चक्कर लगाने के बाद वह मुझे देखकर मुस्कुराई ....

और उसने अपने बाएँ हाथ की अनामिका को उस प्याले मे डुबाया और एक ज़ोर की चीख मारी ......

ठीक वैसे ही जैसे उंगली गरम चाय मे लग जाये या तवे पर टच हो जाये तो निकलती है ।

उसके साथ ही वह अजीब तरीके से थरथराने लगी ....

उसके थरथराते ही लामा उसके सामने आकर खड़ा हो चुका था ....

उसने अपनी अनामिका उंगली से मेरे गुप्त भाग को घेरते हुए उसी रक्त से त्रिकोण जैसा कुछ बना दिया ।

संभवतः वह कोई यंत्र रहा होगा और रक्त का तिलक लगा दिया ....

तिलक लगाते ही मेरे पूरे शरीर मे अजीब से उत्तेजना फैलने लगी ।

लामा ने उसके हाथ से वह प्याला ले लिया ...

वह उस बेंच पर चढ़ कर उकड़ू बैठ गयी ....

लामा ने उस प्याले को उसके गुप्त भाग से स्पर्श करा दिया .....

उसके बाद जो हुआ वह आश्चर्यजनक था !

उसने कुछ गोपनीय योगिक क्रियाएँ जो वजरोली से संबन्धित थीं वह की और सांस को अंदर खींचकर संकोचन की स्थिति मे आ गयी और धीरे धीरे वह पूरा का पूरा रक्त प्याली मे से गायब हो गया या उसने अपने अंदर खींच लिया !

वह उसी मुद्रा मे बैठी थी ....

यह अद्भुत था ...

उसके बाद वह लामा मेरी रस्सियों को खोलकर कमरे से बाहर चला गया !

मैं उठने के बारे मे सोच रहा था लेकिन काफी देर से बंधे होने के कारण मेरा शरीर अवश सा हो गया था ....

थोड़ा हिला डुलकर मैं चैतन्य होने की कोशिश करने लगा ।

अचानक उकडू बैठी वह स्त्री मेरे ऊपर लेट गयी और मुझे बाहों मे कस लिया ।

तभी ...

बाहर से नगाड़े जैसे किसी वाद्य की आवाज़ आने लगी ।

जैसे भांगड़े के ढोल बजते ही नृत्य करने की इच्छा होने लगती है ठीक वैसे ही उस नगाड़े की आवाज से भी

ऐसा लग रहा था जैसे अंदर से कोई नृत्य करने के लिए उकसा रहा हो ।

उसके बाद वह कूदकर नीचे उतर गयी और उस मूर्ति के सामने नृत्य करने लगी .....

वह नृत्य अत्यंत उन्मादक मुद्राओं के साथ कर रही थी ...

उसकी मुद्राओं और बजते हुए वाद्य की आवाज से ऐसा लग रहा था जैसे कोई लहर सी उठ रही है जो मुझे अंदर से मथती जा रही है ....

मेरी उत्तेजना बढ़ती जा रही थी !

मेरे पाँव थिरकने को बैचेन हो रहे थे !

मैं उस बेंच पर उठकर बैठ चुका था !

उस स्त्री ने नाचते नाचते मुझे हाथ पकड़ कर खींच लिया और अपने साथ उस मूर्ति के सामने ले गयी वहाँ पहुँचते ही दुबारा मुझे ऐसा लगा जैसे उस मूर्ति की पलकें झपकीं !

एक क्षण को मेरी आंख से उस मूर्ति की आँखें टकराईं !

किसी जीवित व्यक्ति की आँखों जैसी थी वे आँखें !

तेज !

चैतन्यता !

लालिमा !

रहस्य !!
और न जाने क्या क्या बिखरा हुआ था उन नीली आभा वाली आँखों मे !

उस दर्शन मात्र से मेरे अंदर एक नृत्य की लहर सी दौड़ गई और मैं भी उस स्त्री के साथ नृत्य करने लगा !
नृत्य करते-करते लगभग आधा घंटा बीत गया होगा ....
उसके बाद उसने मुझे आलिंगन करते हुए नृत्य करना प्रारंभ कर दिया ।
मेरा अपने शरीर पर से नियंत्रण छूट चुका था । मुझे ऐसा लग रहा था जैसे मैं कहीं और से कंट्रोल हो रहा हूँ !
मेरा पूरा शरीर तैयार हो चुका था ।
तभी रोशनदान पर मुझे कोई आकृति दिखाई दी ... जो लामा डिंचुक के जैसी लग रही थी । वह आकृति एक क्षण के लिए दिखाई दी थी और लामा डिंचुक ने मुझे कुछ इशारा किया ...
मेरी स्थिति ऐसी थी कि मैं उस पर ध्यान देने की स्थिति मे भी नहीं था !

वह उन्मादक नृत्य करते-करते हम शिथिल होकर उसी अवस्था में जमीन पर लेट गए । हम दोनों उत्तेजना और आवेश से कांप रहे थे ।

मेरा शरीर पूरी तरह से तैयार हो चुका था !

उसने मेरे शरीर को आपाद मस्तक स्पर्श करना प्रारंभ कर दिया । इसके साथ मेरे शरीर की ऊष्मा और उत्तेजना दोनों बढ़ती चली गई !

कुछ देर में मुझे ऐसा लगने लगा जैसे मेरा शरीर फट पड़ने को आतुर है ....

तभी उसने एक हूँकारा लगाया और छलांग मार कर मुझ पर आरूढ़ हो गई ।

उसके बाद प्रचंड काम संघर्ष प्रारंभ हो गया । लगभग 10-15 मिनट तक तो सब ठीक लगा लेकिन उसके बाद जब मैं अंतिम बिंदु पर पहुंचा तो उसने संकोचन विकोचन की क्रियाओं के माध्यम से बिंदु को और साथ-साथ में मेरी ऊर्जा को भी खींचना प्रारम्भ कर दिया । जैसे-जैसे उसकी तीव्रता बढ़ती जा रही थी .....

मुझे अपने शरीर में कमजोरी का आभास होता जा रहा था !

ऐसा लग रहा था जैसे मेरे शरीर से कोई ठीक वैसे ही ऊर्जा को छीन रहा हो जैसे किसी बैटरी के अंदर से उसकी ऊर्जा कम होती जाती है तो वह कमजोर होता जाता है ।

धीरे धीरे मेरी आंखें मूंदने लगी !

वह उसी प्रकार मेरे ऊपर आरूढ थी और ऊर्जा को खींच रही थी !

धीरे-धीरे मेरी हालत इतनी खराब हो चुकी थी कि मैं बेहोश हो गया !

उसके बाद क्या हुआ यह मुझे पता नहीं चला ।

संभवतः वह उस क्रिया को पूर्ण कर के वहां से चली गई होगी ।

मैं वहां पड़ा हुआ था या यूं कह लीजिए कि बेहोश था ।

अगले दो दिन मुझ पर काफी भारी थे ।

दो दिन के बाद सूर्य ग्रहण लगने वाला था ।

जिस दिन वे कोई तांत्रिक क्रिया संपन्न करने वाले थे ।

जिसमें मेरा इस्तेमाल होना था । उसी के लिए उन्होंने मुझे जीवित रखा हुआ था । अगले 24 घंटों में तीन बार उसने मेरे साथ उस प्रक्रिया को संपन्न किया । वह मुझे एक विशेष प्रकार का पेय पिलाती थी जिसके बाद मैं

तैयार हो जाता था और वह फिर से उसी प्रक्रिया को सम्पन्न करती थी ।

उस 24 घंटे के बाद मेरी स्थिति ऐसी हो चुकी थी जैसे मैं कई महीनों से बीमार पड़ा हुआ हूं । मैं उसी स्थान पर पड़ा हुआ था । जब मेरी आंखें खुली तो मुझे फिर से लामा डिंचुक की आकृति रोशनदान में नजर आई । रोशनदान इतना छोटा था कि उसमें से होकर वे अंदर नहीं आ सकते थे । उन्होंने वहीं से मेरी तरफ एक वज्र फेंका । लामा डिंचुक के द्वारा फेंका गया वह वज्र मुझ से 2 फुट की दूरी पर आकर गिरा । मेरी स्थिति ऐसी हो चुकी थी कि मैं 2 फुट आगे बढ़ कर उसको उठाने की स्थिति में भी अपने आप को नहीं पा रहा था...

मैंने धीरे-धीरे उसके तरफ घिसटना चालू किया ...

संभवत: उस वज्र के गिरने की आवाज को सुनकर कोई चेक करने के लिए कमरे के अंदर आने वाला था । उसके कदमों की आहट मैं दरवाजे के पास सुन सकता था । मुझे खतरे का आभास हुआ संभावित खतरे की आशंका ने मेरे अंदर एक सेकेंड के लिए शक्ति का संचार किया और मैंने लपक कर उस वज्र को पकड़ा

और अपनी कांख में छुपा दिया और फिर वहीं पर लेट गया ।

अंदर आने वाला वही लामा था जो बुजुर्ग लामा के साथ प्याली पकड़ कर आया था । उसने मेरी ओर देखा ...

मैं लगभग बेहोश अवस्था में पड़ा हुआ था !

मुझे देखकर उसे शायद संतोष हुआ और उसने कमरे में चारों तरफ घूम कर देखा और फिर बाहर चला गया !

उसके जाते ही मैंने राहत की सांस ली !

जैसे ही मैंने उस वज्र को अपने हाथों में पकड़ा मुझे अपने शरीर में फिर से एक हल्की सी ऊर्जा का संचार होता हुआ प्रतीत हुआ ...

थोड़ी देर में मैं चेतन्य होने लगा !

उस कमरे में वह विचित्र प्रकार की ध्वनि निकालने वाली चकरिया मौजूद नहीं थी । संभवतः उन्हे लगा होगा कि उस साधिका के द्वारा उस प्रकार से बिंदु को खींच लेने के बाद मेरे शरीर में कुछ और करने की शक्ति बचने ही नहीं वाली है ।

मैंने चारों तरफ नजर दौड़ाई !

वह नीले रंग का प्याला जिसमें मेरा रक्त निकाला गया था वह उसी मूर्ति के सामने में नीचे रखा हुआ था । वहां

से बच निकलने के लिए यह जरूरी था कि मुझे उस अज्ञात देवी शक्ति की कृपा प्राप्त हो क्योंकि वह वहां की अधिष्ठात्री देवी थी, जिसकी शक्तियों के द्वारा वे अपनी क्रियाओं को संपन्न कर रहे थे ।

उस बुजुर्ग लामा के द्वारा उस मूर्ति को रक्त पान कराया गया था । मुझे लगने लगा कि मैं भी एक बार इस क्रिया को संपन्न करके देखूं तो हो सकता है कि कुछ लाभ मिल सके ......

यह विचार मन में आते ही मैं उठकर लड़खड़ाते हुए उसके पास तक पहुंचा । मूर्ति का आकार लगभग मेरे बराबर ही रहा होगा । मैंने अपने हाथ में बंधी हुई उस पट्टी को खोला ।

यह सोच कर कि उसमें से अब खून की धार निकलेगी और उससे मैं उस प्याली को भर लूंगा , लेकिन मेरा सोचना गलत था क्योंकि हाथ का वह घाव भर चुका था ...... और उसमें से एक बूंद खून भी नहीं निकला ।

मैंने उसे कुरेदने की कोशिश की .....

लेकिन खून चालू नहीं हुआ !

यह देख कर मैं सोच में पड़ गया कि आगे क्या करूं ?

इसका मतलब था कि मुझे दुबारा से अपनी कलाई पर वार करके खून निकालना पड़ेगा । उसके लिए किसी धारदार वस्तु की जरूरत थी । मैंने उसकी तलाश में अपनी नजरें इधर उधर दौडाई । मुझे देवी मूर्ति के पैरों के पास एक छोटा सा चाकू नुमा हथियार दिखाई दिया । मैंने उसे उठा लिया और जिस स्थान पर लामा ने प्रहार किया था उस स्थान को भेदने की कोशिश करने लगा .....

थोड़ी सी मेहनत के बाद उसमें से खून की बूंदे निकलने लगी ....

मैंने प्याला नीचे रख दिया ।

धीरे धीरे रक्त की बूंदें नीचे गिरने लगी और प्याला लगभग आधा भर गया ।

उसके बाद खून का निकलना बंद हो गया !

मैंने दबाने की कोशिश की लेकिन हाथ से और खून नहीं आया ....

काफी देर तक कोशिश करने के बाद जब खून नहीं आया तो मैंने प्रयास करना बंद कर दिया ।

मैंने तारा मंत्र का उच्चारण करना प्रारंभ कर दिया। जैसा कि आप लोग जानते ही होंगे कि सारी शक्तियां उसी महाशक्ति का अलग अलग स्वरूप है। उस महाशक्ति को प्रमुख रूप से 10 महाविद्याओं में बांटा गया है। उसमें से एक महाविद्या है तारा। मैंने उन्हीं के अंश के रूप में उस शक्ति को स्वीकार करते हुए तारा मंत्रों का उच्चारण करना प्रारंभ कर दिया।

उसी प्रकार से मंत्रोचार करते हुए उस प्याले को देवी विग्रह के मुख के पास लगा दिया। मैंने उस बुजुर्ग लामा के द्वारा की जाने वाली प्रक्रिया को देखा था। इसलिए मुझे ऐसा लगा कि अब थोड़ी ही देर में वह प्याला खाली होने लगेगा, लेकिन ऐसा कुछ भी नहीं हुआ।

लगभग पाँच सात मिनट के बाद भी वह प्याला वैसा का वैसा रहा!

मैं निराश हो चुका था!

मुझे लगा कि अब कुछ नहीं होने वाला है!

ऐसा सोच कर मैंने उस प्याले को नीचे रख दिया। अब आगे क्या किया जाए? यह सोचने लगा!

तब तक मैंने देखा कि मेरे हाथ की कलाई में से फिर खून की बूंदे निकलने लगी थी....

उसे रोकना जरूरी था ।

आप भी जानते होंगे कि अपनी ही कलाई पर पट्टी बांधना थोड़ा सा मुश्किल होता है । मैंने किसी प्रकार से कोशिश करते हुए चमड़े की पट्टी को पुनः बांध दिया और रक्त का बहना बंद हो गया ।

थोड़ी देर तक मैं उसी प्रकार विचार करता हुआ बैठा रहा । मैंने सोचा कि एक बार और प्रयास किया जाए ....

एक बार पुनः मैंने मंत्र उच्चारण करते हुए प्याले को देवी मूर्ति के होठों पर लगाया ....

उनकी आंखें अभी सामान्य थी !

इस बार भी कुछ नहीं हुआ तो मैं निराश होने लगा !

प्याला मैं हाथ में पकड़ कर मूर्ति की ओर देखता हुआ खड़ा था ।

काफी देर तक जब कुछ भी घटित नहीं हुआ तो मैं आंखें बंद करके गुरुदेव को याद करने लगा । उनसे मार्ग दिखाने की प्रार्थना की ....

उसके बाद जब मैं ने आंखें खोली और मूर्ति की तरफ देखा तो मुझे एक झटका सा लगा क्योंकि उसकी नीली

आंखें अब हल्के सुनहरे रंग की दिखाई दे रही थी जो काफी मोहक और आकर्षक लग रही थी ....
मैंने वह प्याला पुनः उनके होठों से लगा दिया इस बार सफलता प्राप्त हो गयी। देवी ने उसे ग्रहण कर लिया .... लेकिन आधा ही ग्रहण किया बाकी प्याले मे ही रह गया ....
मुझे लगा कि अब कुछ मार्ग अवश्य निकलेगा !
लेकिन उससे पहले ही दरवाजा खुलने की आवाज आई और चार लामा अंदर आए। उन्होने मुझे उस प्रकार खड़े देखा तो आश्चर्यचकित रह गए। उनमें से एक बाहर की तरफ भागा और थोड़ी देर में वह बुजुर्ग लामा अंदर आता हुआ दिखाई दिया। मैं उसी प्रकार उस प्याले को हाथ में लिए खड़ा था। बुजुर्ग लामा ने आते ही जब मुझे उस प्याले को पकड़े हुए देखा तो उसके माथे पर बल पड़ गए....
उसने अपनी आंखें बंद की... जैसे जानना चाह रहा हो कि क्या घटित हुआ .... और जब उसने आंखें खोली तो उसकी चिंता बढ़ चुकी थी। उसने लामाओ से उस प्याली को छीन लेने के लिए संकेत किया।

वे लामा उस प्याली को छीनने के लिए मेरी ओर बढ़ने लगे। किसी अज्ञात प्रेरणा के वशीभूत होकर मैंने उस प्याले को प्रसाद समझ कर अपने होंठों से लगाया और उसे पी गया ....

मेरे ऐसा करते ही कमरे में सन्नाटा सा छा गया ऐसा लगा जैसे सबको साँप सूंघ गया हो ।

मुझे फिर से रस्सियों से बांध दिया गया ! वे लोग चले गए ।

लेकिन मुझे तो शक्ति का आशीर्वाद मिल चुका था अब मुझे कौन रोक सकता था !

अमावस्या : ताल बेताल सिद्धि

वह अमावस्या का दिन था । उसी रात को विशेष अनुष्ठान सम्पन्न होने वाला था ।

दोपहर के बाद वही स्त्री साधिका उस कमरे मे आई .... मुझे लगा कि वह फिर से वही क्रिया करने आई होगी ....

वह मेरे पास आई और उसने कहा - आज की रात तुम्हारी बलि दी जाएगी । उसके बाद तुम नोरबू के वेताल बन जाओगे । अनंत काल तक उसके सेवक बनकर उसका काम करते रहोगे ।

यह मेरे लिए एक नई जानकारी थी ....

मैंने पूछा - यह वेताल क्या होता है ?

वह बोली - तंत्र की एक विचित्र प्रकार की सिद्धि है ताल बेताल सिद्धि । यह प्रयोग एक प्रकार की वेताल साधना है । वेताल को इतर योनियों अर्थात भूत प्रेत पिशाच आदि की श्रेणियों में सबसे शक्तिशाली और प्रचंड माना जाता है । जब अत्यंत जटिल साधना के द्वारा साधक इसे सिद्ध कर लेता है तो यह साधक के लिए सभी प्रकार के कार्य करने में सक्षम हो सकता है । विक्रम बेताल वाली कथा तो तुम ने सुनी ही होगी .....

उसमें भी इसी प्रकार का एक बेताल महाराजा विक्रमादित्य के पास था जो असंभव लगने वाले कार्य को भी संभव कर सकता था ।

मैंने पूछा - क्या आज भी इस प्रकार की सिद्धि संभव है ? मैं तो उसे केवल एक कथा मानता था ।

वह बोली - सभी प्रकार की शक्तियां इस सृष्टि में मौजूद है केवल उन्हें सिद्ध करने की और प्रकट करने की क्षमता और उतना पुरुषार्थ करने की आवश्यकता है और वे अलग-अलग स्वरुपों में दर्शन भी देती है और सिद्ध भी होती हैं। बल्कि कलयुग में तो साधना में सफलता ज्यादा सहायता से मिल जाती है क्योंकि साधकों की संख्या कम होती जा रही है ...

कालांतर में जब मैं विभिन्न साधनाओं मे आगे बढ़ा तो मुझे कई प्रकार की अनुभूतियां और कई प्रकार की सिद्धियां प्राप्त हुई । जिससे मुझे यह आभास हो गया कि वर्तमान काल में भी अनेक प्रकार की शक्तियों की मौजूदगी इस सृष्टि में है । वह थोड़े ज्यादा प्रयास के साथ सिद्ध की जा सकती हैं और वे कई प्रकार से साधक की सहायता करती है ।

वह साधिका एक बोक्सी थी । नेपाल और सिक्किम के क्षेत्रों मे तांत्रिक साधिकाओं को इसी नाम से जाना जाता है ।

बोक्सी ने आगे बताया - एक विचित्र प्रकार की साधना है , ताल बेताल साधना !

यह बेहद जटिल किस्म की अघोर साधना है ।

इस साधना को सामान्य व्यक्ति नहीं कर सकता क्योंकि इसके लिए शव की आवश्यकता होती है । यह शव भी सामान्य शव नहीं बल्कि वीर शव होना चाहिए .....

मैंने पूछा - वीर शव क्या होता है ?

बोक्सी बोली - वीर शव का मतलब होता है किसी योद्धा का मृत शरीर !

मैंने पूछा - मैं योद्धा कहा हूँ ? मैं तो एक डॉक्टर हूँ ...

वह मुस्कुराई - लगता है, तुम अपना पूर्व जन्म भूल गए हो ! तुम हमेशा से एक साधक योद्धा ही हो !

ठीक वैसे ही जैसे नोरबू साधक योद्धा है ....

ठीक वैसे ही जैसे मैं कई जन्मों से बोक्सी साधिका हूँ ......

मैंने उससे पूछा - तुम यह सब मुझे क्यों बता रही हो ?

उसने कहा - मैंने कई पुरुषों के साथ वज्रोली क्रिया संपन्न ने की है, लेकिन जितनी तेजस्विता मैंने तुम्हारे अंदर महसूस की है, वह किसी और पुरुष में नहीं थी। तुम वास्तव में एक उच्च कोटि के साधक हो।

तुम इस प्रकार से अकाल मृत्यु को प्राप्त हो जाओगे, यह मेरे लिए दुख की बात थी, क्योंकि अगर तुम जीवित रहते तो मुझ जैसी कई साधिकाओं के वज्रोली क्रिया के काम आते....

एक क्षण रुकने के बाद उसने मेरी ओर गहरी नजरों से देखा और फिर बोली - तुम्हारे साथ जब वज्रोली की क्रिया मैंने संपन्न की तो मैंने अपने अंदर बहुत तीव्र ऊर्जा का अनुभव किया .....

आज सुबह जब मैं ध्यान में बैठी थी तो मैंने स्पष्ट अपने मानस पटल पर देखा कि तुम्हारे द्वारा प्रस्तुत किए गए रक्त भोग को देवी डाकिनी ने स्वीकार कर लिया है ... उन्होंने ही मुझे निर्देशित किया कि मैं तुम्हें आने वाली घटनाओं के बारे में सूचित कर दूँ।

बुजुर्ग लामा ने मुझे यहां पर तुम्हारे साथ पुनः उस क्रिया को संपन्न करने के लिए भेजा है, ताकि तुम्हारी शक्तियां क्षीण अवस्था में रहे। तुम नोरबू के साथ होने वाले युद्ध

में आसानी से हार जाओ और वह तुम्हारा अंत कर सके
।
लेकिन डाकिनी के संकेत के बाद मैं चाहती हूं कि
तुम्हारी उर्जा बची रहे और तुम इस ताल बेताल की
क्रिया को संपन्न कर सको.....
अब यह बात मेरी समझ में नहीं आई ....
क्योंकि ताल बेताल क्रिया को संपन्न करने के लिए मैंने
कभी विचार भी नहीं किया था ।
जिस प्रकार की परिस्थितियां बन रही थी, उसमें तो मैं
ताल बेताल साधना के लिए एक आवश्यक सामग्री के
रुप में इस्तेमाल किया जाने वाला था । इसलिए मुझे
बिल्कुल समझ में नहीं आया कि मैं इस क्रिया को किस
प्रकार से संपन्न करूंगा ?

मैंने उससे पूछा - मैं इस क्रिया को कैसे संपन्न कर
सकता हूं ? यह तो नोरबू करेगा ।
उस ने मुस्कुराते हुए कहा - ताल बेताल साधना में एक
योद्धा का शव चाहिए और यहां पर दो योद्धा है एक तुम
और एक नोरबू .... तो योद्धा का शव तो किसी का भी
हो सकता है

यह सुनकर मेरा माथा ठनका !

मेरी समझ में आ गया कि वह क्या कहना चाहती है !

लेकिन मैं अपने आप को अब भी कमजोर महसूस कर रहा था !

लामा डिंचुक के वज्र के द्वारा प्रदान की गई उर्जा मुझे काफी हद तक ठीक कर चुकी थी...

लेकिन मैं अपने आप को पूरी तरह ऊर्जावान तब भी महसूस नहीं कर रहा था क्योंकि बोक्सी मेरी प्राण ऊर्जा का एक बहुत बड़ा अंश खींच चुकी थी !

तभी...

दरवाजे के पास कदमों की आवाज आई और कुछ खटका सा महसूस हुआ !

उसी के साथ बोक्सी ने उछलकर मेरे ऊपर स्थान ग्रहण कर लिया !

दरवाजा खुला !

संभवत उसके अंदर से किसी ने कुछ देखने की कोशिश की ....

और फिर दरवाजे के बंद होने की आवाज भी आई ....

जो भी रहा होगा वह संभवत: अंदर की परिस्थिति को देखकर संतुष्ट हो गया होगा....

मेरे ऊपर आरूढ बोक्सी के स्पर्श के साथ ही मेरा शरीर तयार हो गया था और वह अपनी प्रक्रिया चालू कर चुकी थी ....

उसने इसी प्रकार से मुझसे लिपटे हुए मेरे कान में धीरे से कहा - इस बार तुम वज्रोली का प्रयास करो और बिन्दु को खींचने का प्रयास करो !

इस बार मैं अपनी तरफ से प्रयास नहीं करुंगी !

तुम अभी वज्रोली क्रिया की प्रारंभिक अवस्था में हो इसलिए मैं इस बार प्रयास नहीं कर रही हूं । तुम अपने से पूरी कोशिश लगा लो ताकि तुम्हारी ऊर्जा वापस तुम्हें प्राप्त हो सके.......

मैं वज्रोली की सिद्ध साधिका हूं इसलिए तुम मेरी पूरी उर्जा नहीं खींच पाओगे । उसके लिए तुम्हें मेरे स्तर का वज्रोली साधक होना पड़ेगा .....

लेकिन अभी भी अगर तुमने सही ढंग से क्रिया सम्पन्न की तो इतनी उर्जा अवश्य तुम्हारे प्रयास से तुम्हें प्राप्त हो

सकती है जिससे तुम आने वाले समय में अपने कार्य को संपन्न कर सको !
जैसा कि देवी डाकिनी का निर्देश है !
उन्होंने जिस प्रकार से संकेत दिया है ...
वह भविष्य में तुम्हारी सफलता की सूचना देता है
लेकिन उसके लिए तुम्हें प्रयास करना होगा !
गंभीर प्रयास करना होगा !!!
जिसके लिए यह ऊर्जा तुम्हारी मदद करेगी ।

इतना कहकर उसने क्रिया को आगे बढ़ाते हुए अगले सोपान तक चढ़ा दिया !
लगभग 25 मिनट के बाद अंतिम बिंदु पर पहुंचते ही बिन्दु पात के बाद उसने मुझे संकेत किया !
मैंने वज्रोली के माध्यम से शरीर को संकोचित करते हुए योग मुद्राओं का प्रयोग करके मंत्रों का उच्चारण करते हुए बिन्दु को अंदर खींचने की कोशिश करने लगा ......
वह इतना सरल नहीं था !
ऐसा लग रहा था जैसे बोकसी का शरीर बिन्दु को अपने से अलग होने की इजाजत नहीं दे रहा है ....

और मैं उसे अपनी ओर खींचने की कोशिश कर रहा हूं........

यह दोनों तरफ से खींचतान जैसा प्रतीत हो रहा था ।

बोक्सी ने यथासंभव अपने आप को शिथिल बना कर रखा हुआ था.........

लेकिन....

उसका शरीर...

और उसकी सिद्धियां....

पूरी तरह से उसके शिथिल हो जाने को स्वीकार नहीं कर पा रही थी ।

वह उसके मार्ग में बाधा पैदा कर रही थी जो अंततः मेरी वज्रोली में अवरोध पैदा कर रहा था.....

स्त्री शरीर स्वाभाविक रूप से स्वीकार करने की अवस्था में होता है....

और बोक्सी तो वज्रोली की साधिका थी !

इसलिए उसका शरीर और उसके अंदर निहित शक्तियां उस बिंदु को अपने अंदर खींचने का भरपूर प्रयास कर रही थी ...

जिसे मैं बाहर खींचने की कोशिश कर रहा था !

खींचतान चलती रही ....

काफी देर के प्रयास के बाद मैं अपने अंदर कुछ अंश को खींचने में सक्षम हो गया !

वज्रोली की क्रिया से ऊर्जा का स्थानांतरण होता है, यह मैंने आपको बताया था ।

अब यह स्थानांतरण इस बात पर भी निर्भर करता है कि क्रिया करने वाला किस स्तर का साधक है । बोक्सी एक अत्यंत उच्च्य कोटि की साधिका थी !

उसके साथ बिंदु को खींचने का प्रयास करते समय उसकी उर्जा भी मेरी तरफ खिंचने वाली थी !

और....

ऐसा ही हो रहा था !

लेकिन आंशिक रूप से !

तब भी वह इतना प्रचंड था कि मुझे अपने अंदर किसी ऊर्जा के आगमन का आभास होने लगा था ।

तभी मुझे एक झटका सा लगा और मेरी रीढ़ की हड्डियों में झनझनाहट सी फैल गई .....

नीचे से ऊपर की तरफ बिजली की लहरों जैसी तरंगे उठने लगी ।

ऐसा लग रहा था......

जैसे कोई चीज गुदा मार्ग के पास से प्रारंभ करके गर्दन के पास तक तेजी से ऊपर नीचे हो रही हो ! इस क्रिया के पूर्ण होते ही मैं शून्य जैसी अवस्था में चला गया .... लगभग 10-15 सेकंड तक मैं उसी अवस्था में रहा ....

बोक्सी ने मेरे अंग को पकड़कर बुरी तरह से मरोड़ दिया और उसके ऐसा करते ही मैं वापस सामान्य अवस्था में आ गया ।

उसने मुझसे धीरे से कहा - मैं जा रही हूं । लेकिन तुम अपनी अवस्था उसी प्रकार से बनाए रखना ..... वरना उन्हें संदेह हो जाएगा कि विपरीत क्रिया हो चुकी है, जो तुम्हारे लिए भी और मेरे लिए भी नुकसानदायक होगा । अनुष्ठान कक्ष में पहुंचने के बाद तुम्हारे और नोरबू के बीच में युद्ध होगा ।

युद्ध में तुम्हें परास्त करके उसे तुम्हें समाप्त करना है.... उसके बाद आगे की प्रक्रिया संपन्न होगी ।

मैंने उत्सुकता वश उससे पूछ लिया कि आगे की प्रक्रिया क्या होगी ?

उसने बताया- ताल बेताल सिद्धि में एक योद्धा का मृत शरीर इस्तेमाल किया जाता है । योद्धा के मृत शरीर के ऊपर बैठकर विशेष प्रकार के मंत्रों का उच्चारण करते हुए साधना संपन्न की जाती है । जब यह साधना अपने चरम पर होती है, तब उसके अंदर आवेश आ जाता है । ठीक उसी समय एक चोर की बलि देनी होती है .....

बलि के संपन्न होते ही योद्धा और वह चोर दोनों ताल बेताल बन जाते हैं , और उस साधक के अधीन कार्य करने लगते हैं ......
यह इतने शक्तिशाली होते हैं कि किसी भी प्रकार के असंभव लगने वाले कार्य को भी बेहद सरलता से संपन्न कर लेते हैं ।
साधक के साथ ताल बेताल सूक्ष्म रूप से हमेशा बना रहता है ....
इसे तुम यूं भी समझ सकते हो कि वे दोनों आत्माएं उस साधक के नियंत्रण में आ जाती हैं और उसके निर्देश के अनुसार कार्य करती हैं ।
यह सब सुनकर मेरा दिमाग चकरा रहा था ....

लेकिन तंत्र जगत के रहस्य के बारे में कुछ भी कहना मुमकिन नहीं है....

क्योंकि यहां पर ऐसी ऐसी घटनाएं घट जाती है, जिसके बारे में सामान्य मनुष्य सोच भी नहीं सकता है ।

वह इस प्रकार मुझे सारी जानकारी देकर चली गई ।

उसके जाने के बाद मैंने उस देवी मूर्ति को प्रणाम किया । तभी मैंने देखा कि उनकी आंखें एक पल के लिए सुनहरे रंग से चमकी ....

जब किसी शक्ति के द्वारा आपको आशीर्वाद प्राप्त हो जाए .....

उसके द्वारा मार्गदर्शन प्राप्त होने लगे.....

वह आपके मार्ग में आने वाली बाधाओं को हटाने के लिए स्वयं व्यवस्था करने लगे....

तो आप यह मान कर चलिए कि आप किसी भी असंभव से असंभव कार्य को भी आसानी से पूर्ण कर सकते हैं !

विपरीत से विपरीत परिस्थितियों में भी कोई न कोई मार्ग वह बना ही देती है !

देवी की कृपा और किसी के द्वारा की गई मदद के बाद मैं निश्चिंत हो गया था कि सब कुछ सही होगा । मुझे अब अपनी अवस्था इस प्रकार की दिखानी थी जिससे

आने वाले लामाओं को विश्वास हो जाए कि मैं कमजोरी की अवस्था में हूं ....
और नोरबू के साथ युद्ध के दौरान मैं अवश्य ही हार जाऊंगा....

जैसा कि आप लोग जानते ही हैं कि नोरबू पूर्व जन्म में लामा जोहुआ था । उस समय मेरा और लामा जोहुआ का युद्ध हुआ था । जिसमें लामा जोहुआ की मृत्यु हो गई थी ....
और उसने मुझे मृत्यु तुल्य अवस्था में पहुंचा दिया था ।
जिसके बाद मुझे भी शरीर छोड़ना पड़ा था ।
हम दोनों लामा योद्धा थे !
युद्ध के दौरान ही हमारी मृत्यु हुई थी !
जोहुआ अब नोरबू बन चुका था ।
वह किसी भी प्रकार से मेरी मृत्यु का आकांक्षी था और वह मुझे मिलते ही मार डालना चाहता था । लेकिन उसका वर्तमान गुरु इस अवसर को नोरबू के लिए और बेहतर बनाना चाहता था । वह मेरी मृत्यु के साथ-साथ नोरबू को ताल बेताल सिद्धि भी प्रदान करवाना चाहता था ।

इसके लिए उसने एक चोर की व्यवस्था भी करके रखी हुई थी ।

रात्रि काल में होने वाले प्रयोग के दौरान मेरी मृत्यु के पश्चात उसका प्रयोग होना था ।

उस समय रात हो रही थी जब वे लामा मुझे लेने के लिए आ गए ।

उस समय तक मैंने अपने वज्र को देवी के विग्रह के पास में छुपा दिया था, क्योंकि निर्वस्त्र अवस्था में उस वज्र को छुपाना संभव नहीं था ....

यह लोग अपने साथ वस्त्र भी लेकर आए थे जो कुछ कुछ वैसी ही थी ......

जैसी मुझे उस पीले वाले ड्रैगन के द्वारा प्राप्त हुई थी .... योद्धा वाली पोशाक !

उसमें एक लबादा था । उस लबादे के ऊपर एक कवच था । कमर में पट्टियों से बना हुआ बेल्ट था जिसमे म्यान थी और उस म्यान में एक तलवार लटकी हुई थी उसके साथ-साथ कमर में दो वज्र भी लटके हुए थे । मुझे उन लोगों ने उस लबादे को पहना दिया ।

उसे पहन लेने के बाद मुझे अपने वज्र का ख्याल आया ....

मैंने उनसे देवी से अनुमति मांगने की इच्छा व्यक्त की !
वे दोनों उसके लिए सहमत हो गए और मैंने आंखें बंद करके उनके सामने प्रार्थना की ...
तारा मंत्र का उच्चारण किया और उसके बाद नीचे झुककर उस वज्र को उठा लिया ,और अपनी हथेली में छुपा लिया और धीरे से अपने लबादे की जेब में डाल दिया ।
अब मेरे पास कवच था ...
कवच के बाहर लटकी हुई तलवार थी....
दो वज्र थे....
और एक वह वज्र था जो मुझे लामा डिंचुक ने दिया था और जिसे मैंने अपने लबादे की जेब में डाल दिया था ।
मैं उनके साथ धीरे धीरे चलता हुआ कमरे से बाहर निकला । मैं भी उनके साथ कमजोर दिखने की कोशिश करता हुआ धीरे-धीरे चल रहा था । ताकि उन्हें विश्वास हो जाए कि मैं वास्तव में अभी कमजोर स्थिति में हूं ।
संभवत: वे उस बात को मन ही मन स्वीकार कर रहे थे......

मुझे जहां पर ले कर आए थे वह नदी का किनारा था !

जमीन रेतीली थी !

वहाँ एक आदमक़द मूर्ति बनी हुई थी । जो लगभग बारह तेरह फीट की रही होगी ।

मूर्ति के सामने एक बड़ा गोल दीपक रखा हुआ था ! जिसके अंदर चर्बी जैसी कोई चीज जल रही थी ! वह भभक भभक कर जल रहा था ।

वह एक भयानक आकृति थी । जिसके सिर पर दो नुकिले सींग दिखाई दे रहे थे । उसकी बड़ी-बड़ी आंखें गड्ढों में धंसी हुई थी । नाक के स्थान पर एक छेद था और बड़ा सा मुंह खुला हुआ था । उसके गले में एक नर मुंड की माला पड़ी हुई थी, ठीक वैसे ही जैसे महाकाली के गले में पड़ी होती है .... फर्क सिर्फ इतना था कि यह आकृति पुरुष आकृति थी ।

मूर्ति के दाहिने हाथ में एक लंबा सा डंडा था । जो लगभग 5-6 फुट का रहा होगा ....

उसके किनारे पर हँसिये जैसी आकृति का एक हथियार लगा हुआ था , जो सुनहरे रंग से चमक रहा था । दूसरे हाथ में एक तलवार थी । जिसका फाल आठ से दस इंच के बीच का रहा होगा और उसकी लंबाई कम से

वैसे ही जैसे खून सूखने के बाद दिखाई देते हैं ।
वहाँ से कुछ दूरी पर लगभग 20-25 साल का एक युवक बैठा हुआ था ।
उसके सामने शराब की पांच छह बोतल रखी हुई थी । उसकी आंख नशे में लाल हो चुकी थी और वह अपने स्थान पर झूम रहा था । उसे देख कर पता चल जाता था कि वह पूरी तरह नशे में टुन्न था । उसके बावजूद उसके हाथ में शराब की बोतल मौजूद थी । इसमें से वह थोड़ा-थोड़ा घूंट ले रहा था । उसकी हालत देखकर साफ पता चल रहा था कि उसे इस बात का कोई होश नहीं है कि वह कहां बैठा हुआ है और उसके साथ आगे क्या घटित होने वाला है .....

वहां दो चमड़े के आसन लगे हुए थे । एक आसन पर बुजुर्ग लामा बैठा था और पूजन संपन्न कर रहा था .... दूसरे आसन पर नोरबू बैठा था और उसके कहे अनुसार पूजन को संपर्क कर रहा था.......

मेरे वहां पहुंचने के कुछ देर के बाद पूजन संपूर्ण हो गया और नोरबू और बुजुर्ग लामा अपने स्थान से उठ खड़ा हुआ ।

मुझे देखते ही नोरबू मुझ पर टूट पड़ने के लिए तैयार था , लेकिन बुजुर्ग लामा ने उसे रोक रखा था । उसने मुझे लेकर आने वाले लोगों को वहां से चले जाने का इशारा किया ।

उसके बाद वह नोरबू की तरफ मुड़ा और बोला - देखो आज का मुहूर्त अति विशिष्ट है । यह ताल बेताल की सिद्धि के लिए तुम्हारे जीवन का सबसे अच्छा मौका है । ऐसी परिस्थितियां बार-बार नहीं नहीं बनती हैं । तुम्हारे पास इस सिद्धि के लिए आवश्यक सारी सामग्रियां उपलब्ध है । तुम्हें द्वंद युद्ध करके इसे जल्दी से जल्दी समाप्त करना है । उसके बाद योद्धा के मृत शरीर के ऊपर बैठकर वेताल मंत्र का जाप करना है । यह मंत्र मैं तुम्हें बताता हूँ ।

अचानक मेरे मानस पटल पर विशालकाय उच्छिष्ट गणपति का बिंब स्पष्ट हुआ .... उन्होने मेरे सामने अपने कान हिलाये उसके साथ मुझे अपने कान मे एक सुरसुराहट सी महसूस हुई ....

ऐसा लगा जैसे मेरी कानों मे कुछ अजीब सा घटित हुआ हो ।

उधर बुजुर्ग लामा ने नोरबू को अपने पास बुलाया ।
उसके बाद उसने नोरबू के कान में वह मंत्र धीरे से बताया......

मैं उनसे लगभग 10 फूट की दूरी पर खड़ा था । लेकिन आश्चर्य की बात यह थी कि मुझे भी वह मंत्र स्पष्ट सुनाई दे रहा था ! संभवतः गणेश भगवान ने कुछ विशेष क्षमता प्रदान की होगी ।

यह कैसे हुआ ?

यह तो मुझे भी समझ में नहीं आया !

लेकिन वह मंत्र स्पष्ट रुप से मेरे कानों में भी सुनाई दे रहा था और मैंने उसे याद कर लिया ।

तभी लामा डिंचुक वहां पर प्रकट हो गया ।

उसे देख नोरबू की भौंह तन गयी ।

बुजुर्ग लामा भी विचलित दिखाई देने लगा ।

उसने पूछा - तुम यहाँ क्यों आए हो ?

लामा डिंचुक - तुम नोरबू के साथ खड़े हो, इसलिए मैं इसके साथ हूँ । साधना के नियमों के अनुसार ताल बेताल साधना साधक को अपने दम पर करनी होती है । तुम नोरबू के साथ खड़े होकर उसकी ताकत बढ़ाने की कोशिश कर रहे हो ।

यह अनुचित है, अगर तुम उसके साथ रहोगे तो मैं भी इसके साथ यहां खड़ा रहूंगा। तुम्हारे द्वारा इन दोनों के बीच हस्तक्षेप करने पर मैं भी बीच में आऊंगा।

यह सुनते ही उस लामा ने नोरबू को आगे बढ़ने का इशारा किया और खुद डिंचुक की ओर तेजी से झपटा। उसे झपटा कहने की बजाय उड़ा कहना ज्यादा उपयुक्त होगा ....

क्योंकि वह जमीन से लगभग 10 फुट ऊपर चला गया था !

मैं यह देखकर आश्चर्य में रह गया कि डिंचुक भी उसी प्रकार से एक झटके में जमीन से 10 फुट ऊपर उछल गया है और ऊपर हवा में वे दोनों आपस में टकराए ...

उनके टकराते ही एक धमाके की आवाज हुई !

प्रकाश का एक गोला सा लपलपाया और उसके साथ ही लामा डिंचुक और बुजुर्ग लामा दोनों वहां से गायब हो गये।

हो सकता है कि वे कहीं और लड़ने चले गए हों ....

जो भी हो दोनों नहीं दिख रहे थे।

मैंने देखा...... नोरबू भी एक योद्धा की वेशभूषा में था।

नोरबू तलवार लेकर मेरी ओर आने लगा.....

मैं सोच रहा था कि अब मैं क्या करुं ?

क्योंकि मैंने इस जिंदगी मे किसी को चाकू तक नहीं मारा था और तलवार चलाना तो बड़ी दूर की बात थी ।

वह मुझ से लगभग चार पाँच फुट की दूरी पर रहा होगा .....

तभी अचानक....

मेरे अंदर एक अजीब सी ऊर्जा का आभास मैंने किया !

मेरी भुजाएँ फड़फड़ाने लगीं !

और अपने म्यान से मैंने तलवार खींच ली ।

उस समय मुझे ऐसा लग रहा था...... जैसे मैं वास्तव में कोई अच्छा योद्धा हूं ।

मेरे तलवार पकड़ने का अंदाज भी बिल्कुल किसी प्रशिक्षित योद्धा की तरह ही हो गया था ।

मैंने तलवार को अपने इर्द-गिर्द घुमाया ।

बिलकुल वैसे.... जैसे आम तौर पर योद्धा तलवार चलाने से पहले घुमाते हैं ।

मुझे ऐसा लग रहा था जैसे महागणपति की कृपा से मेरे मस्तिष्क के अंदर में से कोई विशेष सॉफ्टवेयर खुल गया हो ....

जिसके अंदर तलवारबाजी की शिक्षा भरी हुई हो ।

तब तक नोरबू तलवार लेकर बिल्कुल मेरे सामने आ खड़ा हुआ था और उसने तलवार से मेरी गर्दन को निशाना बनाकर वार कर दिया ....

जिस प्रकार की मेरी स्थिति की उसने अपेक्षा की थी .... उसके अनुसार इस वार से मेरी गर्दन धड़ से अलग हो जाती लेकिन ऐसा नहीं हुआ ....

मैंने उस वार को अपनी तलवार से रोक लिया !

उसके बाद हमारी तलवारे टकराती रही और वह आश्चर्य से मुझे देख रहा था ।

थोड़ी देर में उसे आभास हो चुका था कि मैं इतना आसान शिकार नहीं हूं और वह अपने वास्तविक योद्धा स्वरूप में आ गया और उसने ताबड़तोड़ वार करने प्रारम्भ कर दिये ।

लगभग दस मिनट तक हमारी तलवारबाजी चलती रही !

उसके बाद हम दोनों ने जब एक भरपूर वार किया तो ज़ोर की आवाज के साथ हम दोनों की तलवार एक साथ टूट कर जमीन पर गिर गई ।

तलवार टूट चुकी थी !

इसलिए अगले शस्त्र का प्रयोग करना था और वह था वज्र ।

वज्र का प्रयोग मंत्र के साथ किया जाता है ।

वह आकार में छोटा होता है, लेकिन जब उसे मंत्र सिद्ध करके फेंका जाता है तो वह किसी चक्र की तरह सामने वाले के ऊपर आक्रमण कर देता है । यदि उसे उसका तोड़ ना मालूम हो तो वह उसके प्राण हरने के लिए पर्याप्त होता है ।

नोरबू इस बार सावधान था !

उसने अपने मंत्र सिद्ध वज्र का प्रयोग किया....

तब तक मैंने भी अपना वज्र छोड़ दिया था ....

इस बार मेरा वज्र ज्यादा शक्तिशाली था !

उसने नोरबू के वज्र को समाप्त कर दिया और इस दौरान लगे धक्के मे नोरबू नीचे गिर गया ।

मैं उसके उठने का इंतजार करता रहा ......

तभी मैंने देखा कि वह फिर उठ खड़ा हुआ और अपने वज्र को सर के ऊपर उठा लिया ......

और उसका वज्र थोड़ी देर मे नीले प्रकाश मे जगमगाने लगा !

ऐसा लग रहा था जैसे उसमे से रश्मियां निकल रही हों !

वज्र का प्रयोग मंत्र के साथ किया जाता है।

वह आकार में छोटा होता है, लेकिन जब उसे मंत्र सिद्ध करके फेंका जाता है तो वह किसी चक्र की तरह सामने वाले के ऊपर आक्रमण कर देता है। यदि उसे उसका तोड़ ना मालूम हो तो वह उसके प्राण हरने के लिए पर्याप्त होता है।

नोरबू इस बार सावधान था !

उसने अपने मंत्र सिद्ध वज्र का प्रयोग किया....

तब तक मैंने भी अपना वज्र छोड़ दिया था ....

इस बार मेरा वज्र ज्यादा शक्तिशाली था !

उसने नोरबू के वज्र को समाप्त कर दिया और इस दौरान लगे धक्के मे नोरबू नीचे गिर गया।

मैं उसके उठने का इंतजार करता रहा ......

तभी मैंने देखा कि वह फिर उठ खड़ा हुआ और अपने वज्र को सर के ऊपर उठा लिया ......

और उसका वज्र थोड़ी देर मे नीले प्रकाश मे जगमगाने लगा !

ऐसा लग रहा था जैसे उसमे से रश्मियां निकल रही हों !

किसी अज्ञात प्रेरणा से मैंने भी अपना वज्र ऊपर उठाया और छिन्नमस्तिका मंत्र का जाप प्रारम्भ कर दिया मेरा वज्र भी गुलाबी आभा से चमकने लगा ।

तब तक नोरबू ने अपना वज्र छोड़ दिया ....

वह मेरी ओर तेजी से बढ़ा !

लेकिन ....

पहले प्रहार करने वाले को उसका लाभ मिलता ही है .....

इस बार मेरा वज्र कमजोर पड़ा और मैं जमीन पर गिर गया ।

किसी तरह मैं उठा और हम दोनों के बीच द्वंद चालू हो गया ।

वह तेजी से मेरी ओर बढ़ा और उसने मुझ पर लात घूंसों की बारिश कर दी !

मेरी स्थिति दयनीय हो गई थी .....

नाक और मुंह से खून निकलने लगा ....

उसने उछल कर मेरे सीने पर एक ज़ोर की लात मारी और मैं जमीन पर गिर गया ।

वह मेरे सीने के ऊपर कूदने ही वाला था .....

तभी मैंने अपना तीसरा वज्र निकाला.....

मंत्र पढ़ा....

और उसके सीने में दे मारा ....

कवच भेदता हुआ मेरा वज्र उस के सीने मे जा घुसा और वहां से रक्त की धार फूट पड़ी ।

नोरबू उस चोट के बावजूद मुझ पर झपटा, मैं हल्का सा दाहिनी ओर झुक गया ....

वह लड़खड़ा कर जमीन पर गिरा !

आसपास की जमीन उसके खून से लाल होने लगी !

नोरबू थोड़ी देर फडफड़ाया और फिर शांत हो गया .....

पासा पलट चुका था !

शिकारी शिकार हो चुका था ....

नोरबू के अंत का आभास अवश्य ही उसके गुरु बुजुर्ग लामा को हो गया होगा.....

क्योंकि अचानक आसमान में एक लाल रंग का प्रकाश का गोला मेरी तरफ तेजी से आता हुआ दिखाई देने लगा !

वह किसी मिसाइल की तरह आ रहा था......

उसे देख कर मुझे थोड़ा डर भी लग रहा था !

उससे लगभग लगा हुआ ही एक और सफेद गोला भी उसके पीछे-पीछे आ रहा था ।

दूर से उनका आकार एक फुटबॉल के आसपास लग रहा था....

लेकिन जैसे-जैसे वे पास आ रहे थे ......

उनका आकार बढ़ता जा रहा था ....

उसमें आकृतियां स्पष्ट हो रही थी ।

सामने आ रहे लाल गोले में बुजुर्ग लामा की आकृति मुझे अब स्पष्ट दिख रही थी ....

कुछ क्षण में पीछे के सफेद गोले के अंदर भी मुझे एक आकृति दिखाई देने लगी और वह लामा डिंचुक की थी ।

उनको देखकर मुझे तसल्ली का आभास हुआ....

बुजुर्ग लामा की शक्तियों के बारे में और उनके प्रहार के बारे में मैं थोड़ा सा चिंतित जरूर था क्योंकि वह बेहद रहस्यमय और शक्तिशाली प्रतीत होते थे ....

लामा डिंचुक उन्हे सम्हाल लेंगे ऐसा मेरा विश्वास था ।

वह गोला जिस तीव्र गति से आ रहा था ....

उससे मुझे ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे वह मुझ से टकरा जाएगा और मुझे समाप्त कर देगा ।

मैं स्तब्ध सा खड़ा था !

मुझे कुछ समझ में नहीं आ रहा था कि मुझे क्या करना है .....

जैसे-जैसे आप साधना करते जाते हैं तो आपके इष्ट आपको समय पर मार्गदर्शन भी देते हैं !

वे कई ऐसी परिस्थितियों में भी आपको निकाल ले जाते हैं जिसके बारे में आपने अपने जीवन में कभी सोचा भी नहीं होगा ।

मैं भी एक ऐसी ही परिस्थिति में खड़ा हुआ था ।

वह आता हुआ गोला क्या था ?

वह क्या करेगा ?

बुजुर्ग लामा उसके अंदर से मुझ पर क्या प्रहार करेंगे ?

इसके विषय में मुझे कुछ भी जानकारी नहीं थी । मैं उसी उहापोह में खड़ा हुआ था !

तभी......

एक क्षण के लिए मेरी आंखें बंद हुई और मानस पटल पर स्पष्ट हुआ भगवती छिन्नमस्ता का स्वरुप .....

क्रोध से दमकती हुई आंखें !

ऐसी आंखें जो सीधे शरीर को छेद कर बाहर निकल जाएगी......

ऐसी प्रतीत हो रही थी !
क्रोध से भरी हुई ......
लाल लाल खून टपकाने को आतुर सी आंखें !

एक तो भगवती छिन्नमस्ता का स्वरूप ही बहुत भयानक है .....
ऊपर से अगर वो क्रोधित भी हो जाएँ ......
तो आप उस भयानक स्वरूप की कल्पना ही कर सकते हैं !!!
उनकी तीसरी आंख खुली हुई थी ....
उसमें से रश्मियां निकल रही थी !
वह संभवतः ठीक वैसी ही स्थिति रही होगी जब भगवान शिव ने कामदेव को भस्म करने के लिए अपनी तीसरी आंख खोलकर उसमें से अग्नि किरणों को प्रवाहित किया था और पल भर में कामदेव भस्म हो कर अनंग हो गए थे अर्थात् देह रहित हो गए थे ....

वह वास्तव में अद्भुत और अलौकिक दृश्य था !
एक क्षण में ऐसा लग रहा था जैसे मैं उस दिव्य शक्ति की तीसरी आंख से निकल रहे प्रकाश किरणों का अनुभव अपने संपूर्ण शरीर में कर रहा हूं और मेरी पूरी देह

जो उस प्रकाशीय गोले और उसके अंदर समाहित बुजुर्ग लामा को समाप्त कर देने के लिए पर्याप्त रही होगी ....

प्रकाशीय गोले मे लिपटा लामा डिंचुक का शरीर अब भूमि पर स्थिर हो चुका था । उसने मुझे समय नष्ट किए बिना अपनी साधना को प्रारंभ करने के लिए नोरबू के मृत शरीर के ऊपर आरूढ हो जाने के लिए कहा ।
नोरबू के शरीर को मैंने उत्तान लिटा दिया और उसके सीने पर वज्रासन मे बैठ गया !
उसके बाद उस वेताल मंत्र का उच्चारण करने लगा ।
जो मैंने लामा द्वारा नोरबू को बताते समय सुना था ....
लामा डिंचुक वहां से गायब हो चुके थे ।
मुझे लगा कि संभवत: वे मेरी रक्षा के लिए आसपास कहीं मौजूद रहे होंगे ...
क्योंकि मुझे यह आभास होने लगा था कि उनके मेरे आस-पास रहने के पीछे भी कोई रहस्य होगा .....
शायद गुरुदेव ने उनको मेरी रक्षा के लिए मेरे साथ लगाया हुआ होगा ।

जैसे ही मंत्र जाप चालू हुआ .....

हवा का भारीपन बढ़ने लगा !

जैसा कि शमशान में आप महसूस कर सकते हैं ....

अगर आप कभी शमशान गए हो तो आपने इसे अनुभव किया होगा .....

अगर नहीं अनुभव किया है तो अगली बार जब आप शमशान जाए ....

तो शांत होकर कुछ क्षण के लिए वहां की हवा को महसूस करने की कोशिश करें.....

तो आपको पता चलेगा कि वहां की हवा का एक अलग ही प्रकार का भारीपन होता है ....

वहां पर एक अजीब सी सनसनी फैली हुई रहती है ......

खैर ....

थोड़ी देर में वहां पर चमगादड़ उड़ते हुए दिखाई देने लगे ....

और वह भी एक दो की संख्या में नहीं थे.....

बल्कि सैकड़ों की संख्या में चमगादड़ गोल गोल घेरे में उड़ रहे थे.....

हवा का भारीपन बढ़ने लगा !

जैसा कि शमशान में आप महसूस कर सकते हैं ....

अगर आप कभी शमशान गए हो तो आपने इसे अनुभव किया होगा .....

अगर नहीं अनुभव किया है तो अगली बार जब आप शमशान जाए ....

तो शांत होकर कुछ क्षण के लिए वहां की हवा को महसूस करने की कोशिश करें.....

तो आपको पता चलेगा कि वहां की हवा का एक अलग ही प्रकार का भारीपन होता है ....

वहां पर एक अजीब सी सनसनी फैली हुई रहती है ......

खैर ....

थोड़ी देर में वहां पर चमगादड़ उड़ते हुए दिखाई देने लगे ....

और वह भी एक दो की संख्या में नहीं थे.....

बल्कि सैकड़ों की संख्या में चमगादड़ गोल गोल घेरे में उड़ रहे थे.....

हवा का भारीपन बढ़ने लगा !

जैसा कि शमशान में आप महसूस कर सकते हैं ....

अगर आप कभी शमशान गए हो तो आपने इसे अनुभव किया होगा .....

अगर नहीं अनुभव किया है तो अगली बार जब आप शमशान जाए ....

तो शांत होकर कुछ क्षण के लिए वहां की हवा को महसूस करने की कोशिश करें.....

तो आपको पता चलेगा कि वहां की हवा का एक अलग ही प्रकार का भारीपन होता है ....

वहां पर एक अजीब सी सनसनी फैली हुई रहती है ......

खैर ....

थोड़ी देर में वहां पर चमगादड़ उड़ते हुए दिखाई देने लगे ....

और वह भी एक दो की संख्या में नहीं थे.....

बल्कि सैकड़ों की संख्या में चमगादड़ गोल गोल घेरे में उड़ रहे थे.....

उड़ने के साथ-साथ वे कई बार मुझसे एक दो फुट की दूरी तक आ जाते थे ....

ऐसा प्रतीत हो रहा था.....

जैसे वे मुझे दिखाने के लिए उड़ रहे हैं कि हम भी यहां पर उपस्थित हैं !

ऐसा प्रतीत हो रहा था, जैसे कई आत्माएं चमगादड़ का रूप लेकर वहां उड़कर अपनी उपस्थिति का आभास करा रही हों !!!

या फिर शायद कई अदृश्य शक्तियां या इतर योनियां वहाँ चमगादड़ के रूप में अपनी उपस्थिति का आभास करा रही थी ।

बड़ी तेजी से गोल गोल चक्कर काट रहे थे !

उनकी उड़ान कभी ऊपर... कभी नीचे..... होती रहती थी !

कई बार वे मेरे बिल्कुल करीब से होकर निकल जाते थे ...... वे इतने करीब से निकलते थे कि उनके पंखों की सरसराहट को मैं महसूस कर सकता था ।

इन सब को मिलाकर एक रहस्यमय वातावरण बन रहा था !

थोड़ी देर तक मंत्र जाप चलता रहा....

तभी....

अचानक.....

किसी के चीखने की आवाज आई !

यह हृदय विदारक सी चीख थी !!

ऐसा लग रहा था..... जैसे कोई किसी की गर्दन पकड़ कर दबा रहा हो .....

या उसे बुरी तरह से पीट रहा हो... और वह दर्द से कराह रहा हो !

थोड़ी देर तक तो यह आवाज कुछ दूर से आती हुई महसूस हुई.....

लेकिन फिर.....

ऐसा लगने लगा कि वह आवाज धीरे धीरे मेरे करीब आ रही है !

कोई दिखाई नहीं दे रहा था !

लेकिन....

चीखने चिल्लाने की आवाज करीब आती हुई मैं साफ महसूस कर सकता था....

फिर सब कुछ एकदम शांत हो गया !

सभी ओर नीरवता छा गयी .....

पिन ड्रॉप सायलेंस वाली स्थिति ....

उसके बाद ....

सामने खड़ी हुई वह आदमकद विशालकाय मूर्ति

अचानक से जीवंत प्रतीत होने लगी....

उसके साथ खड़े हुए कुत्ते की पूंछ हिलने लगी या

संभवत: मुझे ऐसा लग रहा था कि वह हिल रही है.....

उसकी तरफ देखने मात्र से मन के अंदर भय का संचार

हो रहा था ....

उसकी लाल लाल आँखें किसी एल ई डी बल्ब की

तरह चमक रही थीं .... कुछ कुछ वैसे ही जैसे रिमोट से

टी वी को बंद कर देने के बाद अंधेरे मे उसमे लगी हुई

छोटी वाली लाल लाइट जलती है। फर्क सिर्फ इतना

था कि यह आँखें उससे काफी बड़ी थी।

मैंने फिर से मंत्र जाप करते हुए एक नजर नीचे की तरफ

देखा ....

तो वहां एक भयानक दृश्य मेरा इंतजार कर रहा था !

नोरबू की आंखें अर्थात उसके शव की आंखें अब खुल

चुकी थी .....

अपनी बड़ी बड़ी आंखों से वह मुझे घूर रहा था। उसकी

आंखों को देखकर मेरे प्राण हलक की तरफ आ गए ....

लेकिन....

इस प्रकार की साधना में ऐसी घटनाएं होती ही है !
मैं किसी प्रकार अपने आप को नियंत्रित करके उस शव के ऊपर बैठा हुआ था और मंत्र जाप कर रहा था ....
मंत्र जाप करते करते मुझे आभास होने लगा कि नोरबू के शरीर में हलचल होनी प्रारंभ हो चुकी है.....
थोड़ी देर के मंत्र जाप के बाद उसके हाथ ऊपर की ओर उठे और उसने मुझे पकड़ लिया.....
उसके दोनों हाथ मेरे कंधे को पकड़ कर अपनी तरफ झुका रहे थे ....
मैंने विरोध करने का पूरा प्रयास किया लेकिन सब बेकार था ...
उसकी पकड़ बेहद मजबूत थी ।
किसी लोहे के चिमटे की तरह ...
उसने मुझे अपनी तरफ झुकाया .... उसके बाद उसके हाथ मेरी गर्दन पर जम गए !
उसने मेरे गर्दन को दबाना चालू कर दिया !
वह काफी जोर से मेरी गर्दन को दबा रहा था !!
मेरी आंखें उबल कर बाहर आने को आतुर हो रही थी, इसी से आप उसके हाथों के दबाव का अंदाज लगा सकते हैं । कुछ क्षण तक वैसी ही स्थिति रही ।

उसके बाद उसने मुझे छोड़ दिया !

मेरा मंत्र जाप जारी था ...

उसने मुझे नोचना खसोटना प्रारंभ कर दिया !

उसके नाखून काफी लंबे लंबे थे....

वह उन नाखूनों से मेरे ऊपर खरोच मार रहा था ......

हर बार ऐसा लगता था जैसे कोई कील शरीर में गाड़ कर खींची जा रही हो ....

मेरे हाथ पैर और शरीर पर उसके नाखूनों से बने हुए जखमों के निशान आ चुके थे....

जिसमें से धीरे-धीरे खून रिस रहा था !

लगभग 10-15 मिनट तक वैसा ही चलता रहा । उसके बाद वह शांत हो गया । मुझे लगा कि संभवतः अब यह सारा कार्यक्रम पूरा हो गया है .....

और केवल बलि का कार्यक्रम बचा हुआ है ।

लेकिन.....

ऐसा नहीं था !

थोड़ी देर के बाद नोरबू के शव के मुख से एक जोर से चीखने की आवाज आई.... जो किसी महिला के चीखने के जैसी थी....

उसके साथ ही शव की आंखें खुल गई और उसकी बड़ी-बड़ी आंखें, आंखों की कोटरों से बाहर निकल आने को तैयार लग रही थी !

बड़ा ही वीभत्स स्वरुप था......

उसके मुख से निकलती हुई वह भयानक स्त्री ध्वनि अपने आप में डर का वातावरण पैदा करने के लिए पर्याप्त से काफी ज्यादा थी....

वह अपने दांतो को कटकटा रहा था !

उसके मुख से कर्कश स्त्री ध्वनि लगातार निकल रही थी ....

एक भयानक अट्टहास करने के बाद उसके मुंह से कर्कश स्त्री स्वर निकला - तूने मुझे जागृत क्यों किया है ?

मरना चाहता है क्या ?

मेरे पास कोई जवाब नहीं था !

मैं मौन रहा !

उसने फिर कहा - गूंगा हो गया क्या ?

मरेगा ....

अब तू मरेगा .....

देख मैं तेरा क्या हाल करती हूँ !

फिर वही कर्कश अट्टहास उसके मुंह से निकलने लगा !

उसने फिर मेरे हाथों को पकड़ लिया !

तभी वह शव अचानक हवा में उठ गया ....

यह मेरे लिए अप्रत्याशित था....

वह एक झटके में चार पांच फीट ऊपर उठा....

वहाँ उसने अपनी पकड़ छोड़ दी !

मैं उस शव के ऊपर बैठा हुआ था ....

बड़ा विचित्र दृश्य था !

हवा मे झूलता हुआ शव .....

उसके ऊपर बैठा हुआ मैं ....

किसी अज्ञात की आशंका से आशंकित ......

कुछ भयभीत सा ....

कुछ उत्साहित सा ....

कुछ रोमांचित सा.....

मैं बैठा हुआ था !!!

मैं थोड़ी देर थरथराने के बाद सामान्य हो गया था !

अब मैं पुनः स्थिर होकर बैठा हुआ था और फिर से मंत्र जाप करने लगा......

पाँच मिनट तक सब कुछ ठीक था !

उसके बाद अचानक वह पलट गया.....

जैसे ही वह पलटा....

मै धम्म से नीचे आ गिरा !

मेरे नीचे गिरते ही वह शव भी मेरे ऊपर आ गिरा ....

अब वो बिल्कुल स्थिर पड़ा था !

उसमें कोई हलचल नहीं हो रही थी !!

ठीक वैसे ही जैसे कोई मृत शरीर होता है !!!

किसी टेडी बेयर की तरह....

वह मेरे ऊपर पड़ा था ।

इस प्रकार की शव साधना मैं अपने जीवन में पहली बार कर रहा था....

लेकिन साधक के पूर्व जन्म के संस्कार अगर उस प्रकार के हैं....

तो ऐसी साधना करते समय उसे अपने आप अंदर से ही निर्देश प्राप्त होने प्रारंभ हो जाते हैं.....

कुछ वैसी ही स्थिति मेरे साथ हो रही थी ।

मेरे मस्तिष्क के अंदर से ही मुझे आगे के बारे में जानकारी होती जा रही थी !

मुझे पता चल रहा था कि मुझे क्या करना है ?

नोरबू का शव मेरे ऊपर गिर चुका था !

मैंने उसे पलट दिया और वापस पुरानी स्थिति में करके उसके ऊपर चढ़कर फिर से बैठ गया और मंत्र जाप प्रारंभ कर दिया। मंत्र जाप पांच दस मिनट तक और चला होगा उसके बाद उसने उसी प्रक्रम को फिर से दोहरा दिया।

वह उसी प्रकार ऊपर उठ गया और फिर पलट कर मुझे नीचे गिरा दिया और मेरे ऊपर स्वयं भी गिर गया!

ऐसा तीन-चार बार हुआ....

इस बार जब मैं बैठा ....

तो मुझे अंदर से ही यह प्रेरणा आई कि अब इसे उठने नहीं देना है।

जैसे ही इस बार वह उठने लगा .....

मैंने उसके मुंह पर एक ज़ोर का घूंसा मारा और एक शानदार गाली भी दी ....

उसी के साथ वह शांत हो गया ......

चाणक्य नीति कहती है कि

शठे शाठ्यम समाचरेत.....

अर्थात दुष्ट व्यक्ति के साथ दुष्टता पूर्ण व्यवहार करना चाहिए।

आप इसको इस तरह से समझ सकते हैं कि मान लीजिए कोई गुंडा या बदमाश है तो आपके हाथ जोड़ लेने से वह आपके साथ अच्छा व्यवहार करने लगेगा इस प्रकार की गलतफहमी नहीं रखनी चाहिए ।

यह सनातन धर्म की प्रवृत्ति कभी नहीं रही है....

जब रावण बदमाशी करता है तो भगवान राम उसके पास हाथ जोड़ने नहीं जाते हैं ।
उनके पास संसाधन नहीं थे, लेकिन उन्होंने उपलब्ध संसाधनों अर्थात वानरों के साथ सेना तैयार की । उसके पश्चात वह तीर कमान लेकर रावण से युद्ध करते हैं अर्थात

गलत का विरोध करना भारतीय संस्कृति का अंग है ।

यह अलग बात है कि वर्षों से हाथ जोड़कर मार सहने वाली गलत परंपरा ने हमारे अंदर जाने अंजाने मे एक प्रकार की कायरता और नपुंसकता बढ़ा दी ....
खैर .....

अब यह एक बिलकुल अलग बात है कि एक व्यक्ति जिन्हे राष्ट्रपिता कहा जाता है और जो स्वयं को राम भक्त कहते थे .... उन्होंने भी रामलला के मंदिर को सम्मानजनक स्थान दिलाने के लिए कोई प्रयास नहीं किया था । जबकि वह इस स्थिति में थे कि केवल उनके एक वाक्य कह देने मात्र से तत्कालीन प्रधानमंत्री मंदिर को सम्मानजनक स्थिति में ला सकते थे ।

अब आप कल्पना करें कि भगवान राम जिस स्थान पर पैदा हुए उस स्थान पर उनका मंदिर बनने के लिए आजादी के बाद भी हिंदू समाज को 70 वर्ष से ज्यादा इंतजार करना पड़ा.....

तब एक योद्धा सन्यासी के कारण रामलला को सम्मानजनक मंदिर मिला .....

खैर.......

अंत भला तो सब भला !

तो मैं कह रहा था कि चाणक्य की नीति मेरी शव साधना वाले मामले में बिल्कुल काम कर रही थी....

जागृत शक्ति और नरबलि

मेरे घूंसा मारने के बाद परिस्थितियां थोड़ी बदल गई थी और वह शांत हो गया था ।

उसके बाद आधे घंटे और मेरी साधना चलती रही और वह बीच-बीच में इसी प्रकार से उठने की कोशिश करता ....

मैं अब ट्रिक को समझ चुका था !

जैसे ही वह उठने की कोशिश करता मैं बराबर पूरी ताकत से उस पर घूंसा मारता और कस के एक गाली देता....

वह वापस अपने स्थान पर बैठ जाता....

ऐसा चलता रहा .....

आधे घंटे के बाद उसके चेहरे के भाव फिर से बदलने लगे....

उसकी बड़ी बड़ी आंखें खुल गई....

उसके मुंह से स्त्री स्वर निकलने लगा !

वह बोला - तू नहीं मानेगा ?

मैंने कोई जवाब नहीं दिया और मंत्र जाप करता रहा !

मेरी समझ में आ गया था कि यह कोई और स्त्री शक्ति है और उसके साथ मारपीट करना उचित नहीं है ।

इसलिए मैं बिल्कुल शांत अवस्था में बैठा रहा ।

वह शव उसी प्रकार मुझे घूरता रहा....

अपनी लाल लाल आँखों से डराने की कोशिश करता हुआ ...

थोड़ी देर गुजर जाने के बाद उस शव ने पुनः स्त्री स्वर मे कहा - मेरा भोग कहां है ?

मैंने पास में रखा हुआ खोपड़ी से बना हुआ मदिरा का कपालपात्र उसके मुख में सटा दिया.......

वह करीब करीब आधे लीटर से ज्यादा रहा होगा !

वह मदिरा पात्र पूरा खाली कर देने के बाद उसके चेहरे पर शांति और तृप्ति जैसे भाव आने लगे ....

आंखें वापस सामान्य होने लगी !

तभी....

उसकी जीभ बाहर निकली !!

निकली की बजाय लटकी कहना ज्यादा उचित होगा !

उसके बाद वह लंबी होने लगी ....

वह लगभग दो फूट लंबी हो गयी होगी ....

उसके बाद उसकी जीभ मेरे शरीर पर फिरने लगी ...

वह जीभ मुझे चाट रही थी !

ठीक वैसे ही जैसे हम आइसक्रीम को चाटते हैं ....

मुझे गुदगुदी सी हो रही थी ......

लेकिन थोड़ी देर मे चाटने की ताकत बढ़ गयी ....

मेरी चमड़ी उधड़ने लगी ....

गुदगुदी का स्थान अब तीव्र पीड़ा ने ले लिया ......

जहां-जहां वह तेजी से चाट रही थी....

वहाँ वहां पर जख्म होने लगे थे !

उसमे से निकलते खून को वह जीभ चाटती रही......

कुछ देर वैसा ही चलता रहा .....

फिर वह जीभ वापस मुंह के अंदर चली गयी ....

वह शव उसी प्रकार मुझे देखता हुआ लेटा रहा !

जैसे कुछ हुआ ही न हो ....

कुछ देर के बाद उसने कहा - मेरे लिए बलि लाया है ?

मैंने सहमति जताई .....

तो उसने कहा - प्रदान कर !

मेरे लिए यह बड़ी जटिल और असामान्य सी परिस्थिति थी.....

जिसमें से होकर अब मुझे गुजरना था....

मुझे अब नर बलि देनी थी !

एक व्यक्ति.....
जिसने जिंदगी में मुर्गी तो छोड़ दीजिए चूहे तक को नहीं मारा था !
वह अब नरबलि देने वाला था ....
मैं इस बात की कल्पना करके अंदर ही अंदर घबराया हुआ भी था.......
उत्तेजित भी था.....
और न जाने किस किस भाव से होकर मेरी मानसिकता प्रवाहमान हो रही थी !

मैंने उस चोर की तरफ देखा......
वह लगभग नशे में बेहोशी वाली हालत में उस बलि यूथ के पास पड़ा हुआ था ।
मैं क्या करूं ?
यही भाव मेरे मन में उस समय भरा हुआ था !

ठीक वैसे ही जैसे संभवतः अर्जुन के मन में तब रहा होगा ......

जब उसने सामने खड़ी हुई सेना में दिख रहे अपने ही गुरुजनों और परिजनों को मारने के विषय में सोचा होगा ....

उस समय भगवान कृष्ण ने उसका मोह भंग किया और कर्तव्य पथ पर आगे चलने के लिए प्रेरित किया.....

ठीक उसी प्रकार मेरे अंदर की अंतः प्रेरणा जो संभवतः मेरे पूर्व जन्म के संस्कारों से प्रेरित रही होगी ....

उसने मुझे अपने कार्य को पूर्ण करने के लिए निर्देशित किया ....

क्योंकि अगर कार्य अधूरा रह जाता तो मुझ पर भी घोर विपत्ति आ सकती थी ....

ताल बेताल सिद्धि की अधिष्ठात्री वह श्मशान वासिनी कपालिनी जागृत हो चुकी थी !

वह अनेक रूपों मे जागृत की जा सकती है ...

इसलिए उसे सहस्त्र रुपा भी कहा जाता है ! अर्थात हजारों रूपों वाली .....

हर रूप का अपना अलग महत्व है ! अलग प्रक्रिया है ! तो अलग भोग भी है ....

ताल बेताल साधना के लिए वह जिस स्वरुप में जागृत की गई थी.....

उसमे नरबलि अनिवार्य थी ।

उसमें अगर मैंने नर बलि नहीं दी तो वह स्वत: साधक यानि कि मेरी ही बलि लेकर संतुष्ट हो जाती........

उस परिस्थिति मे ताल बेताल प्रकट तो हो जाता लेकिन साधक के अभाव मे वह फिर विलुप्त हो जाता .....

यानि सारी प्रक्रियाओं के बावजूद कोई फल नहीं प्राप्त होता .....

तभी मुझे अंदर से एक झटका सा लगा !

मेरे अंदर एक विद्युत लहर सी दौड़ी.....

मैं आगे की क्रियाओं के लिए सन्नद्ध हो गया ।

मैंने शव से उतरकर उस चोर की ओर रुख किया !

खींच कर उसे बलि यूथ पर लिटा दिया ....

पास में वह तलवार पड़ी हुई थी.....

जिससे बलि दी जाती थी ।

चौड़े फाल वाली तेज धारदार तलवार ...

मैंने उसे अपने हाथ मे उठा लिया ......

उस क्षण मुझे अचानक ऐसा महसूस होने लगा कि उस मूर्ति में प्राण आ गए हैं .....

उसमे नरबलि अनिवार्य थी ।

उसमें अगर मैंने नर बलि नहीं दी तो वह स्वत: साधक यानि कि मेरी ही बलि लेकर संतुष्ट हो जाती........

उस परिस्थिति मे ताल बेताल प्रकट तो हो जाता लेकिन साधक के अभाव मे वह फिर विलुप्त हो जाता .....

यानि सारी प्रक्रियाओं के बावजूद कोई फल नहीं प्राप्त होता .....

तभी मुझे अंदर से एक झटका सा लगा !

मेरे अंदर एक विद्युत लहर सी दौड़ी.....

मैं आगे की क्रियाओं के लिए सन्नद्ध हो गया ।

मैंने शव से उतरकर उस चोर की ओर रुख किया !

खींच कर उसे बलि यूथ पर लिटा दिया ....

पास में वह तलवार पड़ी हुई थी.....

जिससे बलि दी जाती थी ।

चौड़े फाल वाली तेज धारदार तलवार ...

मैंने उसे अपने हाथ मे उठा लिया ......

उस क्षण मुझे अचानक ऐसा महसूस होने लगा कि उस मूर्ति में प्राण आ गए हैं .....

मैंने देखा तो मूर्ति वाकई हिलती सी प्रतीत हो रही थी ...

मुझे अपने पीछे एक सरसराहट सी महसूस हुई....

मैंने पलट कर देखा तो नोरबू का शव मेरे ठीक पीछे पड़ा हुआ था ....

जैसे उस बलि की प्रतीक्षा में पड़ा हो !

तभी मुझे अचानक से कच कच की आवाजें आने लगी ....

ठीक वैसे ही आवाज जैसे किसी चीज के खाने पर आती है....

मैंने सामने की तरफ देखा तो वह कुत्ता.....

जो मूर्ति के साथ बना हुआ था.....

वह एक जीवित कुत्ते की तरह दिख रहा था ....

वह अपने सामने रखी हुई बोटियों से भरे हुए पात्र में से बोटियों को चबा चबा कर खा रहा था ....

साथ ही बीच-बीच में मेरी तरफ अपनी लाल लाल आंखों से देख लेता था ....

उसकी आंखें किसी एलईडी बल्ब की तरह लपलपा रही थी....

लाल-लाल गोल-गोल डरावनी सी आंखें......

मुझे अंदर से आभास हुआ कि यह संकेत होगा....

मैंने दोनों हाथों से पकड़कर उस तलवार को हवा में उठाया.....

मेरे तलवार को उठाते ही वातावरण का भारीपन बढ़ गया ....

मैंने देखा श्मशानी शक्तियाँ आस पास उपस्थित हो चुकी थीं ...

अपनी पूरी शक्ति लगाकर एक तेज प्रहार के साथ मैंने तलवार को नीचे की तरफ लहराया और चोर का सर उसके धड़ से अलग हो गया ....

खून का एक फव्वारा सा निकला और वह उस मूर्ति के चरणों को भिगोने लगा ....

चोर के मुंड को काटते ही वह उछलकर नोरबू के गले के पास जा बैठा ....

उस वहाँ बैठते ही नोरबू की जीभ लगभग एक फुट बाहर निकल आई ।

वह उस खोपड़ी के अंदर घुस गई और उसको इस प्रकार से चूसने लगी....

जैसे अंदर से सबकुछ खींच कर खा जाना चाहती हो.....

कुछ समय तक चूसने चाटने की तेज आवाजें आती रहीं उसके बाद जैसे ही शांति हुई ...

वह खोपड़ी कूदकर नोरबू के सीने में आ बैठी !

अब उसके अंदर कुछ भी मांस या मज्जा का हिस्सा दिखाई नहीं दे रहा था....

वह लंबी जीभ सारा का सारा निगल चुकी थी !

यहां तक की आंख के स्थान पर भी केवल गड्ढे दिखाई दे रहे थे ....

वह भयानक दृश्य देखकर मेरे शरीर में झुरझुरी दौड़ने लगी थी ......

एक जीवित व्यक्ति जो थोड़ी देर पहले वहां पड़ा हुआ था....

अब दो हिस्सों में बटा हुआ था !

उसका सिर अपनी शक्ल खोकर अब सिर्फ एक इंसानी खोपड़ी बन चुका था !

ठीक वैसा ही जैसा किसी कंकाल का होता है !

मांस और मज्जा से विहीन !

मैं खून से सनी वह तलवार हाथ में लिए हुए खड़ा था ...

तभी उस चोर के शरीर में हलचल हुई !

वह अचानक हवा में उड़ता हुआ उस मूर्ति की तरफ उठने लगा !

मूर्ति के हाथ आगे बढ़े और उन्होंने उस शरीर को लपक लिया । उसकी गर्दन उस मूर्ति के मुंह मे जा लगी ...

ऐसा लगा जैसे वह उस के शरीर से खून चूस रहा हो या उसे चाट कर उसका टेस्ट लेने की कोशिश कर रहा हो ...

जैसा हम लोग किसी भी खाने को खाने से पहले करते हैं.......

एक जोरदार चटखारे की आवाज आई और उसके बाद धीरे-धीरे उसका पूरा शरीर वह चबाकर उदरस्थ कर गया ।

उसे पूरा अंदर कर लेने के बाद उसका मुंह बंद हो गया और वापस वह सामान्य प्रस्तर प्रतिमा वाले स्वरुप में आ गया....

मैं अपने स्थान पर उठ खड़ा हुआ ....

मैंने नोरबू की देह की तरफ देखा तो नोरबू सूक्ष्म रुप से अब मुझे दिखने लगा था और उसके ऊपर स्थित वह चोर भी सूक्ष्म रुप मे मुझे दिखाई दे रहा था ....

लेकिन वह दोनों अपने स्थान से अर्थात पृथ्वी से चार पांच फीट ऊपर सूक्ष्म रुप में किसी धुंध से बने बिम्ब जैसे दिखाई दे रहे थे ।

धुंध अर्थात वायवीय रुप मे भी उनकी स्थिति वैसी ही थी .... अर्थात नोरबू का शरीर लेटी हुई अवस्था में था और उसके सीने पर चोर का मुंड रखा हुआ था । थोड़ी देर के बाद वे दोनों उसी प्रकार से किसी ड्रोन की तरह उड़ते हुए मेरी तरफ आने लगे ...

मेरे पास आने के बाद उन्होने मेरा तीन चक्कर काटा और मेरे बाएं कंधे पर स्थापित हो गए । अब वह उसी स्थान पर जीवन भर निवास करने वाले थे...

वह भी सूक्ष्म रुप से....

नोरबू का मृत शरीर और वह खोपड़ी अभी वहीं पर पड़ी हुई थी ।

मुझे अपने बाएं कंधे पर एक क्षण के लिए दबाव सा महसूस हुआ ...

मैं अपने स्थान पर उठ खड़ा हुआ ....

मैंने नोरबू की देह की तरफ देखा तो नोरबू सूक्ष्म रूप से अब मुझे दिखने लगा था और उसके ऊपर स्थित वह चोर भी सूक्ष्म रूप मे मुझे दिखाई दे रहा था ....

लेकिन वह दोनों अपने स्थान से अर्थात पृथ्वी से चार पांच फीट ऊपर सूक्ष्म रुप में किसी धुंध से बने बिम्ब जैसे दिखाई दे रहे थे ।

धुंध अर्थात वायवीय रुप मे भी उनकी स्थिति वैसी ही थी .... अर्थात नोरबू का शरीर लेटी हुई अवस्था में था और उसके सीने पर चोर का मुंड रखा हुआ था । थोड़ी देर के बाद वे दोनों उसी प्रकार से किसी ड्रोन की तरह उड़ते हुए मेरी तरफ आने लगे ...

मेरे पास आने के बाद उन्होने मेरा तीन चक्कर काटा और मेरे बाएं कंधे पर स्थापित हो गए । अब वह उसी स्थान पर जीवन भर निवास करने वाले थे...

वह भी सूक्ष्म रूप से....

नोरबू का मृत शरीर और वह खोपड़ी अभी वहीं पर पड़ी हुई थी ।

मुझे अपने बाएं कंधे पर एक क्षण के लिए दबाव सा महसूस हुआ ...

उसके बाद सब कुछ सामान्य हो गया ।

थोड़ी देर में मेरे बाएं कंधे पर एक छोटा सा गूमड़ जैसा उभर आया !

जो लगभग एक इंच के आकार का रहा होगा !

वह संभवत: उनके मेरे बाएं कंधे में स्थापित होने का प्रमाण था । उसके बाद सब कुछ सामान्य हो गया ।

मैंने जब बाईं ओर देखा तो कंधे मे सूक्ष्म रुप से वे दोनों स्थापित दिखाई दे रहे थे ।

मैं किंकर्तव्यविमूढ़ सा वहां पर खड़ा हुआ था !

सोच रहा था कि यह कैसी कैसी घटनाएं मेरे साथ घटित हो रही हैं....

यह प्रकृति का कैसा निर्णय है जिसके कारण मुझे यह अद्भुत सिद्धि प्राप्त हुई है ।

उस समय मुझे पता नहीं था कि वास्तव में ताल बेताल सिद्धि क्या होती है ?

उसके बारे में बाद में लामा डिंचुक ने मुझे बताया कि यह अत्यंत दुर्लभ सिद्धि है जो राजा विक्रमादित्य जैसे प्रतापी राजाओं को उनके गुरुओं के द्वारा प्रदान की जाती थी ।

पिशाच लीला

काफी दूरी पर खड़े लामा डिंचुक ने मुझे अपनी ओर आने का इशारा किया । उन्होने बताया - अब यहां पर पिशाच लीला प्रारंभ होगी । यह दोनों शरीर श्मशान वासी पिशाचों के लिए निर्धारित हो चुके हैं । इसलिए अब तुमको शमशान की सीमा से बाहर बुलाया है .... वह उस स्थान से लगभग बीस मीटर आगे खड़े हुए थे । वह कुछ बोल नहीं रहे थे....

लेकिन उनकी आवाज स्पष्ट मुझे सुनाई दे रही थी.... या संभवत: वे मानसिक संकेतों के द्वारा मुझे यह बातें समझा रहे थे ।

इस साधना से पहले भगवान गणेश के द्वारा संभवतः मुझे कोई विशेष सिद्धि प्रदान की गई थी जिसके कारण अब मैं इस प्रकार की बातों को समझ पा रहा था । उन्होंने मुझे अपनी तरफ बुलाया और मैं तलवार को वहीं पर छोड़ कर तेजी से उनकी ओर जाने लगा । वे जहां पर पर खड़े थे वहां एक छोटा सा चबूतरा सा बना हुआ था , जिसके ऊपर वे पालथी मारकर बैठे हुए थे । जब मैं उनके पास पहुंचा तो उन्होंने मुझे अपने पास बैठने का इशारा किया । उसके बाद उन्होंने मुझे उस दिशा

में देखने का इशारा किया । मैंने उधर देखा तो वहां पर भयानक पिशाच लीला प्रारंभ हो चुकी थी । विचित्र प्रकार की आकृतियों वाली पिशाचिनियों का एक झुंड दौड़ता हुआ आया और मृत शरीर के ऊपर टूट पड़ा । यह कुछ कुछ वैसा ही था जैसे किसी मांस के टुकड़े पर कुत्तों का झुंड टूट पड़ता है । उन्होंने उस शव की बोटियाँ नोच डाली और हड्डियों तक को चबा दिया ।

अब वहां पर उन दोनों का कोई नामोनिशान बाकी नहीं था.....

और उसके बाद वे जिस प्रकार से प्रकट हुई थी उसी प्रकार शून्य में गायब भी हो गई । उस स्थान पर जिस प्रकार की शांति और नीरवता की स्थिति बनी हुई थी... उसे देखकर कोई भी यह नहीं कह सकता था कि वहां पर कुछ देर पहले दो शव मौजूद थे !

वहां खून के कुछ निशानों के अलावा कुछ भी बाकी नहीं था !

मांस का एक टुकड़ा भी उन्होंने नहीं छोड़ा था !

सब कुछ गायब हो चुका था !

न तो वहां पर ताल बेताल साधना का कोई निशान बाकी था !

और ना ही वहां पर नरबलि का कोई निशान बाकी था ! बाकी था तो केवल उस बलि यूथ के पास जमीन पर पड़ा हुआ वह खून.... जो इस बात की गवाही दे रहा था कि कुछ समय पहले यहां पर ऐसा कुछ घटित हुआ था जिसमे रक्त बहा होगा .....

वह विशालकाय मूर्ति अपने सामान्य स्वरुप में आ चुकी थी !

उसके साथ वाले कुत्ते के सामने रखा हुआ बोटियों का पात्र खाली हो चुका था !

वह भी तृप्त होकर वापस पत्थर की प्रतिमा में तब्दील हो चुका था !

कुल मिलाकर सब कुछ पहले जैसा हो चुका था ।

किसी स्थान को देखकर आप इस बात का अंदाजा नहीं लगा सकते कि वहां पर किस प्रकार की घटनाएं घटित हो सकती हैं....

मैं यही सोचता हुआ वहां बैठा था ।

गोम्पा मे वापसी

मैं ऐसी घटनाओं का गवाह बन चुका था जो मेरे लिए किसी सपने से भी ज्यादा अकल्पनीय थी । वह सारी घटनायेँ मेरे मानस पटल पर किसी फिल्म की तरह आ जा रही थी और मुझे बेचैन कर रही थी !

मुझे स्थिर होने में थोड़ा सा समय लगा !

लगभग पाँच सात मिनट के बाद जब मैं थोड़ा शांत हुआ ...

तो डिंचुक लामा ने मेरे सर पर हाथ फेरा !

उनके हाथ फेरते ही मुझे ऐसा लगा जैसे मैं तपती हुई धूप में से निकल कर किसी बरगद के पेड़ की छांव में आ गया हूं ....

एक गंभीर शांति का अनुभव मुझे होने लगा और मेरी आंखें मूंदने लगी !

आंखें बंद करते ही मुझे महामाया के दिव्य स्वरुप के दर्शन हुए ....

ममत्व से भरी वे आँखें !

अद्भुत तेजस्वी स्वरुप !!

उनके दर्शन प्राप्त होते ही मैं हर्ष और उल्लास से भर गया ....

मेरी आंखों से आंसुओं की धारा फूट पड़ी !
ऐसा लगने लगा जैसे किसी नन्हे अबोध शिशु को काफी देर के बाद अपनी माता के दर्शन हुए हो !
जब मैं फफक फफक कर रो रहा था तब लामा डिंचुक मेरी पीठ पर होले होले हाथ फेर रहे थे ।
थोड़ी देर रो लेने के बाद मेरी स्थिति जब थोड़ी सामान्य हुई तो मुझे एक झटके का आभास हुआ !
मुझे ऐसा लगा जैसे मैं हवा में उड़ रहा हूं !
उसके बाद एक और झटका लगा जब मैंने आंखें खोली तो मैंने देखा कि मैं अपने गोम्पा के बाहर मौजूद हूं...
वहां पर मौजूद था.... वही चबूतरा !
जिसमें बैठकर मैं ध्यानस्थ हुआ था....
उसी पर बैठे थे हम दोनों !

गोम्पा के द्वार पर योग माया खड़ी हुई थी । यह कुछ कुछ वैसा ही था जैसे किसी बालक के बाहर जाने पर उसकी माता उसकी प्रतीक्षा में द्वार पर खड़ी होती है....
वास्तव में गुरु और मां दोनों लगभग एक जैसे ही होते हैं ...
ममता से परिपूर्ण !

वात्सल्य से भरे हुए !!

उन्होंने मुझे देख कर मुझे गले से लगा लिया !
उनकी आंखों में हल्की सी नमी भी आ गई थी !
यह देखकर मेरी आंखें भी नम हो गई नम हो गई कहना कम होगा बल्कि यह कहना ठीक होगा कि छलक गई ....
उन्होंने मेरे आंसुओं को पोछा और अंदर जाने के लिए कहा और लामा डिंचुक से सारी जानकारी लेने लगी....
मैं अपने कमरे में पहुंचकर बिस्तर पर लेट गया और लेटते ही सो गया !
मुझे यह नहीं पता चला कि मैं कितनी देर तक सोता रहा....
जब मेरी नींद खुली....
तब दोपहर हो चुकी थी ,क्योंकि बाहर धूप दिखाई दे रही थी ।

पारद शिवलिंगम

मैं वापस गोम्पा में आ चुका था और गोम्पा में वज्रोली के अभ्यास का अगला चरण प्रारंभ होने वाला था । वाम मार्ग में हर साधक के लिए एक शक्ति का विधान है, जो भगवती की कृपा से प्राप्त होता है । विनोदिनी मेरे लिए उसी प्रकार की शक्ति थी । विनोदिनी को भी बाबा भैरवनाथ ने वज्रोली की क्रिया सिखाई थी । मुझे भी योग माया ने वज्रोली की क्रिया सिखा दी थी । अब अवसर था कि हम दोनों मिलकर संयुक्त रूप से उसका अभ्यास करते । यहां पर यह जानना भी जरूरी है कि साधक के क्षमता के अनुसार ही शक्तिशाली साधिका का होना भी जरूरी है । दोनों की साधनात्मक शक्तियां जब एक दूसरे को पूर्ण करने के योग्य होती है तभी दोनों साधनात्मक रूप से आगे बढ़ते हैं ।

गोम्पा में सबसे ऊपरी जो तला था । उसमें तीन कमरे बने हुए थे । उनमें से सबसे दाहिनी तरफ बने हुए कमरे में एक विशाल पारद योनि का विग्रह रखा हुआ था ......

अब आप कहेंगे पारद शिवलिंग तो सुना था मगर यह पारद योनि क्या बला है ? तो आप मोटा मोटी यह समझ लीजिये कि जिस प्रकार पारद शिवलिंग को साक्षात भगवान शिव का प्रतीक माना जाता है उसी प्रकार से पारद योनि को शक्ति का प्रतीक माना जाता है । यह दोनों ही विग्रह जागृत विग्रह माने जाते हैं ....

सबसे बाएँ तरफ वाले कमरे में एक विशाल पारद शिवलिंग बना हुआ था । जो मेरे ख्याल से कम से कम 20-22 किलो का जरूर रहा होगा । ऐसा माना जाता है कि, पारद शिवलिंग जिस स्थान पर स्थापित होता है, उसके आसपास का एरिया उसकी ऊर्जा से चेतनावान बना रहता है ।

पारद शिवलिंग के सानिध्य में बैठकर की जानेवाली साधनाएं बेहद जल्दी साधक को शक्ति का सानिध्य प्रदान करने में मदद करती है....

उसे साधना के अनुभव भी जल्दी प्राप्त होते हैं !

हां ! इसके लिए यह जरूरी है कि ऐसा पारद शिवलिंग किसी सिद्ध तांत्रिक गुरु के द्वारा प्रदान किया गया हो या स्थापित किया गया हो....

पारद शिवलिंग के अंदर चिकित्सकीय शक्तियां भी होती है और वह रोगों के निवारण के लिए भी काफी प्रभावी मानी जाती है । इसके लिए आप पारद शिवलिंग के सानिध्य में महामृत्युंजय मंत्र की साधना करके इस का अनुभव स्वयं कर सकते हैं...... पारद शिवलिंग के सानिध्य में महामृत्युंजय का जाप करने का प्रभाव कई गुना बढ़ जाता है ।

पारे को भगवान शिव का वीर्य भी माना जाता है । वीर्य का तात्पर्य होता है किसी भी जीव के अंदर स्थित प्राणों का पूंजी भूत स्वरूप ....

एक ऐसा स्वरूप जो उसी के समान एक और नए जीवन को उत्पादित करने में समर्थ होता है....

उससे एक नई सृष्टि उत्पन्न हो सकती है ....

पारद का शिवलिंग स्वयं देवाधिदेव भगवान शिव के अंतर्निहित तत्व को अपने अंदर समाहित किए हुए होता है । इसलिए पारद से बने हुए शिवलिंग को काफी

शक्तिशाली, प्रभावी और जागृत माना जाता है । इसके विषय में मैंने "अघोरानंद माधुरी और ध्यानलिंगम" नाम की अपनी रचना में विस्तार से लिखा है । अगर आप इच्छुक हो तो उसे पढ़कर इसके विषय में और जानकारी प्राप्त कर सकते हैं ।

अस्तु....

वह पारद शिवलिंग जो वहां पर स्थापित था , वह अत्यंत ऊर्जावान शिवलिंग था । जिसके सामने न जाने कितने साधकों ने कितने वर्षों से कई प्रकार की साधना अवश्य संपन्न की होगी । सबसे ऊंची स्थिति में होने के कारण वह तला एकांत में था और उसे संभवत: उच्च कोटि की साधनों के लिए ही इस्तेमाल किया जाता रहा होगा । हम दोनों को वह तला दे दिया गया । वही पर बैठकर हमें आगे की वज्रोली साधना को संपन्न करना था । वज्रोली साधना के पहले चरण में हम पारद शिवलिंग के सानिध्य में बैठकर एक विशेष मंत्र का जाप करते रहे जो चौबीस प्रहर करना था !

******

सनातन धर्म के अनुसार दिन रात मिलकर आठ प्रहर होते हैं जिनके नाम इस प्रकार हैं ।

दिन (4 प्रहर):-

पूर्वान्ह , मध्यान्ह, अपरान्ह, सायंकाल ॥

रात (4 प्रहर):-

प्रदोष, निशिथ, त्रियामा एवं उषा ॥

इसे आप तीन तीन घंटों के चार सेट मे बाँट सकते हैं जो इस प्रकार से होंगे सुबह 6-9, 9-12, 12-3, 3-6, फिर शाम 6-9, 9-12, 12-3, 3-6 ॥

*** * * * * ***

पहला चरण 24 प्रहर यानि 3 दिन तक करना था । वह 3 दिन हम दोनों ने पूर्ण ब्रह्मचर्य के साथ शिवलिंग के सानिध्य में मंत्र का जाप करते हुए बिताए ।

यह 3 दिन सरल नहीं थे ।

काफी जटिल थे ।

पैर की हड्डियां टूटती हुई महसूस होती थी ।

उतनी ठंड में निर्वस्त्र होकर यह साधना संपन्न करनी थी ।

जो कि अपने आप में बेहद जटिल कार्य था ।

शरीर किसी पत्थर की तरह अकड़ जाता था ।

हाथ पैर में किसी प्रकार की जान नहीं है....

ऐसा प्रतीत होता था ।

लेकिन जब धूप निकलती थी तो परिस्थितियां थोड़ी सामान्य हो जाती थी !

उसी प्रकार से हम लोग उस दुर्लभ पारद शिवलिंग के सानिध्य में मंत्र जाप संपन्न करते रहे !

पारद शिवलिंग के विषय मे विश्वप्रसिद्ध तंत्र मर्मज्ञ सद्गुरुदेव डा नारायण दत्त श्रीमाली जी ने लिखा है कि :-

मृदः कोटि गुणं स्वर्णम, स्वर्णात्कोटि गुणं मणिः,
मणेः कोटि गुणं बाणो, बाणात्कोटि गुणं रसः
रसात्परतरं लिंगं न भूतो न भविष्यति ॥

अर्थात *मिट्टी से बने शिवलिंग से करोड गुणा ज्यादा फल सोने से बने शिवलिंग के पूजन से, स्वर्ण से करोड गुणा ज्यादा फल मणि से बने शिवलिंग के पूजन से, मणि से करोड गुणा ज्यादा फल बाणलिंग के पूजन से तथा बाणलिंग से करोड गुणा ज्यादा फल रस अर्थात पारे से बने शिवलिंग के पूजन से प्राप्त होता है। आज तक पारे से बने शिवलिंग से श्रेष्ठ शिवलिंग न तो बना है और न ही बन सकता है।*

इसी बात से आप पारद शिवलिंग की महत्ता को समझ सकते हैं । ऐसे ही दिव्य पारद से बना हुआ हुआ

शिवलिंग हमारे सामने विराजमान था और हम उस के सानिध्य में साधना कर रहे थे । जो मंत्र हमें प्राप्त हुआ था वह भ्रमराम्बा देवी के मंत्र से संपुटित किया हुआ पाशुपत मंत्र था.....

योगमाया ने पारद शिवलिंग के विषय में कई दुर्लभ जानकारियां प्रदान की थी और साथ ही यह भी बताया था कि हर घंटे में दो बार लक्ष्मी चैतन्य होती है !

उसी क्षण में पारद शिवलिंग को स्वर्ण ग्रास अर्थात सोने का भोग प्रदान किया जाता है, जिससे महालक्ष्मी की कृपा प्राप्त होती है ।

उन्होंने हमें सोने का तार दिया था ! जो एक लकड़ी की चकरी के ऊपर लिपटा हुआ था । उसी में से लगभग एक सेंटीमीटर का टुकड़ा समर्पित करना था । बत्तीस प्रकार की लक्ष्मीयों को पारद शिवलिंग में स्थापित माना जाता है । उन्हें ही अलग-अलग मंत्रों के माध्यम से स्वर्ण ग्रास दिया जाता है । इसके लिए उन्होंने ताड़ पत्र पर लिखा हुआ एक ग्रंथ भी दिया था । जिसमें उस क्षण विशेष में बोले जाने वाले मंत्र के बारे में लिखा था । यह महालक्ष्मी का क्षण या मुहूर्त समझना थोड़ा सा जटिल होता है, लेकिन वह शिवलिंग विशेष प्रकार से

बना हुआ था और जब महालक्ष्मी चैतन्य होने का क्षण आता था ...

उस समय उसका रंग बदलने लगता था और उसमें हल्की स्वर्णिम आभा दिखाई देने लगती थी।

जब भी इस प्रकार से स्वर्णिम आभा दिखाई देती थी उसी समय हम दोनों स्वर्ण का ग्रास उस शिवलिंग को समर्पित करते थे !

वह स्वर्ण का धागा उस शिवलिंग के अंदर समाहित हो जाता था .....

इस प्रकार से 16 घंटों में हम लोगों ने 32 महालक्ष्मी के स्वरुपों को उस पारद शिवलिंग में स्वर्ण ग्रास प्रदान किया। जब अर्ध रात्रि का समय हुआ तो उस शिवलिंग के ऊपरी भाग में एक गुलाबी रंग का प्रकाश पिंड प्रकट हो गया ....

उसमें से धीरे-धीरे 32 छोटे-छोटे गोले उसी प्रकार से निकल कर एक वृत्त के आकार में चक्कर लगाने लगे और प्रत्येक वृत्त के अंदर भगवती महालक्ष्मी की एक विशिष्ट आकृति बनी हुई थी !

हम दोनों हाथ जोड़कर उसी प्रकार से मंत्र जाप में लीन थे !

वह शिवलिंग लगभग 2 फुट ऊंचे आधार पर बना हुआ था और उस शिवलिंग से लगभग एक डेढ़ फुट की ऊंचाई पर यह महालक्ष्मी को अपने आप में समाहित किए हुए प्रकाशीय पिंड घूम रहे थे । लगभग पाँच दस सेकंड तक वह दृश्य हमारे सामने रहा । उसके बाद वे सारे पिंड उसी शिवलिंग में समाहित हो गए । वह अपने आप में एक अद्भुत दृश्य था !

उसके बाद वह पूरा कमरा एक अजीब सी खुशबू से भर गया !

जो अष्टगंध जैसी लेकिन उससे भी मादक और तेज खुशबू थी !

वह खुशबू काफी देर तक उस कमरे में बनी रही ....

इस प्रकार से पहले दिन का पूजन संपन्न हो गया और दूसरे दिन कोई विशेष घटना घटित नहीं हुई हमारा मंत्र जाप संपन्न होता रहा ।

तीसरे दिन मंत्र जाप की पूर्णता के साथ वह पारद शिवलिंग एक स्वर्णिम आभा से जगमगाने लगा.....

ऐसा लगने लगा जैसे उसका जो चांदी के जैसा रंग होता है, वह सोने के जैसे रंग में बदल गया हो !

पूरे शिवलिंग के अंदर से सुनहरे प्रकाश की किरण फूट रही थी...
ठीक वैसे ही जैसे सूर्य के अंदर से निकलती हुई प्रतीत होती है...
वह उसी प्रकार से सुनहरी किरणों को बिखेरता हुआ जगमगाने लगा और उसके बाद वह पूरा कमरा सुनहरे रंग के प्रकाश से भर गया !
हम दोनों उसी प्रकाश से आप्लावित हो चुके थे और आनंद से भर गए थे !
उस प्रकाश की किरणों से ऐसा प्रतीत होता था....
जैसे कोई उर्जा सी निकलकर हमारे अंदर समाहित होती जा रही हो....
वह ऊर्जा अपने आप में अद्भुत थी !
जैसे-जैसे वे किरणे हमारे शरीर पर पड़ती जा रही थी..... ऐसा लग रहा था जैसे शरीर के पूरे आवरण को भेदती हुई वह शरीर के अंदर जा रही हैं और पूरे शरीर को वज्रमय बना रही है !
शरीर में जो अकड़न और दर्द महसूस हो रहा था वह सब कुछ एक ही झटके में समाप्त हो गया !

पूरा शरीर किसी फूल की तरह हल्का और स्फूर्तिवान हो गया !

ऊर्जा का प्रवाह कुछ देर तक चलता रहा और हम उस के सानिध्य में बैठकर ऊर्जावान बनते रहे । लगभग पाँच सेकंड तक वह सुनहरा प्रकाश वहां मौजूद रहा ! उसके बाद वह अपने सामान्य स्वरूप में आ गया ।

इस प्रकार से हमारे प्रथम चरण की साधना संपन्न हो गई ।

पारद योनि : महामाया और देवाधिदेव

वहां से निकलकर अगले चरण में हमें पारद योनि के सामने साधना के दूसरे चरण को संपन्न करना था। यह सोलह प्रहर अर्थात दो दिन की साधना थी । जो सूर्योदय से प्रारंभ होकर पूरे दिन तक चलने के बाद तीसरे दिन सुबह सूर्योदय के साथ संपूर्ण होनी थी। इसमें हमको पारद योनि के दोनों तरफ, यानी बीच में पारद योनि और हम दोनों को उसके अगल-बगल बैठकर एक दूसरे की ओर देखते हुए साधना को संपन्न करना था।

मंत्र जप प्रारंभ हुआ....

शाम तक सब सामान्य रहा !

लगभग आठ बजे के आसपास कमरे के अंदर का वातावरण बदलने लगा हवा कम होने लगी और सांस घुटने जैसा आभास होने लगा ....

जैसे जैसे मंत्र जाप आगे बढ़ता गया ऐसा प्रतीत होने लगा जैसे हम लोग श्मशान में बैठे हुए हो !

पूरी परिस्थितियां बिल्कुल शमशान के जैसे लग रही थी ....

हवा का भारीपन...

वातावरण की खुशबू ...

सब कुछ....

उस गोम्पा में होने के बजाय किसी श्मशान में होने का आभास करा रही थी ।

चमड़े और मांस के जलने की जिस प्रकार की बू आती है... वह... वहां फैली हुई थी ... और बिल्कुल किसी श्मशान के अंदर बैठे होने का आभास करा रही थी !

उसी प्रकार से समय आगे बढ़ता गया और कुछ समय के बाद कमरे के अंदर अजीब अजीब सी आवाजें आने लगी !

दिन का समय था, लेकिन वहां ऐसा महसूस हो रहा था, जैसे हम किसी श्मशान के भीतर रात्रि काल में बैठे हुए हो !

उसी प्रकार का वातावरण शाम तक बना रहा और शाम बढ़ने के साथ-साथ वातावरण की नीरवता भी बढ़ने लगी !

कमरे के अंदर अंधकार छाने लगा था !

लगभग आधी रात के समय जब पूरा अंधकार फैला हुआ था ....

वह भी कोई छोटा मोटा पहाड़ नहीं था। उसका ऊपरी हिस्सा कम से कम आधा किलो मीटर का रहा होगा। इसी से आप उसकी विशालता का अंदाज लगा सकते हैं !

उस मुंड के पहाड़ के ऊपर चार पुरुष एक विशाल पलंग के पाये बने हुए थे। यानि उस तखत के पैरों की जगह चार पुरुष देवता बैठे थे और उनके सर पर वह स्वर्णिम पलंग रखा हुआ था !

उसके ऊपर विराजमान थे साक्षात श्यामवर्णी देवाधिदेव महादेव !

उनकी नाभि से एक गुलाबी रंग का कमल ऊपर की तरफ निकला हुआ था और उसपर विराजमान थी ....

एक अत्यंत सुंदर ...

अत्यंत मनोहर स्वरुप वाली .....

अद्भुत तेजस्वी स्वर्ण जैसी आभा से युक्त देवी....

जो सहस्त्र सूर्यों के प्रकाश से प्रकाशित हो रही थी !

उनके चेहरे पर मंद मंद मुस्कान बिखरी हुई थी और हाथ वरद मुद्रा में उठा हुआ था !

मुश्किल से एक दो क्षण के लिए वह बिम्ब वहां उपस्थित रहा होगा !

वह भी कोई छोटा मोटा पहाड़ नहीं था । उसका ऊपरी हिस्सा कम से कम आधा किलो मीटर का रहा होगा । इसी से आप उसकी विशालता का अंदाज लगा सकते हैं !

उस मुंड के पहाड़ के ऊपर चार पुरुष एक विशाल पलंग के पाये बने हुए थे । यानि उस तखत के पैरों की जगह चार पुरुष देवता बैठे थे और उनके सर पर वह स्वर्णिम पलंग रखा हुआ था !

उसके ऊपर विराजमान थे साक्षात श्यामवर्णी देवाधिदेव महादेव !

उनकी नाभि से एक गुलाबी रंग का कमल ऊपर की तरफ निकला हुआ था और उसपर विराजमान थी ....

एक अत्यंत सुंदर ...

अत्यंत मनोहर स्वरूप वाली .....

अद्भुत तेजस्वी स्वर्ण जैसी आभा से युक्त देवी....

जो सहस्त्र सूर्यों के प्रकाश से प्रकाशित हो रही थी !

उनके चेहरे पर मंद मंद मुस्कान बिखरी हुई थी और हाथ वरद मुद्रा में उठा हुआ था !

मुश्किल से एक दो क्षण के लिए वह बिम्ब वहां उपस्थित रहा होगा !

उसके बाद वह सिंहासन और वे चारों पुरुष देवता वहाँ से लुप्त हो गए !

बाकी रह गया महादेव का वह विशालकाय शरीर है !

बगल में ही एक त्रिशूल गड़ा हुआ था ,जिसका फाल चमचम कर रहा था !

वह शरीर किसी शव की तरह स्थिर और अचल हो गया था !

उसके ऊपर विराजमान थी....

साक्षात महामाया....

शिव की शक्ति महाकाली !

अपने भयंकरतम स्वरुप मे ....

ऐसा स्वरुप जिसे देखने से आत्मा में भी कंपकंपी आनी प्रारंभ हो जाए !

जिसे देखते ही भय की पराकाष्ठा महसूस होने लगे

भगवती को प्रसन्न करने के लिए

डाकिनीयों और भैरवीयों का समूह भगवती को प्रसन्न करने के लिए वहां पर नृत्य करते हुए झूमते हुए घूम रहा था ! असंख्य योगिनीयों का समूह वहां मौजूद था ....

ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे वहां पर कोई मेला सा लगा हुआ हो !

उनमे से कुछ भूमि पर थी !

कुछ आकाश में थी !!

और कुछ अधर में लटकी हुई थी ।

वे अलग-अलग प्रकार से भगवती को प्रसन्न करने की कोशिश कर रही थी.......

करोड़ों सूर्यों की आभा से प्रकाशित होता हुआ उनका संपूर्ण शरीर किसी दिव्य मणि के समान प्रतीत हो रहा था..........

उनके कटिप्रदेश में गैंडे के चमड़े जैसे मोटे चमड़े से बना हुआ कटिवस्त्र धारण किया हुआ था !

गले में नर मुंडो की माला पड़ी हुई थी !

वह मुंडमाला ऐसे मुंडों से बनी हुई प्रतीत होती थी जो अभी-अभी कटी हो ....

उन मुंडों से रक्त की बूंदे रिस रिस कर उनकी देह पर गिर रही थी .....

उस मूँडमाल को पहनकर .....

प्रसन्न होती हुई......

प्रचंड अट्टहास करती हुई भगवती चारों दिशाओं में देख रही थी .....

उनकी लंबी लाल रक्त लिप्त जीभ बीच-बीच में उनके मुंह से बाहर निकलकर लपलपाती थी .....

अत्यंत प्रचंड स्वरूप में वे खड़ी हुई थी !

वे बीच बीच मे अचानक भयानक अट्टहास करने लगती थी जिसे सुनकर समस्त भूमंडल थरथराता सा महसूस होता था !

वे दश मुखों से युक्त थी !

उनके दसों मुखों मे कुल सत्ताईस नेत्र थे !

सामने और दाएं बाएं के तीन मुखों मे दो दो नेत्र थे......

बाकी बचे हुए सात मुखों मे तीन तीन नेत्र विद्यमान थे ......

इस प्रकार से उनके कुल सत्ताईस नेत्र प्रचंड अग्नि के समान दहकते हुए दिखाई दे रहे थे !

उनके वाम भाग में सत्ताईस भुजाएं परिलक्षित हो रही थी !

उसी प्रकार से उनके दक्षिण भाग में भी 27 भुजाएं थी !

एक संपूर्ण तृप्ति का आभास पूरे अंतर्मन को आप्लावित कर रहा था !

उस अद्भुत विराट और असंभव से दिखने वाले विग्रह को देखकर ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे जीवन सफल हो गया हो !

उस भयानक स्वरुप को देखकर जहां एक तरफ भय की अनुभूति होती थी .....

वहीं हृदय के अंदर अत्यंत आनंद की अनुभूति हो रही थी !

ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे कुछ अगम्य प्राप्त हो गया हो !

ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे कुछ अद्भुत देख लिया हो !

ऐसा प्रतीत होता था जैसा कि कुछ दुर्लभ सामने प्रकट हो गया हो !

जो इस ब्रम्हांड का सबसे बड़ा रहस्य है ....

जो इस ब्रह्मांड का मूलभूत तत्व है....

जो इस ब्रह्मांड की सृष्टि का आधार है ....

वह मातृ योनि का स्वरुप साक्षात् शक्ति स्वरूपिणी महामाया अपने विराट स्वरूप में उस शमशान के अंदर बैठी हुई दिखाई दे रही थी । उनके दर्शन मात्र से

एक संपूर्ण तृप्ति का आभास पूरे अंतर्मन को आप्लावित कर रहा था !

उस अद्भुत विराट और असंभव से दिखने वाले विग्रह को देखकर ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे जीवन सफल हो गया हो !

उस भयानक स्वरुप को देखकर जहां एक तरफ भय की अनुभूति होती थी .....

वहीं हृदय के अंदर अत्यंत आनंद की अनुभूति हो रही थी !

ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे कुछ अगम्य प्राप्त हो गया हो !

ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे कुछ अद्भुत देख लिया हो !

ऐसा प्रतीत होता था जैसा कि कुछ दुर्लभ सामने प्रकट हो गया हो !

जो इस ब्रम्हांड का सबसे बड़ा रहस्य है ....

जो इस ब्रह्मांड का मूलभूत तत्व है....

जो इस ब्रह्मांड की सृष्टि का आधार है ....

वह मातृ योनि का स्वरुप साक्षात् शक्ति स्वरुपिणी महामाया अपने विराट स्वरूप में उस शमशान के अंदर बैठी हुई दिखाई दे रही थी । उनके दर्शन मात्र से

लाल रंग का सागर......

ऐसा लग रहा था जैसे रक्त का सागर हो ।

उस सागर के अंदर विभिन्न शव घूम रहे थे !

मनुष्यों के शरीर....

पशुओं के शरीर.....

कटे हुए शव !

फटे हुए शव !

आधे शव .....

पूरे शव ....

सिर्फ शव ही शव थे ।

ऐसा प्रतीत हो रहा था कि शव की बाढ़ आ गई हो .....

उन्हीं के अंदर से निकले हुए रक्त से उस सागर की सृष्टि हुई हो !

उसी सागर के अंदर से महाकाल और महाकाली का युगल विग्रह प्रकट होने लगा !

वह युगल विग्रह समुद्र के भीतर से ऊपर की ओर उठा हुआ प्रतीत हो रहा था !

वे दोनों अत्यंत ही आनंद और उल्लास से भरे हुये प्रतीत हो रहे थे .....

लाल रंग का सागर......

ऐसा लग रहा था जैसे रक्त का सागर हो ।

उस सागर के अंदर विभिन्न शव घूम रहे थे !

मनुष्यों के शरीर....

पशुओं के शरीर.....

कटे हुए शव !

फटे हुए शव !

आधे शव .....

पूरे शव ....

सिर्फ शव ही शव थे ।

ऐसा प्रतीत हो रहा था कि शव की बाढ़ आ गई हो .....

उन्हीं के अंदर से निकले हुए रक्त से उस सागर की सृष्टि हुई हो !

उसी सागर के अंदर से महाकाल और महाकाली का युगल विग्रह प्रकट होने लगा !

वह युगल विग्रह समुद्र के भीतर से ऊपर की ओर उठा हुआ प्रतीत हो रहा था !

वे दोनों अत्यंत ही आनंद और उल्लास से भरे हुये प्रतीत हो रहे थे .....

और प्रचंड मुद्रा में भयंकर रूप में क्रीडा करते हुए प्रतीत हो रहे थे !

उनकी आकृति भूमि से लेकर आकाश तक फैली हुई दिखाई दे रही थी !

दोनों की आकृतियां ऐसी थी जिनका कोई ओर छोर दिखाई नहीं दे रहा था ।

वह आकृति कुछ क्षणों तक हमारे सामने दिखाई देती रही ......

उसमें से इतना तेज प्रवाहित हो रहा था कि हम दोनों की आंखें अपने आप मुँदने लगीं !

कुछ क्षणों तक गहन शांति छाई रही .....

उसके बाद एक भयानक संयुक्त अट्टहास गुंजा ......

जिससे सारी दिशाएं गुंजरित होने लगी !

ऐसा लगने लगा जैसे जमीन और आसमान दोनों कंपायमान हो रहे हो !

उस अट्टहास को सुनकर हम दोनों भयभीत हो गए ......

अट्टहास की वह ध्वनि धीरे-धीरे शून्य में विलीन होती चली गई......

कुछ क्षणों के बाद जब हमने धीरे से अपनी आंखें खोली तो रक्त का वह समुद्र और वह संपूर्ण दृश्य गायब हो चुका था ....

हम वापस उसी कक्ष मे मौजूद थे .....

हमारे सामने मौजूद था वह पारद विग्रह !

मंत्र जाप चलता रहा .....

जिस दिन पूर्णता थी उसी दिन ब्रह्म मुहूर्त मे लगभग चार बजे के आस पास उस पारद योनि के विग्रह के ऊपर दिखाई देने लगी.....

श्वेत....

शांत....

मृदुल रश्मियां.....

ऐसा लग रहा था........

जैसे हल्के सफेद रंग का प्रकाश वहां चारों ओर फैला हुआ हो.....

चांदनी जब पूर्णिमा के दिन बिखरती है कुछ-कुछ वैसा ही......

सुमधुर.....

शीतल....

शांत....

और मन को आनंद प्रदान करने वाला वह प्रकाश वहां पूरी तरह से बिखरा हुआ था !

दृश्य बदलने लगा .....

उसके बाद वहां एक विशाल पर्वत दिखाई देने लगा ......

जो कि बर्फ से ढका हुआ था !

उसके ऊपर विराजमान थे....

ध्यान मग्न !

चेतना संयुक्त !

प्राणशक्ति संयुक्त !

संपूर्ण विश्व के आराध्य !!

जटा जूट धारी !!

बाघंबरधारी !

त्रिशूलधारी !!

गंगाधर !!

देवों के देव !!

महादेव ......

प्रसन्न मुद्रा में......

शांत !

ध्यानस्थ..........

ऐसा प्रतीत हो रहा था .... जैसे संपूर्ण सृष्टि उनको नमन करते हुए सामने खड़ी हो !

और वह....

शांत चित्त होकर....

अत्यंत आनंद की मुद्रा में....

कुछ नया सृजित करने के लिए.....

कुछ नया खोजने के लिए....

कुछ नया बताने के लिए...

कुछ उस महाशून्य में से प्राप्त करने के लिए ....

तत्पर हो रहे हो .....

उस दिव्य दर्शन मात्र से ही पूरे शरीर में आनंद की लहरें फैलने लगी ....

उस स्मित हास्य से निकलने वाले आनंद की उर्जा से हमारा पूरा शरीर आप्लावित हो रहा था !

ऐसा लग रहा था कि जब उनका ऐसा दिव्य सानिध्य प्राप्त हो गया.....

तो उसके बाद फिर जीवन में बचा ही क्या ?

हम दोनों पूरी तरह से शांत हो चुके थे !

हर तरफ शांति ही शांति बिखरी हुई थी और गुंजारित हो रहा था ओंकार का ब्रहमनाद......

उसके बाद क्या हुआ ?

पता ही नहीं चला .....

और जब वापस परिस्थितियां सामान्य हुई तो हम उसी पारद योनि विग्रह के अगल बगल में बैठे हुए थे और मंत्र जाप कर रहे थे ।

वह एक ऐसी अनुभूति थी जिसकी कोई तुलना नहीं हो सकती....

इसकी व्याख्या नहीं हो सकती !

उस दृश्य को बताने के लिए शब्द कम पड़ जाएंगे !

उस दृश्य को समझाने के लिए भावनाएं कम पड़ जाएंगी !

सब कुछ मौन हो जाएगा.....

समापन

दिव्य दर्शन के बाद सूर्योदय होते तक उस चरण का मंत्र जाप भी पूर्ण हो चुका था !

अब आखरी चरण बचा था जिसमें हम दोनों को बीच वाले कमरे में वज्रोली की क्रिया का अभ्यास करते हुए वज्रोली सिद्धि के मंत्रों का जाप करना था.......

जैसा कि मैंने आपको पहले भी स्पष्ट किया था कि वज्रोली की क्रिया स्त्री और पुरुष के आपसी संबंधों पर आधारित है । इसमें स्खलित बिंदु को वापस अपने अंदर खींच लेने की प्रक्रिया को संपन्न किया जाता है । इसमें साधक ज्यादा प्रबल होता है तो उसके अंदर शक्ति का संचरण ज्यादा होता है और अगर साधिका प्रबल होती है तो उसके अंदर शक्ति का संचरण ज्यादा होता है ।

इस शक्ति के प्रवाह को अभ्यास के द्वारा नियंत्रित किया जा सकता है और इसी प्रक्रिया को सीखने के लिए इस अंतिम चरण की आवश्यकता थी ।

इससे पहले री ली वाले प्रकरण में आपने ऊर्जा के अनियंत्रित खिंचाव के विषय में पढ़ा था कि किस प्रकार

से ज्यादा ऊर्जा खिंच जाने की वजह से री ली के ऊपर कमजोरी छा जाती थी और वह अचेत हो जाती थी । उस समय एक बार मैंने ऊर्जा को वापस प्रवाहित करने का प्रयास किया था और उसमें ज्यादा ऊर्जा का प्रवाह हो जाने की वजह से मुझे कमजोरी लगने लगी थी ......

इसी स्थिति पर संतुलन बनाने के लिए वज्रोली मंत्र की सिद्धि होना आवश्यक होता है । इसके माध्यम से साधक और साधिका अपनी उर्जा को सम भाग में बाँट कर दोनों ही एक साथ उस ऊर्जा के प्रबल प्रवाह को अपने शरीर में समाहित कर सकते हैं और दोनों इसका लाभ उठा सकते हैं ।

यह साधना दो भाग में होनी थी ।
इसका पहला भाग सुबह के 6 बजे से प्रारंभ होकर शाम के 6 बजे तक चलना था और उसके बाद दूसरा चरण रात के 9 बजे से प्रारंभ होकर अगले दिन सुबह 9 बजे तक चलना था अर्थात कुल मिलाकर यह आठ प्रहर की या 24 घंटे की साधना थी ।

चार चार प्रहर के इन दो चरणों में युगल मुद्रा में साधक और साधिका की स्थिति बदल जाती थी अर्थात उनका स्थान परिवर्तित हो जाता था । तदनुसार ही ऊर्जा का प्रवाह भी परिवर्तित होता था ऐसी स्थिति में नियंत्रण करने के लिए मंत्र को अपनी सांस की लय के साथ उच्चरित करना पड़ता था ।

मंत्र केवल दो अक्षर का था ।

जिसे सांस की लय के साथ उच्चारित करना था ....

अर्थात सांस खींचते समय उसके प्रवाह के साथ उसका उच्चारण होना था और वापस छोड़ते समय उसके प्रवाह के साथ उसी का विपरीत क्रम में उच्चारण होना था ।

यानि एक ही मंत्र को अनुलोम-विलोम क्रम में रखते हुए इस साधना को संपन्न करना था और इस संपूर्ण प्रक्रिया के दौरान युगल प्रक्रिया भी चलती रहनी थी।

सूर्योदय के साथ वह अंतिम चरण प्रारंभ हो गया !

हम दोनों बीच वाले कक्ष में आ गए थे।

वहां पर एक विशालकाय युगल मूर्ति रखी हुई थी ।

उसके सामने में एक गहरे लाल रंग के कंबल का आसन लगा हुआ था । उसी आसन पर हम दोनों ने

अपना स्थान ग्रहण कर लिया और मंत्र जाप प्रारंभ हो गया .....

हम दोनों के आभामंडल स्पष्ट होने लगे थे !

विनोदिनी का आभामंडल नीले रंग का था....

मेरा आभामंडल लाल रंग का था ....

जो हमारे शरीर के इर्द-गिर्द फैला हुआ था ।

लगभग एक प्रहर तक हमारी क्रिया उसी प्रकार से चलती रही । उसके बाद बिन्दु पात हुआ और विनोदिनी ने संकोचन विकोचन प्रारंभ कर दिया और उसके साथ ही मुझे अपनी उर्जा खिंचती हुई महसूस होने लगी ।

लगभग एक दो मिनट तक तक ऐसा ही चलता रहा......

जैसे पाइप से पानी खिंचता है ...

कुछ कुछ वैसा ही....

मेरी ऊर्जा उतर रही थी ....

धीरे-धीरे मेरा शरीर निष्क्रिय होता जा रहा था !

उसके साथ ही विनोदिनी के शरीर में एक अलग ही तेज बिखरता जा रहा था !

उसके इर्द-गिर्द जो आभामंडल था !

उसको मैं स्पष्ट देख रहा था !

वह गहरे नीले रंग का होता जा रहा था !

किसी बड़े प्रकाश पुंज की तरह उसके चारों ओर फैला हुआ वह गहरा नीला आभामंडल धीरे धीरे बढ़ता जा रहा था .....

दोपहर तक ऐसा ही चलता रहा और उसके बाद आसन परिवर्तित करने के बाद फिर से क्रिया प्रारम्भ हुई ।

उसके बाद मैंने ध्यान को भ्रूमध्य मे केन्द्रित किया,

श्वास को रेचक करके रोका .....

और संकुचन विकोचन वाला प्रक्रम प्रारंभ किया .....

मुझे अब एक विद्युत प्रवाह सा शरीर के अंदर से निकलकर मस्तिष्क की ओर दौड़ता हुआ प्रतीत हो रहा था....

ऐसा लग रहा था जैसे कि बिजली की लहर मूल भाग से स्पंदन करती हुई लहरा लहरा कर ऊपर की ओर बढ़ रही है ....

उसके झटके मैं अपनी रीढ की हड्डी में महसूस कर रहा था ......

विनोदिनी का आभामंडल छोटा होता जा रहा था !

मैं अपने लाल रंग के प्रकाश को बढ़ता हुआ महसूस कर रहा था !

सामने रखा हुआ वह युगल भी अब लाल रंग के प्रकाश से जगमगा रहा था ।

इस प्रकार से दो दो पहर के दो चरण हम लोगों ने पार किए !

उसमें एक चरण में मेरा आभामंडल विकसित होता रहा और मैं ऊर्जावान महसूस करता रहा !

दूसरे चरण में विनोदिनी का आभामंडल विकसित होता रहा और वह ऊर्जावान महसूस करती रही !

इसी प्रकार से वह साधना चलती रही !

दूसरा चरण रात्रि को प्रारंभ हुआ और इस बार हम दोनों को एक साथ यथासंभव प्रयास करते हुए पात को निलंबित करना था ....

लगभग रात के साढ़े तीन बजे के आसपास बिंदुपात हुआ और हम दोनों ने उसे अपने अंदर खींचने के लिए प्रयास प्रारंभ कर दिए....

इस बार हम दोनों को शक्ति खींचनी थी !

मंत्र जाप जारी था ...

इस बार दोनों की शक्ति लगभग बराबर थी !

उसी के अनुसार दोनों के शरीर में लगातार बिजली के झटके भी लग रहे थे !

ऐसा लग रहा था....

जैसे बिजली के तार को शरीर में स्पर्श कराकर छोड़ दिया गया हो ....

और....

उसे बीच-बीच में ऑन ऑफ किया जाता हो ।

एक झटका सा लगता और स्पंदन मूलाधार से होता हुआ सहस्त्रार की ओर दौड़ता ....

फिर थोड़ी देर तक शांति रहती ....

पूरे शरीर में आग लगने जैसा आभास होने लगता था ....

पाँच सात मिनट में वह गर्मी शांत होती ....

तब.....

फिर से एक वैसा ही झटका महसूस होता था ....

यह स्थिति लगभग तीस चालीस मिनट तक रही होगी ....

उसके बाद पुनः स्तंभन हुआ और क्रिया प्रारंभ हो गई ।

ब्रह्म मुहूर्त के कुछ पहले कमरे में चमेली की गंध फैलने लगी !

जो हर तरफ से आती हुई प्रतीत हो रही थी !

ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे गरम भट्टी के अंदर शरीर को रख दिया गया हो !

चारों तरफ से प्रचंड ऊष्मा का आभास हो रहा था !

क्रिया निरंतर चल रही थी !

वह प्रकाश बिन्दु उसी प्रकार से मौजूद रहा और सुबह लगभग साढ़े आठ बजे के आसपास पुनः बिंदु पात हुआ...

इस बार जैसे ही बिंदु पात हुआ और हमने वज्रोली करना प्रारंभ किया ....

वह प्रकाश के गोले भी धीरे-धीरे संकुचित होते हुए हम दोनों के ब्रह्मरंध्र से होते हुए सिर के अंदर प्रवेश कर गए !

उनके अंदर प्रवेश करते ही एक ऊर्जा का विस्फोट जैसा महसूस हुआ...

उसके बाद मैं बेहोश हो गया....

ध्यानस्थ हुआ....

समाधि मे गया ....

या क्या हुआ ...

कुछ पता नहीं चला !

विनोदिनी का क्या हुआ ?

यह भी मुझे पता नहीं चला ।

जब वापस होश में आया तो मुझे एक नाव जैसे आकार के पात्र में रखा गया था ....
उसमें बर्फ की सिल्लीया डली हुई थी !

इतने ठंडे वातावरण में उन बर्फ की सिल्लीयों के ऊपर भी मुझे गर्मी का एहसास हो रहा था और वह बर्फ बड़ी सुखद लग रही थी !

वहां लामा डिंचुक के साथ दो लामा मौजूद थे जो कुछ विशेष प्रकार के मंत्रों का उच्चारण करते हुए.......
एक छोटे से बोतल जैसे तांबे के बर्तन में से कोई चीज मेरे नाभि पर बूंद-बूंद करके डाल रहे थे !

मुझसे कुछ ही दूरी पर एक और नाव रखी हुई थी जिसमें विनोदिनी को भी उसी अवस्था में लिटा कर रखा गया था ....
हम दोनों के सिर को एक बांस के फ्रेम से सहारा दिया हुआ था ताकि डूब न जाएँ ....

दो योगिनीया, योग माया के साथ खड़े होकर उसके नाभि प्रदेश पर भी उसी प्रकार से कोई द्रव डाल रही थी .....

यह प्रक्रम लगभग तीन साढे तीन घंटे तक चला होगा !

उसके बाद वह सभी वहां से चले गए !

हम दोनों भी अर्धबेहोशी जैसी स्थिति मे जा चुके थे !

धीरे धीरे शरीर की गर्मी शांत होने लगी थी और सामान्य लगने लगा था ।

लगभग एक घंटे के बाद मुझे ठंड लगने लगी ....

तब तक योग माया अंदर आ चुकी थी उन्होंने अपने हाथ में पकड़ा हुआ तोलिया और लबादा मुझे और विनोदिनी को दे दिया ...

हम दोनों ने अपने शरीर को पोछ कर उस लबादे को पहन लिया ...

वज्रयोगी के दर्शन

योगमाया हम दोनों को लेकर उस गोम्पा के मुख्य साधना कक्ष में बने हुए वज्रयोगी के विग्रह के सामने लेकर गई । यहां पर आने का हमारा यह पहला अवसर था ।

योगमाया ने बताया कि उस तांत्रिक विग्रह के दर्शन तभी कराए जाते थे जब कुछ विशेष प्रकार की सिद्धियां प्राप्त करनी होती थी या कोई विशेष प्रकार की क्रिया संपूर्ण हो जाती थी !

योगमाया बोली - बेटा ! वज्रोली साधना तुम लोगों ने संपूर्ण कर ली है ... इसलिए तुम्हें यह सौभाग्य प्राप्त हुआ था कि वज्रयोगी के इस तांत्रिक विग्रह के दर्शन का सौभाग्य मिला ।

वहां हम दोनों के द्वारा विशेष पूजन संपन्न करवाया गया और उसके बाद योग माया ने और लामा डिंचुक ने हम दोनों के सर पर एक मुकुट जैसे आकार का आभूषण पहनाया ....

जो इस बात का प्रतीक था कि हम दोनों को अपनी साधना में सफलता प्राप्त हो चुकी है ....

उसके बाद हम दोनों लगभग तीन माह तक उस गोम्पा में रहे ....

तीन महीने के बाद मुझे निर्देश मिला कि आगे का साधनात्मक जीवन बिताने के लिए मुझे हिमालय की अनंत गहराइयों में स्थित दिव्याश्रम में जाना है ।
उसके बाद अगले 6 वर्षों तक मैं गुरुदेव के दिव्य सानिध्य मे उनके निर्देशानुसार दिव्याश्रम में अनेक प्रकार की साधनाओं में संलग्न रहा ।
उन साधनाओं को संपन्न कर लेने के बाद मुझे गुरुदेव ने अघोर साधनाओं की जानकारी के लिए बनारस भेजा ....
वहां मणिकर्णिका घाट में मुझे अघोर दीक्षा मिली और मुंड सिद्धि प्राप्त कर लेने के बाद गुरु के निर्देशानुसार अब मैं इस श्मशान में आ गया हूँ । मुझे कुछ वर्षों तक यहीं रहना है ।
मैंने उत्सुकतावश डोम बाबा से पूछा - बाबा, बनारस जैसे जागृत श्मशान मे साधना करने के बाद यहाँ , इस सामान्य श्मशान मे आने की बात कुछ समझ मे नहीं आई ...

डोम बाबा बोले - बेटा अघोरानंद ! मेरे मन मे भी यह विचार आया था ....

लेकिन गुरु आज्ञा तो माननी ही होती है ।

बाद में मुझे पता चला कि यहां पर मुझे तीन लोगों को साधनाएं सिखानी है और उसके बाद यहां का मेरा कार्य समाप्त हो जाएगा और मैं वापस लौट जाऊंगा ।

मैंने पूछा - अभी कितने लोग मिल गए ... बाबा !

बाबा मुसकुराए और बोले - तू सही समझ रहा है !

उसमें से दो लोग अभी तक मुझे मिल चुके हैं एक तो माधुरी.... और दूसरे तुम !

अभी एक और साधक मुझे मिलेगा और उसे मुझे उस के मार्ग पर आगे बढ़ाना है ....

जब वह इस योग्य हो जाएगा कि आगे की प्रक्रिया स्वयं संपन्न कर सके....

तब मैं अपने दायित्व से मुक्त हो जाऊंगा और वापस गुरुदेव के श्री चरणों में पहुंच जाऊंगा ।

बाबा ने एक गहरी सांस ली और बोले - उस दिन के बाद फिर विनोदिनी से मेरी कभी मुलाकात नहीं हुई,

क्योंकि विनोदिनी को भी आगे की साधनाओं के लिए विशेष साधना क्षेत्र में भेज दिया गया था ।

अभी लगभग 11 वर्षों के बाद विनोदिनी से प्रत्यक्ष मुलाक़ात हुई है ।

मानसिक रूप से और सूक्ष्म रूप से चर्चा तो होती है..... लेकिन मिलने का योग अभी आया है !

इतना कहकर बाबा की आँखें शून्य मे स्थिर हो गयी और वे मौन हो गए .....

मैं संकेत समझ गया और उनके चरण स्पर्श करके वापस लौट आया ....

************समाप्त************

*************श्री सदगुरु चरणार्पणम*************

-:अन्य रचनाएँ :-

1. तांत्रिक अघोरानंद ।
2. अघोरानंद की अप्सरा ।
3. अघोरानंद और बलात्कारी प्रेत ।
4. अघोरानंद और तारापीठ की छाया ।
5. अघोरानंद और चौंसठ योगिनी मंदिर का रहस्य ।
6. अघोरानंद और छाया की माया ।
7. अघोरानंद और कमीना प्रेमी ।
8. अघोरानंद और महमारण प्रपंच ।
9. अघोरानंद और भैरवम भीषणम ।
10. अघोरानंद और बौनों की बस्ती ।
11. अघोरानंद और पशुपतिनाथ की बोक्सी ।
12. अघोरानंद और दतिया पीठ का चमत्कार ।

13. अघोरानंद और जटाधारी वैशाली ।

14. अघोरानंद और चाँदनी महल की आत्माएं ।

15. अघोरानंद माधुरी और ध्यानलिङ्ग ।

16. अघोरानंद माधुरी और ध्यानलिङ्ग का रहस्य ।

17. अघोरानंद और चम्पा बंजारन ।

18. अघोरानंद और एंबरग्रीस ।

19. कापालिक चंडेश्वर ।

20. कापालिक चंडेश्वर और पूर्णानन्द ।

21. वह रहस्यमय युवती ।

22. परेतिन की शादी ।

इसके अलावा साधना से संबन्धित भी कुछ ई बुक्स हैं ।

साधना विधियाँ :-

1. गुरुपूजन की विधियाँ ।
2. मंत्र साधना और गुरु की आवश्यकता ।
3. अकाल मृत्यु तथा रोग नाशक मंत्र ।
4. श्री गणेश पूजन की विधियाँ ।
5. महालक्ष्मी पूजन ।

आप मेरी कहानियाँ ई बुक्स मे अमेज़न किंडल मे पढ़ सकते हैं और औडियो बुक्स मे कूकू एफ एम पर सुन सकते हैं :-

01. तांत्रिक अघोरानंद ।

02. अघोरानंद की अप्सरा ।

तथा प्रतिलिपि एफ एम पर सुन सकते हैं ।

03. अघोरानंद और तारापीठ की छाया ।

04. अघोरानंद और महमारण प्रपंच ।

05. अघोरानंद और पशुपतिनाथ की बोक्सी
।

06. अघोरानंद और दतिया पीठ का
चमत्कार ।

07. अघोरानंद और जटाधारी वैशाली ।

08. अघोरानंद और चाँदनी महल की
आत्माएं ।

09. अघोरानंद माधुरी और ध्यानलिङ्गम ।